खूबानी पर फूल आये

मुरातअली की नीन्द सदा की तरह तडके खुली। वह अहाते मे ऊँचे चबूतरे पर सोया करता था और हर सुबह सबसे पहले जिस चीज पर उसकी नजर पडती थी, वह थी खूबानी की लम्बी-लम्बी घनी शाखाएँ। उसकी पत्तियो के बीच मे गहरा नीला आकाश और धुधलाते अन्तिम तारे झाक रहे होते।

मुरातअली थोडी देर तक पुष्पित खूबानी का आनन्द उठाता लेटा रहता। फूल कोपलो से सद्य प्रस्फुटित पत्तियो की झिलमिलाती हरियाली को आच्छादित कर रहे श्वेत-पाटल बादल मे घुल-मिल जाते। यह वृक्ष कतारताल के सबसे गरीब किसान, मुरातअली के पिता ने लगाया था। उसने केवल जीवन के अन्तिम दिनो मे ही, जब वह सामूहिक फार्म में शामिल हुआ, जाना था कि सुख क्या होता है।

खूबानी की उस पर झुक रही शाखाओ को निहारते हुए मुरातअली को अपने पिता के मृत्यु-पूर्व कहे शब्द स्मरण हो आते "मेरी खूबानी सौ बरस फूलेगी और सौ बरस भरपूर फल देगी। और, मेरे बेटे, तुम भी सौ बरस जियो, और लोगो को तुम्हारी मेहनत का खूब फल मिले "

मुरातअली का दिन रोजाना एक ही ढग से शुरू होता था भोर की हलकी धुध, खूबानी की डालिया वह इसका आदी हो चुका था, और यदि जागने पर अपने ऊपर वे डालियाँ नही दिखती, तो उसे जीवन निरानन्द और सूना प्रतीत होता।

आज उसे दिन-भर काफी काम करने थे। मुरातअली ने जल्दी मे

कपड़े पहने, सुबानी के नीचे लगी चिलमची में हाथ-मुँह धोये और पानी लाने चल पड़ा।

मुरातअली का घर एक पहाड़ी की ढलान पर बना था, जिसकी तलहटी में बसा गाँव कटोरे-सा नज़र आता था। दूर, ढलानों के बीच में एक नदी बहती थी। *उसका उद्गम पहाड़ों में ऊंचाई पर था,* बहती-बहती वह पहाड़ी सोतों का शीतल जल जमा करके अनेक छोटे-छोटे चश्मों के मिलने से बनी निर्मल फीरोज़ी पानी की झील से घूट भरती। झील के किनारे पर बेदों की कतारें लगी हुई थीं, यही कारण था कि झील, नदी और गाँव का नाम भी कतारताल (बेदों की कतार) पड़ गया।

नदी छिछली थी और गरमियों में लगभग पूरी ही सूख जाती थी। शाम को गपशप करने, पहाड़ों से आती ताज़ा व स्वच्छ हवा का सेवन करने के लिए जमा हुए बूढ़े लोग बड़े अफसोस के साथ कहते "हमारे यहाँ अगर हवा की तरह पानी भी भरपूर होता, तो हम अपने कतारताल को लहलहाता बाग बना देते!" उन्हें अलतीनसायवासियों से डाह होती, जिन्होंने अपने यहाँ बाग, फुलवारियाँ और साग़बाड़ियाँ लगा रखी थीं वे चाहते थे कि उनका गाँव भी हरियाली में डूबा रहे। इसके लिए पानी चाहिए था, पर कहाँ वह पानी! केवल कुछ ही आंगनों में इक्के-दुक्के फलदार वृक्ष दिखाई देते थे वे प्राकृतिक दृश्य में चार चाँद लगाने के साथ-साथ उसकी भीषण एकरसता को भी भंग करते थे। मुरातअली की सुबानी सबसे बड़ी और सुन्दर थी, पर उसे सींचने और उसकी संभाल करने में वृद्ध को कितनी मेहनत करनी पड़ती थी, *कितना समय लगाना पड़ता था!* यदि मुरातअली रोज़ सुबह-शाम नदी पर उतरकर उसमें से सुराहियों में ठण्डा पानी ला-लाकर पेड़ को न सींचता, तो वह कभी का सूख गया होता। वृद्ध को सबसे ज़्यादा मुश्किल गरमियों के झुलसाते दिनों में हुआ करती थी, जब सूरज अतोषणीय लालची की तरह झील और नदी का सारा जल डकार जाता था। ऐसे दिनों मुरातअली बड़े भोर में पानी लाने पहाड़ों में चला जाता था। वह एक भी बूँद न छलकने देने की कोशिश करता, एक चश्मे से दूसरे पर जाता, बड़ी सावधानी बरतता बहुमूल्य जल को छान-छानकर सुराहियों में भरता। वृद्ध कभी-कभी स्वयं प्यास

के मारे तड़पता, लेकिन एक भी दिन ऐसा नही जाता, जब वह अपने पिता के लगाये वृक्ष को न सींचता।

उस सुबह मुरानअली एक हाथ मे मिट्टी की सुराही और दूसरे मे तांबे की सुराही लिये सर्पिल पथरीली पगडण्डी से सावधानीपूर्वक नदी पर उतरा और उनमें पानी भर लिया। वापस ऊपर चढ़ना काफी मुश्किल था। अभी-अभी भोर होने के कारण वृद्ध को खड़ी पगडण्डी के धूसर और ओसमिक्त पत्थर साफ नजर नही आ रहे थे। वह एक-एक डग भरता ऊपर चढ़ रहा था हर कदम पर सुराहियां लेकर चलना दूभर होता जा रहा था। वृद्ध का सफेद कुरता पसीने से तर हो चुका था। ठीक घर के सामने पहुँचते ही उसका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ा। मिट्टी की सुराही टुकड़े-टुकड़े हो गयी और तांबे की हाथ से छूटकर उसे खिजाती-सी पगडण्डी के पत्थरों से टकराती नीचे लुढ़कने लगी। उठते हुए मुरानअली तीव्र पीड़ा के मारे कराह उठा उसकी कोहनियाँ और घुटनों की खाल छिल गयी थी। उसने आस्तीन से चेहरा पोंछा, अपने गीले हाथों को पाजामे से रगड़कर साफ किया, कुछ बड़बड़ाया और भारी-भारी सांस लेता सुराही ढूँढ़ने धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। खुशकिस्मती से सुराही लुढ़ककर नदी तक नही पहुँची, किनारे के ककड़ो मे रुक गयी। मुरानअली ने उसमें दोबारा पानी भरा और फिर ऊपर चढ़ने लगा, पर इस बार बलखाती पगडण्डी से नही, बल्कि सीधे खड़ी ढलान से। उसका सारा बदन दुख रहा था, सुराही के कारण हाथ खिंचा जा रहा था, किन्तु सन्ताप वृद्ध को शक्ति प्रदान कर रहा था और मुरानअली खाली हाथ से विरल झाड़ियां और निकले हुए पत्थरों को पकड़-पकड़कर हठपूर्वक बड़ी मुश्किल से ऊपर चढ़ता जा रहा था। आखिर घर पहुँच ही गया! मुरानअली ने ठोकर से फाटक ठेल अहाते में प्रवेश किया। उसने केतली में थोड़ा चाय का पानी रखा और बाकी बचा चिर-अभीप्सित वृक्ष मे दे आया।

उसकी खीज अभी दूर नही हुई थी। उसने बेटी के कमरे का दरवाजा खोला। सेमरी मीठी नीन्द सोयी हुई थी। आम तौर पर वृद्ध अपने बच्चों को आवश्यकता से अधिक समय तक पलंग तोड़ते देख क्रुद्ध हो उठते है, तिस पर उस सुबह मुरानअली को किसी-न-किसी

और ओम्मा* के पौधों मे लहलहा उठनेवाली थी। मुरातअली की नज़र सूबानी के वृक्ष पर टिक गयी

गृहस्वामी का गर्व – विशाल वृक्ष पहरेदार की तरह अपनी शाखाएँ फुलवारी, बडे-से बदरग हुए कालीन मे ढके चबूतरे, कच्चे, जीर्ण-शीर्ण नीचे घर पर फैलाये हुआ था। बाहर के आदमी को घर और आगन मामूली लग सकते थे, लेकिन मुरातअली के लिए वे दुनिया मे सबसे प्यारी चीज़े थे, वह कही भी क्यो न होता अपने घर, सन्दाल**, जिसके पास बैठकर अपनी बूढी हड्डियो को गरमा सकता था, अपनी सूबानी को सर्वाधिक प्रिय और अभिलषित वस्तुओ की तरह याद किया करता था। और ऐसी यादो से दिल को बडा सुकून मिलता है।

सफाई का काम निबटाकर पिता और पुत्री ने चबूतरे पर नाश्ता किया। कपास के खेत क्तारनाल से कई किलोमीटर की दूरी पर थे। वहाँ का रास्ता सीधा और सुविधाजनक था, लेकिन अपने खेत पर समय पर पहुँचने के लिए मुरातअली को घर से ज़रा जल्दी निकलना पडता था। वैसे वह लम्बे फासलो का आदी हो चुका था गेहूँ के खेत, जिनमे वह नयी ज़मीन को कृषि योग्य बनाये जाने तक काम करता रहा था, पहाड के काफी पीछे थे और उन तक पहुँचना वर्त्तमान खेत पहुँचने की अपेक्षा कही अधिक कठिन था।

दिन चढ रहा था। पर्वतो के ऊपर आकाश रक्ताभ हो उठा। खड्डो और घाटियो मे गुलाबी, उदय होते सूर्य की किरणो से किचित् आलोकित कोहरा छाया हुआ था, किन्तु दूरस्थ गिरि-शिखर दृष्टिगोचर होने लगे थे, और उन पर हिम बुखारा की टोपियों के कारचोबी बेल-बूटों की तरह जाज्वल्यमान हो रहा था।

बरतन उठाने के लिए चबूतरे पर चढा मुरातअली सामूहिक फार्म की फैली हुई ज़मीन की ओर देखता, सम्मोहित-सा खडा रहा। मिट्टी

---

* ओम्मा – सो० मध्य एशिया का पौधा जिसके रस से स्त्रियाँ अपनी भौहे रगती हैं। – स०

** सन्दाल – एक प्रकार की अगीठी जिसमे गर्म राख रख दी जाती है और ऊपर से बडा कम्बल ढक दिया जाता है। सर्दियो मे लोग इसके चारो ओर कम्बल के अन्दर अपने पैर रखकर बैठे रहते है और इस प्रकार उन्हे गर्म रखते है।

के मचान पर से कलखलाम से अलतीनसाय जानेवाली सड़क साफ दिखाई देती थी। वह अगले दिन, योजनाओं और टोली के कामों के बारे में सोचता न जाने कितनी बार इस सड़क से गुजरता रहा था।

पहाड़ों के बीच की सड़क भी यहां से साफ-साफ नजर आ रही थी। वह रहा दौलिबुलाक नाम का गांव। उधर आखिर मुड़ते में निरन्तर सड़क राजमार्ग की धूसर पट्टी लांघकर अलतीनसाय के ढलान के सोतों की ओर चली जाती है। खेत यहां से दिखाई नहीं देता, वह पहाड़ की ढलान के कुछ दायीं ओर है। उसकी आंखों के आगे केवल पत्ती घास से महकदार और रंगबिरंगे फूलों से ढकी स्तेपी फैली हुई है। ज्यों-ज्यों आगे जाइये त्यों-त्यों जमीन सूखी होती जाती है, वह शिशिर धूप की गरम सांसों से भुनसी हुई है, उसमें आर-पार लू चलती रहती है। वहां की जमीन सख्त व ढेलेदार है और केवल नागदौना के धूलभरे नीरस गुच्छेदार पौधों से ढकी हुई है। वह अछूती धरती है। और उसके आगे रेगिस्तान के लाल टीले हैं, जो दूर, बहुत दूर धूसर क्षितिज तक फैला हुआ है और इसलिए निस्सीम प्रतीत होता है

अछूती धरती सदियों से स्वामी की प्रतीक्षा कर रही धरती। मुरातअली को बरबस पार्टी की जिला समिति के सचिव जुरावायेव के वे शब्द स्मरण हो आये, जो उन्होंने पिछले वर्ष सामूहिक फार्म की मीटिंग में दिये भाषण में कहे थे "आपने हाल ही में कृषि योग्य बनाये अलतीनसाय भूखण्ड से जोरदार फसल काटी है। अब सारी अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की कोशिश कीजिये – वह आपको दिल खोलकर इनाम देगी। अछूती धरती में खजाना गडा है, जो हम सबको हमेशा-हमेशा के लिए समृद्ध बना देगा।"

कपास के खेत भी, अछूती स्तेपी भी – मुरातअली सब को अपनी सम्पत्ति मानता है। उसने एक बार फिर उन पर मालिक के अन्दाज में नजर डाली और सोचने लगा कि उन्हें उस अमूल्य खजाने को खोद निकालने के लिए कितनी मेहनत करनी पडेगी, अचानक उसे ध्यान आया कि उसे काम को देर हो रही है। मेसरी पिता की प्रतीक्षा करती फाटक के बाहर खडी थी। मुरातअली बरतन उठाकर घर में रख आया और कंधे पर कुदाल रख बेटी के पास जाने के लिए कुछ डग ही भर पाया था कि फाटक खोलकर आंगन में उसका पुराना दोस्त

गफूर आ गया। मुरातअली अचम्भे मे पडा अनपेक्षित अतिथि को ताकता रह गया। उसने गफूर को अरसे से नही देखा था और उसे बडी मुश्किल से पहचान पाया

मेहमान के कपडो का नजारा देखने लायक था। उसके पैरो मे रस्सी को कई बार लपेटकर बाधे रबड के पुराने जूते थे। रग उडकर सफेद हुई, कीचड मे सनी फौजी पतलून के पायचे पुराने ऊनी मोजो मे उडसे हुए थे। मिरजई पतलून से कुछ कम पुरानी और थोडी मजबूत थी। बहुरूपिया की इस पोशाक पर तुर्रा यह था कि टोपी बिलकुल नयी और अभी-अभी खरीदी हुई थी।

गफूर ने गृहस्वामी को उसे जी भरकर देख-निहार लेने का मौका दिया और फिर पीले-पीले दात निपोडता मुस्कराकर मुरातअली की ओर बढा। मित्रो ने पहले एक दूसरे का आलिंगन किया और फिर हाथ मिलाकर हाल-चाल पूछना शुरू किया।

"अहा, लौट आये, कितना अच्छा हुआ!" मुरातअली खुशी से कह उठा। "काफी अरसा हो गया रिहा हुए?"

"यहाँ कल ही पहुँचा।" गफूर ने नाक-भौह सिकोडी। "सोचा था कि कम-से-कम घर पहुँचकर आराम से रहूँगा। सोचा था कि भानजी मुझ पर रहम करेगी, मदद का हाथ बढायेगी। लेकिन ऐसा कभी हो सकता था! अपनो के पास आया, पर मेरे साथ मिले गैरो की तरह "

"सुनो, सुनो, प्यारे! जो हुआ सो हुआ। आयकीज क्या पुरानी बाते अभी तक नही भूल पायी?"

"अरे, छोडो भी! उसने खुद ही मेरी चुगली खाई, और अब पहचानने तक को तैयार नही होती। पत्थर का दिल है उसका, पत्थर का!"

मुरातअली अविश्वास के अन्दाज मे सिर हिलाता सुनता रहा, और गफूर ने इसे महानुभूति की अभिव्यक्ति समझ आयकीज के साथ हुई अपनी मुलाकात के बारे मे उत्तेजित स्वर मे नमक-मिर्च लगाकर सुना डाला।

वैसे उनकी मुलाकात हुई ऐसे थी। आयकीज के पास गफूर जब अचानक आ धमका, वह ग्राम सोवियत मे अपने काम मे व्यस्त थी।

वह नशे मे था और बडी मुश्किल से अपने पैरो पर टिक पा रहा था। आयकीज को गुस्से से लाल हुई आंखो से घूरते हुए गफ़ूर ने फटी आवाज मे व्यग्यपूर्वक कहा

"सलाम, भानजी! तुम अपने बदनसीब मामा से मिलने क्यो नही आती थी, क्यो?"

आयकीज ने दुआ-सलाम किये बिना कुरसी की ओर सकेत किया।

"मेहरबानी करके बैठिये और बताइये कि मै आप की क्या सेवा कर सकती हूँ?"

गफूर लड़खड़ाया और मेज पर हाथ टेक आयकीज के नजदीकआकर उसके मुँह पर शराब का भभका छोडता हुआ घृणापूर्वक फुसफुसाया

"क्या सेवा कर सकती हो, भानजी? तुमने मुझे दोस्तो से, घर से जुदा कर दिया, बदनसीब बना दिया, बेइज्जत किया, और अब पूछती हो कि क्या सेवा कर सकती हूँ? आज मेरा सगा बेटा तक मुझे पहचानने को तैयार नही है। मेरी बेइज्जती मेरे दिल मे काटे-सी खटक रही है!"

आयकीज की आखो के आगे अधेरा छाने लगा, होठ कापने लगे वह अपने पर नियत्रण रखने की कोशिश करती मेल-मिलाप के स्वर मे बोली

"बैठिये, शान्त हो जाइये। अपने दिल का बुखार निकालने के लिए यहा नशे मे आना जरूरी नही था।"

गफूर करीब-करीब बैठ ही चुका था, पर आयकीज के अन्तिम शब्द सुनते ही ऐसे उछल पडा मानो कुरसी पर अगारे पडे हो।

"चलो-चलो, दिखाओ अपनी ताकत, भानजी! कह दो सबसे तुम्हारा मामा मुजरिम है, वह खुशी मे जरूरत से ज्यादा पी गया है!"

आयकीज आग-बबूला हो रहे गफूर की ओर ध्यान दिये बिना नोटबुक मे कुछ लिखती रही, और गफूर पूर्णतया आत्मसयम खो मेज पर मुक्का मारा और चीख उठा

"ऐ भानजी, सुनो मै क्या कहता हूँ! मैने तुम्हारा क्या बिगाडा था? मैने कभी तुम्हारे साथ बुरा बरताव किया? नही, भानजी, फर्ज तो तुमने अदा नही किया! तुमने अपने सगे मामा पर तोहमत लगायी थी! लेकिन याद रखना मै चुप बैठनेवालो मे से नही हूँ!"

आयकीज अन्यमनस्कता मे मुस्करा पडी। उसने तो सोचा था कि गफूर के साथ जो कुछ हुआ उसके बाद वह होश में आ जायेगा। क्योंकि उसने न्यायालय मे सामूहिक फार्म का अनाज चुराने का आरोप स्वय स्वीकार किया था। स्वीकार तो कर लिया था, पर स्पष्ट है उस पर पछताया नही था, सदा उसके हृदय मे प्रतिशोध की द्वेषपूर्ण भावना सुलगती रही थी, जो अब मूसलधार वर्षा के बाद उफनती गदे पानी की धारा की तरह किनारे तोड बह निकली थी।

"आखिर आपको मुझसे क्या चाहिए?" नोटबुक से सिर उठाकर आयकीज ने पहले की तरह आत्मसयम से पूछा।

भानजी की शान्तचित्तता ने गफूर को परास्त कर दिया। वह कुछ शान्त हो गया और आयकीज से कोई मामूली काम ढूढने का अनुरोध करने लगा, जो चक्की पर ही सही, पर लोगो की नजरो से दूर हो। आयकीज उसे केवल यही आश्वासन दे सकी उसे सामूहिक फार्म मे शामिल किये जाने के बाद सबके साथ खेत मे समान रूप से काम करने का अधिकार मिल जायेगा। गफूर अपनी बात पर अडा रहा, और आयकीज भी डटी रही

"दो मे से एक चुन लीजिये या कुदाल, या फिर जहा मर्जी हो, वहा चले जाइये। आपको यहा कोई नही रोक रहा है।"

गफूर शनै-शनै फिर भानजी पर आक्षेपो की बौछार करता हुआ चीखने लगा। तब आयकीज ने कह दिया कि वह अपने मामा से कोई वास्ता नही रखना चाहती, और गफूर ने एलान कर दिया कि उसकी कोई भानजी नही है। इसी बात पर दोनो जुदा हो गये। गफूर सामूहिक फार्म के अध्यक्ष कादीरोव को ढूढने निकल पडा, पर वह पशुपालन-फार्म पर गया हुआ था। गफूर मन-ही-मन अटकले लगा रहा था कि उसमे कौन सहानुभूति दिखा सकता है। उसे मुरादअली की याद हो आयी और वह सुबह कुछ जल्दी उठकर बनारस्ताल के लिए रवाना हो गया।

इस समय आयकीज से अपनी मुलाकात का किस्सा अपने पुराने दोस्त को सुनाते समय गफूर ने आसुओ की झडी बाध दी अपनी कल्पना से खूब नमक-मिर्च लगा दिया, गालिया जोड दी और मुराद-अली ने शिष्ट गृहस्वामी के नाते चटपटे बनाये पकवान का रसास्वादन

[illegible]

[illegible]

फिर सोच कर बोले, "लेकिन [illegible] आदमी को हर बात में काम से वास्ता ही होता है? तुम बाकी पर क्या करोगे? ऐसा होगा, मेरी बेटी तो शामिल हो जायेगी। मैं तुम्हें [illegible] दूँगा। हमारी बेटी भले सामूहिक फार्म में शामिल है, कामरेड मुरातअली ने [illegible] की थी।"

गफूर ने लम्बी सांस लेकर कठिनाई से कहा

"शुक्रिया, दोस्त। जैसा तुम कहोगे, वैसा ही करूँगा। खुदा तुम्हें तुम्हारी नेकी का सिला देगा।"

मेहरी फाटक का सहारा लिये वहीं खड़ी बात का सिलसिला सुन रही बीच-बीच में अधीरता से कभी पिता की ओर देख रही थी, कभी गफूर की ओर। एक बार उससे नजर मिलते ही मुरातअली ने जल्दी से और गफूर की बाँहों पर हाथ रख क्षमा-याचना के स्वर में कहा

"मुझे माफ करना, दोस्त, मुझे बिलकुल फुरसत नहीं है, काम को देर हो रही है। चलो तो हमारे साथ चलो।"

मित्र बातचीत करते हुए फाटक से बाहर आये और मेहरी के पीछे-पीछे लम्बे-लम्बे डग भरते चलने लगे। धूप तेज हो चली थी, ओस को विदा कर चुकी हरी घास से मादक सुगन्ध आ रही थी। और पथिकों को अपनी याद दिलाने के लिए दुरम्य स्तेपी सामने से जलती हुई लू के झोंके भेज रही थी। गफूर रेत के कणों के कारण आँखें मीचता व्यंग्यपूर्वक बोला

"सुना है आप लोग कुछ दिनों में रेगिस्तान में बसने जा रहे हैं?"

मुरातअली उदास हो उठा।

"यह बात क्या तुम्हारे कानों तक पहुँच गयी है? यह सही है कि पहाड़ी गावों के सामूहिक किसानों को नयी जमीनों के कुछ नजदीक बसने का सुझाव दिया जा रहा है। हम इस साल अछूती जमीन को खेती योग्य बनाना चाहते हैं," उसने कहा और मेहरी की ओर इंगित कर कटु स्वर में बोला "मेरी बेटी तो प्रवासियों में अपना नाम भी लिखा चुकी है। अपने बाप के बारे में तो बिलकुल भूल बैठी है।"

यह सुन रही मेखरी उनके पास आकर कुछ नाराजगी और झिड़की के साथ बोली

"अब्बा ! मैने आपसे सलाह तो की थी ..."

"सलाह की थी ! पहले नाम लिखा आयी और फिर सलाह करने की सूझी। शर्म की बात है, बेटी ! हाथ से ही निकल गयी है तू ..."

मेखरी का चेहरा लाल-लाल हो गया, उसने सिर झुकाकर हठपूर्वक आपत्ति की

"हमारे सारे कोम्सोमोल प्रार्थनापत्र दे चुके हैं।"

"हां, हां !" मुरातअली भड़क उठा। "जिधर सब जा रहे है, उधर ही तुम भी। बाप की नही सुनती ! बुजुर्गों पर यकीन नही करती ! अरी बेटी, अगर सब कुएँ मे कूदने लग जायें, तो क्या तुम भी कूद पड़ोगी ?"

"मै आपके बारे मे भी सोच रही थी, अब्बा," मेखरी हार मानने को तैयार नही हुई। "क्योकि नयी जमीनें काफी दूर है ..."

"तो क्या हुआ ! मेरे पैर मजबूत हैं, मुझे कोई तकलीफ नही है।"

"लेकिन आयकीज तो ..."

"बस करो, बेटी। आयकीज ने अछूती जमीन के बारे मे सोचा, उसके लिए उसका शुक्रिया। उसने अच्छा काम छेड़ा है। हमे जमीन की जरूरत है और हमारे पास उसी की तंगी है। लेकिन मै अपना गाँव नही छोड़ूँगा ! यहां मेरे बाप की कब्र है ! यहां उनका अपना पसीना बहाकर बनाया घर है ! यह मेरे पुरखों की जमीन है, और मै यहाँ से कही नही जाऊँगा। सुन लिया ? नही जाऊँगा। और तुम भी नही जाओगी ! चाहे जितनी दरख्वास्तें लिख डालो—हर हालत में हम सतारताल मे ही रहेगे। चाहे आयकीज, आलिमजान और करीम अपने सारे दूर के, नजदीक के रिश्तेदारों समेत वहाँ जा बसें।"

वे राजमार्ग के पास पहुँचे, जहाँ से अब हाल ही मे जोते हुए कपास के खेत और गाव भूरे-से रग मे झिलमिलाते, वसन्तकालीन भीनी मखमली हरियाली का परिधान ओढ़े दिखाई देने लगे थे। मुरातअली मौन हो गया। ये खेत उसके पसीने से सीचे गये थे—इस बस्ती

मे वे लोग रहते थे, जिनके साथ उसने कपास की खेती की थी, पा हासिल किया था, अपनी, मेहरी, मातृभूमि की किस्मत जगाई थी खुशहाली बढ़ाई थी। वह इस जमीन को प्यार करता था और मौ रखकर उसके प्रति अपना सम्मान व्यक्त कर रहा था

पथिको को रुकना पड गया गफूर के एक रबड के जूते की रस्सी खुल गयी थी। वह कराहता हुआ उसे ठीक करने लगा और फि तनकर मेहरी की ओर मुडा, चुपके से उपदेशात्मक स्वर में कहने लगा

"तुम बाप की मरजी के खिलाफ मत जाओ, लडकी। बडो की अवज्ञा करना गुनाह होता है। तुम, नौजवान लोग, हर वक्त जल्दबाजी करते हो, जिधर जी मे आता है, सिर पर पैर रखकर भागने लगते हो। तुम जल्दबाजी मत करो, अच्छी तरह सोच-समझ लो, अब्बा की अक्लमदी की बाते सुनो। तुम उसे कहाँ घसीट ले जा रही हो? उजाड स्तेपी मे? पर वहाँ तो सिर्फ उकाब ही आजादी से मडरा सकते है," गफूर गुस्से मे हाफने लगा और भौहे सिकोडकर आगे बोला, "तुम्हारी आयकीज़ तो बस उच्च अधिकारियो की नजरो मे चढना चाहती है। लेकिन किसान – वे बेवकूफ नही हैं, उन्हे जबरदस्ती रेगिस्तान मे नही घसीटा जा सकता है। मैं जो कह रहा हूँ – देख लोगी।"

"आपको यह तो मालूम ही नही कि कितनी दरखास्ते दी जा चुकी हैं।"

गफूर ने हाथ हिला दिया।

"दरखास्त क्या होती है? कोरा कागज! लोग अपना इरादा बदल देंगे। कौन घर-बार छोडकर जाना चाहेगा? और मेरी भी यही सलाह है, लडकी अपनी दरखास्त वापस ले लो। बाप का दिल मत तोडो।"

"पर मै कैसे " मेहरी घबराहट से हाफती हुई बोली, किन्तु पिता ने गुस्से मे उसे टोक दिया

"चुप रह, बेशर्म!"

मेहरी का चेहरा फक हो गया, उसने अपने होठ कसकर भींच लिये और कपास के खेतों तक मुह से एक भी शब्द नही निकाला।

दो

निर्मल चश्मा

तेज गरमी पड रही थी मध्यान्ह का सूरज मानो भूल गया था कि अभी गरमी नही, वसन्त है, पूरे जोर से तप रहा था। आयकीज अपने घोडे बायचीवार पर कई किलोमीटर का सफर तय कर जिले मे लौट आयी थी। उसका चेहरा जल रहा था। घोडे से उतरकर आयकीज ने उसे बाध दिया और स्वय गरमी मे लम्बे सफर के बाद हाथ-मुह धोने अहाते मे नाली के पास चली गयी। अहाते मे कुछ ठण्डक थी मन्द पर्वतीय पवन के झोके पोपलर और बेद की ताज़ा पत्तियों को हिला रहे थे, सारे अहाते मे तेज मादक सुगध फैलाते फूलो को लहका रहे थे। नाली के पास, फूलो के बीच, शहतूत की छाया मे एक चौडी लकडी की खाट बिछी थी। शीतल पानी से हाथ-मुह धोकर आयकीज खाट पर बैठ गयी और सोच मे डूब गयी गरमी के कारण थकने और तद्रिल हो जाने पर इस प्रकार निश्चल बैठकर शान्ति और ठण्डक का आनन्द लेना, पानी पर डोगियो की तरह तिरती सेब की नन्ही-नन्ही श्वेत पखडियों की ओर देखना, आराम से सोचना, यादों की दुनिया मे खो जाना कितना अच्छा लगता है!

वह नाली को ताकती हुई अपने पति आलिमजान के बारे मे सोच रही थी, पर्वतीय समीर और कल-कल करती नाली की जल-धारा मानो उसके नाली के जल सदृश निर्मल और स्वच्छ विचारो को दोहरा रहे थे, जिसके तल मे नाना रग के ककर साफ दिखाई दे रहे थे।

आलिमजान इस समय बहुत दूर था। उसने दो वर्ष पूर्व सस्थान के पत्राचार विभाग मे प्रवेश लिया था और हाल ही में उसकी आगामी परीक्षाएँ देने गया था। वह आयकीज को अकसर लिखा करता था, उसके पत्रो की प्रत्येक पक्ति उसके प्रति चिन्ता और प्रेम से ओत-प्रोत होती थी, किन्तु पत्र स्वय आलिमजान की कमी पूरी नही कर सकते थे। आयकीज को अपने पति के साथ शाम को यहा, घर मे होनेवाली लम्बी सायकालीन बातचीत, ग्राम सोवियत, कार्यालय और

उमुरजाक-अना, जिन्हे जीवन का काफी अनुभव था, और जानकार रूसी सिंचाई-विशेषज्ञ का समर्थन मिलने से आयजीज का इरादा पक्का हो गया। उसने जुराबायेव की सलाह ली और उन्होंने रिमनोव व पोगोदिन को, जिसे कुछ समय पूर्व ही मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन डिरेक्टर नियुक्त किया गया था, जिला समिति के ब्यूरो के सामने अनछुई धरती को कृषि योग्य बनाने और पहाड़ी गांवों के सामूहिक किसानों के नयी जमीनों पर पुनर्वासन की ठोस योजना तैयार करके पेश करने की जिम्मेदारी सौंप उनके साथ कर दिया। जुराबायेव के अनुरोध पर डिजाइन-इंजीनियरों के एक दल को इन उत्साही लोगों की सहायता के लिए भेज दिया गया।

योजना तैयार हो जाने पर आयजीज, पोगोदिन और रिमनोव ने रिपोर्ट तैयार की। उस पर पहले सामूहिक फार्म के पार्टी-संगठन में विचार किया गया, तत्पश्चात्‌ – सामूहिक फार्म के कार्यालय में।

ब्यूरो व कार्यालय ने योजना को स्वीकृति प्रदान कर दी। केवल कादीरोव उदास, मौन और मन में वैर-भाव छिपाये हुए बैठा, और चहाय, बड़े उत्साह से स्तेपी को कृषि योग्य बनाने से होनेवाले लाभों के बारे में बता रही आयजीज की ओर देख रहा था। कादीरोव ने न उसके समर्थन में कुछ कहा, न ही विरोध में, बैठे-बैठे केवल यही व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी की

"चुहिया बिल में वैसे ही बड़ी मुश्किल से घुस पाती है, तिस पर उसने अपनी दुम से छलनी और बांध ली!"

आयजीज को इन शब्दों पर आश्चर्य हुआ। "नयी जमीनों को कृषि योग्य बनाने से सामूहिक फार्म को कितना फायदा होगा, इसे कादीरोव को नहीं तो और किसको समझना चाहिए," उसने सोचा। "क्या वह सचमुच अभी भी नहीं समझता कि लोगों का इससे कितना भला होगा?"

जब सामूहिक फार्म अलतीनसाय भूखण्ड को कृषि योग्य बना रहा था, कादीरोव ने व्यंग्य करने, निराशावादी भविष्यवाणियां करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और सामूहिक फार्म के किसानों के पानी खोज निकालने तथा गरमी से तड़की जमीन पर कपास पैदा करने में सन्देह भी अधिक नहीं छिपाया था। लेकिन उसकी भविष्यवाणियां सच नहीं निकलीं अलतीनसायवासियों के मैत्रीपूर्ण समूह ने अपना

[illegible] कादीरोव का दिमाग़। जब कि कादीरोव की, जिसकी प्रति-
ष्ठा सामूहिक किसानों की नज़रों में काफ़ी कम हो चुकी थी, जिसकी
सुनती नहीं। और यदि बड़े जोर से कादीरोव के पक्ष में बोलनेवाले
ज़िला कार्यकारिणी के नये अध्यक्ष मुस्तफ़ायेव ने हस्तक्षेप न किया
होता तो उसे अध्यक्ष पद से हाथ धोना पड़ सकता था। लेकिन उसके
लिए सब ठीक-ठाक हो गया और उसने शान्ति और आत्मविश्वास
फिर प्राप्त कर लिया। सामूहिक फार्म शक्ति जुटाता बढ़ता जा रहा
था क्योंकि यह कादीरोव सामूहिक फार्म का अध्यक्ष था। और
जब कभी सामूहिक फार्म की उपलब्धियों की बात छिड़ती, आत्मसन्तोष
के साथ वह कह उठता 'हमने नहर खोदी! हमने पानी दिया!'"

कादीरोव मज़बूत सामूहिक फार्म के सम्मानित अध्यक्ष पद का आदी
हो चुका था। वह दूसरों की बोई फ़सल काट रहा था, पर उसका
अन्तःकरण शान्त था वह सोचता था – आख़िर मैं खुद को सामूहिक
फार्म से अलग तो नहीं कर सकता। अन्ततः कादीरोव ने स्वयं को
यह विश्वास दिला दिया कि वह सब, जो सामूहिक फार्म के किसानों
ने किया है, उन्होंने उसके सीधे और सक्रिय सहयोग से किया है, और
पूर्णतया आश्वस्त हो गया। अब वह पहले से भी अधिक निश्चिन्त होकर
कुरसी पर जमकर बैठा था, और उसकी बात भी पहले से ज्यादा मानी
जाती थी दूसरों द्वारा की हुई मेहनत के यश का लाभ उठाकर वह
मध्यम श्रेणी के सामूहिक फार्म के अध्यक्ष से विशाल कपासोत्पादक
फार्म का सचालक बन बैठा था। उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाने से उसके
चेहरे-मोहरे में भी परिवर्तन आये काली ऊनी फौजी कमीज़ पर
बाधी जानेवाली पेटी में न जाने कितने नये छेद और करने पड़ गये
चेहरा गोल हो गया, ठोडियाँ तीन हो गयी, आखे सकरी दरारों में
बदल गयी, और उन पर लाल-लाल फूले गालो की गद्दियाँ पहले से
ऊपर चढ़ने लगी। कादीरोव का लोगो से बातचीत करने, सभाओं में
भाषण देने का तरीका भी बदल गया वह शब्दों का उच्चारण इतना
धीरे-धीरे अहंकारपूर्ण आडम्बर के साथ करता था, मानो उन्हें उधार
दे रहा हो। वैसे वह यह मानते हुए कि उसकी कृपण टिप्पणियाँ अनेक
लम्बे-लम्बे भाषणों से अधिक वज़नी होती हैं, उधार भी ज्यादा नहीं
दिया करता था।

कहने का मतलब है, कादीरोव पूरी तरह सफलता प्राप्त कर ा था।

और लोग उसके बारे मे तरह-तरह की बाते करते थे, क्योकि गो की राय स्तेपी की तरह भिन्न-भिन्न होती है उसमे कटीली ाडी भी मिल जाती है, कडवा नागदौना भी, नयनाभिराम फूल ी दिखाई देते है, हवा के झोके से नम्रतापूर्वक ज़मीन से लग जानेवाली रम घास भी अलतीनसाय में भी यही बात थी। बहुत से कहते ा कि अध्यक्ष को घमण्ड हो गया है, अपनी गलतियो के बारे मे भूल या, कादीरोव इस पर एतराज़ करता "हां, मैने गलतियां की, ह सच है! लेकिन मैने अपनी गलतिया मान ली। न जाने किस जमाने ी बाते है, किसी को याद नही है।

अध्यक्ष के अनुभव और नि स्वार्थता की प्रशसा करनेवाले चापलूसो की भी कमी नही थी। नि सन्देह कादीरोव उनमे वहम नही करता था, केवल कृपापूर्वक मुस्कराता था।

आयकीज़ को कादीरोव का आत्मसन्तोष पसन्द नही था। लेकिन साथ ही उसे खुशी भी होती थी क्योकि कादीरोव का सामूहिक फार्म की सफलताओ की डीग हाकने का अर्थ था कि वह आयकीज़ की सत्यता स्वीकार करता है। जो सपने उसके ख्याल मे असाध्य माने जाते थे उन्हे सच होना वह अपनी आखो से देख चुका था, अपनी हाल की पराजय पर सन्तोष कर बैठा था—और क्या यह सराहने लायक बात नही है? चाहे वह मोर की तरह पूँछ फैलाकर नाचता रहे, चाहे दूसरो को मिले यश के सुर्खाब के पर अपने को लगाकर सजता रहे। उसे यानी आयकीज़ को यश नही चाहिए। उसके लिए तो इतना ही काफी है कि उसका सपना सच हो गया और अब कादीरोव सरीखे लोग भी जनता की शक्ति मे विश्वास करने लगे।

उसे इस बात मे सन्देह नही था कि कादीरोव जैसी आत्माभिमानी अध्यक्ष नयी सफलताओ की आशा दिलानेवाली स्तेपी को कृषि योग्य बनाने की योजना को सहर्ष स्वीकार कर लेगा।

और इसमे आश्चर्य की कोई बात नही थी कि कादीरोव द्वारा सामूहिक फार्म के कार्यालय मे की गयी टिप्पणी से आयकीज़ परेशान हो उठी थी। यह सच है कि कादीरोव खुले आम कुछ नही कहता था,

पर आयकीज उसके छिपे हुए विरोध को महसूस कर यह अन्दाज लगा चुकी थी कि वह जिला समिति के ब्यूरो में उससे मोरचा लेगा।

वही हुआ और वह भी आलिमजान की अनुपस्थिति में। उसे आलिमजान के समर्थन और सलाह की कितनी जरूरत थी! वह यदि केवल प्रियतम को देख भी लेती, तो उसके सिर का बोझ उतर जाता उसकी आंखों के आगे घूमने लगा कि वह कैसे अपने चिन्तन और अपने विरोधियों से हुई बहस से थकी-हारी घर पहुँचेगी, और आलिमजान मन्द-मन्द मुस्कान के साथ उसका स्वागत करेगा, घबराहट में सुनाया उसका किस्सा सुनकर हौले से उसके गले में दोनों हाथ डालकर कहेगा "तुमने ठीक किया, मेरी जान तुम किसी बात की चिन्ता मत करो, तुमने ठीक किया " सचमुच, उसे उसको कुछ बताने की भी जरूरत नही पड़ती – क्योंकि अगर वह यहाँ होता, तो उसे खुद को सारी बातें मालूम होती, वह खुद उसके साथ कादीरोव से मोरचा लेता!

"साथ " कितना अद्भुत, दीप्तिमान शब्द है!

आयकीज ने एक ठण्डी सांस ली। नाली में पानी कल-कल करता कुछ अपनी ही कहे जा रहा था, पोपलरों की पत्तियाँ भोलेपन से आपस में और हवा के साथ फुसफुसाकर बातें कर रही थी। सबके अपने-अपने राज थे आयकीज भी अपने अंतरतम के बारे में सोच रही थी, उसके विचार नाली की निर्मल जल-धारा की लय में बहे जा रहे थे, और लगता था उसके साथ दूर, बहुत दूर उसके प्रियतम के, आलिमजान के पास जल्दी-जल्दी चले जा रहे हैं।

फाटक की चरमराहट ने उसके मधुर व उदास विचारों को भंग कर दिया।

"कोई है घर में? किसी को चिट्ठियां चाहिए?"

आयकीज हौले से खाट से कूदकर शहतूत की नगी टहनी जैसे दुबले-पतले किशोर डाकिये की ओर लपकी। वह एक हाथ से घंटी बजाता, आह्वान करता साइकिल लिये चल रहा था और दूसरे में चिट्ठी पकड़े हुआ था। आयकीज ने झपटकर उससे लिफाफा ले लिया, सरसरी नजर से प्रेषक का पता पढ़ा और केवल इसके बाद ही अचानक ध्यान आने पर किशोर का अभिवादन किया। वह अनुग्रहपूर्वक मुस्कराया उसने अभी स्कूल जाने की उम्र पार नहीं की थी, इसलिए आने की

मानवीय आवेगो से ऊपर समझता था। साइकिल मोड़कर वह शाही ढग से चला गया।

आयकीज़ पत्र सीने से लगाये जल्दी मे घर मे गयी। बरामदे मे पहुँचकर वह छोटी-सी मेज़ के पास बैठ गयी और बडी मुश्किल से अपनी व्याकुलता पर नियत्रण कर लिफाफा खोल लिया।

लगता था आलिमजान ने उन सब बातो का अन्दाज़ लगा लिया था, जो आयकीज़ को व्यथित कर रही थी और अपने प्यार, और प्यार की चिन्ता से उसके दिल को राहत पहुँचाने के लिए उतावला था। उसने उनके हाल, आयकीज़ और उमूरज़ाक-अता के स्वास्थ्य के बारे मे काफी जिज्ञासा प्रकट की थी, पढाई से सबधित अपने निर्णय मे उसका समर्थन करने के लिए पत्नी को धन्यवाद दिया था, लिखा था कि इस समय उसे मुश्किल भी लगती है और खुशी भी होती है, आयकीज़ से बिछोह की शिकायत भी की थी और अन्त मे "स्तेपी-वाली" योजना के परिणाम और उस पर जिला समिति के ब्यूरो मे हुई बहस के बारे मे यथासम्भव विस्तार से लिखने का अनुरोध किया था।

लिफाफे मे आलिमजान का फोटो भी था। आयकीज देर तक उसे देखती रही। लगा जैसे आलिमजान इस दौरान मे कुछ जवान हो गया है। लगता था पढाई ने न उसकी नीन्द खराब की थी न ही भूख बिगाडी थी। आयकीज़ ने शरारती ढग से आख दबाते हुए सिर हिलाया और फोटो को उगली से धमकाया "क्यो, प्यारे पतिदेव, शहर मे कहीं मटरगश्ती तो नही कर रहे हो, बेकार के कामो मे तो वक्त बरबाद नही कर रहे हो?" पर तुरन्त हस भी पडी उसे यह अटकल इतनी अविश्वसनीय लगी। और किसी पर भी चचल होने का सन्देह किया जा सकता था, पर आलिमजान पर कदापि नही। कभी-कभी तो वह आवश्यकता से अधिक गम्भीर हो उठता था और सयमी भी। क्योंकि पुरुष से अपनी भावनाओ के मामले मे सयमी होने की अपेक्षा की ही जाती है।

आयकीज़ को स्मरण हो आया कि एक बार पतझड मे, उन दोनो की शादी के तुरत बाद, वह कैसे आलिमजान को एकान्त चश्मे शीरी-बुलाक के पास खीच ले गयी थी। वह उसका सबसे प्रिय स्थान था।

"नही चाहते, तो न सही। मै अकेली चली जाऊँगी।" आलिमजान हँस पडा।

"नन्ही मुन्नी हो! बिलकुल मुन्नी! लो बुरा ही मान बैठी। मुह फुला लिया। यह वही आयकीज है, जिसके नाम से नौकरशाह घबराते है! तुम मुलाकातियो के साथ इसी तरह पेश आती हो?"

"जैसा दिल चाहता है, वैसे ही पेश आती हूँ।"

"बडा जोशीला और बेचैन दिल है तुम्हारा! "

आलिमजान प्रेमपूर्वक टकटकी बाधे पत्नी को देखता रहा। पिछले कुछ महीनो मे कितनी खिल उठी है! चेहरा भर गया है, रग पहले से अधिक निर्मल हो गया है, निखर आया है, और चेहरा तो इसके कारण मानो दमक रहा है सीधी-सादी चुस्त पोशाक उसके शरीर पर ठीक बैठी है, जिसमे नारी-सुलभ सौष्ठव स्पष्ट रूप मे कुछ उभर आया है। और आयकीज़ की चेष्टाओ, उसकी हर हरकत मे पहले जैसी किशोरावस्था-सुलभ जल्दबाजी झलकती रहती है, जिसे वह अपनी बाह्य शान्तचित्तता की आड मे हमेशा छिपा पाने मे असफल रहती है।

आलिमजान ने पत्नी को अपनी ओर खीचा।

"चलो। जिधर कहोगी, उधर ही चलेगे।" बडी मुश्किल से उलझन पर काबू पा धीरे से आगे बोला। "तुम्हारे लिए मै सब कुछ करने को तैयार हूँ मेरी प्यारी "

आयकीज का मन तुरन्त खिल उठा। हमेशा ऐसा ही होता आलिमजान का अपने प्यार का नाम लेने की देर होती कि आयकीज़ अपनी हाल की नाराजगी, सन्देह और थकान सब भूल जाती इस समय भी उसकी आखो मे शरारत की चमक दिखाई दी, उसने आलमिजान का हाथ और कसकर पकड लिया और जब वे अहाते से बाहर निकले, तो उसे छोडकर शरारती ढग से चिल्लायी

"चलो, पकडो! "

"आयकीज! बाहर लोग होगे! "

"पकडो, डरपोक!"

वह रास्ते मे सरपट भाग चली। आलिमजान की आशका के विपरीत बाहर कोई नही था, हालाकि सन्ध्या गाव मे सुहानी, तेज गति से प्रवेश करने ही लगी थी।

"नही, नही, आयकीज। सुख तो मुझे तुमने दिया है। लेकिन मुझे मुझे इसे शब्दो मे व्यक्त करना नही आता।"

वे काफी देर गये घर लौटे, सडक पर धीरे-धीरे, मौन चलते रहे, और सुखी, गम्भीर, कृतज्ञ आलिमजान पत्नी की कमर मे हाथ डाले चलता रहा आयकीज़ ने उसे अपने स्त्री-सुलभ निष्कपट उत्साह से प्रभावित कर दिया था और उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो आज उनके प्रेम की पवित्र, उत्तप्त ज्वाला पहली बार प्रज्वलित हो उठी है, जिसे न कोई हवा बुझा सकती है, न कोई तूफान।

और इस समय वह चित्र से देख रहा था, और आयकीज़ उसे अपने प्रेम के बारे मे बता रही थी "आलिमजान! मेरे वफादार! मुझे तुम्हारी हर बात प्यारी है–तुम्हारा शर्मीला प्यार भी, तुम्हारा सयम भी, तुम्हारी गम्भीरता भी। यदि तुम इसके विपरीत होते–तो मैं भी तुम्हे इस तरह सच्चे दिल मे प्यार नही करती। आलिमजान! तुम्हारा नाम लेने मुझे कितनी खुशी होती है! देखो, मै अपने मन मे फिर तुम्हारा नाम ले रही हूँ आलिमजान, आलिमजान! – मेरे दिल का कवल खिल उठा, चारो तरफ और उजाला हो उठा, मन करता है छलागे लगाती शीरी-बुलाक पर पहुँच जाऊँ, लोगो की ओर देख-देख मुस्कराऊँ, मेरा दिल चाहता है कि दुनिया मे सब खुश और सुखी रहे, कठिन मे कठिन काम करने को मन करता है, तुम्हारा प्रेम और सहारा पाने को, और तुम्हारे मुह से प्रशसा सुनने को

तुम्हारी याद मे मै कितना तडपती हूँ, मेरे विश्वसनीय आलिमजान, मेरी आखो के नूर, मेरे सबमे विश्वस्त, चट्टान सरीखे मज़बूत सहारे!

मै जानती हूँ, तुम न मुझे धोखा दोगे, न अपने उच्च लक्ष्य को। मुझे तुम्हे शीघ्रातिशीघ्र उत्तर देना चाहिए, तुम्हे मेरी–नही, हमारी सफलता के समाचार से खुश कर देना चाहिए! "

आयकीज़ ने खीजकर पति का फोटो एक तरफ रख दिया और पत्र लिखने बैठ गयी। वह कुछ समय तक अभी ठण्डा न हो पाया गाल छोटी-सी ठोस मुट्ठी पर टिकाये, ब्यूरो की बैठक का सारा ब्योरा विस्तार मे याद करने की कोशिश करती बैठी रही क्योकि पति को लिखे जानेवाले पत्र मे कोई भी बात नही छोडी जा सकती थी! कलम कागज पर तेज़ी से और पूरे आत्मविश्वास के साथ चलने लगी।

पत्र

मेरे प्यारे, मेरे अपने [illegible]!

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला और इसके साथ ही तुम्हारा फोटो भी। तुमने जैसे देख लिया कि मुझे तुम्हारे पत्र की इसी समय कितनी ज़रूरत है – कितने सहृदय और समझदार हो! निश्चय तुमने स्वयं अन्दाज़ लगा ही लिया होगा कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ कितनी बेताबी से तुम्हारे लौटने का इन्तज़ार कर रही हूँ। बेहतर होगा मैं तुम्हें बता दूँ कि बिना [illegible] के हमारी नयी योजना पर अमल कैसे हुई। मेरे भेजे तार से तुम जान गये होगे कि हमारी योजना स्वीकृत हो चुकी है। लेकिन सब वैसे नहीं हुआ जैसे हम दोनों ने सोचा था। इसका सारा ब्योरा तुम्हें बताने की कोशिश करती हूँ। तुम ज़रा धीरज धरे रहना क्योंकि मैं तुम्हें इतना लम्बा पत्र लिखने जा रही हूँ जैसा मैंने पहले कभी नहीं लिखा। इतनी बातें बताने को मन करता है तुम्हें, प्रियतम!

ब्यूरो के सदस्य सदा की तरह तुरगायेव के कमरे में इकट्ठे हुए। तुम उस कमरे को शायद पहचान न पाओगे, उसमें हाल ही में मरम्मत की गयी है, उसमें से सारी फालतू चीज़ें निकाल दी गयी हैं, वह पहले से ज्यादा लम्बा-चौड़ा और उजला लगने लगा है। दीवारों पर तसवीरें टाग दी गयी है। कोने में किताबों की पुरानी अलमारी के पास कपास का बहुत बड़ा पौधा रखा है। कमरे के बीचोबीच दो मेज़ें हैं, वे साथ रखी हुई लम्बे हत्थेवाली हथौड़ी जैसी लगती हैं। उनमें से एक पर जो कुछ लम्बी है, गहरे लाल रंग की नयी बनात बिछी है इससे कमरा त्योहार के लिए सजा हुआ-सा लगता है।

सेबों की टहनियां खिड़कियों पर खट-खट कर रही थीं सड़क की ओर खुलनेवाली खिड़की से धूप में नहाया चौक और कतारों में खड़ी कारें दिखाई दे रही थीं। बाहर से वसन्त की सुगन्ध आ रही थी, दिल में भी वसन्त की उमंग भरी थी, इसके साथ-साथ

कमरे मे ब्यूरो के मदस्यो के अतिरिक्त अलतीनसाय के मामूहिक फार्मो के अध्यक्ष, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के निदेशक और कृषिविद, डिज़ाइन इजीनियर और जल-आपूर्ति विभाग के कर्मी एकत्र हुए थे।

अछूती भूमि को कृषि योग्य बनाने की योजना की रिपोर्ट स्मिर्नोव पेश कर रहे थे। उनके मुह से पहले शब्द निकलते ही मबके हाथ मे नोटबुकें सरमरा उठी स्मिर्नोव के भाषण मे सबकी दिलचस्पी थी।

"तुम उनका भाषण देने का तरीका तो जानते हो हो," आयकीज ने मौजन्य के माथ व्यग्य करते हुए लिखा, "वह ऐमे बोलते है मानो किमी मे बहस कर रहे हो। ऐसा ही तब हुआ उन्होंने मफेद झक रूमाल से चश्मा पोछकर युयुत्सु रूप धारण कर लिया और हमला बोल दिया।"

आयकीज ने आगे इजीनियर का भाषण विस्तार मे उद्धृत किया

"माथियो!" स्मिर्नोव ने आरम्भ किया। "हम यह योजना लेकर आपके पास आज ही क्यों आये हैं? हमे अछूती धरती का ख़याल पहले, कुछ वर्ष पूर्व क्यो नही आया? बात यही थी कि हम मोचते रहे थे, पर हमारे विचार जाडे के मूरज की तरह चमकते थे, गरमी नही देते थे। हमारा इलाका, – यह आप भी अच्छी तरह जानते हैं, – पानी की किल्लत मे परेशान है। और हमने कुछ ही दिन पहले हमला बोलकर पहाडी नदियो मे हमारे खेतों के लिए पानी हासिल किया है। लेकिन अगर पहले ज़मीन पानी की कमी से बेकार पडी रहती थी, तो अब पानी ज़मीन की कमी मे बेकार जा रहा है। जिन्दगी मे हमेशा ऐसा ही होता आया है हर चीज एक दूमरे मे जुडी है, सपने सच होते है और उनके सच होने ही नया सपना पैदा हो जाता है। और भविष्य की ओर अग्रसर होने के हमारे मार्ग मे कोई पडाव नही है।

स्मिर्नोव की नज़रे अचानक कुछ चुभती हुई हो उठी लगता था इजीनियर को किसी की सदायवादी आपत्ति मुनाई दे गयी थी। और वह व्यग्यपूर्वक आम्र दबाकर अदृश्य विरोधी को सम्बोधित कर कहने लगे

"क्यो, क्या हमे यह काम स्थगित कर देना चाहिए? अछूती भूमि को कृषि योग्य बनाने मे जल्दबाज़ी नही करनी चाहिए? क्योंकि यह गान आखिरी तो है नही, हमारे भण्डार मे, जैसा कि कवि कहते

है, अनन्त समय है। कोई बात नहीं, बेशक हम इन्तजार कर सकते हैं, वक्त बहुत है। फिर इनसान के सारे कामों में इन्तजार करना सबसे कम झंझट का काम है। लेकिन इन्तजार हम कब तक करेंगे? और हमें इन्तजार क्यों करना चाहिए? यदि हमारे भण्डार में अनन्त समय है, तो इसका अर्थ है कि हम किसी समस्या के समाधान को अनन्त काल के लिए टाल सकते हैं। नहीं, साथियो, जो निर्णय आज लिया जा सकता है, उसे आज ही लेना चाहिए। हम सोच-विचार करके, नाप-तौलकर, हिसाब लगाकर इस निर्णय पर पहुँचे हैं हां, अछूती धरती को इसी वसन्त में कृषि योग्य बनाना चाहिए। और अगले बरस ही सामूहिक फार्म पिछले बरस से ज्यादा कपास उठायेंगे। हमारे लोग बेहतर जिन्दगी जीने लगेंगे, ज्यादा खुशहाल हो जायेंगे। और हमारा देश भी ज्यादा खुशहाल हो जायेगा। क्या हमें स्वय को ही इस सम्पदा से वंचित रखने का अधिकार है?

मौन बैठे हॉल से तर्क-वितर्क कर स्मिर्नोव ने ठोस सुझाव सामने रखे पहले अलतीनसाय जलागार के बाध की ऊचाई कुछ मीटर और बढानी चाहिए और वृत्ताकार बाध का निर्माण करना चाहिए, दूसरा मुख्य कार्य – जिन जमीनो पर पहले कपास की बोवाई की जा चुकी है, उनसे लगी अछूती स्तेपी को कृषि योग्य बनाना चाहिए, और इसके परिणामस्वरूप जिले के आगे तीसरी समस्या आ खडी होती है अछूती स्तेपी में नयी बस्तियो के निर्माण और उनमे पर्वतीय गावो के किसानो के पुनर्वास की "क्योकि वहाँ जमीन की कमी है, उनकी जिन्दगी जिन्दगी नही, कमरतोड मेहनत है!"

स्मिर्नोव का सकेतक दीवार पर लटके नक्शे पर घूमने लगा। इजीनियर की बात ध्यानपूर्वक सुन रहे सब मुलाकाती सकेतक पर नजरे जमाये हुए थे। जुराबायेव सोच मे डूबे अपने समय से पूर्व खिचडी हो रहे बालो पर हाथ फेर रहे थे। पूर्ण शान्ति छायी हुई थी।

"केवल खिडकी के बाहर सेब के पेड हमे वसन्त, जोताई और बोवाई के जोरदार मौसम की याद दिलाते सरसरा रहे थे। और मुझे दूर से दिल मे उमगे जगाती ट्रैक्टर की घरघर भी सुनाई दी वही मुझे ऐसा लगा तो नही था?"

स्मिर्नोव के भावी कार्यों, ससाधनो और अनुमानित व्यय के

टेढ़ी खीर साबित हुआ था! बड़ी मुश्किल से निबटा पाये थे उसमें इनकार नहीं किया जा सकता कि काम हमने बहुत अच्छा किया। मेहनत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और नयी जमीन पर कपास पैदा की! लेकिन हम अगर रोज एक भेड़ काटते रहे, तो हमें कोई भी रेवड़ पूरा नहीं पड़ेगा! अगर हर साल कारनामे कर दिखाते रहेंगे, तो जरूर हमारी टे बोल जायेगी। आप जरा खुद ही सोचिये हम अभी दम भी नहीं ले पाये, ताकत भी नहीं बटोर पाये, अपनी मेहनत के फल का स्वाद भी नहीं चख पाये कि फिर से आस्तीनें ऊँची कर काम में जुटना पड़ रहा है! हो सकता है उमूरजाकोवा को हवाई किले बनाने में मजा आता है। वह आपसे आसमान के तारे तोड़ लाने का वादा कर सकती है! लेकिन हम व्यवहारकुशल लोग हैं, न कि स्वप्नदर्शी। हम दुनिया में उमूरजाकोवा से कुछ ज्यादा ही दिन जी चुके हैं, हर तरह की ज़िन्दगी देख चुके हैं और हर सुनहरे सपने को पहले चखकर देखते हैं कहीं झूठा तो नहीं है? आखिर हर चमकनेवाली चीज सोना तो होती नहीं है।" वक्ता ने रूमाल से माटी लाल गरदन पोंछी और दम लेकर आगे बोलने लगा "बेशक मैं अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने के विरुद्ध नहीं हूँ, साथियो। लेकिन अछूती धरती आपके लिए अलतीनसाय भूखण्ड नहीं है उस पर एक ही झपट्टे में काबू नहीं किया जा सकता! अगर वहाँ की जमीन उपजाऊ भी हुई,—वैसे इसमें बहुत से लोगों को शक है,—तो भी हम समाधन, लोग और मशीनें कहाँ से लायेंगे? मैं अभी सामूहिक किसानों के पुनर्वास की बात नहीं कर रहा हूँ। लोगों को आप बहुत कम जानती हैं, कामरेड उमूरजाकोवा! किसान को उसके पुरखों की जमीन से हटाना इतना आसान काम नहीं है। इसके अलावा, जहाँ तक मैं समझता हूँ, उनके लिए नयी बस्ती भी बनानी पड़ेगी, क्यों? क्यों न हम आज ही कम्युनिज्म का निर्माण कर डालें, जिससे कि काम में देर न हो? क्यों, कामरेड उमूरजाकोवा? आपको वही समस्याएँ कम लगती हैं, जो आज हमारे सामने हैं, आप उन्हें आनेवाले कल से उधार ले लेना चाहती हैं? लेकिन आनेवाले कल को लाने की जल्दी नहीं मचानी चाहिए, वह खुद हमारे पास आ जायेगा! मैं आपको यह बताये देता हूँ, प्यारे साथियो, कि हमें अपने ही बूते पर काम करना चाहिए।

मुद्रा करे, हम यह योजना पूरी कर ले। पर अछूती भूमि के मामले मे हमे इन्तज़ार करना पडेगा। आखिर हम जिन्दगी का आखिरी दिन तो जी नही रहे है।

"कहने का मतलब है कादीरोव अपना पुराना राग अलापने लगा। वह न जाने क्यो हर बार मुझे ही सम्बोधित कर रहा था, जिस पर "आप" कहकर, लेकिन मुझे उसके अप्रत्याशित हमलो पर गुस्सा नही आया। मुझे खेद इस बात का है कि मेरा अनुमान गलत निकला। मैने सोचा था कि कादीरोव अब हमारे साथ है, पर वह फिर झगडने को तैयार हो गया। मेरी समझ मे नही आता, क्यो "

चार

मतभेद

पत्र मे कादीरोव का व्यवहार समझाना आयकीज के लिए मुश्किल हो रहा था, क्योकि वह नही जानती थी कि अध्यक्ष के हृदय मे कैसी भावनाओ ने तूफान मचा रखा है

जब आयकीज ने बोलने की अनुमति मागी, कादीरोव और ज्यादा लाल हो उठा लग रहा था उसके फूले हुए गालो, सफाचट, बिलियर्ड के गेद जैसी चिकनी खोपडी से गाढा लाल रग बस टपकने ही वाला है। उसने ज़िला कार्यकारिणी के अध्यक्ष सुलतानोव पर नज़र डाली, जो अपनी नोटबुक मे कुछ लिख रहा था, फिर जूरावायेव की ओर देखने लगा। ज़िला समिति के सचिव व्यवस्था बनाये रखने के लिए (हालाकि कमरे मे वैसे ही शान्ति थी) सगमरमर के पेपरवेट पर पेन की नोक से खटखटाने लगे और फिर आयकीज की ओर देख प्रोत्साहक मुद्रा मे सिर हिलाया। कादीरोव ने मेज़ पर बैल की तरह सिर झुका लिया, मानो उसे मार पडनेवाली हो

आयकीज ने उठकर अपनी मोटी काली चोटी पीछे की। उसकी किंचित् आगे को निकली हुई आकृति मे उडान के लिए तत्पर पक्षी

जैसा महत्त्वपूर्ण आदेश महसूस हो रहा था। सारे साल हो ... के किन्तु स्वर शान्त और शान्त रहा

"मैं यह कहता हूँ साथियो कि कामरेड कादीरोव के भाषण से मुझे हैरानी हुई है। और किसी को न सही, लेकिन शायद उन्हें तो मालूम ही है कि आनेवाले कल को जल्दी लाने उज्ज्वल भविष्य को निकट लाने के प्रयास में क्या-क्या सफलताएँ प्राप्त की जा सकती है अगर हम हिम्मत हारकर दूरदर्शिता से काम न करते, हाथ पर हाथ धरे मुह बाये बैठे रहते, तो किज़िल युल्दुज़* सामूहिक फार्म इस समय यहाँ पैदा नहीं हुई होती सामूहिक किसानों के घरों में वृद्धि नहीं हुई होती और कामरेड कादीरोव काफी लम्बे अर्से तक मध्यम श्रेणी के सामूहिक फार्म के अध्यक्ष रहे होते। कादीरोव ने कहा है कि वह स्वप्नदर्शी नहीं व्यवहारकुशल है। लेकिन हम व्यवहारकुशल भी है और स्वप्नदर्शी भी! हम आशावादी है! और हम अछूती भूमि को कृषि योग्य बना देंगे, साथियो! क्योंकि इन वीरान उजाड़ और अभी तक बेकार पड़ी ज़मीनों की ओर देखने दिल दुखता है!"

कादीरोव ने आयकीज की ओर कठोर व तिरछी दृष्टि डाली।

"सस्ते में नाम कमाना चाहती है, कामरेड उमूरज़ाकोवा? आदर्श वालों से तो लगता है सिर्फ हमारी स्तेपी ही नहीं एक ही बार में सारा रेगिस्तान को कृषि योग्य बनाया जा सकता है! लेकिन हलवा-हलवा कहने से मुह कहीं मीठा होता है!"

"क्या आप अछूती स्तेपी में अक्सर जाते रहे है, आदरणीय व्यवहारकुशल कामरेड?" आयकीज उबल पड़ी। "आपको उसकी उर्वरता में सन्देह है लेकिन हम मिट्टी का विश्लेषण करवाकर परिणाम प्राप्त कर चुके है, हमें अफसोस हुआ कि ऐसी सम्पदा इतने समय तक बेकार पड़ी रही! वहा की स्तेपी कालीन जैसी समतल है, मशीनों द्वारा आसानी से उसकी जोताई की जा सकती है। और यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है! क्योंकि हमारे यहा मशीनरी बराबर बढ़ती ही जा रही है हम जल्दी ही सारे मुख्य कामो का मशीनीकरण करने मे सफल हो जायेगे। सिंचाई निर्माण कार्य आज भी मशीनो की सहायता से किया जा

---

* किज़िल युल्दुज़ – लाल तारा।

रहा है। मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन बहुत से कामों में हमारा हाथ बटायेगा। क्योंकि वास्तव में उसे ही अछूती धरती की जोताई करनी होगी।

"यही तो, यही तो!" कादीरोव चिल्लाया, मानो उसने आयक्वीज़ की कोई कमजोरी पकड़ ली हो। "मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनवालों को तो फायदा ही है हेक्टेयर पर हेक्टेयर जोतते रहेंगे! पोगोदिन चाहे सारे देश की जोताई कर डाले, उसका कुछ जाता है इसमें!"

"आप कामरेड पोगोदिन की बेकार बुराई कर रहे है," आयक्वीज़ ने शान्त स्वर में आपत्ति की। "वह सार्वजनिक हित के लिए मन लगाकर काम करनेवाले निदेशक के रूप में मशहूर हैं। और इस मामले में मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के हित हमारे सामूहिक फार्मों के हितों में हैं। इसलिए बेशक मशीनें हमें मिल जायेंगी। और कामगार लेकिन यह तो आप ही पर निर्भर करता है, कामरेड कादीरोव। आप हालात को इस तरह पेश कर रहे है, जैसे हमारा सामूहिक फार्म पस्त हो गया हो! आपको हो क्या गया है, प्रिय अध्यक्ष? हमारी शक्ति अक्षय है, समाप्त नहीं हो सकती, उसे बस नजरअन्दाज किया जा सकता है। हाँ, हाँ, हमारे पाँव तले सोना ही सोना है, पर हम उसे नज़रअन्दाज कर बैठते हैं। तिस पर शिकायत भी करते रहते हैं हम कमजोर हैं, हम गरीब हैं। बस आखे पूरी खोलकर देखने की देर है कि मालूम पड़ेगा – हम विपुल सम्पदा के स्वामी हैं। कामरेड कादीरोव, आपके सामूहिक फार्म के श्रम-समर्थ सदस्यों में प्रति व्यक्ति कितने हेक्टेयर कपास होती है?"

"औपचारिक रूप से – चौथाई हेक्टेयर।"

"लेकिन वास्तव में इससे ज्यादा है ना?"

"हमें ज्यादा की जरूरत नहीं है, सबका वैसे ही काम के मारे नाक में दम है!"

"यानी हमारी और आपकी श्रम-व्यवस्था में गड़बड़ है। आपको तो मालूम ही है कि *मिर्ज़ाचूल* * में प्रति व्यक्ति क्षेत्रफल दो-तीन हेक्टेयर आता है, पर अभी तक कोई नहीं थका। लेकिन वहाँ के सामूहिक किसानों के श्रम-दिन भी हमारे यहाँ से ज्यादा हैं और उनकी अतिरिक्त

* मिर्ज़ाचूल – भूखी स्तेपी।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सिर्फ इच्छा से कुछ नहीं होता, कादीरोव ने कह डाला।

लेकिन इच्छा पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है — यह भूलना नहीं चाहिए! हर कार्य में सफलता का आधार अपनी ही इच्छा [illegible] विजय का [illegible] संकल्प ही होता है!

मैंने भाषण शायद अच्छा नहीं दिया, आयकीज़ ने आलिमजान को लिखे पत्र में दुःख प्रकट किया। शायद वैसा नहीं जैसा कि मैं चाहती थी। बड़ी अजीब बात है, किसी व्यक्ति से आमने-सामने बात की जाती है तो दिल से निकलनेवाले सीधे-सादे शब्द सूझने लगते हैं। लेकिन सभा को किसी बात का कायल करना शुरू करते ही ऐसा महसूस होने लगता है, नहीं, यह वैसा नहीं है, वैसा नहीं है! अपनी कोई बात कहना चाहती हो, पर मुंह से पिटी-पिटायी बातें निकलने लगती हैं। लेकिन मैं भाषण देना सीख लूंगी, सच कहती हूं, सीख लूंगी, किसी भी कीमत पर! तुम्हारी पत्नी असली वक्ता बनेगी, केवल जब तुम्हें देखूंगी, तो खुशी के मारे मुंह से एक शब्द भी नहीं निकाल सकूंगी। वैसे ही चुप्पी साधे रहूंगी, जैसे तब, जब हम चश्मे से घर लौट रहे थे। याद है? शोरीबुलाक तुम्हारी याद में तड़प रहा है आलिमजान! "

किन्तु आयकीज़ की अपनी वक्तृत्व-कला के बारे में कैसी भी राय क्यों न रही हो, उसके भाषण के समय कादीरोव कभी उबलता रहा

तो कभी ठण्डा होता रहा। वह आयकीज़ के साथ बहस नहीं कर रहा था, केवल उसे टोक रहा था, और उसकी आकस्मिक टिप्पणियां उसकी खीज और आत्मसन्देह की गवाही दे रही थीं। वह कनखियों से एकत्र लोगों पर नज़र रख रहा था उन पर इस सबकी क्या प्रतिक्रिया हो रही है? फिर भी सच्ची रुचि उसे केवल ज़िला कार्यकारिणी के अध्यक्ष मुलतानोव और ज़ूराबायेव की रायों में ही थी।

मुलतानोव रहस्यमय ढंग से पेश आ रहा था उसने लिखना बंद कर दिया और आराम से कुरसी की पीठ पर टिके सबकी ओर उत्सर्ग भावना से और साथ ही कुछ सहानुभूतिपूर्ण हितैषिता से देखने लगा – जितना जी में आये, कहते रहिये, लेकिन होगा यह सब बेकार ही। वह शान्त और कृपालु लग रहा था किन्तु कादीरोव यह न भांप सका कि इस शान्ति के पीछे क्या छिपा है। अपनी विनोदी आंखें कादीरोव – वह चुप्पी साधे बैठा था, और इस पर शायद मुलतानोव को हंसी आ रही थी, – पर टिकाये ज़िला कार्यकारिणी के अध्यक्ष ने आंखें चौंधिया देनेवाली मुस्कान में अपने सफ़ेद झक दमकते दांत निकाल दिये, किन्तु कादीरोव फिर इस मुस्कान का अर्थ न समझ सका। ज़ूराबायेव भी शान्त दिखाई दे रहे थे पर यह गम्भीर और एकाग्रचित्त शान्ति थी। कादीरोव को यह आश्चर्यजनक लगा कि ज़ूराबायेव ने उसे एक बार भी नहीं रोका, हालांकि अन्य बैठकों के अनुभव के आधार पर कहा जा सकता था कि उन्हें वक्ता को टोकना बिलकुल भी सहन नहीं होता था, और किसी के अपने स्थान से कोई असंयत टिप्पणी करने की देर होती कि ज़िला समिति के सचिव का पेन सुराही, पेपरवेट या दावात पर ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने लगता था। ज़ूराबायेव की आज की शालीनता क्या शुभ लक्षण है? हर हालत में इसका फ़ायदा उठाना चाहिए, और जब आयकीज़ ने पुनर्वास के प्रश्न की चर्चा छेड़ी, कादीरोव उसका विरोध करने के लिए उठ खड़ा हुआ। ज़ुराबायेव ने सिर हिलाया बोलिये, सुन रहे हैं लेकिन कादीरोव इससे केवल घबरा ही गया और फिर कुरसी पर बैठकर उदास स्वर में बुदबुदाया

"आपके हिसाब से ये पुनर्वासी कौन हैं, कामरेड उमूरज़ाकोवा? क्या सुगनअली जैसे लोग? कुछ विश्वास नहीं होता "

३*

[illegible]

है हमारी जिन्दगी म हर चीज एक दूसरे से जुडी है इसी तरह जीवन ही सारा देश भूकल लगता है। सभी किसानो का बेहतर जिन्दगी जीने के लिए आह्वान कर रही है और सचाई से कौन इनकार करेगा? हम भी आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर देख रहे है। और कामरेड कादीरोव यदि आप हमारे अतीत को याद कर ले तो बुरा नही रहेगा। आपको तब भी हर बात मे सन्देह रहता था। बीती याद करके देखिए शायद उस समय का कादीरोव आपको अपनी गलतिया बता दे आज वह अनुभव को आपके साथ बाट ले। उससे दिल खोलकर बात कीजिये'

भायजोव का चेहरा लाल हो उठा उसकी आखे किसी अन्तर्निहित शक्ति से चमक उठी और उसके शब्दो मे बाध्य आत्मविश्वास झलकने लगा। वह महसूस करने लगी कि लोग उसकी बात ध्यानपूर्वक सुन रहे है और उसका समर्थन भी कर रहे है।

कादीरोव ने फौजी कमीज का गरेबान खोल लिया। वही हुआ जिसका उसे पूर्वाभास हो रहा था! उसकी पिछली गलतियो के ताने मारे जाने लगे है! अभी कहेगे कि वे उसे कोई सबक नही सिखा सके, कि उसने अपने पुराने सबको से कोई निष्कर्ष नहीं निकाला भाड मे जाये ये सारे चचल आविष्कारक! चैन से बैठ ही नही सकते! सब कितना अच्छा चल रहा था! ठीक है, कुछ बरस पहले उससे गलती हो गयी थी, पर बाद मे उसने प्रायश्चित कर लिया था, और अब उसे लग रहा था कि उसकी सारी परेशानिया दूर हो चुकी हैं। सामूहिक फार्म जिले मे अग्रणी फार्मों मे गिना जाने लगा है, अध्यक्ष का सर्वत्र सम्मान होता है, – बस जियो और खुशिया मनाओ। किसी

ने ठीक ही कहा है आधी छोड़ पूरी को धावे, आधी रहे, न पूरी पावे। फिर जोखिम के काम मे हाथ डालने से कभी भला हो भी सकेगा? एक बार तो सफल हो गया, पर दूसरी बार बिगड भी सकता है। सामूहिक किसान अब गरीब नही है। सामूहिक फार्म मातृभूमि को भी लाभ पहुँचा रहा है। लेकिन नही! इस आयकीज़ के लिए तो यह भी कम है! नौबढ़!

लेकिन ब्यूरो के सदस्य उसकी बात ध्यानपूर्वक सुनते हैं, पसन्द करते है। जूराबायेव के सामने हमेशा की तरह नोटो का ढेर नही दिखाई दे रहा है क्या किसी का भाषण देने का इरादा नही है? सारी बात इन अक्लमदो की समझ मे आ गयी है! या फिर मै भी उमुर-ज़ाकोवा का समर्थन करूँ? वे अछूती धरती को कृषि योग्य बना देगे, और तब सारे प्रान्त, सारे जनतत्र मे कादीरोव की धूम मच जायेगी! हा, अगर वे इस अछूती धरती को कृषि योग्य बना ले यदि न बना सके, तो? कामो का तो वैसे ही सिर पर बोझ चढा है, सिर उठाने तक की फुरसत नही मिलती। और तिस पर ये नयी झझटे, नयी जिम्मेदारिया। काम नही चल पाया, तो उससे, कादीरोव से जवाब तलब किया जायेगा। नही, जोखिम नही उठानी चाहिए। जोखिम आयकीज़ ही उठाती रहे, उसे सूझेगा भी नही कि वह ठोकर भी खा सकती है। इससे बस कादीरोव का फायदा ही होगा हूँ लेकिन उन्होंने अपनी ठानी कर दिखायी, तो? किस्मत उनका पहले भी साथ दे चुकी है मुलतानोव का शुक्रिया अदा करना चाहिए, उसी ने तब कादीरोव को बचाया था। लेकिन अब उसका बिलकुल भी लिहाज़ नही किया जायेगा, अध्यक्ष की कुर्सी से वह दूध की मक्खी की तरह निकाल दिया जायेगा! आखिर ये आविष्कारक आते कहाँ से हैं? परती पड़े खेत मे वे खरपतवार की तरह कितने सारे हो गये हैं। सब के सब बस आगे बढ़ने के सपने ही देखते रहते हैं। इसलिए तो अपनी योजनाए लिये घूमते रहते हैं। क्या कहा था मुलतानोव ने एक बार उनके बारे मे? "नाम के भूखे! " वे जानते है कि कादीरोव जोखिम उठानेवालो मे से नही है, इसलिए उसे पीछे छोड़ने का फैसला कर चुके हैं। लेकिन कादीरोव किसी के साथ सत्ता नही बाटना चाहता। वह इस बात का आदी हो चुका है कि सामूहिक किसान उससे मुलाकात

होने पर "गनाम, माननीय अध्यक्ष!" कहकर आदरपूर्वक दिल पर हाथ रखे। वह अपने मित्र-मण्डली में अपने सामूहिक फार्म के बारे में अधिकारपूर्वक राय देने का अभ्यस्त हो चुका है। वह अपने कैबिनेट, अध्यक्ष की पुरानी मेज-कुरसी, अपने खेतों का, जिनमें वह एकमात्र स्वामी की तरह धीरे-धीरे और आत्मविश्वास के साथ सलाह देता, आदेश देता, जल्दी करने को कहता चलता है वह अड़ जायेगा, पर अध्यक्ष का पद कभी नहीं छोड़ेगा। हम अभी और जोर आजमायेंगे, कामरेड उमूर्जाकोवा। देखते हैं किसका पलड़ा भारी पड़ता है! वहां "ऊपरवालों" को इन जोशीले "नेताओं" की कारिस्तानी की खबर तक नहीं है। और पता नहीं इसका कैसा स्वागत करेंगे। इसके अलावा कादीरोव अकेला तो है नहीं, उसकी पीठ पर जिला कार्यकारिणी के अध्यक्ष जैसा पहाड़ है। लेकिन वह चुप क्यों है? क्योंकि यदि ब्यूरो ने इस योजना को स्वीकृति दे दी, तो उसे भी मुश्किल होगी। इन्हें रोकना चाहिए, वरना सब बरबाद हो जायेगा। अकेला कादीरोव उनसे नहीं निबट पायेगा आयकीज से वह उलझ चुका है, पर तमाचे उसी के मुंह पर पड़े। कादीरोव ने गाल छूकर भी देखा उफ, जल रहा है! वह महसूस कर रहा था कि मौका उसके हाथ से निकलता जा रहा है, उसकी मुखमुद्रा मन की घबराहट की गवाही दे रही थी मर्ज लाख छिपाइये, हरारत उसकी पोल खोल ही देती है!

उसी समय कादीरोव के पास उसको भेजा हुआ नोट खिसका दिया गया। उसने मुलतानोव की ओर देखा, मुलतानोव ने चुपके से सिर हिलाया और अनुग्रहपूर्वक मुस्कराया, उसमें आत्मविश्वासपूर्ण टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट में कुछ शब्द लिखे थे "क्या खयाल है – ये लोग स्वार्थ-जीवी है या अदूरदर्शी मनसूबेबाज?"

यह बताना जरूरी है कि जिला कार्यकारिणी का अध्यक्ष कादीरोव का रक्षक ही नहीं, बल्कि उसका मित्र भी था। असल में यह बराबरी की दोस्ती नहीं थी एक ओर से कृपा-भाव से कधा थपथपाना, दूसरी ओर से – जीहुजूरी की पुरजोर कोशिशें, इसके बावजूद इस दोस्ती का आधार बहुत ठोस था – हितों का समन्वय। मुलतानोव को कादीरोव की जरूरत थी, कादीरोव को – मुलतानोव की, और दोनों एक दूसरे के लिए भरोसेमंद सहारे का काम करते थे। मुलतानोव ने अभागे

अध्यक्ष को एक बार बचाकर उसके रूप में अपना एक वफादार समर्थक पा लिया था। सुलतानोव का आभारी कादीरोव उसे "उच्च अधिकारियों" में अपने पक्के सरक्षक के रूप में देखता था। वह हृदय से सुलतानोव की वक्तृत्व-कला, कठिन से कठिन परिस्थिति में सौजन्यता व गरिमा बनाये रखने की दक्षता, उसके व्यग्यपूर्ण व अपने प्रति सम्मान से परिपूर्ण लहजे का प्रशंसक था। लोगो से बातचीत करते समय कादीरोव अनजाने में सुलतानोव की प्रिय चेष्टाओ, तकिया-कलामों का इस्तेमाल करता रहता था और कुछ अरसे से उसके नाम का हवाला भी दिया करने लगा था "कामरेड सुलतानोव ने यह कहा था ", "कामरेड सुलतानोव ने यह आदेश दिया था।"

वह सुलतानोव के इशारे फौरन समझ जाता था और अब उसका नोट पाकर उसने कधे सीधे किये, सिर उठाया, कुर्सी पर आराम से बैठ गया। आयकीज बस्ती के निर्माण के समाधनों, मक्कार द्वारा नये अधिवासियो को दी जानेवाली सहायता, निर्माण-टोलियों की समस्याओं के बारे में कुछ कह रही थी। लेकिन कादीरोव अब उसकी बात नही सुन रहा था। जिले की सर्वेसर्वा वह नही, सुलतानोव है, और उसी का निर्णय अन्तिम होगा। सुलतानोव जानता है कि क्या करना चाहिए, सुलतानोव विशेषज्ञ है, अनुभवी है, वह इस नौबढ की शेखी किरकिरी कर देगा!

कादीरोव ने राहत की सास लेकर नोट सीने की जेब में रख लिया। उसमे मानो प्रभुता की गरमी निकल रही हो और उसके दिल को आराम पहुँच रहा हो। वह आयकीज़ के बाद बोलनेवाले जिला कार्यकारिणी के अध्यक्ष के भाषण पर भले ही ध्यान नही दे रहा था, परन्तु उसके गुरु स्वर की कोमल गूज, उससे पूर्व के वक्ताओ के लिए व्यक्त किये गये व्यग्यपूर्ण अथवा द्वेषपूर्ण स्वरविन्यास ने कादीरोव का ध्यान जरूर आकृष्ट कर लिया था और वह सोच रहा था "आखिर ऐसे अधिकारी अभी भी है, जिन पर भरोसा किया जा सकता है, जिनके साथ कोई बात तय हो सकती है—क्या लिखा था उसने? —हाँ, अदूरदर्शी मनसूबेबाज़!"

और सुलतानोव इस बीच कभी नेकदिली से मुस्कराता, तो कभी व्यग्यपूर्वक, विचित्र ढग से हाथ हिलाता बडे मजे के साथ आडम्बरपूर्ण वाक्य गढे जा रहा था। उसे भाषण देने में आनन्द आता था!

कमालोव उमुरजाकोव ने सुन्दर [illegible] भाषण दिया। लेकिन उनके अनुसार सब कुछ सुगमतापूर्वक चलता है। आदि से अन्त तक कल्पनात्मक लगता है भावभरा, दिलचस्प, दिलकश! पर इन [illegible] तथा वास्तविकता से आगे बढ़कर चलने के प्रयत्न हो चुके हैं! मानो [illegible] इसे शोभा नहीं देता! बेशक गांवों का बनना ठीक है, मुझे बात अच्छी लगती है। लेकिन मैं फिर भी वास्तविकता को ज्यादा पसन्द करता हूँ न कि अतिरंजित मनसूबों को! किन्तु कार्यकारिणी के अध्यक्ष के नाते मैं स्थिति से भली भांति परिचित हूँ। उमुरजाकोव ने यहाँ हृदयग्राही तस्वीर खींचकर रख दी है पुनर्वास के लिए देने प्रार्थनापत्र नहीं बल्कि मेहमानों की स्तेपी में जल्दी से जा बसने के लिए एक दूसरे से होड़ करते सामूहिक किसान! पर वास्तविकता तो इससे बिल्कुल विपरीत है!

'स्वभाव की शक्ति को ध्यान में रखिये, साथियो! हम किसानों के दिल में घर किये हुए अपनी जमीन के टुकड़े से लगाव जैसे पुरातन को मुसलानोव ने सीधे निगाहें बिल्कुल अनदेखी नहीं कर सकते। "किसान कोई प्रवासी पक्षी नहीं है – आज यहाँ और कल वहाँ। उसकी जड़े उस जमीन में गहरी जमी हुई है, जिसे कभी उसके पुरखों ने जोता था। उसे अपना घर प्यार है, वह चाहे जितना खराब क्यों न हो। क्योंकि बदले में उसे उससे बेहतर चीज पेश नहीं की जा रही है! नयी, सर्वसुविधायुक्त बस्तियां – बेशक बहुत सुन्दर बात है। लेकिन हम उन्हें बनाने कहां जा रहे हैं? उजाड़ हवाओं के लिए चारों ओर से खुली स्तेपी में " उसने फौजी कोट का कॉलर खोलने के लिए हाथ बढ़ाया, पर तुरन्त खींच लिया। हालांकि मुसलानोव कभी मोर्चे पर नहीं रहा था, लेकिन वह युद्ध के समय से ही फौजी काट के कपड़े पहनने लगा था और उसे "फौजियों" जैसी चुस्ती और साफ-सुथरेपन का दिखावा करने का शौक था लोगों के सामने, भारी गरमी में भी उसके कोट के सारे बटन बंद रहते थे। माथे पर से गहरे काले बालों की छोटी लट झटके से पीछे कर वह उत्तरोत्तर मग्न हुआ बोलता रहा "किसी ने यह क्यों नहीं बताया कि अछूती धरती किजीलकूम का मतलब है – लू, जो अपने जलते तन से असहाय कपास को दबा देती है! रेत के बगूले, जो अपने रास्ते की हर चीज को उड़ा ले

जाते है! मैं ट्रस्ट के उन कर्मचारियों को जानता हूँ, साथियो, जिन्होंने ऐसे स्थान में आर्टीजियन कूप खोदने की योजना बनाई थी, जहाँ लोगों का नाम-निशान तक नहीं था। जमीन से पानी निकलता और तत्क्षण फिर जमीन में चला जाता था। हम कहीं ऐसे ही कर्मचारियों के अनुरूप तो नहीं होने जा रहे हैं? कपास बोने को तो हम बो देंगे, लेकिन मरु और आर्द्रता चूसा करेगी! यानी पानी बिलोना — इसे यही तो कहा जाता है, साथियो! जनता ने मुझे उच्च पद पर प्रतिष्ठापित किया है, इतनी लुभावनी पर जोखिमभरी योजना के प्रणेता मुझे क्षमा करें यदि जनता के हितों की रक्षा करते हुए मैंने उनके अहं को चोट पहुँचाई हो, यदि उन्हें मेरे मजाक-से तेज धारवाले शब्दों ने आहत किया हो। उन्होंने हानिकारक और खतरनाक काम छेड़ा है और उसके बारे में बताना — मेरा कर्त्तव्य है! हम कपासोत्पादकों से पार्टी केवल एक बात की अपेक्षा करती है अनवरत और नियमित रूप से कपास की पैदावार में वृद्धि। इसके लिए हमें वर्तमान, कृषि योग्य बनायी जा चुकी जमीन का अधिक कारगर ढंग से उपयोग करना चाहिए। कामरेड कादीरोव का कहना ठीक है नयी जमीनों को कृषि योग्य बनाना — हम लोगों के लिए बहुत आगे का काम है।' और कामरेड उमुर्जाकोवा आप सुल्तानोव ने बड़े जोश से चिल्लाकर कहा "हमें राह से बेराह मत कीजिये, मरुस्थल में जाने, आंधियों के पंजों में फँसने का आह्वान न कीजिये। एक बार फिर विनती करता हूँ, मेरी स्पष्टवादिता पर नाराज न होइये। पहले कहा था न मैंने खरी बात कड़वी लगती है "

सुल्तानोव काफी देर तक बोलता रहा, किन्तु उसे टोका नहीं गया जिला कार्यकारिणी के अध्यक्ष को भले ही बातूनिया माना जाता था, पर उसके कालीन सरीखे रंगबिरंगे और यदा-कदा मिर्च जैसे तीखे भाषणों को प्रायः रुचि के साथ सुना जाता था। जूरावायेव सोच में डूबे हथेली से ठोड़ी रगड़ रहे थे। बैठक में भाग लेनेवाले व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए एक दूसरे की ओर देख जा रहे थे। "बहुत दूर की सूझी अध्यक्ष को!"

कादीरोव विजय की खुशियाँ मनाने लगा था, पर बैठक की आगे की कार्रवाई से वह निराश होने लगा। ब्यूरो के सदस्य, अन्य सामूहिक फार्मों के अध्यक्षों ने, जिन्हें योजनानुसार अछूती और परती जमीन

को कृषि योग्य बनाना था। अपने भाषण में इस योजना का समर्थन समर्थन किया। कम्युनिस्ट ड्राइवर था यह समझ नहीं पा रहा था कि फिर भी कार्यालय इसके लिए काफी पहले ही दिन से तैयार बैठे थे। उन्होंने केवल इसलिए भावकीय और मितव्ययिता का दृढ़तापूर्वक पक्ष नहीं लिया क्योंकि वे स्वयं कपास बनाने में मशगूल रहे थे, बल्कि इसलिए भी कि वे भी नये सिर से नहीं चाहते थे। वक्ताओं ने मुस्तफ़ोव का विरोध करते हुए इस पर जोर दिया कि योजना में नई और आगे का भी ध्यान रखा गया है और याद दिलाया कि बिना कार्यकर्ताओं का मात्र एक भाषण लेनी में किसने ही जाता है और उन्हें लगभग हर रोज आनेवाले देश के वादों के बारे में केवल सुनी-सुनायी बातों में ही जानकारी है। बैठे ज्यादा अधिक नहीं थे। यह बात सुने थे अपनी बहस जारी रखने की इच्छा नहीं रही थी। जुरावोयेव ने एकदम नोटों पर नजर डालकर अपने भाषण का सारांश लिखे पन्ने को मरोड़ दिया और केवल उपसंहारात्मक टिप्पणी तक ही सीमित रखा।

'यह बहुत अच्छी बात है साथियो कि हमने आज उमकर बहस की। मेरे ख्याल से अब सबको यह स्पष्ट हो गया है कि हमें अछूती धरती को कृषि योग्य बनाना चाहिए और हम ऐसा कर सकते हैं। कामरेड कादीरोव ने यहाँ वर्तमान योजना का हवाला दिया है यानी हमारे लिए आज की चिन्ताएँ ही काफी हैं। जो योजना प्रस्तुत है – बस उसे ही अमल में लाया जाये। लेकिन योजनाएँ हम लोगों के भले के लिए बनायी जाती हैं, साथियो! तो हमें ये प्रतिज्ञाएँ करनी चाहिए। कपास का मतलब खुशहाली, संस्कृति की उन्नति है – क्या इसके हेतु हमें अपनी पूरी शक्ति नहीं लगा देनी चाहिए? यूँ तो हमारे लोगों का जीवन इस समय भी बुरा नहीं है। यह सही है। लेकिन वे इस से भी बेहतर जीने का सपना देखते हैं। और कल उससे भी ज्यादा बेहतर! और उन्नति के इस मार्ग पर सुस्ताने की फुरसत हमें बिलकुल नहीं है अगर हम लगातार दो वर्ष तक टस से मस न होंगे, किसान को होनेवाली अतिरिक्त आय से, नये घर से, नये क्लब से वंचित करेंगे, तो जनता हमें क्षमा नहीं करेगी। इसी कारण हम कॉमरेड ... ने से सहमत नहीं हो सकते। उन्होंने जनप्रिय नेता की भांति नयी जमीन को कृषि योग्य बनाने व कपास का अतिरिक्त उत्पादन

करने की अभिलाषा की तुलना उपज की वृद्धि के लिए किये जा रहे संघर्ष से करने की कोशिश की है। लेकिन क्या यह दो काम एक दूसरे को बाधा डाल सकते हैं ? हम अछूती धरती से भी अधिक से अधिक कपास उठाने का प्रयत्न करेंगे। मेरा विचार है कि अछूती धरती को कृषियोग्य बनाने की योजना पेश करनेवाले साथियों ने अमूल्य पहल-कदमी की है, और मेरा सुझाव है कि इस योजना को हमारे ज़िले के अन्य ग्राम सोवियतों में लागू किया जाना चाहिए। कामरेड सुलतानोव कठिनाइयों से हमें डरा रहे थे। उनका धन्यवाद कि उन्होंने हमें एक बार फिर कठिनाइयों का स्मरण करा दिया। मैं इतना मान लेता हूँ कि कामरेड उमूरज़ाकोवा ने उत्साह के आवेग में तसवीर में रंग ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल किये हैं। कठिनाइयाँ आयेंगी, और जनता को उनका मुकाबला करने के लिए तैयार करना चाहिए, जनता का आह्वान केवल सुख-समृद्धि के लिए ही नहीं, संघर्ष करने के लिए भी करना चाहिए। कठिनाइयां आयेंगी, पर क्या हमें, कम्युनिस्टों को प्रकृति की शक्तियों और पुरानी पहाड़ी झोपड़ियों से वृद्धों के लगाव के आगे हार माननी चाहिए ? मोर्चे पर तो किसी के भी दिमाग में चिल्लाने का विचार नहीं आता होगा आगे दुश्मन है – भागो ! मैं इसे, साथियों, मतदान के लिए पेश करने का प्रस्ताव रखता हूँ "

कादीरोव के लिए यह सब अप्रत्याशित था और वह बुरी तरह घबरा गया। उसने सुलतानोव पर अपनी प्रश्नात्मक दृष्टि जमा दी। सुलतानोव ने ज़ूराबायेव के भाषण के बाद कृत्रिम विनोदपूर्ण आज्ञाकारिता से हाथ हिला दिये क्या किया जाये, कभी-कभी झुकना पड़ता है। फिर भी उसने मतदान में भाग नहीं लिया। और ब्यूरो की कार्रवाई समाप्त होने के बाद जब वे दोनों बाहर निकले, सुलतानोव ने दोस्त का कंधा थपथपाया और उत्साहवर्धक स्वर में बोला

"दिल छोटा मत करो, अध्यक्ष ! नाई, नाई, बाल कितने ? जिजमान आगे ही आते हैं !" उसने बड़े आनन्द से बसन्त-सिक्त ताजा हवा में उच्छ्वास लिया और सुझाव दिया चलो, मेरे यहां पुलाव खायेंगे। चलो, चलो ! जिन्दगी छोटी होती है, बहुमूल्य समय बेकार नहीं गंवाना चाहिए !"

आयकीज़ ज़िला समिति से सबसे बाद में बाहर निकली। बाहर

इन्सान का प्रभुत्व हो जाता था। बस्ती के ऊपर गहरा नीला आकाश फैला हुआ था जिस पर सारे नक्षत्रों, सूर्यों [illegible] की तरह छिटके हुए थे। आयकीज़ पत्थर की सीढ़ियों पर से धीरे धीरे पानी पर उतरी और लालटेन की मद्धिम रोशनी में कदम रख ही पायी थी कि उसकी [illegible] सहेलियों की शोर मचाती टोली ने उसे घेर लिया। चारों ओर से प्रश्नों और उद्गारों की बौछार होने लगी।

"उफ़, आयकीज़! हम तो तुम्हारा इन्तज़ार करती-करती ऊब ही गयीं!"

"देखो, हमने काम खतम कर ड्राइवर को मना लिया—और यहाँ आ पहुँची!"

"सारा सामूहिक फार्म [illegible] बना हुआ है, बातें सिर्फ़ अपनी बस्ती के बारे में ही हो रही हैं।"

"आयकीज़, हम नयी बस्ती का नाम क्या रखेंगे?"

"आयकीज़, आयकीज़, योजना का क्या हुआ?"

"सुनो, आयकीज़! चलो बस्ती के चारों ओर बहुत बड़ा बाग बना दें। नहीं तो घूमने के लिए कोई जगह ही नहीं होगी। स्तेपी तो चारों ओर वीरान पड़ी है!"

आयकीज़ इस भवर में घिर गयी। अलबत्ते वह सबके साथ जोश में आयी और उसका नटखट खनकता स्वर गूंज उठा

"योजना स्वीकार हो गयी, लड़कियो! अब—काम में जुट जाओ!"

"पर कादीरोव ने क्या कहा, आयकीज़?"

आयकीज़ ने हँसते हुए हाथ झटकार दिया

"अरे, छोड़ो उसे!"

"आयकीज़, हमारे साथ चलो!" लड़कियाँ फिर उसके पीछे पड़ गयीं। "बायचीबार को हम ट्रक में चढ़ा लेंगी। ज़रा वह भी सवारी का मज़ा ले ले!"

"नहीं, सहेलियो, मुझे सुबह कुछ काम निबटाने बाकी हैं। रात मैं यहीं बिताऊँगी।"

आयकीज़ की पुरानी सहेली मेहरी उसके पास आयी। उसने हौले से आयकीज़ की कोहनी पकड़ी और सान्त्वना पाने के अन्दाज़ में उसके

के बाद से [illegible] के लिए जल्दी से पूला उतारकर देती [illegible] – [illegible] उसे बहुत पसन्द था। वह एक किनारे में रख ही [illegible] कि आने से उमुरबाक-अगा मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन का निदेशक [illegible] और जिला पार्टी कमेटी के ब्यूरो की बैठक में निर्माण कार्य के [illegible] पद पर नियुक्त स्मिर्नोव दिखाई दिये।

"लो, मेहमानों की खातिरदारी करो, मेजबानिन!" पोगोदिन ने दरवाजे से ही आवाज दी।

बरामदे में सबसे पहले उमुरबाक-अगा धीरे-धीरे चढ़े, फिर युवती की-सी सहजता से हुलते-गलते स्मिर्नोव और उनके बाद बूटों से धम-धम करता पोगोदिन। उनका अभिवादन कर आयकीज ने सबको अहाते में हौज के पास आने का निमंत्रण दिया जहाँ कालीन बिछा ऊँचा बड़ा चबूतरा बना था।

हमसे सब्र नहीं किया जा सका। बैठकर सलाह करने आये हैं,' पोगोदिन ने आयकीज से नजर हटाकर उबलने पानीवाली देगची की ओर देखकर कहा। ' मिल-जुलकर पकाया गोश्त कभी न हो खराब।"

तुम, इवान बोरिसोविच हमारी सारी कहावतें जानते हो!" आयकीज ने मुस्कराकर कहा।

हाँ सारी न सही पर कुछ जानता हूँ "

स्मिर्नोव ने बिना किसी को सम्बोधित किये भोली-भाली मुखमुद्रा से कहा

"अलतीनसाय में एक लडकी है सुन्दर, हाज़िर-जवाब, हसमुख! और इसके अलावा कहावतों की बहुत ही शौकीन भी। बस मुझे उसका नाम याद ही नही आ रहा है "

"कही लोला तो नही है?" आयकीज ने नटखट मुस्कान के साथ याद दिलाया।

"हा, हा! लोला! और कहावतें भी उसके मुह से बिलकुल वैसी ही निकलती हैं, जैसी इवान बोरिसोविच के मुह से!"

पोगोदिन का चेहरा लाल सुर्ख हो उठा, उसने कुछ बुदबुदाते हुए स्मिर्नोव की ओर क्रोधपूर्ण नजरों से देखा। वह जिन्दादिली से हस पड़े।

"अरे, शर्माओ नही, निदेशक, हम तो अपने ही है। तुम्हे चिट्ठी लिखती है वह?"

"लिखती है," पोगोदिन ने नर्मी से कहा। "लेकिन लिखते हैं।"

"समझ गया," स्मिर्नोव ने गम्भीरतापूर्वक सिर हिलाया। "दिन में एक बार! यानी अब बस एक ही बात पूछनी बाकी रह गयी है, शादी कब की है?"

आयकीज़ ने पोगोदिन की ओर स्नेहपूर्ण आश्चर्य से देखा। वह दूसरे पोगोदिन—मुखर, कर्कश, चिड़चिड़े—की आदी थी। उसे शान्त और लज्जालु हुआ देख वह हैरान हो गयी। जब कि पोगोदिन के लिए लोला के बारे में बात करना सुखद भी लग रहा था और बोझिल भी। उसकी आंखों के आगे अचानक लोला का चेहरा घूम गया, गुलाबों-से लाल-लाल गाल, भौंहें—दो काले अर्द्धचन्द्र, लम्बी-लम्बी बरौनियां, मुस्कराती हुई बड़ी-बड़ी आंखें, जो मानो यह पूछती रहती थीं, 'तुम मुझ से अपना प्यार क्यों छुपाते हो, अपने पर क्यों नहीं बुलाते हो?' हां वह अभी तक लोला के साथ साफ़-साफ़ बात नहीं कर पाया था। पिछले कुछ समय से उनकी मुलाकातें हुई भी थीं तो बहुत कम। अपने स्वप्न को साकार करने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ लोला ताशकन्द में उद्यान-विशेषज्ञ व चयनविद बनने के लिए अध्ययन कर रही थी। स्मिर्नोव को वह क्या जवाब दे सकता था? बुरी तरह सकुचाते पोगोदिन ने बातचीत का रुख मोड़ने की कोशिश की।

"हां, आयकीज़, तुमने आलिमजान को ब्यूरो की कल की बैठक के बारे में लिख दिया?"

"जरूर लिख दिया! तार भी भेज दिया।"

"ठीक है, ठीक है! मैं भी उसे तार भेजना चाहता था, पर सोचा अभी जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए, मेरे ख़त के बजाय तुम्हारे ख़त को देखकर आलिमजान ज्यादा ख़ुश होगा।"

जब तक वे एक दूसरे से हंसी-मज़ाक, बातें करते रहे, तब तक उमूरज़ाक-अता ने पिछली शरत् में हौज के पास गड्ढा खोदकर दबायी मज्जियों में से कुछ मोटी-मोटी मूलियां निकाल लीं, सागवाड़ी से सूई जैसे पतले हरे प्याज़ तोड़ लाये, घर से नमकीन खीरे, टमाटर तथा खरबूजा ले आये। खरबूज़े वे कूट-कूटकर चपटे किये सरकंडों से बांधकर छत से लटका देते थे। वह जब चबूतरे पर पहुंचे, वहां स्तेपी में आगामी प्रस्थान की चर्चा छिड़ी हुई थी।

"काशीरोव में अभी किसी काम की अपेक्षा नहीं की जा रही है। हम इस समय केवल सामूहिक उद्यान की तैयारी के बारे में बात कर रहे हैं, सबसे ज्यादा बोझ हम पर पड़ेगा। मैं जलागार व पुनर्निर्माण के डिजाइन का पूरा ब्योरा मालूम कर लूँगा। इवान बोरिसोविच अपनी मशीनरी निर्माण-स्थल पर ले जायेंगे। और आयकौज खुद बगियों का काम सम्भाल लेंगी। तब रहा? मुझसे इस बारे में क्या सवाल है, इवान बोरिसोविच?"

"मेरा क्या मैं हमेशा इसके पक्ष में हूँ' पांगोदिन ने मन्द स्वर में कहा। जल्दी शुरू करने का मतलब पक्की तैयारी करना है। पर तैयारी सही माने में पक्की होनी चाहिए। अछूती धरती को कृषि योग्य बनाना कोई बच्चों का खेल नहीं है।

सब हम पर पर पांगोदिन ने हाथ झटकार दिया

"आप लोग भी क्या! आप लोगों से तो बात करना भी मुश्किल है।"

स्मिर्नोव ने खरबूजे की पीली-सी और स्वाद में शहद जैसी फांक मुँह में डाली और आनन्द के कारण आँखें बन्द कर लीं।

'वाह, कितना स्वादिष्ट है!"

"कुछ ही दिनों में ताजा मिलने लगेंगे, उमुर्ज़ाक-अता ने साग-सब्जी की ओर इंगित किया। "देखिये कितने सारे हैं!

आयकौज ने दोपहर के सूरज की किरणों में नहायी क्यारियों की ओर देखा और सुझाव दिया

"नयी जमीन में भी खरबूजे बोने चाहिए। अछूती धरती जोतनेवालों को भी गर्मी के दिनों में अपनी प्यास बुझाने के लिए कुछ मिलता रहेगा।"

"चूक गयी, आयकौज!" पांगोदिन ने विजयोल्लास से ठहाका लगाया। "मैं सागवाडी के लिए जगह ढूंढ चुका हूँ।"

बातचीत देर तक चलती रही। सूरज ने जैसे अनिच्छा से क्षितिज की ओर अपने अवरोहण की यात्रा आरम्भ कर दी। गर्मी की तेजी बढ़ने लगी, उसकी घनता दबाने-सी लगी, आकाश से मानो भास्हीन सूर्यकिरणें नहीं, तपा हुआ तेल गिर रहा था। पर चबूतरे पर गर्मी कुछ कम महसूस हो रही थी छायादार हौज से ऊपर बेद की शाखा-

ओं का घना छत्र तना हुआ था, ठण्डक आती महसूस हो रही थी, चारों ओर से घनी शाखाओंवाले वृक्षों से घिरे होने के कारण चबूतरे पर काफ़ी ठण्डक थी।

मित्र अब चाय की तीसरी केतली खाली कर रहे थे। पोगोदिन ने माथे से पसीना पोंछने के लिए शायद दसवीं बार रूमाल निकाला, स्मिर्नोव अन्त में मेजबानों को धन्यवाद दे उठ खड़े हुए और बोले

"लगता है सारी बात साफ़ हो चुकी है। आयकीज़, तुम्हें कल सब सामूहिक फ़ार्मों के अध्यक्षों को जमा करके उनके साथ सारी बातें तय कर लेनी चाहिए। और काम शुरू कर देना चाहिए।"

छ

चढ़ाई से पहले

अलतीनमायवासी सामूहिक प्रस्थान की तैयारियों में लग गये। घर-घर में कुदालों, बेलचों की धार तेज़ की जा रही थी, काम के कपड़े तैयार किये जा रहे थे, जूतों की मरम्मत की जा रही थी। कोम्सोमोल नारे लिख रहे थे, दीवारी समाचारपत्र का विशेष संस्करण निकालने के लिए दौड़-धूप कर रहे थे।

निस्सन्देह सबसे ज़्यादा काम स्मिर्नोव, आयकीज़ और पोगोदिन को करने पड़ रहे थे।

स्मिर्नोव सारा दिन निर्माण-स्थलों पर गुज़ारते, जहाँ कुमाश्कार बांध बनाना और जल-वितरकों का निर्माण करना था। वह भावी नहर के मार्ग का निरीक्षण करते, प्रबन्धकों के साथ विचार-विमर्श करते। शाम को कार्यालयवाले घर के एक कमरे में बार-बार जलागार के पुनर्निर्माण के डिज़ाइन का अध्ययन किया करते।

एक दिन रात को कमरे में घने बादल से छाये तम्बाकू के धुएँ में लग आकर स्मिर्नोव ने बांध पर जाने का फ़ैसला किया। वह लम्बे और दुबले-पतले थे और कमीज़ का कॉलर खोले, चौड़े पायचों की बेल्बॉटम

की पतलून की जेबों में हाथ डाले रेलिंग के सहारे खड़े थे और हिमनदों व नदियों की शीतलता लिये बह रहे स्वच्छ साध्य पर्वतीय पवन के भोंके उनके सुनहरे बालों को, जिनमें सफेदी का नाम भी नहीं था, अस्त-व्यस्त कर रहे थे, खुली गरदन को शीतल कर रहे थे। रात उजली थी, चादनी छिटकी थी चांद की तस्तरी जलागार के अन्धकारमय लहरियों में प्रतिबिम्बित हो रही थी। मानो किसी ने रजत-पिण्ड जल में गिरा दिया हो और वह तल में भिलमिला रहा हो हल्की तरगे किनारों को फेन की भालर से सजाती छपाके लगा रही थी।

"समुद्र! वास्तव में समुद्र है!" स्मिर्नोव फुसफुसाये। जलागार को जी भर निहारकर इवान निकितिच बाध के दूसरे छोर पर अलती-नमाय पनबिजलीघर के अधिक निकट चले गये। दूर नीचे बन्धन तोड़कर मुक्त हुई-सी नदी उफन रही थी, किसी को धमकाती-सी गरज रही थी, इस शोर के बीच कपास के खेतों की ओर से नियमित और मन्द घरघर भी सुनाई दे रही थी। स्मिर्नोव ने ध्यान से देखा और दूर, बहुत दूर से आगे बढ़ती बत्तिया पहचान ली ये पोगोदिन के ट्रैक्टर हेडलाइटे जलाये अथक जुगनुओं की तरह जमीन पर रेंग रहे थे। "अंधेरे में भी काम कर रहे हैं!" स्मिर्नोव ने सहृदय मुस्कान के साथ सोचा। "बोवाई करने की जल्दी में हैं। ठीक है, ठीक है, इवान बो-रिसोविच! दबाओ एक्सलरेटर! सामूहिक प्रस्थान बस आरम्भ ही होनेवाला है!" आश्वस्त और प्रसन्न स्मिर्नोव ने एक लम्बी सास ली और लम्बे डग भरते हुए कार्यालय की ओर चल दिये।

मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनवाले वास्तव में जल्दी में थे। अछूती धरती पर अधिकाधिक मशीनरी पहुँचाने के लिए वसन्तकालीन बोवाई जल्दी से जल्दी समाप्त कर लेनी थी। कुछ सामूहिक फार्मों की अनजुती जमीन से घिरे अछूते भूभाग पर ट्रैक्टर-टोलियों के लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन द्वारा खेत-कैंप बनाया जा रहा था।

मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनवाले यहां जब पहली बार आये थे, उन्होंने यहां सूखी धूसर और धूलभरी घास से ढकी जमीन देखी थी। उन्होंने घास जला दी, जमीन को समतल कर दिया। स्तेपी के बीच धुधली भील-सा चौड़ा मैदान फैलता जा रहा था। एक दिन बीतते ही मैदान

से लगाये। इस प्रकार के खेत के कीचड़ और तरकारियों के ढेर लग रहे।
ढेर लेकर वे घर पहुँचे जा रहे थे पर साथ ही सामने मोड़े बगानोंवाला पूर्व
दिशा पर दिन दूना रात चौगुना ऊँचा होता जा रहा था, जिसमें ट्रैक्टर
दल का सुस्ताना, निरीक्षण कक्ष, मनोरंजन कक्ष बनाये जाते थे।
मैदान के किनारे किनारे टूटी हुई काली रेखाएं खींच दी गयी थीं
बड़ी ढेरन की टहनियां और घुम लाकर रखे जाने लगे थे। कुछ निकाला
खेत सींच के लिए सुरक्षित रखे गये खेत का हुलिया दिन प्रतिदिन बदलता
जा रहा था मानो कोई अनाड़ी, कठोर चित्रकार रेखाएं
और रंग मिटाकर उनमें अधिक सख्ती के साथ सामंजस्य बिठाना
दूसरे रंग इस्तेमाल करता हुआ लगातार दूसरी रेखाएं खींच रहा
हो।

हाल ही में कृषि योग्य बनायी गयी जमीन में जिसे मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन का निदेशक 'पुरानी' कहता था, खेत-मेंड़ तक बनायी गयी नालों के उस ओर पोंगोदिन द्वारा लगायी छोटी-सी सागवाड़ी थी।

एक बार अछूती धरती पर स्थानान्तरित ट्रैक्टर-टोली में काम करनेवाला सुवानकुल सरबूजे के खेत में आया। पिछले वर्ष तक वह कि-जिल युल्दुज सामूहिक फार्म में टोली-नायक था, पर भीमकाय सुवानकुल को सामूहिक फार्म के "पुराने" खेतों में जगह तंग महसूस होने लगी और वह मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में पोंगोदिन के पास नयी जमीन को कृषि योग्य बनाने चला गया।

सुवानकुल काफी देर तक खेत के किनारे खड़ा रहा। वह स्वयं मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के निदेशक द्वारा तरबूज और खरबूजे बोयी हुई और सफाई से बनायी गयी क्यारियों को देर तक देखता रहा। उनका उद्देश्य ट्रैक्टर-चालकों को सूखे और तपते दिनों में खाने को कुछ मीठा उपलब्ध कराते रहना था।

थोड़ी देर और खड़े रहकर, उसने मन में कुछ तय किया और अलतीनसाय चला गया। वहां से रैहान की हरी-भरी पौद ले आया। जब तक अन्तिम फैसला हो पाये, जब तक तरबूज और खरबूजे पक पायें, तब तक ट्रैक्टर-चालक मित्र हरी-भरी, कुचित बूटी की मादक, मीठी-कड़वी सुगन्ध का आनन्द लेते हुए उसे निहारते ही रहे। और

मस्तावा* में ऊपर से रैहान** डाल दिया जाये, तो सोने में सुहागा हो जाये! मुवानकुल को सारे गरम और मसालेदार शूरों में मस्तावा सबसे ज्यादा पसन्द था शीतल दही और सुगबूदार रैहान उसे अद्वितीय स्वाद प्रदान कर देते हैं। यहाँ तक कि शोरबे को सबसे ज्यादा पसन्द करनेवाले पोगोदिन को भी मुवानकुल अपना मतावलम्बी बनाने में सफल हो गया था। उसके सक्रिय प्रचार के बाद मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के निदेशक के भोजन में मस्तावा ने शोरवा के ऊपर निर्णायक विजय प्राप्त कर ली थी।

मुवानकुल अपने साथी को पानी सम्भलाकर दिन भर तरबूजों-खरबूजों के खेत में किनारे-किनारे रैहान की पौद रोपता रहा। शाम से पहले अपने मित्र से मिलने आये उसके सामूहिक फार्म के दोनों नायक बेकबूता ने उसे इसी काम में व्यस्त पाया। धाय की तरह सावधानी से मिट्टी में नन्ही-नन्ही पौद रोप रहे भारी-भरकम और बेढब मुवानकुल की सूरत देख बेकबूता को हँसी आने लगी। हँसी सुनकर मुवानकुल ने अनिच्छापूर्वक धीरे-धीरे गरदन घुमायी, कमर सीधी की और मेहमान का अभिवादन किये बिना ही अपने चेहरे पर उदासी लाकर पूछा

"खीसें क्यों निपोड़ रहे हो?"

"तुम्हें सही-सलामत देख रहा हूँ, इसी की खुशी में," बेकबूता ने जिन्दादिली से जवाब दिया। "सलाम-अलैकुम, मेरे दिल के टुकड़े, वोकनाऊ की चोटियों में सबसे ऊँची चोटी!"

"वालैकुम अस्सलाम, कभी न थकनेवाले बातूनी! कैसे आना हुआ?"

"तरस गया, दोस्त। इतना तरस गया कि ताकत ही नहीं रही," बेकबूता ने मुवानकुल के पास जमीन पर बैठते हुए उससे उन्नीस न रहने की कोशिश में गम्भीर स्वर में कहा "तुमसे मिले कितना अरसा हो गया! मेरी तो जबान ही भोथरी हो चली, ऐसी कोई मिलती नहीं है, जिस पर मैं उसकी धार तेज कर सकूँ।"

---

* मस्तावा – चावल का मांस के साथ बना सूप, जिसमें ऊपर से थोड़ा-सा दही डाला जाता है।

** रैहान – तुलसी की एक किस्म। – स०

"यानी मिल्ली मैं हूँ?" सुवानकुल के मुह से असावधानीवश निकल गया।

"समझ गये, दोस्त!" बेकबूता खुश हो उठा। "प्यारे, तुम सचमुच कामयाबी हासिल करते जा रहे हो। बिलकुल ठीक, मेरी जबान चाकू है, तुम्हारा सिर सिल्ली। वैसी सिल्लियां जरा ज्यादा बढ़िया किस्म के माल से बनती हैं "

सुवानकुल सहृदय कृपा-भाव से मुस्करा पड़ा।

"स्मिर्नोव तक ऐसा बांध नही बना सकते, जो तुम्हारी बक-बक की बाढ़ को रोक सके। तुम्हारा मुह बंद करने के लिए चाय पेश करूँ? इस चीज की हमारे कैंप मे कोई कमी नही है, जितनी ढकोस सको, ढकोस लो।"

सुवानकुल के प्रस्ताव से बेकबूता और अधिक खुश हो उठा।

"चाय! हा हा! यह मेरी चाय से खातिरदारी करना चाहता है!" वह आगे-पीछे झूमता और बड़े जोश मे अपने घुटनों पर हाथ मारता खिलखिलाकर हसने लगा। "जब तक तुम चाय लेकर आओगे, मैं लपककर गाव पहुँच जाऊँगा और अपने घर मे जी भरके चाय पी आऊँगा। अरे, बैठे भी रहो, फुरतीलो मे फुरतीले!"

सुवानकुल बेकबूता की बाते सुन-सुनकर मन-ही-मन केवल सहृदयता से मुस्करा रहा था। वह दिल मे न जाने कब से अपने दोस्त से मिलने को तड़प रहा था। ट्रैक्टर पर बैठ धीरे-धीरे किन्तु तत्परता से अपने शक्तिशाली डी टी-५४ से अनन्त स्तेपी की हठीली मिट्टी तोड़ते हुए वह प्राय याद करता रहता था कि वह कैसे कपास के खेतों के लिए पानी निकालने कोश्बुलाक पर बेकबूता और आलिमजान के साथ काम करता रहा था, और बाद मे नयी जमीन पर उसने कैसे अपने मित्र के साथ धुआ-धार मेहनत मे जोर आजमाई की थी। वह बेकबूता के आने पर दिल से खुश था, पर अपनी खुशी किसी भी तरह छुपाने की कोशिश कर रहा था। अतिथि की हसी-दिल्लगी पर कोई ध्यान दिये बिना वह फिर भी फील्ड-कैंप मे गया, वहां से बड़ी-सी केतली और प्यालियां उठा लाया और गरमागरम तेज हरी चाय बेकबूता के डालते हुए भोलेपन से पूछने लगा

"यानी तुम इतना लम्बा सफ़र सिर्फ़ मुझे दो-एक बासी मज़ाक पेश करने के लिए ही तय करके आये हो?"

"दान की बछिया के दांत नहीं देखे जाते। लेकिन अगर तमन्ना है, तो मर्द से मर्द की तरह बात हो जाये। हमारी किस्मत ने हमारा साथ नहीं दिया, प्यारे ऐसे काम हो रहे है, और हम दोनों अलग मालिकों के मातहत है "

"पोपोदिन मेरा दोस्त है, मालिक नहीं। यह कादीरोव है, जो जैसे उसके जी मे आता है, तुम पर हुक्म चलाता रहता है।"

"अरे इससे कुछ नहीं होता, हुक्म चलाता है, चलाता रहे, हमारी बला से। आखिर वह कमांडर काम का है, उसके साथ बड़े-बड़े काम किये जा सकते है जब तक उसकी लगाम खींचकर रखी जाये।"

"लगाम लगा देगे!" सुबानकुल ने आत्मविश्वास के साथ कहा। "देखो, हम कितने है! "

लेकिन बेकबूता ने सन्देह प्रकट करते सिर हिला दिया

"यह सब इतना आसान नहीं है, दोस्त। आखिर वह भी अकेला थोड़े ही होगा?"

"आयकोज तो उससे नहीं डरी! उसने कह डाला कि गौरैयाओं से डरने लगे तो कर ली जई की बोवाई!

"सच है, गौरैयाएं ही हमसे डरती रहे, खुद को वे कितना ही बड़ा आदमी दिखाने की कोशिश क्यो न करती रहे! "

बातचीत और मज़ाकों मे, जिन पर ज़ोरदार ठहाके लगाये जा रहे थे, दोस्तों ने ध्यान ही नहीं दिया कि कब स्वय कादीरोव घोड़े पर बैठा उनके पास आ पहुँचा। नसवार थूककर उसने धमकीभरे स्वर मे पूछा

"बछेड़े की तरह क्यो हिनहिना रहे हो?"

मित्रों ने यंत्रवत् गरदन घुमायी और अध्यक्ष की भौहे चढ़ी देख उसके बारे मे हाल ही मे हुई बातचीत यादकर बड़ी मुश्किल से हंसी के नये दौरे को रोका।

"वाह हंसी-दिल्लगी हो रही है!" कादीरोव खीज उठा। "तुम्हारे लिए मैं क्या कोई बन्दरवाला मदारी हूँ?"

"हमने तक की मसख़री है " अध्यक्ष के अप्रत्याशित आगमन

से निश्चित निरुत्साहित हुआ बेकबूता बड़बड़ाया, लेकिन कादीरोव ने उसकी खिल्ली पर कोई ध्यान नहीं दिया और सुवानकुल को सम्बोधित कर कहने लगा:

"तुम्हारा हमजोली कहाँ है?"

"कहीं भी भाई," सुवानकुल ने लापरवाही से कंधे उचका दिये। "वह कुछ दिनों से ठीक महसूस नहीं करता है। शायद कैंप में आराम कर रहा होगा।

"आराम तो वह अपने घर पर भी कर सकता था। और बेकबूता, तुम्हें भी गांव में होना चाहिए था। किसी का मेहमान बनने निकलने का समय नहीं है।"

बेकबूता जवाब में कुछ कहना चाहता था, पर कादीरोव ने गुस्से से घोड़े पर चाबुक फटकारा, और मेस-कैंप की ओर सरपट भाग चला- बेचारा घोड़े के सुमों से धूल उड़ती रह गयी।

"बड़े आये हैं," बेकबूता बड़बड़ाया। "उन्हें हमारी हंसी पसन्द नहीं आती! यह कहावत ठीक ही है: चोर को हर अजनबी कोतवाल नजर आता है।"

"ऐसी कोई कहावत नहीं है!"

"मान लो, आज से बन गयी। इस खोपड़ी में उपजी बातें," बेकबूता ने अपने माथे पर उंगली थपथपायी, "चिड़ियों की तरह सारी दुनिया का चक्कर काटती हैं।" वह सोच में डूब गया। "हां, अध्यक्ष के दिल को चैन नहीं है। तुमने ध्यान दिया, पिछले कुछ अरसे में वह नसवार अक्सर ही मुंह में डालने लगा है – और यह संयोग की बात नहीं है।"

सुवानकुल, जिस पर गिरे कादीरोव के गजने का कोई असर नहीं हुआ था, शान्त कुतूहल से बेकबूता पर नजर रखे रहा और जैसे ही उसने बात खतम की उसकी खिल्ली उड़ाता हुआ-सा हंस पड़ा:

"देखो कितनी बहादुरी दिखा रहा है! और अध्यक्ष के सामने तो पीपल के पत्ते की तरह कांप रहा था।"

"झगड़े के बाद घूंसे चलाने में तुम भी कम उस्ताद नहीं हो," बेकबूता ने ताना मारा। "कादीरोव के सामने तो बुत बने हुए थे, और अब घमण्ड के मारे फूले जा रहे हो।"

"फूलूं क्यों नहीं?" सुवानकुल ने आत्मतुष्टि से कहा। "मेरी बहादुरी तुम्हारे जैसे गौ के लिए काफी है, और आड़े वक्त के लिए भी बच जायेगी।"

उसने गरजदार मन्द्र स्वर में ठहाका लगाया और बेवकूता की तीखी हंसी भी उसके ठहाके में घुल-मिल गयी।

"और अध्यक्ष को देखते ही तुम्हारे होंठों से प्याली ही चिपक गयी थी।"

"ऐ, ऐ! जरा संभल कर! प्यारे मेहमान के सलाम के जवाब में क्या तुम्हारी मुंह की बात मुंह में ही नहीं रह गयी थी?"

किन्तु बेवकूता ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया

"और, प्यारे, तुम तो सलाम का जवाब, चाय पीने का बुलावा, प्याली और अपनी मेहमाननवाजी, जिसकी तारीफ करते नहीं अघाते, सब गले के नीचे उतार गये! बहुत जगह है तुम्हारे पेट में! "

"रहम करो मुझ पर, बेवकूता," सुवानकुल ने विनती की। "हंसी के मारे वहीं मर न जाऊं!"

"मेरे मजाकों से गुदगुदी होती है क्या?"

"गौरैया को उकाब से ऊंचा उड़ने के लिए ज़ोर लगाते देख पेट फट सकता है! बस करो, बहुत हो गया!"

"चुहिया से ऊंट को डरते देख कितनी हंसी आती है! "

बेवकूता की तरह सुवानकुल को भी दूसरों को लाजवाब छोड़ना पसन्द था। वह एकाएक उठा और बेतकल्लुफी से बोला

"तुम्हारे साथ गप-शप में खो ही गया था। तुम्हें तो गांव जाने का हुक्म मिला है। और मेरा पाली संभालने का वक्त हो चला है।"

"अपने निदेशक से डरते हो?" बेवकूता ने भी उठते हुए दोस्त पर चोट की।

"एक चीज़ से मौत से ज्यादा खौफ खाता हूं। इवान बोरिसोविच को चकमा देने से। वह तो अपनी भी परवाह नहीं करता हां, दोस्त, तुम से जुदा होने को दिल चाहता तो नहीं, पर क्या मजाल। तुम जाकर सुस्ता लो। डाक्टर को बुलाना मत भूलना। अध्यक्ष को गये आधे घंटे से ज्यादा हो चुका है, पर तुम्हारा चेहरा अभी तक फक है। आपकीज से कुछ सीखो, प्यारे!" उसने उत्साह बढ़ाने के अन्दाज में

बेलचुगा का कच्चा गलियारा और आराम से उस जगह बैरक की ओर चल दिया।

पुस्तोवाइत ने ठीक कहा था। इन दिनों पोगोदिन ज्यादा कोई गड़बड़ नहीं कर रहा था। उसकी मोटरगाड़ी किसी तूफान की तरह मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन से अपनी बस्ती की ओर जाती दिखती थी और अपनी बस्ती से मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन की ओर। इवान बोरिसोविच अपना अधिकांश समय नये कैंप में व्यतीत करता था। उसकी गरजदार आवाज कभी मैदान के एक छोर पर सुनाई देती थी तो कभी दूसरे पर, - कभी यह एक-सी गड़गड़ गरज होती तो कभी बिजली की कड़क का रूप धारण कर लेती।

कैंप में काम की देख भाल करनेवाला मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन की निर्माण-टोली का टोली-नायक एक ढीला-ढाला और आलसी आदमी था। पोगोदिन उसके बारे में कई बार कह चुका था 'मैं इस अनाड़ी को या तो निकाल दूँगा, या आदमी बना दूँगा फिर मेरे इशारों पर नाचा करेगा।' निःसंदेह उससे रोजाना तफसील में रिपोर्ट जरूर करना था क्या किया जा चुका है एक घंटे, एक दिन बाद क्या करना बाकी रह गया है। फिर धमधमाती चाल से कुछ बड़बड़ाता गोदामों का चक्कर लगाता ट्रैक्टर-चालकों से पूछता कि क्या वे काम की गति से सन्तुष्ट हैं क्या सुझाव देना चाहते हैं।

सामूहिक प्रस्थान की पूर्ववेला में पोगोदिन की टोली-नायक के साथ जोरदार मुठभेड़ हो गयी। वह कैंप में दोपहर में पहुँचा, कुछ राजगीर व ट्रैक्टर-चालक स्लेट के सायबान के नीचे बने भोजनालय में खाना खा रहे थे, कुछ निर्माण-स्थल के पास घास पर झपकी लेते लेटे हुए थे। वे अपने चेहरों पर टोपियां खींचे लेटे थे और सारी चिलचिलाती धूप उनके बदन पर पड़ रही थी

पोगोदिन की भौंहें तन गयी, उसने टोली-नायक को बुलवाया और जब वह आया, तो त्योरियां चढ़ाये उसने पूछा

"सायबान बनाने का काम क्यों नहीं शुरू किया, जिसके नीचे लोग आराम कर सकें? मैंने आप को कल ही आदेश दिया था।"

"इवान बोरिसोविच लेकिन पहले कभी सायबान की तो बात भी नहीं हुई थी।"

"पहले! पहले! पहले मुझे भी खयाल नहीं आया था। लेकिन तुम तो सारे वक्त इस चिलचिलाती धूप में रहते हो, खुद भी सोच सकते थे लोगों को यहाँ रहना है, काम करना है, इसलिए ऐसा करना चाहिए कि लोग आराम भी कर सकें। कुछ देर काम किया और छाया में जाकर लेट लिये, झपकी ले ली। और हमने क्या किया? सबसे पहले अधिकारियों के लिए घर बनाकर खड़ा कर दिया। अधिकारी अभी हैं नहीं, पर दफ्तर तैयार हो चुका है! कृपया बैठकर रिपोर्ट तैयार कीजिये! और हमारे नौजवान धूप में तपे जा रहे हैं! आज ही सायबान तैयार करके लेटने के लिए पट्टे लगा दो!

उसने एक बार फिर निर्माण-स्थल पर नज़र दौड़ाई और उसके दूरस्थ कोने की ओर उगली से इंगित किया।

"और वहाँ स्टाल बना दो। हम माग करेंगे कि व्यापारिक सस्थान से किसी को यहाँ भिजवा दिया जाये।"

"लेकिन आपने तो "

"जानता हूँ, मैंने स्टाल की पहले बात नहीं की थी। लेकिन तुम्हारे कधो पर भी तो सिर है?"

टोली-नायक ने माथे से पसीना पोछा और मुस्कराने की कोशिश की।

"अगर आप इस वक्त ज़रा अपने दिमाग से सोचने की तकलीफ करें "

"तुम चापलूसी मत करो! और बाल की खाल मत निकालो! मैं कोई अल्लाह तो हूँ नहीं, जो सबके लिए सोचता रहूँ। कुछ दिन पहले तक मैं मामूली मेकेनिक था। आखिर तुम यह क्यों सोचते हो कि अधिकारी ही सारी बातों का खयाल रखे, और तुम बस हुक्म सुनो और उसकी तामील ही करो? गाठ बाध लो अक्लमद को एक इशारा काफी होता है!"

टोली नायक पैर बदलता उदास खड़ा रहा, और पोगोदिन ने हाथ झटककर कहा

"मैंने जो कहा, कल सब तैयार हो जाना चाहिए। ज़रा उमूरज़ाकोवा को ही देख लेते,—लोगों का वह कितना खयाल रखती है!"

टोली-नायक से विदा लेकर वह भोजनालय की ओर चल दिया।

किन्तु कल्पना उसका साथ नही दे रही थी सुघड बागो और साफ-सुथरे घरो के स्थान पर आयकीज को दयनीय झोपडिया, जिनमे अभी पर्वतीय गावो के वासी रह रहे थे, इक्के-दुक्के वृक्षोवाले उजाड अहाते, मिट्टी की तडकी हुई छते, पुआल की लकीरोवाले गुम्बी धाम और धूल-भरे ग़ालीचो मे ढके कच्चे फर्श दिखाई देने लगे।

आयकीज का दिल दुखने लगा। "हम कितनी देर कर रहे है!" उसने उदासी से सोचा। "लोगो का कितना कम ख्याल रख रहे है!" उसने झुझलाकर बायचीबार पर चाबुक फटकारा और वह दूर चमकते तम्बू की ओर तीर की तरह उड चला।

निर्माण-स्थल पर उसके साथ अप्रत्याशित भेट होनेवाली थी। वहा उसे डिजाइनकार ही नही, मुरातअली और सामूहिक फार्म के निर्माताओ का टोली-नायक उस्ताद हज़रतकुल भी मिले।

मुरातअली अलतीनसाय भूखण्ड की जमीन के टोली-नायक का कार्य कर रहा था। वह उस दिन अपनी टोली के सामूहिक किसानो के साथ खेत के सहारे-सहारे बनी रेत से भर गयी छोटी नहर साफ कर रहा था। वहा से अछूती स्तेपी स्पष्ट दिखाई देती थी। आराम के क्षणो मे वृद्ध कुदाल के हत्थे पर हथेलिया जमाये सपनो मे खोया अनन्त स्तेपी की ओर देखता रहता आगामी वर्ष मे उसकी टोली नये खेतो मे कपास पैदा करने जा रही है, कपास ज्यादा होगी, और मुरातअली को अनाज भी ज्यादा मिलेगा, पैसा भी। वह मन-ही-मन हिसाब लगा रहा था कि उन पैसो का उसे क्या खरीदना चाहिए। शायद अब बेटी के लिए नये फर्नीचर खरीदने का वक्त आ गया है उसे अपने कपडे टागने के लिए कोई जगह नही रही है, जब कि वह दुलहन है उसे रोजाना ज्यादा चीजो की जरूरत पडा करेगी। अफसोस इसी बात का है कि उनका घर छोटा पडता है कोई नया, ज्यादा लम्बा-चौडा और बडा घर बनाना चाहिए। लेकिन होगा कैसे! पैसे भी कम पडेगे, घर मे गैर रखने की भी जगह नही रही है, उसका अहाता भी तो काफी तग है

स्तेपी लम्बी नीन्द के बाद जागने लगी थी। चारो ओर लोग दौड-धूप कर रहे थे। दूर, लकडी के घर के पास सुव्यवस्थित खम्भे निकले हुए थे। खम्भो के ऊपर नीली-सी स्लेट की छते पडी हुई थी।

के उत्तर में कहा। "शुरू में मैंने भी यही सोचा था कि वह यह जगह देखने आया है, जहाँ उसे रहना होगा। उसके पास खुशी-खुशी गया पर वह मुझ पर भेड़िये की तरह टूट पड़ा! ये बूढ़े इस तरह अपनी झोंपड़ियों से क्यों चिपटे रहते है? मानो इन्हें रस्सी से बांध दिया गया हो मैं तो बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा हूँ कि मुझे कब कलाग्तान से नये गाव में बसने भेजा जाता है!"

आयकीज़ ने सोच में डूबे सिर हिलाया।

"यह सब इतना आसान नही है, उस्ताद-असाकी। कभी-कभी तो लोग किसी बेकार के चिथड़े तक से जुदा नही हो पाते!" अचानक उसके होंठों पर मुस्कान फैल गयी। "पर आप यहा कैसे? आप भी क्या अभी यहाँ से भाग जायेंगे?"

"नही, मुझे भी अभी यहाँ रुककर कुछ बातचीत करनी है। आखिर मुझे भी तो यहाँ रहना है बताओ, अध्यक्ष, ये घर जल्दी से जल्दी बनाने चाहिए ना?"

"जितनी जल्दी, उतना अच्छा, उस्ताद-असाकी!"

"लेकिन तुम्हारा क्या खयाल है, सीमेंट और ईंट क्या आसमान से टपकेगी? या उनके लिए थोड़े बहुत हाथ-पैर मारने पड़ेंगे?"

"वैसे ही, जैसे होता आया है!" आयकीज़ हस पड़ी।

"हा, हा, यही बात है। कल मैं सुलतानोव से मिला था वह हमारे पशुपालन फार्म के प्रबन्धक रोझी-पहलवान के साथ मोटर में हिरनों के शिकार पर जा रहा था उसके पास इमारती सामान की अर्जियाँ न जाने कब से पड़ी हैं मदद करने का वादा किया था, लेकिन टाले जा रहा है वह गाड़ी से कमर सीधी करने निकला, मैं उसके पास पहुँचा आपको अपना एक वादा पूरा करना बाकी है। कहने लगा 'क्यों नही, याद है, याद है! कल सुबह आइये, हम इस बारे में बात करेंगे।'"

उस्ताद हज़रतकुल ने अपना धूप में सफेद हुआ पुआल का टोप उतारा और फूक मारते हुए चौड़े-से रूमाल से गरदन और माथा पोंछे।

"मैं आज ज़िला-केंद्र गया था। लेकिन सुलतानोव के यहाँ मीटिंग थी। उसके यहाँ जब भी पहुँचिये, हमेशा मीटिंग होती रहती है! मैं

मुरातअली को मालूम था कि यहाँ हैड्रो-पावर निर्माण कार्य कर रहे हैं। लेकिन ढोंगी वाली ओर, मुरातअली के पुश्त नक्शे पर फैला गाढ़ धमक रहा है? वृद्ध आगे से देख रहा था कि उसने चलनेवाले लोहे झपटते मारते हैं, मशीनें जैसी मक्खी तीन टांगोंवाले अद्भुत यंत्र एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। और आज तम्बू के पास खड़े बहुत मजबूत गबरू उस्ताद हजरतकुल नजर आ रहा था। मुरातअली एक अधीर वृद्ध था। जिज्ञासावश कुतूहल के कारण वह ढोलान में ढोंगी के तलर की सफाई पूरी करते ही उस रहस्यमय शत्रु की ओर चल पड़ा।

उस्ताद हजरतकुल को भी आज डिजाइनगाओं में यहाँ कोई काम नहीं करना था। लेकिन ऐसा केवल लगता ही था कि कोई काम नहीं है। उसकी टोली नयी बस्ती के निर्माण की तैयारी कर रही थी। और उस्ताद हजरतकुल का मौके पर यही सोचने की इच्छा हो रही थी कि एक काम को किस तरह बेहतर ढंग से पूरा किया जाये।

खायचीवार से कूदकर नीचे उतर, आयकीज मुरातअली की ओर बढ़ी। वृद्ध उदास और खिन्न हुआ तम्बू से दूर खड़ा था। लेकिन आय-कीज निर्माण-स्थल पर उसके आगमन पर इतनी प्रसन्न हुई कि उसने न मुरातअली की तनी हुई भौंहों की ओर कोई ध्यान दिया, न ही कसकर भींचे हुए पतले होंठों की ओर।

"सलाम, मुरातअली-अमाकी* आयकीज ने जिन्दादिली से उसका अभिवादन किया। "आप देखने आये हैं कि हमने आपके रहने के लिए जगह अच्छी चुनी है या नहीं?"

वृद्ध ने उसकी ओर गुस्से से देखा और मौन मुड़कर धीमी चाल से स्तेपी के रास्ते से अपने खेत की ओर रवाना हुआ। आयकीज विकल व दुःखी नजरों से उसे जाते देखती रही और जब मुड़ी, तो उस्ताद हजरतकुल को अपने पास खड़ा पाया। उसने आयकीज को सिर से पैर तक देखा और उसकी लम्बी, घनी, नीचे को झुकी मूछें व्यंग्यपूर्वक फड़क उठीं।

"बुढ़ऊ बेवकूफी कर रहा है!" उसने आयकीज के मौन प्रश्न

---

* अमाकी – आदरपूर्ण सम्बोधन, शब्दशः चाचा।

"चलिये उसके पास।"

हाल ही में कृषि योग्य बनायी गयी भूमि के आस-पास एक छोटी टेकरी थी। बादीरोव उसी टेकरी से सामूहिक किसानों के काम पर नज़र रख रहा था। वह गहन चिन्तन में डूबे सेनानायक की मुद्रा में खड़ा था बायां हाथ कमर पर टिका था, दायें हाथ का अंगूठा कमीज पर बंधी पेटी में घुसा रखा था, उसके माथे पर मोटी-मोटी झुर्रियां पड़ी थीं, निचला होंठ मुश्किल से नज़र आती वितृष्णा से निकला हुआ था। कदमों की आहट सुनकर बादीरोव ने गरदन नहीं घुमायी, कनखियों से देखा और उससे भी अधिक एकाग्रचित्तता व घमण्ड की मुद्रा धारण कर ली, केवल जब उसके पास पहुँचे लोगों ने आवाज दी, तभी वह मुड़ा और क्रुद्ध मुद्रा में भौंहें चढ़ाये, मानो उसका गम्भीर कार्य से ध्यान हटाने पर खीज रहा हो, व्यंग्यमिश्रित स्वर में बोला

"अहा, कामरेड उमूरज़ाकोवा! प्यारे टोली-नायक! कैसे तशरीफ लाये!"

"उस्ताद हज़रतकुल की टोली में लोग कम पड़ रहे हैं कामरेड बादीरोव। इनकी मदद करनी है।"

बादीरोव ने टोली-नायक की ओर रुखाई से देखा और तिरस्कार-पूर्वक कह उठा

"कर दी शिकायत!" और फिर आयकीज़ की ओर मुड़कर कृत्रिम विनम्रता से ठण्डी सास लेकर बोला 'आपने देख लिया, कामरेड उमूरज़ाकोवा अपने अध्यक्ष के साथ बातचीत करके शान्ति से सारा मामला तय नहीं कर सकते, सब आपके पास भागते हैं! कुछ दिनों में मेरी बिलकुल मानना छोड़ देंगे। और इसे क्या कहते हैं? प्रतिष्ठा को चोट पहुँचाना! "

"फिर आप ही कोशिश कीजिये ना, अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने की," आयकीज़ ने कहा। "निर्माताओं की मदद कीजिये। आज नहीं तो कल हमें बस्ती का निर्माण-कार्य आरम्भ करना है।"

"लेकिन योजना की पुष्टि तो अभी हुई ही नहीं है, ग्राम सोवियत की प्रिय अध्यक्षा!"

"लेकिन आप जिला सोवियत के ब्यूरो की बैठक में मौजूद थे और सुन चुके हैं "

इन्तज़ार करता रहा, करता रहा, फिर सोचने लगा : मैं सबसे पहले
चकराता रहूँगा या सबसे पहले यह पूछूँ : क्या करूँगा? क्या यहीं सोने-
से ढेरों का मज़ा मनाना बेहतर नहीं होगा? मिट्टी भी यहीं साल में
है, देर नहीं हुई, बता देंगे : पहाड़ों से ज़रा ज़्यादा पत्थर निकाल लेंगे,
और फिर – आइये, नये गांव में स्वागत है, प्यारे साथियो! गृह-
प्रवेश मनाइये, कपास बोइये! क्यों बैठा रहे, अध्यक्ष?"

आरज़ीव की आंखें चमक उठीं। धूप के कारण आंखें दबाते हुए उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी, मानो गांव बनकर तैयार हो चुका हो और केवल उसे निहारना बाकी रह गया हो। फिर प्रश्नपूर्ण स्वर में कह उठी

"बहुत अच्छा, उस्ताद-प्रभारी! कहिये गुल और ढेरों तक कीजिये, बताइये, मैं आपकी क्या सहायता कर सकती हूँ?"

टोपीवाला ने अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और ठण्डी सांस ले हिचकिचाते हुए बोला

"लोगों की ज़रूरत है, कामरेड उमुरज़ाकोवा। कादीरोव कुछ राजगीरों को चुन ले गया है, श्रेष्ठ कामगारों का तबादला मंडी के काम पर कर दिया।"

"यह किस खुशी में?"

"क्योंकि इस तरह काम ज़्यादा भरोसे का हो जाता है, दो जोड़ी हाथ एक जोड़ी से बेहतर रहते हैं। फिर वह कपास की योजना पूरी किये बिना कैसे रह सकता है! और मुझे लोगों की बहुत सख्त ज़रूरत है।"

"ठीक है। हम कादीरोव से कहेंगे कि वह आपको लोग दे।"

उस्ताद हज़रतकुल ने हाथ झटक दिये।

"ओह, मैं उससे बात कर चुका हूँ!"

"और बात करेंगे। कपास कपास की जगह है, पर निर्माताओं का नुकसान होना – बहुत बुरी बात है। वे भी कपास पैदा करने में हाथ बटाते हैं, हम अध्यक्ष को नाक से आगे देखने के लिए मजबूर कर देंगे। इस वक्त कहां है कादीरोव?"

उस्ताद हज़रतकुल ने अपनी चौड़ी हथेली पेशानी पर आड़ी रखकर कपास के खेतों की ओर नज़र डाली और दबी मुस्कान के साथ बोला

"वहां हुक्म चला रहा है!"

भौंहें सिकोड़ रहे टोली-नायक पर (इसने इस बदमाश का भी दिमाग खराब कर दिया!) तिरछी नजर डाल कादीरोव ने दृढ व शुष्क स्वर मे कहा

"नही हैं मेरे पास लोग। और सामूहिक फार्म सभा मे इस बारे मे कोई बात नही हुई थी। जल्दी ही सबको कपास मे लगाना पडेगा। पानी देने और जोताई के काम सिर पर आ पहुँचे हैं। काम जोरो पर होगा। सुरक्षित साधनो की रट जितना जी चाहे लगाते रहिये – पर वह रबड थोडे ही है, जो खीचकर बडा किया जा सके। रबड भी तो टूट जाता है पार्टी हमसे कहती है कपास बोइये "

"लेकिन पार्टी यह नही कहती थोडे पर सन्तोष कीजिये!"

"ये खोखले शब्द हैं, कामरेड उमूरजाकोवा! अगर हम इस साल कपास के मामले मे पीछे रह गये, तो न आपकी पीठ थपथपायी जायेगी, न मेरी। नयी जमीन की फसल काटना भविष्य का काम है, लेकिन हमें तो अभी जवाब देना है, आज, इसी शरत् मे! मै आपके आड़े नहीं आना चाहता। जैसा ठीक समझे, कीजिये। लेकिन मुझे चैन से रहने दीजिये।"

कादीरोव आयकीज व उस्ताद हज़रतकुल की ओर सिर हिलाकर टेकरी से नीचे उतर गया और आराम से जमा-जमाकर डग भरता हुआ कुछ दूरी पर काम कर रहे सामूहिक किसानो की ओर चल पडा।

उस्ताद हज़रतकुल ने गुद्दी खुजलाई और निन्दापूर्ण व विस्मित स्वर मे कहा

"न जाने उसे क्या हो गया है! अजीब आदमी है कभी बिलकुल शान्त, तो कभी बिगडैल घोडे की तरह लात मारने लगता है!"

आयकीज़ सोच मे डूब गयी, फिर धीरे-धीरे बोलने लगी, जैसे कुछ याद कर रही हो

"मै ऐसे लोगों को जानती थी, जो शान्ति के दिनो मे बहुत बहादुरी दिखाते थे और जब लड़ाई छिडी, तो पस्त हो गये।" उसने युवा कैरागचो,* बलूतो व जीदा** की दूर नज़र आती घनी शाखाओं

* कैरागच – एल्म किस्म का वृक्ष जो सोवियत सघ के दक्षिणी इलाको मे उगता है।

** जीदा – एक प्रकार का कटीला और फलदार पेड।

किस्म कॉम्बाइन से ज्यादा भी तो कुछ मानता है!" कादीरोव ने उसकी बात काट दी। "अगर आप कुछ अनुभवी होतीं तो ऐसी देर इन्तजार करतीं और ऐसा ऐसे गलत न करतीं।"

उनकी जीवनी है। और हम इस समय बिना किसी की मदद के जो कर सकते हैं, इस वीरान पर करेंगे! आयकीज ने शान्त मौं और अपने शान्त स्वर में कहा। "क्या सचमुच आपको इसमें थोड़ा-सा भी सन्देह है कि राज्य और सरकार से हमारा समर्थन किया जायेगा?" कादीरोव ने कंधे उचका दिये।

दूसरों के मन की मैं क्या जानूं। हो सकता है, समर्थन करें भी, जब होगा तब देखा जायेगा। आप सोचती हैं कि आपकी बात ठीक है। लेकिन बड़े उच्च अधिकारी इसका उल्टा फैसला कर सकते हैं।"

जनता और पार्टी का उद्देश्य एक ही है, कादीरोव।"

आप जनता की तरफ से अभी कुछ नहीं कह सकतीं, कामरेड उमूरजाकोवा।

'जनता की आवाज आप भी सुन चुके हैं! सामूहिक फार्म सभा ने निर्णय लिया है कि अछूती धरती को कृषि योग्य बनाया जाये और नहरों का निर्माण किया जाये।'

"तो करिये इस निर्णय को पूरा! अतिरिक्त साधन ढूंढिये, आपके पैरों तले जो सोना पड़ा है, उसे उठाइये! मैं आपके आड़े नहीं पड़ रहा हूं।

"आप उस्ताद हजरतकुल की टोली में लोग भेजेंगे या नहीं?" आयकीज ने सयत धमकी के साथ शान्त स्वर में पूछा।

कादीरोव इस कहा-सुनी से ऊबने लगा। यह जानते हुए कि उसे मुललानोव का समर्थन मिलना सुनिश्चित है, इस समय वह शान्त और आत्मविश्वास से परिपूर्ण था। नहीं, वह उमूरजाकोवा की सहायता नहीं करेगा, यदि वह चाहती है, तो भले ही अपना सिर फोड़ती रहे, उसका काम है–दूर रहना। क्या, वह उसके, कादीरोव के लिए कुआ नहीं खोद रही है? कोई बात नहीं, उसमें खुद ही गिरेगी। और तब, खुदा की इनायत से, जिन्दगी अपने ढर्रे पर फिर चलने लगेगी, और उसे किसी बात का डर नहीं रहेगा।

आयकीज को आंखों ही आंखों में तौलकर और निन्दापूर्वक भवरी

भौहें सिकोड़ रहे टोली-नायक पर (इसने इस बदमाश का भी दिमाग खराब कर दिया!) तिरछी नज़र डाल कादीरोव ने दृढ़ व शुष्क स्वर में कहा

"नही है मेरे पास लोग। और सामूहिक फार्म सभा मे इस बारे में कोई बात नही हुई थी। जल्दी ही सबको कपास में लगाना पड़ेगा। पानी देने और जोताई के काम सिर पर आ पहुँचे हैं। काम जोरो पर होगा। सुरक्षित साधनों की रट जितना जी चाहे लगाते रहिये – पर वह रबड़ थोड़े ही है, जो खीचकर बड़ा किया जा सके। रबड़ भी तो टूट जाता है पार्टी हमसे कहती है कपास बोइये "

"लेकिन पार्टी यह नही कहती थोड़े पर सन्तोष कीजिये!"

"ये खोखले शब्द हैं, कामरेड उमूरजाकोवा! अगर हम इस साल कपास के मामले मे पीछे रह गये, तो न आपकी पीठ थपथपायी जायेगी, न मेरी। नयी जमीन की फसल काटना भविष्य का काम है, लेकिन हमें तो अभी जवाब देना है, आज, इसी शरत् मे! मै आपके आड़े नही आना चाहता। जैसा ठीक समझें, कीजिये। लेकिन मुझे चैन से रहने दीजिये।"

कादीरोव आयकीज व उस्ताद हज़रतकुल की ओर सिर हिलाकर टेकरी से नीचे उतर गया और आराम से जमा-जमाकर डग भरता हुआ कुछ दूरी पर काम कर रहे सामूहिक किसानों की ओर चल पड़ा।

उस्ताद हज़रतकुल ने गुद्दी खुजलाई और निन्दापूर्ण व विस्मित स्वर में कहा

"न जाने उसे *क्या हो गया है! अजीब आदमी है कभी बिलकुल* शान्त, तो कभी बिगड़ैल घोड़े की तरह लात मारने लगता है!"

आयकीज सोच में डूब गयी, फिर धीरे-धीरे बोलने लगी, जैसे कुछ याद कर रही हो

"मै ऐसे लोगो को जानती थी, जो शान्ति के दिनों मे बहुत बहादुरी दिखाते थे और जब लड़ाई छिड़ी, तो पस्त हो गये।" उसने पुश्ता कैरागचों,* बगूलों व जीदा** की दूर नज़र आती घनी शाखाओ

* कैरागच – *एल्म किस्म का* वृक्ष जो सोवियत संघ के दक्षिणी इलाको में उगता है।

** जीदा – एक प्रकार का कटीला और फलदार पेड़।

[illegible]

मिलने आयी लड़की

[illegible] आयकीज़ ने [illegible] लिया कि वह स्वयं इमारती सामान के लिए कोशिश करेगी। नाश्ता करके [illegible] पर सवार हो वह [illegible] की ओर उड़ चली। उसने नाश्ते के बाद का समय मुलाकातियों के लिए रखा हुआ था। वह कभी भी किसी भी परिस्थिति में मुलाकात का समय नहीं टालती, न ही उसे कभी बदलती। यह उसका पक्का नियम था। भले ही सबको घर भागने के लिए मजबूर करनेवाली कड़ाके की गरमी पड़ रही हो या प्रचण्ड लू चल रही हो, आयकीज़ प्रायः [illegible], जिससे किसी को भी, जिसे अचानक उसकी सलाह व सहायता की आवश्यकता आ पड़े, वह दरवाज़े के आगे खड़ा न रहना पड़े या खाली हाथ न लौटना पड़े।

आज मुलाकाती कम थे। सेक्रेटरी के कमरे से होकर अपने कक्ष में जाते हुए आयकीज़ ने ऊंचे कद की अपरिचित युवती की ओर, जिसकी ठाठदार चमकीली टोपी के नीचे से सावधानीपूर्वक गूंथी हुई कई चोटियां काली झालर की तरह लटकी हुई थीं विशेष रूप से दृष्टिपात कर सबका शिष्टतापूर्वक अभिवादन किया। आयकीज़ का कक्ष धूप में नहाया हुआ था। उसने परदे खींच दिये और छोटे-से शीशे में देख अपने अस्त-व्यस्त केश ठीक कर मेज़ पर बैठ गयी।

कक्ष में सबसे पहले चमकीली टोपीवाली युवती आयी। वह स्वयं भी आकर्षक और सुवेशी थी। वह सफेद रेशम की जाकेट और हरी सी अतलस की पोशाक पहले हुए थी, जिसमें से मृदु, औत्सविक चमक फूटी पड रही थी। भौहों में गहरा सुरमा लगा था। लम्बी, धनुषाकार बरौनियों के तले आग्नेय पर्वतीय झीलों सदृश गहरी लग रही थी।

युवती ने अक्खड़ कुतूहल से आगे ओर देखा और नापसन्दगी में नाक-भौंह सिकोड ली। आयकीज के कक्ष की सज्जा सीधी-सादी और साधारण थी। उसका एकमात्र अलंकरण बगल की दीवार पर, खिडकियों के बीच लगा ग्राम सोवियत की भूमि का बडा नक्शा था, जिसे आयकीज के अनुरोध पर इंजीनियर स्मिर्नोव ने खींचा था और रंगबिरंगी पेंसिलों से चिह्नित किया था। आयकीज ने निमंत्रण के संकेत से मेज के पास रखी कुरसी की ओर इंगित किया। मुलाकातिन अपने शानदार जूतों से खटखट करती दरवाजे से मेज के पास आयी और सलीके से पोशाक ठीक कर बैठ गयी। आयकीज अब उसका चेहरा भली-भांति देख पा रही थी। कोमल सांवली त्वचा भरे-भरे होंठ और आंखों में गहराई नाममात्र को भी नहीं थी, यह बरौनिया थीं, जो उन्हें काली और गहरी बना रही थीं, निकट से स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि उनके तल में से चालाकी और उपेक्षा की सुनहली चिनगारियां बिखरी पड रही हैं। युवती सुन्दर थी, और यह मर्द नहीं, ज़िन्दादिल खूबसूरती थी, किन्तु उसमें आध्यात्मिक सुन्दरता का अभाव था। न जाने क्यों आयकीज ने युवती को अपनी कल्पना में हाथों में दुतार थामे, शोर मचाते प्रशंसकों से घिरा हुआ देखा और मुस्करा पडी इस युवती पर दुतार और विनोदी गीत बहुत फबते थे।

युवती ने मेज पर कोहनी टिकायी, मुडी हुई पतली कलाई पर गाल रखा और नाज-नखरे भरी विश्वस्तता से कहा

"आपका नाम आयकीज है ना, कामरेड उमूरज़ाकोवा? और मेरा नजाकतमा।"

"सुनिये, सुनिये," आयकीज ने उसे टोक दिया, "आप अनीकुल अमाबी की बेटी है न?"

युवती ने सिर हिला दिया।

"मैं आपके अब्बा को थोड़ा-बहुत जानती हूँ," आयकीज ने कहा। "आप को यहाँ आये कुछ ही दिन हुए हैं, है न?"

"मैं यहाँ अलतीनसाय मे पैदा हुई थी," नज़ाकतखा ने ठण्डी सास ली और अचानक पूछ बैठी "इजाजत हो, तो मैं आपको अपने बारे में बताऊँ?"

"बताइये, मैं सुन रही हूँ "

"बात यह है " नज़ाकतखा ने हाथ घुटनों पर रख लिये और आखे उठाई, मानो रटा-रटाया पाठ सुनाने जा रही हो। "जब मैं छोटी थी, हम यह जगह छोड़कर चले गये थे। हम कहा-कहा नहीं रहे। लेकिन सबसे ज्यादा दिन मिर्ज़ाचूल में रहे। वहा उन दिनों नयी जमीन को कृषि योग्य बनाया जा रहा था। अब्बा टोली-नायक थे। आप ऐसा न सोचे मैं भी काम करती थी। टाइमकीपर थी, फिर सेक्रेटरी रही अब्बा कहते हैं 'अब सभी लड़कियों को काम करना चाहिए, नहीं तो अच्छे आदमी से शादी नहीं हो सकेगी' "मुलाकातिन चुप हो गयी, घबराती हुई मुस्करायी और पहले से कम आत्मविश्वास के साथ बोलने लगी "तो दिन बीतते रहे, हम काम करते रहे— आखिर मैं कामचोर तो हूँ नहीं,— लेकिन दिल अपने वतन लौटने को तड़पने लगा। एक बार अब्बा काफी दुखी और परेशान हुए घर लौटे 'तुम्हारा क्या ख़याल है, बेटी, क्या हमे अपने वतन लौट जाना चाहिए? वहाँ अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के बीच हमें आसानी रहेगी, कुछ चैन से रहेंगे ' और मैंने कहा 'जैसा आप कहे, अब्बा, वैसा ही होगा।' और हम यहा अलतीनसाय आ पहुँचे। अब्बा सामूहिक फार्म में शामिल हो चुके हैं, काम कर रहे हैं। मुझे भी कहीं न कहीं काम करना चाहिए। आप मेरी मदद करेंगी ना? क्यों? अब्बा ने कहा था 'आयकीज भी औरत है, वह तुम्हारी परेशानी समझ लेगी, तुम्हारा खयाल रखेगी।'"

युवती अत्यधिक शालीनता से पेश आ रही थी, अपनी गम-कहानी के बीच-बीच में ठण्डी सासें लेती हुई बोल रही थी। आयकीज को लग रहा था यह सब ढोंग है, यह अपने को सयमी और गम्भीर दिखाने की कोशिश कर रही है, जब कि जीवन में बिलकुल ही ऐसी

नही है। त्योहार के मौके का-सा ठाठदार लिबास, नखरीली चेष्टाएँ अल्हड़ चालाक नज़रें जिन्हें वह काली बरौनियों की ओट में छिपाने की पूरी कोशिश कर रही थी, जीवन का आनन्द लूटने में भूखे लाल-लाल होठ,—यह सब उसकी गम्भीर, विश्वासकारक सहृदय बातों से मेल नही खा रहा था। आयकीज़ ने कुछ सोचकर कहा

"ठीक है, मै आपकी मदद करूँगी। आपने कहा था कि आप कभी नयी ज़मीन को कृषि योग्य बनाने मे हाथ बटा चुकी है?

युवती ने डरते-डरते आँखें उठाकर आयकीज़ की ओर देखा मानो कोई चाल चली जा रही हो और हिचकिचाती हुई बोली

"हा हमने काम किया था

"यह तो बहुत अच्छा है। हम लोगो ने भी इन दिनो अछूती भूमि को कृषि योग्य बनाने की ठानी है। इस साल आपको कृषि योग्य बनायी हुई ज़मीन पर काम करना होगा और अगले वर्ष हम आपको किसी अछूती धरतीवाली टोली में भेज देंगे। सोचती हूँ, यह आपके लिए भी लाभदायक होगा और हमारे लिए भी। आपकी उम्र मे "

पर तभी कुछ अप्रत्याशित बात हो गयी नज़ाकतभरा रो पड़ी और इस बार उसकी ईमानदारी मे सन्देह करना कठिन था। वह आँखो से रूमाल हटाये बिना आसुओं के बीच बुदबुदाती रही

"मैं आखिर स्कूल मे पढ़ी हूँ सब कहते है कि मैं अच्छा लिखती हूँ और नोट तैयार करना चाहती हूँ और आप मुझे खेत मे भेज रही हैं क्योकि मैं यहाँ ग़ैर हूँ जब कि मुझे मालूम है कि सामूहिक फार्म के कार्यालय मे सेक्रेटरी की जगह खाली है। लेकिन मैंने सुना है मेत्री की निगाहे फिर उस जगह पर जमी हुई हैं।"

आयकीज़ की आदत थी जब उसे किसी की प्रार्थना पर विचार करना होता, वह जाकेट की जेबो मे हाथ डाले, सोच मे डूबे सिर झुकाये कमरे मे चहलकदमी करने लगती। मुलाकाती को लगने लगता कि वह उसकी बात नही सुन रही है, पर आयकीज़ एकाएक रुककर मेज़ के पास लौट आती और सम्भाषी को शान्ति से विस्तार से बताती कि वह उसकी किस तरह और कैसे सहायता करना चाहती है। ऐसा

है। वह कुछ [illegible] सिगरेट के कश [illegible] हुई बोली

मैनेजर के बारे में आपको जानकारी है वह यहीं [illegible] पर काम करने के लिए अनुरोध कर रही है। इसलिए आपको भी उसका सम्मान करना चाहिए।

नज़ाकतमा के बदन में बेचैन सिहरन भरी। आयकोज समझ नहीं पाये कि इस सिहरन का क्या अर्थ होना चाहिए। वह इस लड़की के बारे में जो कुछ जानता है बेशक वह काफी नहीं है कमज़ोर और लाचार है जैसे पेड़ की ? और बेचारी बच्चों की तरह रोती है कहीं इसकी ज़िन्दगी में किसी तरह की काली छाया तो नहीं पड़ी है या घर में कोई झगड़ा तो नहीं हुआ है? आयकोज को युवती पर दया आने लगी वैसे नज़ाकतमा पीड़ित सी नहीं लगती थी उसका स्वभाव कुछ विनोदी और अल्हड़ लगता था लेकिन प्रकट-रूप में धोखा भी तो हो सकता है। इसके अलावा हसमुख लोगों का जीवन कभी-कभी कष्टकर भी होता है। यदि युवती की प्रार्थना को अस्वीकार कर दे—उसके पुराने दुखों में एक नया दुख बढ़ जायेगा। वैसे आयकोज के पास इनकार करने के लिए कोई ठोस कारण भी नहीं था। सारी बातें ध्यान में रखकर आयकोज ने तय किया कि नज़ाकतमा के खेल में काम करने से लाभ कम होगा जब कि कादीरोव के दफ्तर में वास्तव में जगह खाली थी। क्यों न नज़ाकतमा की उस स्थान के लिए सिफारिश की जाये? आयकोज ने अपनी नोटबुक में कुछ लिखा और पन्ना फाड़कर नज़ाकतमा की ओर बढ़ा दिया

"यह कादीरोव के नाम है। वह आपको काम पर लगा देगा। देखिये, मेरे साथ दगा मत कीजियेगा! और आंसू पोंछ डालिये आप पर ये फबते नहीं है!"

नज़ाकतमा ने सावधानी से अपने गाल से आंसू की आखिरी बूंद पोंछ ली। नोट जेब में डाल लिया गहरा की साम ले आयकोज का शुक्रिया अदा किया और भागती हुई-सी जल्दी से कमरे से बाहर निकल गयी।

स्तेपी में

सामूहिक प्रस्थान के दो-तीन दिन बाद आलिमजान शहर मे लौट आया। शाम देर गये आयकीज और आलिमजान गाव में घूमने निकले, जिसे उसने कई महीनों से नही देखा था। अंधेरा था, आकाश पर चादी के अर्द्धवृताकार तार-सा बाल-चद्र लटका हुआ था, तारे मौन में डूबे एक दूसरे की ओर देख रहे थे, आकाश-गगा दूर फैले मखमल के बादल-सी जाज्वल्यमान हो रही थी आलिमजान और आयकीज नालियों के सुखद कलकल के बीच गाव के शान्त रास्तो से गुजरे, कुछ देर बाग मे बैठे, जो इस समय रात मे निर्जन व निरानन्द लग रहा था। फिर आयकीज अपने पति को स्तेपी की ओर ले गयी।

"तुम बहुत दिनों से स्तेपी मे नही गये याद है, रात मे वह कैसी लगती है? वह जीती-जागती है, बात करती है '

वे मौन चल रहे थे जानते थे कि कभी भी जी भरकर बात कर सकते है। इस समय तो वे केवल दोनों एकान्त मे रहना चाहते थे। आयकीज़ दहकता गाल आलिमजान के कधे से सटाये हुई थी और अपने को ससार मे सबसे सुखी अनुभव कर रही थी।

"हम कब से नही मिले, आलिमजान!" उसने धीरे से विलम्बित उदासी के साथ कहा।

"मुझे लगता है, कई बरस के बाद!" आलिमजान ने भी वैसे ही धीरे से कहा।

"हा, बहुत बरस बाद!"

"पूरा ज़माना बीत गया! पूरा ज़माना आयकीज़!"

उनके पैरों तले राजमार्ग के साथ-साथ जाने रास्ते की मोटी धूल बिखरी हुई थी। आयकीज के कान के पास से घमगादड का पख हल्का-सा सरसराता निकल गया। आयकीज़ आलिमजान से और जोर से सट गयी और कुछ शरारतभरी आवाज मे फुसफुसायी

"तुम न होते, तो मै क्या करती आलिमजान?

आलिमजान मुस्करा दिया।

"लोग कहते हैं कि तुमने यहाँ मेरे बिना ही पहाड़ काट डाले।"

"तुम्हारे बिना ? नही, तुम सदा मेरे पास थे - तुम्हारे बिना मैं सह नही पाती।"

स्तेपी मे पहुँचकर वे रुक गये और देर तक खड़े रात का आनन्द लेते रहे, उसका मृदु मधुर संगीत सुनते रहे।

स्तेपी चैतन्य थी वे यहाँ अकेले थे, बिलकुल अकेले, लेकिन यह वह अकेलापन नही था, जिसे लोगो से दूर भागनेवाले तलाशते हैं। वे अकेले थे, किन्तु सप्राण, आबाद, मेहनतकशो के परिश्रम और मैत्री से समृद्ध दुनिया मे।

आयकीज़ को रात्रिकालीन स्तेपी से प्यार था। रात मे स्तेपी दिन से अधिक अवगम्य भी होती थी।

दिन मे स्तेपी इतनी निस्सीम नही लगती। घूसर तप्त उन्मरीचिका दूरस्थ रूपरेखा को धुन्ध मे ढक लेती, स्तेपी सुनहली धूप मे प्लावित रहती। गीत और फुसफुसाहट, शोर और सरसराहट-सब एकरस अविरल कोलाहल मे विलीन हो जाते।

जब कि दिन मे यह कोलाहलपूर्ण, प्रकाशमान, बहुरंग प्रवाह मानो पृथक धाराओ मे बट जाता। यदि कोई रात का संगीत सुनना चाहता, जो अधिकाश को वीरान और मूक प्रतीत होती है, तो वह उसे स्तेपी मे बसे लोगो के साधारण व असाधारण कार्यों के बारे मे आश्चर्यजनक वाग्मिता मे बताती।

आयकीज़ और आलिमजान आलिंगनबद्ध खड़े हुए बड़ी उत्सुकता से रात की कहानी सुनते रहे

सारी स्तेपी ज्योतियो से आच्छादित थी। इन ज्योतियो मे कुछ प्रखर भी थी, कुछ कठिनाई से दृष्टिगोचर होनेवाली, कुछ बहुवर्णाभासी, कुछ निस्तेज, श्वेत और रक्ताभ उनमे से कुछ आगे बढ़ रही थी, कुछ लहक रही थी, कुछ अधकार मे रत्नो की तरह जगमगा रही थी

दूर, धरती के छोर पर श्वेत बिन्दुओं का साधारण पुंज दृष्टिगोचर हो रहा था। आयकीज़ को मालूम था वहा आर्टीज़ियन कूप खोदा जा रहा था। उसकी एक तरफ कुछ दूरी पर मौसम-प्रेक्षणशाला की टिमटिमा रही थी, जो दिन मे यहाँ से नज़र नही आती थी।

और उधर मृदा विज्ञानियों के तम्बुओं से क्षीण प्रकाश फूट रहा था। स्तेपी में जलते अलावों की लपटें फड़फड़ा रही थीं। पहाड़ियों के निकट भी रक्ताभ लोमशी तारे चमक रहे थे, वे केवल कुछ छोटे थे, -ये चरवाहों की भोंपड़ियों के बाहर जलते अलाव थे।

स्तेपी में भिन्न-भिन्न दिशाओं में घूमते स्पष्ट उज्ज्वल वृत्तों में भी कुछ सम्मोहक-सा लग रहा था, लग रहा था जैसे तारे धीमी गति से चक्कर काटते नाच रहे हों। आयकौज को यह अत्यन्त सुखद लग रहा था कि वे तारे बिलकुल नहीं, अछूती धरती को कृषि योग्य बना रहे ट्रैक्टरों की हेडलाइटें हैं ऐसे – कितने दीप थे स्तेपी में!

ट्रैक्टर दिन की तरह ही एकाग्रचित्त हो बड़े उत्साह से घरघरा रहे थे, किन्तु इस समय, रात में, प्रत्येक ध्वनि पृथक सुनाई दे रही थी, मन्द से मन्द आवाज दूर-दूर तक सुनाई दे रही थी कहीं किसी मनचले के गीत के साथ अकार्डियन बज उठा। रात की निस्तब्धता को चीरती किसी की लम्बी पुकार गूंज उठी। और फिर सब शान्त हो गया, केवल ट्रैक्टरों की निरन्तर सक्रिय घरघर, जो शायद नीरवता का अंग बन चुकी थी, शान्त न होकर स्तेपी के ऊपर तिरती रही उधर कहीं दूर से कोमुज* की मधुर झन्कार तैरती आयी, कहीं बासुरी बज उठी, और इन मन्द सुरों में विचारमग्न मानव स्वर गुंथ गये, कोई रात में अकेला रह जाने पर अपनी प्रियतमा, परिवार के वियोग के बारे में बता रहा था, अपने विचारों, सपनों, आशंकाओं के बारे में बता रहा था

"सुन रहे हो, आलिमजान? चरवाहे अभी सोये नहीं हैं "

"कभी-कभी मुझे लगता है कि वे जानते ही नहीं कि नीन्द क्या होती है। क्या तुम्हें नीन्द नहीं आ रही है?"

"नहीं "

आलिमजान ने उस ओर सकेत किया, जहाँ ट्रैक्टरों के कैंप की बत्तियां जल रही थीं और जेनरेटर का शोर सुनाई दे रहा था।

"पोगोदिन के पास चलें? या स्मिर्नोव के पास जलागार के किनारे?"

---

* कोमुज – मध्य एशिया का एक प्रकार का तार-वाद्य।

मे प्याज तोड रहे थे। उमूरजाक-अता ने मुड़कर बेटी की ओर देख स्नेहपूर्वक पूछा

"क्यो, बेटी, नीन्द कैसी आयी?"

आयक्तीज़ शर्माती हुई मुस्करायी।

"अब आपका दिन भी खुशी-खुशी बीता करेगा, अब्बा"

"हा, बहुत अच्छा हुआ कि वह लौट आया। लेकिन तुम ज़रा जल्दी उठ गयी।"

"समोवार सुलगाना चाहिए।"

"चूक गयी, बेटी, चूक गयी। मैंने चाय का पानी कब का चढ़ा दिया है।"

"आपको तो कुछ आराम करना चाहिए था, अब्बा। मैं खुद सब कर लूगी।"

"तुम्ही तो अब मेरी खुशी हो, बेटी, मेरा काम बस तुम बच्चों का खयाल रखना ही है।"

"आपके सिर वैसे दूसरे काम बहुत हैं। दिन भर तो आप खेत मे"

"सच कहूँ, तो कपास भी मेरे लिए छोटे बच्चे जैसी है। ध्यान नही रखूँ, तो फौरन खर-पतवार से दोस्ती गाठ लेती है। वक्त पर पानी नही पिलाया, तो धूप मे मुरझा जाती है। यही तो बात है, बेटी अब तो इस दुनिया से जाने का वक्त आ गया, पर मर भी तो नही सकता देखो, कितने बच्चो को मेरी जरूरत है।"

आयक्तीज ने पिता के पास आकर उनका आलिगन कर लिया और आखे मूदकर फुसफुसायी

"उफ, आपकी मुझे कितनी जरूरत है, अब्बा! मेरे प्यारे, सबसे प्यारे अब्बा!"

"अच्छा, अच्छा, बेटी," उमूरजाक-अता बुदबुदाये, "जाओ, नाश्ता तैयार करो।"

कोई आधे घटे बाद आलिमजान भी जाग गया। सारे परिवार ने साथ नाश्ता किया और खेत चल पड़े। शीघ्र ही उमूरजाक-अता अपने खेत की ओर मुड़कर पुत्री और आलिमजान से अलग हो गये। आलिमजान दायी ओर फैले कपास के खेतो से नज़रे नही हटा पा

रहा था। वह अपने काम, हरी मखमल से झिलमिलाते अंकुरों, इन खेतों, खेतों में मेहनत करनेवाले लोगों का बहुत अभाव महसूस करता रहा था।

उसने अनजाने में डग भरने शुरू कर दिये, और लाचारी और नाराजगी के कारण पीछे छूट गयी आयकीज के होंठ फड़क उठे आलिमजान उसके बारे में बिलकुल ही भूल गया! वह उसकी अधीरता का कारण समझती थी, उसे खुद को भी जल्दी करनी चाहिए थी। यदि आलिमजान उसे जल्दी करने को कहता, तो उसने बुरा न माना होता। लेकिन उसने देखा तक भी नहीं कि वह पीछे रह गयी है। वह खेतों की ओर बड़ी उत्कंठा और एकाग्रचित्तता से देख रहा था। काश, इस समय फिर रात होती, चारों ओर खामोशी फैली होती, रोशनियों का खजाना बेतरतीबी से बिखरा होता, और प्रिय आंखों की ज्योति निकट होती आयकीज ने ठण्डी सांस ली, किन्तु आलिमजान ने एकाएक मुड़कर उसे आवाज दी

"आयकीज, तुम्हें क्या हो गया? जरा कदम बढ़ाओ!"

वह धूप के कारण पीछे छूटी पत्नी की ओर आंखें मीचे देख रहा था। आयकीज ने उसकी इस प्रेमपूर्ण, प्रतीक्षित दृष्टि के लिए उसके द्वारा हाल में दिखायी उपेक्षा को क्षमा कर दिया।

आलिमजान की टोली जिस खेत में काम करती थी, उस तक पहुँचकर वे रुक गये।

"आज तुम्हें दिन में क्या-क्या करना है?" आयकीज ने पूछा।

"ढेरों काम हैं! लेकिन दोपहर में मैं तुम्हें लेने आऊँगा, खाना साथ खायेंगे। तुम्हें कहां ढूढ़ू?"

"नयी बस्ती में?"

आयकीज ने कितनी ही देर क्यों न लगायी, पर बिछुड़ने का समय आ ही गया। आलिमजान खेत की ओर चल दिया। आयकीज उसकी ओर हाथ हिलाकर चिल्लायी

"मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगी, *आलिमजान।*"

आलिमजान के टुकड़े के आगे, वह टुकड़ा था, जिस पर अल-
कोम्सोमोलों का नेता, सबसे युवा टोली-नायक करीम
और उससे आगे – वृद्ध मुरातअली के खेत थे। सामूहिक

किसान कुदाल से दूहे बना रहे थे और पहले कोमल अकुरो के चारो ओर मिट्टी ढीली कर रहे थे। वे कपास की सीधी कतारो के सहारे-सहारे सडक की ओर बढ़ते जा रहे थे। आयकीज को मेखरी और उसके पिता की टोपियो के सफेद बेलबूटे दिखाई दे रहे थे। वह रुकी और हाथो का मुह पर भोपू बनाकर उसे आवाज दी

"ऐ, मेखरी! क्या हाल है?"

मेखरी ने कमर सीधी करके हाथ में माथा पोंछा और मुनी-मुनी जवाब दिया

"ठीक चल रहा है।"

"दूहे जल्दी बना लोगे?"

मेखरी ने पिता की ओर देखा। इस प्रश्न का उत्तर टोली-नायक को देना चाहिए था, पर मुरातअली ने सिर तक नही उठाया। उसने आयकीज की बात सुन ली है, इसका अन्दाज केवल उसके कुदाल की ताबड-तोड, जोरदार और जानबूझकर लगायी जा रही चोटो से ही लगाया जा सकता था। वृद्ध मानो दिखाना चाहता था वह व्यस्त है, उसे किसी से मतलब नही है, उसे बेकार परेशान न किया जाये

आयकीज मुस्करायी और सिर हिलाया मेखरी, घबराओ मत, मैं सब समझती हूँ – और जाते-जाते पुकारा

"आलिमजान लौट आये है! शाम को हमारे यहाँ होनी जाना।"

आयकीज ने ध्यान नही दिया कि उस समय खेत मे काम कर रहे सामूहिक किसानो मे से एक और आदमी झुककर, कुदाल पर पेट और हथेलियां टिका सडक की ओर द्वेषपूर्ण दृष्टि से देख रहा था यह गफूर था। वह काफी देर तक भानजी को जाते देखता रहा, और जब वह आखो से ओझल हो गयी, तो उसने कुदाल इतनी जोर से जमीन मे मारा कि कपास का नन्हा-सा पौधा बाल-बाल जड से उखडता उखडता बचा।

यह रही अछूती धरती

अछूती धरती मे संघर्ष जोरो पर था। स्तेपी मे बायी और दायी ओर दृष्टिपात करते हुए अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने के सारे चरणो का अवलोकन किया जा सकता था। स्तेपी के बाये छोर पर ज्वाला की असमतल पट्टी, जो सूर्य-किरणो मे लगभग अदृश्य थी,

मेड़ों से आगे बढ़ती जा रही थी। ट्रैक्टर मानो अपने पीछे-पीछे गज की लम्बाई नापकर फैलाती जा रही थी, और सामूहिक किसान जब घास पर कदम रखते तो अपने पीछे काले पद-चिह्न छोड़ते जाते। जमीन पर से जहाँ-तहाँ धूल की गर्दिश लकीरें उड़ रही थीं ये मेंड़ों की झाड़ियों की तरह जाकर घूम रही थीं पास ही बुलडोज़र व ग्रेडर मशीननुमा छोटी टेकरियों को काटते गड्ढों को भरते जमीन को समतल बना रहे थे। मेड़ों से विभाजित जमीन पर कैटरपिलर ट्रैक्टर अपने पीछे शक्तिशाली यन्त्र-मजदूर खींचते पूर्णतया शान्त समुद्र में उतराते छोटे जहाजों की तरह तैर रहे थे।

राजमार्ग से कुछ दूरी पर अन्तर्प्रादेशिक एक्सकेवेटर स्टेशन द्वारा भेजा हुआ एक्सकेवेटर नहर का अगला टुकड़ा खोद रहा था। आयकीज बरबस दुबले-पतले युवा एक्सकेवेटर-चालक के काम को, जिसके भूरे, घुंघराले बालों के केशविन्यास के कारण वह विवर्ण कुकरौंधे जैसा लग रहा था, मुग्ध हुई देखने लगी फूंक मारने की देर है कि चमकीले, हल्के-फुल्के बाल चारों ओर उड़ जायेंगे। युवक के मुख पर हठ व प्रचण्ड क्रोध भलक रहे थे। कमीज की आस्तीनें कोहनियों तक चढ़ी हुई थीं। लीवरों को कसकर पकड़े हुए पतले हाथों में नसें व मांसपेशियाँ तनी हुई थीं। लगता था जैसे वे हाथ नहीं कसकर ताने और गुँथे हुए तार के रस्से हैं। एक्सकेवेटर-चालक अपनी पैनी व एकाग्र दृष्टि डोल से नहीं हटा रहा था। उसकी घनी भौंहें जुड़कर एक चमकीली पट्टी-सी बन गयी थीं। उसकी मुखमुद्रा ऐसे व्यक्ति की-सी हो गयी थी, जो किसी शक्तिशाली शत्रु से जीवन-मरण के निर्णायक संघर्ष में उलझा हुआ हो।

आयकीज को मालूम न था कि युवक से वास्तव में बड़े अध्यवसाय की अपेक्षा की जाती थी जमीन की एक मीटर की ऊपरी सतह पत्थर-सी कठोर थी। डोल के फौलादी दाँते उससे टकराकर कर्कश झन्न के साथ वापस उछल रहे थे, अन्ततः मिट्टी खोदकर उसे एक किनारे पर डालने के लिए डोल को कई बार नीचा करके अच्छी तरह निशाना साधना पड़ रहा था। सरसरी नज़र से देखा जाता, तो एक्सकेवेटर आसानी से बिना रुके काम कर रहा था उसका शक्तिशाली डोल

ऽ ऽ । भूले की तरह चमक रहा था।

स्तेपी में पोगोदिन व स्मिर्नोव के मशीन-चालकों के साथ "विजिल-युन्दुज़" सामूहिक फार्म के अनेक किसान काम कर रहे थे। वे स्तेपी को जला रहे थे, भाड़ियों की जड़े उखाड़ रहे थे, सिंचाई तथा जल-विभाजक यंत्र लगा रहे थे और राजमार्ग से गाव व ट्रैक्टर-स्टेशन तक जानेवाली सड़क का निर्माण कर रहे थे।

आयकीज़ हर मिनट पर सामूहिक किसानों के अभिवादन का उत्तर देती हुई उसी सड़क पर चल रही थी।

निर्माण-स्थल, उस्ताद हज़रतकुल के जुभारू दुकड़े पर सारे में मिट्टी, कंकर, बालू और भूरे पत्थर के ढेर लगे थे, ज़मीन में जहां-तहां नींव के गड्ढे मुह बाये हुए थे, इमारती सामान ढोकर लानेवाले ट्रक घरघरा रहे थे, कंकरीट-मिक्सर करकर कर रहे थे। उस्ताद हज़रतकुल अपने "प्रिय नेता" की ओर जल्दी से बढ़े।

टोली-नायक से आख बराबर करने के लिए सिर पीछे करना ज़रूरी था, और आयकीज़ ने सिर उठाकर पूछा

"कैसा चल रहा है, उस्ताद-अमाकी?"

उस्ताद हज़रतकुल ने एहतियातन उदास व दुखी मुखमुद्रा बना ली।

"शिकायत करना गुनाह है, कामरेड उमूरज़ाकोवा। तुमने हमारी खूब मदद की, तुम्हारे बिना कादीरोव तो हमे खाकर डकार तक न लेता। टोली हमारी बेशक छोटी है, खैर कोई बात नहीं, काम चला रहे हैं "

"चालाकी कर रहे हैं, उस्ताद-अमाकी! अब आपके पास लोग ज़्यादा हैं " आयकीज़ ने रेत और मिट्टी के ढेर पर ध्यानपूर्वक नज़र दौड़ायी "शायद कंकरीट-बिछानेवाले भी हैं?"

टोली-नायक की भौहें सिकुड़ गयी, उसने स्ट्राहेट भौहों तक खीचकर सीने पर हाथ रख हठपूर्ण स्वर में कहा

"टोली में कंकरीट बिछानेवाले एक-दो से ज़्यादा नहीं हैं। देख रही हो, पत्थर गाड़ियों में ढो रहे हैं। नींव में पत्थर जमाने का काम करेंगे।" उसने कनखियों से सतर्कतापूर्वक आयकीज़ की ओर देखा और मुस्कराकर आगे कहा "तुम भी तो चालाकी कर रही हो, कामरेड उमूरज़ाकोवा! फौरन बताओ, किस इरादे से आयी हो? मेरे लोगों को ले जाना चाहती हो? "

6—479

मुझे ज्यादा लोग चाहिए, जो कंकरीट बिछानेवाले हों।"

"यह बुरी बात है, अध्यक्षा! तुमने कारीगरों को मुझे लोन देने के लिए मजबूर किया, और अब खुद छीन रही हो।"

"लेकिन इससे आपके यहाँ कमी थोड़े ही पड़ जायेगी," आयशीज हंस पड़ी। "आपके लिए लोगों की कमी पूरी करना आसान है।"

"कैसे?"

"'बुद्धिमगन पुनर्गठन' से ईंटों के भट्ठे जैसी कोई तरकीब निकाल लीजिये फिर आपके यहां लोग फाजिल मिल जायेंगे।"

उस्ताद हजरतकुल ने सिर हिलाया।

"वाह भाई वाह! वैज्ञानिक सलाह के लिए शुक्रिया, फिर कभी डींग नहीं हांकूंगा। नहीं तो तुम मुझे बिना लोगों के, सिर्फ अपने 'बुद्धिमगन पुनर्गठन' के भरोसे छोड़ जाओगी।"

आयशीज उस्ताद हजरतकुल को भली-भांति समझती थी—ऐसा कौन टोली-नायक है, जो अपनी टोली को कमजोर बनाना चाहेगा!—किन्तु उसने दुःखी व क्रुद्ध होने का दिखावा किया।

"मैं देख रही हूँ, आप भी कंजूस होते जा रहे हैं, उस्ताद-अमाकी! बुरी आदत छूत का रोग होती है।"

"मुझे उलाहना मत दो, अध्यक्ष!"

"बिना उलाहनों के काम नहीं चलता। आपने मेरी बात तो पूरी सुनी ही नहीं और लगे इनकार करने!"

"खैर, बताओ, तुम्हें लोग किस लिए चाहिए? सुनते हैं।"

"मालूम है, उस्ताद-अमाकी, सामूहिक फार्म "अक्तूबर" में भी बस्ती का निर्माण हो रहा है, लेकिन वह सामूहिक फार्म हमारे सामूहिक फार्म से कमजोर है, निर्माण-टोली वहाँ अभी हाल ही में बनायी गयी है। टोली में अनुभवी कारीगर कम हैं, कंकरीट-बिछानेवाले तो बिलकुल ही नहीं है। और बिना कंकरीट के उनका काम कैसे चले? मैंने सोचा आप उस्ताद-अमाकी, व्यवहार-पटु हैं, दूरदर्शी हैं, आपकी टोली मिल-जुलकर काम करती है, मजबूत है। आपका पड़ोसी की मदद करने में क्या जाता है? स्तेपी एक ही बस्ती के निर्माण से तो बदलेगी नहीं। इस इलाके का कायापलट करने के लिए सारी स्तेपी को नयी बस्तियों से सजाना होगा। लेकिन अक्तूबरवाले

हम से पिछड़ सकते हैं एक-दो सप्ताह के लिए अपने लोग उनके यहाँ भेज दीजिये। वे पड़ोसियों को थोड़ा सिखा देंगे, काम करने का तरीका दिखा देंगे, —और वापस लौट आयेंगे।"

आयकीज जैसे-जैसे बोलती रही, वैसे-वैसे उस्ताद हज़रतकुल के माथे की झुर्रियां गायब होती गयीं, आंखें रोशन होती गयीं। उसके मौन होते ही टोली-नायक ने चैन की सांस ली, मानो आयकीज उनसे कारीगर छीन नहीं रही हो, बल्कि नये लोगों को भेजने का प्रस्ताव कर रही हो। उन्होंने टोप माथे से गुद्दी पर खींचते हुए कहा।

"तुम क्यों मेरा माथा खपा रही थीं, कामरेड उमूरजाकोवा? यह फौरन ही कह देतीं कि काम के फायदे के लिए दो कंकरीट-बिछानेवालों को भेजना है "

"मैंने तो बात इसी से ही शुरू की थी!"

"वाह री, अध्यक्ष, तुमने बात घुमा-फिराकर शुरू की, जब कि हमारे साथ बात दो टूक और सीधे-सादे ढंग से करनी चाहिए। अक्तूबरवालों के लिए मैं अपने कामगारों को भेज दूंगा। लेकिन वे ज़रा खुद भी तो हाथ पांव चलायें! उन्हें दूसरों का मुंह ताकते हुए बहुत देर हो चुकी है।"

आयकीज मुस्करा पड़ी।

"और आप कह रहे थे कि आपके पास कंकरीट-बिछानेवाले कम हैं।"

"जो धावे, सो पावे। मुझे क्या पता था कि उनकी ज़रूरत क्यों पड़ी है। कभी-कभी क्या होता है? गरीबों से लिया—अमीरों को दे दिया।"

"क्या ऐसा हुआ है, उस्ताद-अमाकी?"

"होता है, अध्यक्ष! मेरा भाई ताशकन्द में पढ़ता था, काम करने मास्को चला गया। और मास्को में, सुना है, अपने कामगारों को भी काम पर लगाना मुश्किल है। काश, उन पढ़े-लिखे लोगों को तो हमारे यहाँ सामूहिक फार्म में भेज देते शायद, काम ही आते, क्यों, अध्यक्षा?"

"आज नहीं, तो कल काम आयेंगे! आखिर हमारा काम बढ़ रहा है, उस्ताद-अमाकी!"

हम तरक्की कर रहे हैं, अच्छा, हमें शानदार सहनुमा क-िया

उमराह हबगाहा से साथ बातचीत के बाद आयकीज को कोई भाग भड़मे के पानी जैसी झनझनाहट पैदा करने, हलचल मचा देने-वाली ताजगी महसूस होने लगी। भागो और दोस्त, हमख्याल लोग हैं उनके पास न किसी बाधा का डर है, न किसी अचानक टूट पड़ने-वाली विपदा का वे उसकी बात समझते हैं, ध्यानपूर्वक सुनते हैं, मानते हैं कि वह सही सोचती है, उन्हीं बातों का ध्यान रखती है, जो वे स्वयं सोचते हैं और जिनका ध्यान रखते हैं। लोग सुखी होना चाहते हैं, और वह भी चाहती है कि लोग सुखी रहें, उनकी और आलतीनसायवासियों की आकांक्षाएं एक ही हैं—इस बात के एहसास से आयकीज खुद को भी सुखी अनुभव करने लगी।

निर्माताओं से बातचीत करके वह उस खेत की ओर चल पड़ी, जहां रोपे हुए नये पौधों की कतारें लगी थीं। वे अत्यन्त कोमल और निस्सहाय थे और दूर से वृक्षों से तोड़कर जमीन में गाड़ दी गयी डडियों-से लगते थे।

उस बाग के लिए सुरक्षित रखे गये टुकड़े पर आयकीज को बूढ़े बागबान हलीम-बाबा और उनकी विश्वस्त सहायिका, आलिमजान की बहन लोला मिल गये। लोला गरमियों की छुट्टियां बिताने अपने सामूहिक फार्म में आयी हुई थी।

चिलचिलाती धूप अपने धधकते स्पर्शों से जमीन का आलिंगन करने लगी थी।

आयकीज हलीम-बाबा के लगाये बाग में लोला के साथ टहलती हुई उस से शहरी जिन्दगी के बारे में पूछती रही, पर साथ-साथ सड़क की ओर भी देखती रही, जिस पर आलिमजान किसी भी क्षण दिखाई देना चाहिए था। बाग में कार्यरत सामूहिक किसान खा-पी चुके थे, उन्होंने आयकीज को अपने साथ खाने का निमंत्रण दिया था, किन्तु उसने इनकार कर दिया था। वह आलिमजान की प्रतीक्षा कर रही थी।

बाग का निरीक्षण कर और लोला को उसकी आवश्यकता पड़ने पर उसे ढूंढने की जगह बता आयकीज स्तेपी से होकर वन के किनारे की

और चल दी। वहाँ वन-फार्म के कर्मी नये वृक्ष लगा रहे थे, जिससे स्तेपी को मरुस्थल से अलग करनेवाली हरी दीवार ठोस और अभेद्य हो जाये। दीवार के उस ओर गरम-गरम पीली रेत फैली थी। और उसके ऊपर, ठेठ क्षितिज तक भयानक उन्मरीचिका घनी होती जा रही थी। क्षितिज के उस ओर से भूरी धुंध गहरे नीले, शीशे-से निर्मल आकाश पर छाती जा रही थी। हवा में तपन महसूस हो रही थी

आयकीज का दिल जैसे एक मिनट के लिए रुक-सा गया और फिर ज़ोर-ज़ोर से धक-धक करने लगा। वह जल्दी-जल्दी वापस बाग व बस्ती की ओर लौट पड़ी सबको चेतावनी देनी थी कि उन पर विपदा टूट पड़नेवाली है।

आयकीज ने शीघ्र ही हलीम-बाबा व लोला को अपनी आशंकाओं के बारे में बता दिया।

लेकिन आलिमजान का अभी तक कुछ पता न था

नौ

अग्रिम मोर्चे पर

पोगोदिन को खेत-कैंप में रात बिताते कई दिन हो चुके थे।

उस सुबह वह जल्दी उठा और उठते ही उसे ट्रैक्टरों की शक्तिशाली स्फूर्तिदायक घरघर सुनाई दी। वह साबुन व तौलिया लेकर नाली पर पहुंचा और ज़ोर-ज़ोर से फू-फू करते, ठण्ड से सिकुड़ते हाथ-मुंह धोये। उसके स्थूल व शिथिल शरीर का कांपता प्रतिबिम्ब सारी नाली में फैला हुआ था। पोगोदिन ने असन्तोष से नाक-भौं सिकोड़े और किंचित् घृणा भरे स्वर में कहा "यह क्या! फूलता जा रहा हूँ! लोला मुझे आखिर प्यार किस लिए करती है?" लोला का खयाल आते ही पोगोदिन के दिल में मीठी झुरझुरी होने लगी आखिर उसकी यानी भालू की तकदीर साथ दे रही है। बोवाई जब

होंठों पर थी, सौम्य अन्तर्निखार आ गयी थी, और पोगोदिन के लिए काम करना अचानक अधिक आसान और आनन्ददायक हो उठा। यहाँ तक कि उसकी चाल भी, जिसे देखकर सभी ट्रैक्टर-चालक विस्मित हो उठते थे, तेज और आकर्षक हो गयी थी। और उसकी मरदाना मंद आवाज में भी अपनी विशिष्टता के प्रतिकूल लोच और सान्त्वनादायी कोमलता आ गयी थी।

पोगोदिन ने एक बार फिर अपने प्रतिबिम्ब पर नजर डाली और उदास होकर आरसी से दूर हट गया। "कितना बेडौल हूँ! क्या थोड़ी कसरत करना शुरू कर दूँ?" पोगोदिन रोजाना व्यायाम करने का दृढ़ निश्चय करता और हर दिन उसे मालूम पड़ता कि उसके पास बिलकुल भी समय नहीं रहता है। उसकी नींद खुलने की देर होती नहीं कि उसके सिर पर ढेरों फौरी काम आ टूट पड़ते, और अक्सर अत्यावश्यक कार्य व चिन्तायें।

पोगोदिन ने तौलिये से बदन रगड़-रगड़कर लाल कर लिया, कमीज पहनी, कंधों पर तेल के धब्बोंवाला नीला ओवरआल डाला, छोटे, कम घने बालों में कंघी की, चलते-चलते पिछली शाम के बचे ठंडे गोश्त के साथ नान खायी और जल्दी-जल्दी अपने ट्रैक्टर-चालकों की ओर रवाना हो गया।

ट्रैक्टर-चालकों में बहुत-से युवा और अनुभवहीन थे। उनका उत्साह बढ़ाना और सलाह देकर मदद करना जरूरी था। कैंप की सारी कमियाँ अभी दूर न की जा सकी थीं वायरलेस बीच-बीच में काम करना बंद कर देता था, दुकान में आवश्यक सौदा हमेशा नहीं पहुँचाया जाता था, चलती-फिरती नाई की दुकान में औजारों की कमी थी सिर पर ढेरों काम थे, फिर भी पोगोदिन दोपहर के खाने में और छोटे-मोटे कामों में आधा घंटे की "बचत" कर अपनी भारी तेज चाल से हलीम-बाबा के नये बाग की तरफ रवाना हो गया, गोया यह पता लगाने जा रहा हो कि वृद्ध बागबान को किसी प्रकार की सहायता की जरूरत है या नहीं। हलीम-बाबा मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के संदिग्ध दीखते चिन्ताशील निदेशक के साथ, जिसमें अभी तक सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ी थी, बात करते हुए—सब समझते सफेद हुई दाढ़ी ही दाढ़ी में मुस्कराते रहे और लोला पास खड़ी-खड़ी शर्माती हुई

अपने रंग बिरंगे, गुलनुमा कुर्ते पर काली पेटी पर उपस्थित बैठी रही, उसके गोल-मटोल गालों के गड्ढों और होंठों की कोरों में उल्लसित मुस्कान छिपी हुई थी। युवती जब सामने पोगोदिन से मिल चुकी थी, वे सर्वप्रधान बात के अलावा अनेक विषयों पर बात कर चुके थे और वो बात अधूरी रह गयी थी जो पोगोदिन ने अपने आगमन से शुरू कर दिया था। सोरा भली-भांति जानती थी कि पोगोदिन कितना व्यस्त रहता है। और यदि फिर भी वह समय निकालकर कोई कारण सूझने ही बाग में आया है, इसका अर्थ है कि उसे उसके यानी सोरा के बिना बहुत मुश्किल हो रही है।

उसके निकट आती आवाज़ को देखकर पोगोदिन ने जल्दी-जल्दी हकीम-बाबा और सोरा से विदा ली और लम्बे-लम्बे डग भरता खेतों में ट्रैक्टर-चालकों के पास चल पड़ा।

उसे सबसे पहले मुवानकुल मिला। वह शक्तिशाली ट्रैक्टर की केबिन में आत्मविश्वासपूर्वक सिर किंचित् पीछे किये बड़ी आसानी से बैठा उसे धीमी, कभी-कभी अनुद्योगी लगनेवाली चेष्टाओं से चला रहा था। मुवानकुल बिलकुल अपने ट्रैक्टर की तरह था मन्द, आलसी होते हुए अत्यन्त अध्यवसायी था और उसमें महावीर की शक्ति थी यदि ज़ोर लगाये, तो शायद भारी-भरकम लोहे की मशीन को भी बिना इंजन चलाये उसकी जगह से सरका दे। ट्रैक्टर भी मानो किसी निकट सम्बन्धी की तरह उपकार करता हुआ बिना आपत्ति किये अपने स्वामी की आज्ञा का पालन कर रहा था।

पोगोदिन ने मुवानकुल को आवाज़ दी। वह इंजन की आवाज़ कम कर ज़मीन पर कूदा और नेकदिली से चिल्लाया

"अहा, निदेशक! अच्छा किया जो आ गये, कुछ बातें करनी हैं। लेकिन माफ़ करना तुम मेहमान तो हो, पर तुम्हारी ख़ातिरदारी करने के लिए मेरे पास सनीफों के सिवा कुछ नहीं है!"

मुवानकुल बिना क़मीज़ पहने काम कर रहा था। गरमियों में धूप-ताम्र हुई उसकी त्वचा नमी के कारण रवि-रश्मियों में दमक रही थी, मैग्नेशिया फौलाद से ढली लगती थी। पोगोदिन ने उसका शक्तिशाली, मज़बूत, निहाई जैसा कंधा थपथपाया और खुद भी मुस्करा दिया।

काले बादल की ओर से आ रहा था। यह गर्जन-मेघ नहीं था, ज़मीन से काफी ऊंचाई पर धूल प्रवाहित हो रही थी, जिसे मरुस्थल से उत्थित वायु उड़ाये लिये जा रही थी।

कुछ ही क्षणों में सड़क से थोड़ी दूरी पर धूल का बवंडर स्तम्भ – बगूले का सहसा कुण्डलित बन गुजर गया। खेतों और सड़क पर पड़ी हुई रेत सरसराती हुई उड़ी और उत्तरोत्तर वेगवान वायु की चपेट में आकर कपास के पौधों की कतारों के बीच में से उड़ने लगी। स्तेपी से, रेगिस्तान से रेत की एक के बाद एक नयी लहरें आ रही थीं। खेतों के ऊपर अनेक बगूलों की धुंध मंडरा रही थी, जो ताण्डव करने लगे थे।

पोगोदिन ने मोटरसाइकिल की रफ्तार बढ़ा दी। हवा पीछे से रेत उड़ाकर थपेड़े मार रही थी, मिट्टी के ढेले उछाल रही थी। मोटरसाइकिल धूल के घुटनभरे गुबार में सरपट दौड़ी जा रही थी, लेकिन पोगोदिन बेपरवाह केवल ट्रैक्टर-चालकों के बारे में सोच रहा था, जो रेत के बगूलों के बीच में से अपने ट्रैक्टर निकाल रहे थे। उसे उनके क्लान्त, धूलभरे चेहरे नजर आ रहे थे और शायद उनकी तानेभरी आवाजें भी कानों मे गूंज रही थीं "यह तुमने क्या कर दिया, निदेशक, हमें आंधी में भाग्य भरोसे छोड़ दिया? आखिर हम स्तेपी में खेलने तो आये नहीं थे! स्तेपी शान्त रहनेवाली जगह नहीं है। उसका हमारे ऊपर लू, तेज हवा, बारिश और आंधी भेजने में कुछ नहीं जाता। आदमी को हमेशा चौकन्ना रहना चाहिए, लेकिन तुमने, निदेशक, वैगन लेने का मौका गवा दिया, जिनमें हम आंधी से सिर छिपा सकते, खाना खा सकते, सो सकते थे। बहुत भारी भूल कर दी, निदेशक! बहुत भारी भूल! "

पोगोदिन को स्मिर्नोव कार्यालय में नहीं, जलागार के तट पर मिला। पोगोदिन से बिना कुछ कहे इंजीनियर ने सिर हिलाकर मुंह फिर उफनती तरंगों की ओर कर लिया। वे ज़ोरदार शोर के साथ किनारों से टकरा रही थीं, पीछे लौट रही थीं, मानो फिर अपनी पूरी प्रचण्ड शक्ति के साथ चारों ओर छींटों व फेन के प्रपात उड़ाती दीवारों पर टूट पड़ने के लिए शक्ति बटोर रही हों। पक्षी तीखी, शोर करते पानी के ऊपर भटक रहे थे

"खोंगे पर है!" स्मिर्नोव ने स्निग्ध मुस्कान के साथ कहा। "कोई बात नहीं, टिके रहेंगे! जिनारे पूरी ईमानदारी से मजबूत बनाये हैं."

पोगोदिन मोटरसाइकिल को जमीन पर न गिरने देने के लिए उसे थामे हुए चिल्लाया

"लेकिन सारे कामों में शायद तुम ईमानदारी नहीं बरत पाते हो "

स्मिर्नोव ने दिलचस्पी जाहिर करते हुए उसकी ओर देखा।

"कहो, कहो, स्तेपी के हीरो! यहाँ कैसे आना हुआ?

"चलो, उधर चलें, जहाँ शोर कुछ कम हो। यहाँ तो बस संकेत से ही बातचीत की जा सकती है, नहीं तो आंधी पाव उखाड़ देगी

वे दफ्तर में गये। स्मिर्नोव ने पोगोदिन को मेज़ के निकट आराम-कुर्सी पर बिठाकर खुद एक दूसरी खींच उसके पास बैठ गये और किंचित् स्पष्ट सतर्कतापूर्वक उससे पूछने लगे।

"लगता है तुम फट पड़ने को तैयार बैठे हो। कौन है वह जिसने तुम्हें ठेस पहुँचाई है?'

"तुमने, इवान निकितिच! और बहुत बुरी तरह!

"यह बात है तो लो उड़ा दो मेरी धज्जियाँ! तुम इसमें तो माहिर हो ही!"

"कटाक्ष बेकार कर रहे हो, इवान निकितिच। इस वक्त मुझे मज़ाक की फुरसत नहीं है।'

"तो फिर फौरन बताओ, क्या बात है।'

किन्तु पोगोदिन हिचकिचाने लगा। वह हमेशा मुखर व जोशीला होते हुए भी इस समय संयम बरत रहा था। केवल उसकी दृष्टि क्षोभपूर्ण व रूखी थी। पोगोदिन को अभी तक एक बार भी निर्माण कार्य के अधिकारी से बहस नहीं करनी पड़ी थी। वह स्मिर्नोव पर विश्वास करता था, उसका आदर करता था, और उसके लिए ऐसे व्यक्ति पर आक्षेप करना आसान नहीं था, जिसे वह अपना हमख़याल मानता रहा हो।

"बात यह है, इवान निकितिच," पोगोदिन ने उस पर से नज़र हटाकर खिड़की की ओर देखते हुए कहा, जहाँ आंधी की गदली धुंध

के साथ मिलकर शाम का धुंधलका गहराता जा रहा था। "निर्माण कार्य का अधिकारी होने के नाते हमारे काम की सफलता के लिए पूरी तरह तुम ही जवाबदेह हो ना? हर चीज के लिए जवाबदेह हो, हर निर्माण-स्थल के लिए? "

"हम मे से हरेक हर चीज के लिए जिम्मेदार है "

"छोड़ो, इवान निकितिच! इस वक्त बात तुम्हारी हो रही है। सारा इन्तजाम तुम ही चला रहे हो, इसलिए तुम ही से पूछ रहा हूँ! तुमने मुझे क्यो नही बताया कि तुम्हे वैगन मिल चुके हैं? उन्हे तुमने किस-किस को दिया?"

"वैगन कम थे, इवान बोरिसोविच।"

"मानता हूँ, कम थे! पर थे तो सही! और तुमने उन्हे एक्सके-वेटर-चालको को दे दिया। और हम क्या तुम्हारे लिए गैर हैं? "

"इवान बोरिसोविच! "

"ठहरिये, इवान निकितिच " पोगोदिन ने हाथ फैला दिये, मानो उसे आश्चर्य हो रहा हो, बोला "वाह, कितने मजे की बात है! हम सब एक ही काम मे लगे हैं। तुम्हे हमारा सचालक बना दिया गया, लेकिन मालूम पडा, तुमने सबको अपने और पराये मे बाट रखा है एक्सकेवेटर-चालक —अपने विभाग मे काम करते हैं, उनका तो खयाल रखना चाहिए, पर ट्रैक्टर-चालक —पराये हैं, पोगोदिन के है! यानी बिना इसके काम चला लेंगे "

स्मिर्नोव मौन कुरसी से उठकर कमरे मे चहलकदमी करने लगे, र पोगोदिन जोश मे बोलता रहा

"आखिर तुम्हारे दिमाग मे यह बात आयी कैसे, इवान निकितिच? ा फिर यह घुला-घुलाकर मारनेवाली छूत है? अपने विभाग के ारो ओर मोटी-मोटी दीवारे खडी करके तुम लोग सोचने लगे कि ाद भी मेरे लिए ही चमकता है और सूरज भी। अपने लोगो को ामान दिलवा दिया अपने निर्माण-स्थल पर पहुँचवा दिया—शाबाशी ी मिल गयी और काम भी अच्छा हो गया! तुम्हे तो मिल गया, र मुझे नही मिला। कुल मिलाकर भी तो अच्छा नहीं हुआ। क्योंकि ार हम ट्रैक्टर-चालकों ने अपना काम नही किया, तो सार्वजनिक ट' मे मिल जायेगा। यानी तुम्हारे एक्सकेवेटर-चालकों की

मेहनत भी बेकार जायेगी! और उसका मतलब यह हुआ कि तुम कादीरोव के हाथ की कठपुतली हुए जा रहे हो! कहीं काम रुक गया, तो विश्वास रखो, वह शोर मचाने का मौका हाथ से नहीं निकलने देगा कहेगा – मैंने कहा था, मैंने आगाह किया था! तुम खुद ही देख रहे हो, आधी ने हमें सोते में आ घेरा है "

"तुम घबराओ नहीं," स्मिर्नोव गुर्राये और वायुदाबमापी पर नजर डालकर बोले, "तुम्हारे ट्रैक्टर-चालकों का कुछ नहीं बिगड़ेगा। आधी ज्यादा देर नहीं चलेगी।"

"यह शान्त हुई – दूसरी आ जायेगी।"

"डटे रहेंगे!" स्मिर्नोव ने अब कुछ कम आत्मविश्वास के साथ कहा। "तुम्हारे लड़के बहादुर हैं, ऐसी-वैसी आधी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी। "

पोगोदिन ने स्मिर्नोव की ओर ध्यानपूर्वक देखकर सिर हिलाया।

"मैं तुम्हारा चेहरा देखकर कह रहा हूँ, इवान निकितिच, कि तुम्हें खुद भी अपने कहे पर विश्वास नहीं है। और अपनी गलती मानना तुम्हें खटकता है।"

वह थोड़ी देर मौन साध कुछ सोचकर आगे बोला

"मुश्किलों पर हम बेशक काबू पा लेंगे लेकिन पिछले कुछ अर्से से हम हर तरह की साधारण कमियों को आम बात मानने और उन्हें मुसीबत पड़ने पर सुधारने के आदी हो गये हैं। और 'हुर्रा! हुर्रा!' चिल्लाते हैं 'जल्दी से जल्दी स्तेपी में चलिये, साथियो, वहाँ बहुत अच्छा है, मुश्किल है न रहने को ठौर, न खाने को कौर!' और हम अपने लोगों की कठिनाइयों में न डरने की अद्भुत, अन्युत्तम विशेषता के इतने आदी हो गये हैं कि कभी-कभी खयाल भी नहीं करते कि इन कठिनाइयों को कम-से-कम पैदा होने देना चाहिए। यह सच है कि उस हालत में हम जिम्मेदार कर्मियों को ज़रा मुश्किल होगी, पर आखिर हम इसी लिए तो जिम्मेदार कर्मी कहलाते हैं।"

स्मिर्नोव निढाल होकर कुरसी पर बैठ गया और न जाने पोगोदिन पर या खुद पर, व्यग्यपूर्वक मुस्कराकर पूछा

"सब कह लिया?"

"तुम्हारे लिए काफी है।"

इस तरह स्मिर्नोव जैसे इतने-से समय में भारी-भरकम हो उठे, उनके कंधे भी झुक गये, मानो उन पर भारी बोझ आ पड़ा हो।

"बात यह है, प्यारे इवान बोरिसोविच," स्मिर्नोव ने चाय की आड़ में अपनी पश्चात्तापी घबराहट छिपाने का प्रयास करते हुए धीरे-धीरे कहा। "तुम्हारी बात मैं सुनता रहा, सुनता रहा, पर कोई नयी बात उसमें नहीं मिली। मुझे कायल करने की कोई ज़रूरत नहीं है, मैं खुद भी सब जानता हूँ। जैसे ही वैगन आयेंगे, सबसे पहले तुम्हें भिजवा दूँगा।"

"जब आयेंगे, तब नहीं, बल्कि अभी!" पोगोदिन ने स्मिर्नोव की, जिनके लिए इस तरह तुरन्त अपनी भूल स्वीकार करना और आत्मसमर्पण करना कठिन था, स्थिति समझते हुए दृढ़तापूर्वक कहा।

"इस वक्त मैं उन्हें कहीं से नहीं ले सकता "

पोगोदिन हंस पड़ा।

"झूठ बोलते हो, इवान निकितिच, ज़रूर कहीं आपत्काल के लिए सुरक्षित रखा होगा! तुम्हारे जैसा कंजूस, जैसे कि तुम अब हो चुके हो, ज़रूर आड़े वक्त के लिए कुछ बचाकर रखता है!"

स्मिर्नोव ने अपनी मेज़ के पास जाकर एक दराज़ खींची, एक कागज़ निकालकर उस पर हस्ताक्षर किये और पोगोदिन की ओर बढ़ाया।

"यह लो। और पिण्ड छोड़ो। कल सुबह लोगों को स्टेशन पर स्टोर में भेज देना।"

"आज ही भेज दूँगा!" पोगोदिन ने उठते हुए कहा।

स्मिर्नोव भी उठ खड़े हुए।

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी! यह याद रखना मैंने तुम्हारी बात सिर्फ़ तुमसे पीछा छुड़ाने के लिए ही मानी है।"

पोगोदिन शरारती ढंग से मुस्कराया।

"समझता हूँ, इवान निकितिच! "

"और कोई शिकायत तो नहीं है?"

पोगोदिन गम्भीर हो गया और स्मिर्नोव के पास आ उनके कंधे पर हाथ रखकर धीरे से बोला

"इवान निकितिच, मैं तुम्हारे पर वैगनों के लिए थोड़े ही नाराज़

हुआ था। मैं शायद उनके बिना भी काम चला लेता लेकिन तुम्हारे बिना, जिस रूप मे मैं तुम्हे काफी साल से जानता हूँ, मुझे मुश्किल होती मैंने जब इन वैगनो के बारे मे सुना "

"ठीक है। चुप करो।"

"मेरी बात समझ गये, इवान निकितिच ?"

"चुप रहो। वैसे ही मेरा जी मिचला रहा है।"

स्मिर्नोव ने खीज भरी चेष्टा के साथ अपने श्वेताभ बाल कान से गुद्दी की ओर बिखेर लिये, और जब सिर उठाया, उनका चेहरा शान्त और हँसमुख था मित्रो ने एक दूसरे का प्रगाढ आलिंगन किया और वैसे ही दरवाजे की ओर बढे।

स्मिर्नोव के दरवाजा खोलते ही उनकी आखो मे बारीक किरकिरी, सूखी रेत भर गयी। किवाड भडाक से घर की बाहरी दीवार से जा टकराया, कब्जे जोर से चरमराये, दीवार का पलस्तर झड गया। स्मिर्नोव बडी मुश्किल से किसी तरह दरवाजा बद कर पाये वह ध्यानपूर्वक लहरो के भयानक छपाके सुनते, मेघ, रेत व हवा की गति से आच्छादित धुधले अधकार मे झाकते कुछ मिनट मौन खडे रहे और असमजस मे सिर हिलाकर पूछा

"तुम ऐसे खराब मौसम मे वापस जाने की सोच रहे हो ? इसके सुधरने तक मेरे यहा इन्तजार कर लेते "

"कौन जाने, कितनी देर इन्तजार करना पड जाये ? तुम्हे मालूम तो है कि इन्तजार करना मौत के बराबर होता है। नही इवान निकितिच, मैं तो जाऊँगा वैगनो का इन्तजाम करना है। और वैसे भी मेरा इस वक्त वहा कैप मे रहना बेहतर होगा "

"यही सही तुम्हारा बाल भी बाका न हो।"

योर्गोदिन शीघ्रातिशीघ्र कैंप मे पहुँचना चाहता था। उसने गाव से गुजरनेवाले रास्ते मे न जाकर निर्जन स्तेपी से निकलनेवाली पुरानी, सीधी और सकरी पगडण्डी से जाने का फैसला किया। उस समय पगडण्डी रेत से ढक चुकी थी, फिर इतने अधेरे मे पगडण्डी को हर हालत मे नही देखा जा सकता था। आधी ने पहचान के सारे चिह्न मिटा दिये थे, और योर्गोदिन अटकल से, यह न जानते हुए कि उस क्षण वह कहा है, सरपट मोटरसाइकिल दौडाये लिये जा रहा

था उस पर केवल एक ही धुन सवार थी, जो वह स्वयं एक सक्रिय, आवेशपूर्ण शब्द में व्यक्त कर रहा था: जल्दी! जल्दी, जल्दी - क्योंकि आंधी व स्तेपी से संघर्ष कर रहे लोगों को उसकी ज़रूरत है! जल्दी - क्योंकि उसे मुश्किल भले ही हो रही हो, पर लोगों को उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल हो रही है, और उसे वहाँ, उन लोगों के साथ होना चाहिए, जिन्हें सबसे ज़्यादा मुश्किल हो रही है। जल्दी, जल्दी! वे ही बेकार चक्कर काटते रहें, जो केवल लोगों को आगे धकेलते हैं, न कि खुद मैदाने जंग में कूदते हैं। कम्युनिस्ट का स्थान अग्रिम मोर्चे पर है। केवल अग्रिम मोर्चे पर! जल्दी, जल्दी!

मोटरसाइकिल उछल रही थी और लग रहा था कि किसी भी क्षण उसके अंजर-पंजर बिखर जायेंगे। चश्मा रेत से पूरा बचाव नहीं कर पा रहा था। रेत आंखों में जा रही थी, कानों में भर रही थी, दांतों में किरकिरा रही थी, हैंडिल पर जमे हाथों में चुभ रही थी, उन्हें कोड़े-से मार रही थी। चारों ओर आंधी ने साम्राज्य जमा लिया था, लेकिन पॉगोदिन उसे देख नहीं रहा था, केवल उसका शोर सुन रहा था। वह मानो इंजन के ज़ोरदार खड़खड़-घरघर को सोख रही थी, हवा की चीख में, हवा में तेज़ी से उड़ती रेत की खोखली सरसराहट से उसे दबा रही थी।

पोगोदिन के रास्ते में एक खड्ड था। दिन में उस से अपनी मोटरसाइकिल निकालना बहुत आसान था, पर इस समय निदेशक यह अन्दाज़ भी नहीं लगा पाया कि खड्ड अभी ज़्यादा दूर है कि नहीं। पोगोदिन पूरी रफ्तार से उसके किनारे पर पहुँच गया। मोटरसाइकिल कुछ उछली और एक ओर गिर गयी।

पोगोदिन को होश खड्ड के तल में आया, जहाँ वह मोटरसाइकिल के साथ लुढ़कता हुआ पहुँच गया था। उसने उठने की कोशिश की, पर पहली हरकत के साथ ही घुटने में इतना तेज़ दर्द हुआ, मानो इसमें किसी ने तपती हुई सूई चुभा दी हो। पोगोदिन कराहता हुआ ज़मीन पर बैठ गया। और भी बुरा हो गया। उसे किसी भी कीमत पर जाना था, लेकिन वह हिल-डुल भी नहीं सकता था उसकी आवाज़ें आंधी निगल रही थी, सहायता की आशा कहीं से नहीं रही थी

पोगोदिन अंधेरी स्तेपी में पड़ा तड़पता रहा, दर्द से उतना नहीं,

जितना कि अपनी दयनीय लाचार स्थिति से। और आंधी प्रचण्ड रूप धारण करती रही, हवा सूखी मिट्टी और रेत के ढेरों को धड़ से चारों ओर उड़ाती रही

दस

आशंकाजनक रात

स्तेपी में जब अचानक रेतीली आंधी आयी उग्नाद हजरतकुल इमारती सामान तिरपाल से ढककर अपनी टोली को अलतीनसाय ले गये। हलीम-बाबा ने आयकीज व लोला के साथ कैंप जाने का फैसला किया उनकी इच्छा संकट के क्षणों में अपने प्रिय बालकों – नये रोपे गये पौधों के निकट रहने की थी

आंधी विशाल कटीले गोले की तरह स्तेपी खेतों सड़कों व अलतीनसाय के रास्तों पर चलती रही गरम रेत से युक्त हवा नमकीन पीली लग रही थी। हवा धूल, सूखी टहनियां और जड़ से उखड़ी घास उड़ा रही थी। आयकीज स्पष्ट रूप से कल्पना कर रही थी कि गांव में, सड़कों पर और खेतों में क्या हाल हुआ होगा। कपास के कोमल पौधे शायद रेत से दब चुके होंगे। अलतीनसाय में वृक्ष धूल के बोझ के मारे झुक गये होंगे, हवा कई घरों की छतों को उड़ा ले गयी होगी

हलीम-बाबा, आयकीज व लोला हथेलियों से आंखे ढके, अपने पैने पंजों से मुंह खरोंच डालनेवाली हवा में दूसरी ओर मुंह किये स्तेपी में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे वृद्ध बार-बार मुड़कर उस ओर देख रहा था, जहां वह निरीह पौधों को आंधी के भरोसे छोड़ आया था, किन्तु रेत के घने आवरण में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

आंधी की गरज के बीच सहसा भूली-भटकी-सी जानी-पहचानी शान्तिदायक आवाजें कान में पड़ रही थीं कभी एक ओर से, तो कभी दूसरी ओर से ट्रैक्टरों की आन्तरायिक घरघर सुनाई दे रही

7–49—

थी – बहुत-से ट्रैक्टर-चालक तेज हवा के बावजूद गर्म धूल में काम करना जारी रखे हुए थे।

वृद्ध बागवान और उसकी हमराह बड़ी मुश्किल से पूर्वनिश्चित घर – पोगोदिन के मुख्यालय तक पहुंच गये।

घर में कुछ सामूहिक किसान और अपने काम के बाद भारी बैठे ट्रैक्टर-चालक मिले। पोगोदिन के कमरे में कोई न था।

हकीम-बाबा और सोना बैठ गयीं। आयकीज खिड़की के पास गयी।

आंधी से उड़ाये रेत के कण शीशों से टकरा-टकराकर नीचे खिसक रहे थे – जैसे परवाने शमा के पास आकर तत्क्षण जलकर गिर पड़ते है, पर शमा पर परवानों के एक के बाद एक झुण्ड उड़कर आते रहते है। शीशे धूल के कारण धुंधले पड़ गये। खिड़की के बाहर भी धुंधला था। आयकीज इस पीले-भूरे कोहरे में खेत में घूमते, खेत से निकलते, एक इमारत से दूसरी इमारत की ओर भागते लोगों की आकृतियों को बड़ी मुश्किल से देख पा रही थी। ट्रैक्टर-चालकों ने काम नहीं रोका। आयकीज के दिल में सराहना का भाव उमड़ आया, किन्तु उसमें एक अन्य सन्देहजनक व विक्षोभकारक भाव भी मिल गया क्या हमने कार्य में अपनी पूरी शक्ति लगा देनेवाले इन लोगों का काम आसान करने के लिए सब कुछ कर लिया? क्या प्रकृति के हमले का डटकर मुकाबला करने के लिए पूरी तैयारी कर ली? नहीं अभी कमियां बहुत हैं। आयकीज, स्मिर्नोव, पोगोदिन और आलिमजान को अभी बहुत कुछ सोचना-विचारना, सुधारना और कार्यों को पूरा करना बाकी है खराब मौसम में स्तेपी में लोगों के लिए सिर छिपाने की जगह कहीं नहीं है। बस्ती व बाग को आंधी व लू से रक्षा करने के लिए पक्का इन्तजाम करना चाहिए। वन पट्टियों को लगाने का काम जल्दी पूरा करना चाहिए।

ये सब "होना चाहिए" वाली बातें आयकीज के दिल में कांटो-सी खटक रही थीं, किन्तु वह इन सारी बातों को बाद के लिए टालने के बजाय याद करती रही कि उन्हें और क्या करना चाहिए, फौरन क्या करना चाहिए, बल्कि अवश्य ही करना चाहिए

आलिमजान के साथ सलाह करे वह निष्पक्ष दृष्टि से सब देखकर वे कमियां बता सकता है, जिनकी वह खुद आदी हो चुकी

है। लेकिन आलिमजान लौट आया है, और उसे यह बिलकुल महसूस भी नही हो रहा है। वह यहां है – पर उसके पास नही। वह इतना भी नही जानती कि इस क्षण वह कहा है, क्या कर रहा है, किसे अपने मन की बात बता रहा है

उसके सिर पर रोजमर्रा के काम, चिन्ताए, जिनके लिए वह शहर मे तरस रहा था, आ पडे, उनके भवर मे वह ऐसा पडा कि उसे अब आयकीज की चिन्ता ही नही रही। आयकीज पति की हालत समझती थी, उसे उचित ठहराती थी, फिर भी वह आलिमजान द्वारा किये गये उसके अस्पष्ट तिरस्कार की अनुभूति से मुक्त नही हो पा रही थी

वह उसका कितना कम ख्याल रखता है!

आयकीज को अपने कधे पर किसी का हौले से रखा हाथ महसूस हुआ। आयकीज चौक उठी और उसे अपने पास लोला का चेहरा दिखाई दिया। अल्हड, हसोड लोला इस समय चुप और उदास थी, उसके हलीम-बाबा के बाग के रसदार मेवो सरीखे, साधारणतया लाल रहनेवाले गोल-मटोल गालो की रगत उड गयी थी।

"आयकीज-आपा! इवान बोरिसोविच कहा है?"

"शायद स्तेपी मे होगे। अपने ट्रैक्टर-चालको के पास "

"वह तो यहां, कैप की तरफ आये थे "

"तुम्हे कहा से पता चला?"

"पता चल गया " लोला ने टालमटूल करते हुए कहा और सहेली के गले मे हाथ डालकर उससे ठिठुरे हुए बालक की तरह चिमटकर अनुरोध करने लगी "आयकीज-आपा, जरा जाकर मालूम कर आओ, वह कहा है "

आयकीज अपने कक्ष से बाहर निकली। गलियारे व कमरो मे मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनवालो की भीड जमा थी। सबके चेहरे क्लान्त, धूलभरे और चिन्तित थे। ट्रैक्टर-चालक लतीफो से एक दूसरे का हौसला बढा रहे थे, किसी विषय पर जोरदार बहस कर रहे थे। सबसे अधिक धैर्यवान डोमिनो खेल रहे थे। कुछ दीवार के सहारे उकडू बैठे, घुटनो पर सिर टिकाये सो रहे थे। उनमे से एक युवा एक्सकेवेटर को आयकीज ने पहचान लिया। वह बेफिक्री की मीठी

7*

लोला खिड़की के पास गरम शीशे से माथा सटाये खड़ी थी, और बूढ़े हलीम-बाबा कुरसी पर किंचित् झुके, घुटनों पर हाथ रखे बैठे थे, लगता था ऊंघ रहे थे। आयकीज़ के भीतर आने पर उन्होंने सिर उठाकर चिन्तित स्वर में पूछा

"क्यों, बेटी, आंधी का ज़ोर कम नहीं हुआ?"

"नहीं, बाबा, और ज़्यादा तेज़ी से चल रही है।"

वृद्ध ने दुखी होकर सिर हिलाया और कराहते हुए कुरसी पर से उठ खड़ा हुआ।

"हाय, हाय! ये मेरे पौधे उखाड़ देगी। जाकर देखता हूं"

आयकीज़ ने बूढ़े बागबान को कंधों से पकड़कर वापस बिठा दिया।

"बैठे रहिये, बाबा ऐसी आंधी में आप कहां जायेंगे? फिर स्तेपी में अंधेरा छाया हुआ है, कुछ नज़र नहीं आ रहा है। सुबह तक इन्तज़ार कर लेते हैं"

आयकीज़ का हौसला बुलंद था, किन्तु उसकी आंखें बिलकुल काली लग रही थीं, मानो उन पर अवसादमय, खराब मौसम का धुंधलका छाया हुआ हो

हलीम-बाबा ने पिता की तरह स्नेहपूर्वक अपनी सूखी, खुरदुरी हथेली से उसका हाथ सहला दिया और सान्त्वना दिलाते हुए मुस्कराये।

"कोई बात नहीं, बेटी, सब ठीक हो जायेगा" और धीमे स्वर में आगे बोले, "जाओ, बेहतर होगा, लोला के साथ बैठो। देखती हो, वह तुम्हारी तरफ़ कैसे देख रही है?"

लोला वास्तव में उसकी ओर अधीर व विक्षुब्ध दृष्टि से देख रही थी। आयकीज़ ने उससे धीरे से कहा

"वह स्मिर्नोव के यहां हैं। ट्रैक्टर-चालकों के लिए वैगनों का इन्तज़ाम करने गये हुए हैं।"

"स्मिर्नोव को टेलीफ़ोन करिये, आयकीज़-आपा!"

"बेकार क्यों घबराहट फैलाये?"

"पर तुम ऐसे करो, जैसे किसी काम से कर रही हो"

आयकीज़ वैसे मुस्करायी, जैसे बड़े लोग बालक के मचलने पर झुककर मुस्कराते हैं, और मेज़ की ओर बढ़ी, जिस पर टेलीफ़ोन रखा था। वह देर तक हैंडिल घुमाती रही, पर चोंगे में सन्नाटा

"मुझे माफ करना, आयकीज़। बहुत थक गया! टोली से गाव, गाव मे टोली सारी बातो के बारे मे जानना चाहता था, सबसे मिलना चाहता था। इस दौरान मुझे सामूहिक फार्म की बहुत याद आती रही थी।"

"और मेरी?" आयकीज़ तुनकमिजाज़ी मे झिडकी देती हुई फुफकारी।

"काश, तुम जानती, मेरी समझदार, सुन्दर आयकीज़ कि मैं तुम्हे कितना प्यार करता हूँ।" आलिमजान ने शर्माते हुए मुडकर देखा और सामान्य स्वर मे पूछा "तुमने मेरे बिना खाना खा लिया?"

"खा लिया," आयकीज़ ने स्वीकृति में सिर हिलाकर भूख के मारे थूक सटका। "मैं निर्माताओं के यहाँ थी, उन्ही के साथ खा लिया।"

"बहुत अच्छा किया। नही तो मैं घबरा रहा था कि तुम मेरा इन्तज़ार करती-करती भूखी रह जाओगी।"

"आप लोग अभी कहाँ से आ रहे हैं?"

"खेत से," आलिमजान ने कहा। "कपास को आधी से बचाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन हमारी चल सकती थी! '

"तुम शर्माओ मत, बेटा!" उमूर्ज़ाक-अता ने मीठी झिडकी दी। "सच कहा जाये, तो हमने काम कम नही किया।" और आयकीज़ को सम्बोधित कर वह आनन्दोल्लास मे कह उठे "आलिमजान हमारा महावीर है, बेटी! आधी चलते ही बहुत-से लोग घर भाग लिये वैसा काम, आधी से कभी होड की जा सकती है! शुरू मे हम भी कुछ हिम्मत हार बैठे थे, कपास को खतरा देख घबरा गये, समझ मे नहीं आ रहा था, क्या करे। लेकिन आलिमजान ने हिम्मत नही हारी!"

"अब्बा!" आलिमजान ने अनुनयी स्वर मे कहा। "आपने तो मेरी इतनी तारीफ कर डाली सच्चे वीर तो सामूहिक किसान हैं!"

उमूर्ज़ाक-अता ने हसी दबाकर गम्भीर स्वर मे दामाद की बात काट दी

"बडो के बोलते समय – तुम चुप रहो! हा, तो, बेटी इसने कुदाल उठाकर पानी खोल दिया। तब हम समझे कि इसका इरादा क्या है। हवा तो रेत को इधर-उधर उडाती है, पर उसे गीला करने ही

हम पर ही निर्भर करता है! पूरी ताकत जुटाकर काम करे, तो फिर कुछ भी होता रहे, पतझड में कपास के वजन से तराजू चरमरा उठे!"

"शुक्रिया, अब्बा," आयकीज ने धीरे से कहा। उसने खिडकी के पास जाकर देखा कि हवा शान्त हुई या नहीं। वहाँ उसकी नजरें लोला की याचना करती, प्रतीक्षाकुल नजरों से टकरायीं। "अब्बा! आलिमजान! आपने पोगोदिन को तो नहीं देखा?"

"ठहरो, ठहरो, बेटी!" उमूर्ज़ाक-अता कह उठे। "उसके पास तो मोटरसाइकिल है ना?"

"तो आपने उन्हें देखा था?" लोला के मुंह से निकल गया।

"दोपहर बाद कोई मोटरसाइकिल पर हमारे पास से गुजरा था। पागलों की तरह उसे सरपट दौडा रहा था!"

"वह इवान बोरिसोविच ही थे!" लोला से फिर न रहा जा सका, और वह फ़ौरन खिडकी की ओर मुड गयी, जिससे कोई उसके चेहरे पर छायी लाली न देख सके।

"वह वापस लौटते नहीं दिखाई दिये?" आयकीज ने पूछा।

"नहीं, बेटी..."

आलिमजान ने विवेकपूर्ण मुस्कान के साथ बहन पर नजर डाली और पत्नी को आंख मार जानबूझकर ज़ोर से बोला

"वह जरूर या तो गांव में होगा, या अपने मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में। पोगोदिन के बारे में फ़िक्र करने की जरूरत नहीं है।"

"कोई फ़िक्र कर ही नहीं रहा है," लोला बिना मुड़े सुबकी भरकर बुदबुदायी।

उस शाम और रात को यहां बुजुर्गों – हलीम-बाबा और उमूर-ज़ाक-अता को छोड़कर कोई नहीं सोया। वे अपनी-अपनी कुरसियों पर ही झपकी लेते रहे।"

आलिमजान और आयकीज ट्रैक्टर-चालकों के पास गये।

ट्रैक्टर-चालक इतने हठपूर्वक, उत्साह से उन्मत्त हुए काम कर रहे थे कि लगता था मानो उमडती हुई आंधी को चुनौती दे रहे थे "तूने हमें डराने, कुचल डालने, उखाड फेंकने की ठानी थी? नहीं हम तेरे प्रचण्ड हमले से झुकेंगे तक नहीं!" यह प्रकृति के साथ द्व-

साहसपूर्ण सफ़र था जब रगों में खून पुकारने लगता है, नसें, अंगों व मांसपेशियाँ - सब पूरी तरह तन जाते हैं।

आयकीज़ स्कीइंग में माहिर हो रही थी और रगों से समुद्री लहर की तरह सर्पीली गोते मारनेवाली फुफकार बनती हवा चीरते, चेहरे पर सीधा तेज के तूरों की बौछार का सामना करने और प्रकृति के विरुद्ध निरन्तर आगे ही आगे बढ़ते उसे आनन्द-सा मिल रहा था। यह स्वयं को साहसी व शक्तिशाली अनुभव कर रही थी और अब उसे आंधी पर जिसने उसकी और उन सब निर्भीक व दृढ़निश्चयी लोगों की कठिन परीक्षा ली थी इतना रोष नहीं आ रहा था जितना कि कुछ समय पहले।

सहसा धुर ओरे से आयकीज़ को कोई गीत सुनाई दिया। हवा न फिर से उसे दबाने, उसकी धज्जियाँ उड़ाने, छितराने की कोशिश की। गीत प्रकृति की शक्तियों से अप्रभावित रात में तैरता रहा और उत्तरोत्तर तीव्र व आत्मविश्वासपूर्ण होता रहा। यह कोई ट्रैक्टर-चालक गा रहा था, केवल धुन गुनगुनाते हुए, उसे अपने बेरुगार उमग भरे दिल से गा रहा था।

और आयकीज़ को ख्याल आया अगर सुलतानोव व वालीयेव ने यह गीत सुना होता, तो उन्होंने ज़िला समिति के ब्यूरो में दूसरी तरह ही बात की होती! वे क्यों कुछ देखना या सुनना नहीं चाहते? उन्होंने क्यों अपनी आंखों पर पट्टियां बांध रखी हैं, कानों में रूई ठूंस रखी है?

आयकोज़ जब कैंप लौटी, उसे बताया गया कि भंग हुई संचार-व्यवस्था ठीक कर ली गयी है। टेलीफोन काम करने लगा था।

इस दौरान लोला और पीली पड गयी, उसका मुह और सूख गया। उसकी आंखों में नमी चमक रही थी। सूखे आसू ने उसके गाल पर चमकदार धारी छोड दी थी। आयकीज़ ने रूमाल निकालकर अपनी मुस्कान दबाये सहेली का गाल पोंछ दिया।

"अरे क्या हो गया, लोलाखा? "

"आयकीज़-आया," लोला ने बेबसी से कहा, "मैंने स्मिर्नोव को फोन किया था इवान बोरिसोविच यहाँ के लिए चल दिये थे।"

"और फिर क्या? "

"वह काफी पहले रवाना हुए थे, काफी पहले   वह मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में भी नहीं है   लेकिन वह तो खुद ही टेलीफोन कर सकते थे।"

आयकीज़ के आने से जागे हलीम-बाबा सहेलियों के पास आये और उन्होंने स्नेह व सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से लोला की ओर देख सिर हिलाया।

"हां, बेटी, लगता है निदेशक किसी मुश्किल में पड़ गया है   पोगोदिन वैसे जवान है, पर ट्रैक्टर-चालकों के लिए वह पिता के समान है। और अच्छा बाप कभी अपने बच्चों को भूलता है? वह मुसीबत की घड़ी में उनके पास पहुँचने की जल्दी में था। और उसने जरूर छोटा रास्ता चुना होगा। छोटा और खतरनाक भी"

"आपाजान," लोला ने विनती की   उन्हें ढूंढना चाहिए।"

"क्या हुआ है तुम्हें, लोलाखा? ऐसे मौसम में?"

"आह, आपाजान, अगर सारे रास्ते बर्फ से ढक जायें, अगर धरती पर ओलों की बौछार होने लगे, अगर किज़िलकूम की सारी रेत हवा में उड़ने लगे, तो भी मैं हर हालत में   "

वह जल्दी-जल्दी और उत्तेजित स्वर में बोल रही थी, मानो आवेश में कसम खा रही हो, लेकिन आयकीज़ ने सहेली को टोक दिया

"इस समय उन्हें ढूंढना बेकार होगा, लोलाखा   देखो, बाहर कितना घुप अंधेरा है! हम सिर्फ थककर चूर हो जायेंगे।"

"फिर क्या किया जाये?"

"धीरज रखो। यह कहावत याद रखो   उतावला सो बावला, धीरा सो गभीरा।"

"अरे, मुझे इस वक्त कहावतों के लिए फुरसत नहीं है।"

"आयकीज़ ठीक कह रही है, बेटी," हलीम-बाबा ने कहा। "सुबह तक इन्तज़ार करना चाहिए। कितना ही क्यों न अखरे, पर इन्तज़ार करना चाहिए। सुबह मैं खुद तुम्हारे साथ चलूंगा। भरोसा रखो, बिटिया, बूढ़ा हलीम-बाबा जो काम हाथ में लेता है, वह ठीक-ठाक पूरा हो जाता है   इतने में तुम आराम कर लो, इस मेज़ पर बैठकर झपकी ले लो।"

"नही, बाबा, मुझे नीन्द नही आयेगी।"

वृद्ध ने सिर हिलाया।

"तुम यहाँ आराम करने आयी हो, तरोताजा होने आयी हो और तुम्हे न सोने की फिक्र है, न आराम की तिस पर बाग मे काम करती हो क्या तुम्हारी इस काम से छुट्टी कर दू?"

"क्या कह रहे हैं आप! बिना काम के आदमी ऊबने लगता है जब आदमी काम करता है, उसे पता ही नही चलता कि दिन कब बीत गये!"

आयकीज वैसे पीगोदिन के गायब होने से चिन्तित थी, पर मुस्कराये बिना न रह सकी मुझे मालूम है तुम बाग मे जाने को क्यो बेताब रहती हो, क्यो तुम्हारे लिए दिन नटखट, तेज चिडियो की तरह फुर्र से उडते बीतते रहते हैं। इवान बोरिसोविच जो पास मे रहते है। उसने प्यार से, सान्त्वना देते हुए लोला के कधे पर हाथ फेरा।

"सुबह होने ही वाली है, बहन, इन्तजार किये लेते हैं।"

पौ फटने मे कुछ ही घटे बाकी रह गये थे। किन्तु लोला को ये घडिया अनन्त लग रही थी, समय वह गहरी और अधेरी खाई थी, जिसमे लोला निरन्तर गिरे ही जा रही थी और तल तक पहुँच ही नही पा रही थी

आधी रात भर उत्पात मचाती रही। कातर भोर दुविधा मे पडा झिलमिलाने लगा आखो मे काटी रात के कारण लोला की आखे लाल हो गयी, पलके सूज गयी और चेहरे की त्वचा मानो राख की तह-से ढक गयी।

"चलिये, आयकीज़!"

"अभी चलती हूँ बहन मैंने हमारे लिए घोडे ढूढने को कहा है। ट्रैक्टर-चालक भी ढूढने चल रहे हैं—वे भी निदेशक के बारे मे चिन्तित हैं। मजदूरो को शायद हमसे ज्यादा फिक्र हो रही है"

गरमी की सुबह हमेशा गरमी की सुबह ही होती है। उससे बेहतर कोई चीज नही हो सकती। आधी हवा मे रेत और धूल पूर्ववत् उडा रही थी, पर लोग अब उसके आदी हो चुके थे। इन बादलो को बेधकर आ रहा सूरज का प्रकाश विक्षोभकारी व अमगलसूचक था। कुछ

रहा था पर फिर नरम रेत पर वैसे ही गिर पड़ता था जैसे नाविक पर।

लोला पहले घोड़े से कूदकर पोगोदिन की तरफ भागी और उस पर झुककर उसके सीने व गरदन से रेत हटाती हुई उसके फटे व सूखे होंठ चूमने लगी। पोगोदिन क्षीण मुस्कान के साथ भर्राई आवाज में फुसफुसाया

कुछ नहीं लोला कुछ नहीं ' उसे कमजोरी के कारण मुंदी हुई पलकें मूंदते देख युवती भयस्तब्ध रह गयी।

"आयकीज! " लोला चिल्लाई। 'जल्दी करो आयकीज! यह मर रहे हैं! "

सौभाग्यवश आयकीज ने अपनी स्वाभाविक दृढ़ता व धैर्य नहीं खोये। वह लोला के पास घुटनों के बल बैठ गयी और पोगोदिन की बगल में हाथ डालकर उसे उठाने की कोशिश करने लगी। पोगोदिन कराहने लगा लोला का चेहरा पीला पड़ते देख आयकीज ने सिर हिलाकर घोड़ों की ओर इंगित किया

"उन्हें जरा नजदीक ले आओ!"

लोला मुड़-मुड़कर देखती वहाँ से हट गयी। आयकीज ओर से होंठ भींच और सारी ताकत लगाकर पोगोदिन को खाई के किनारे तक घसीट ले गयी। पोगोदिन ने बड़ी मुश्किल से आँखें खोलीं कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से आयकीज की ओर देख कुछ फुसफुसाया, पर उसकी बात अचानक आये हवा के झोंके में दबकर रह गयी

"तुम्हें क्या हुआ?" पोगोदिन के प्रति दया से अभिभूत हुई आयकीज ने पूछा। "दर्द कहाँ हो रहा है?"

"पैर में पैर को कुछ हो गया है "

"थोड़ा सहन करना होगा, इवान बोरिसोविच!"

"सहन करूँगा "

"हिम्मत रखो! "

आयकीज बड़ी मुश्किल से पोगोदिन का शिथिल व भारी शरीर घसीटकर एक घोड़े के पास ले गयी और लोला की मदद से उसे काठी पर लाद दिया। वह स्वयं पोगोदिन के पीछे बैठ गयी और सख्त स्वर में लोला से बोली

"पीछे-पीछे चलो और रोओ मत। इनकी हालत वैसे ही खराब है।"

लोला ने उत्तर मे प्रशंसा व कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा उसे कुछ समय पूर्व अपने निराशाग्रस्त होने पर शर्म आ रही थी। और उसे आयकोज के सामने सबसे ज्यादा शर्म उसके साहस व दृढ़ता से काम लेने के कारण आ रही थी।

आयकोज ने पोगोदिन को सभालते हुए लगाम खीच कर घोडे को मन्द चाल से हाका।

उन्हे सबसे पहले सुवानकुल ने देखा। अपनी प्रसन्नता छिपाये बिना वह धीरे-धीरे चलते घोडो के पास पूरे जोर से चिल्लाता भागा आया

"ढूढ लिया, ढूढ लिया, साथियो!"

किन्तु निदेशक को उस हालत मे देख सुवानकुल व अन्य ट्रैक्टर-चालको की प्रसन्नता धूमिल पड गयी।

"जिन्दा है?"

"इन्हे क्या हुआ?"

"जिन्दा है, लेकिन इन्हे क्या हुआ है, कुछ पता नही। खाई मे मिले। कोई जाकर इनकी मोटरसाइकिल ले आये। आयकोज ने घोडो को रोके बिना उस ओर इगित किया, जहाँ उन्होने पोगोदिन को पाया था। जब कोई जल्दी मे हो, तो समय कितना धीरे-धीरे बीतता है! जब तक वे आधी मे चलते हुए ट्रैक्टर-कैप तक पहुँचे, जहाँ चिकित्सा केद्र था, तब तक न जाने दो घटे बीत चुके थे, या हो सकता है एक घटे से कम समय ही बीता हो।

पोगोदिन सारे रास्ते एक बार भी नही कराहा। जब उसकी प्राथमिक चिकित्सा की जा रही थी, वह दर्द पर काबू करता धैर्य रखे रहा, किन्तु फिर बोला कि वह किसी भी अस्पताल मे नही जायेगा।

"अछूती धरती को कृषि योग्य बनाना बच्चो का खेल नही है! मेरी जगह यहाँ, कैप मे है," उसने मुस्कराने की कोशिश की किन्तु उसकी मुस्कान कुछ फीकी और मुख-विकृति जैसी रह गयी।

निदेशक के कक्ष मे से मेज व टेलीफोन चिकित्सा केद्र मे लाने पडे। पोगोदिन शीघ्र ही निश्चिन्त नीन्द मे खो गया, और हालाकि

वह अल्पकालिक ही रही, पर आहत को उससे राहत मिली। निदेशक कुछ प्रसन्नचित्त व उत्साहित हो उठा, और कामकाजी शोर व हंगामे में गूंजता कमरा एक मिनट के लिए भी खाली नहीं रहा।

लोला बराबर इवान बोरिसोविच के सिरहाने मौजूद रही। वह एक धैर्यधारी, चिन्ताशील, निस्स्वार्थ तीमारदार सिद्ध हुई

ग्यारह

आंधी के बाद

आंधी लगभग दो दिन तक उत्पात मचाती रही। आंधी का अन्त होते-होते जलागार में लहरें ऊंची और खतरनाक होने लगीं। नहर में जिससे नालियां खेतों की ओर किसी वृक्ष की शाखाओं के समान जाती थीं, पानी का दबाव बढ़ने लगा। पानी धानीमूषों, चूहों व चींटियों के बिलों में छलनी हुई मेड़ों को काटने लगा। उसकी कहीं से रिसने की देर थी कि दरार तेजी से चौड़ी होने लगती और खेतों में तूफानी जल-धारा घुस पड़ती।

आयकोज खेतों के लिए उत्पन्न हुए खतरे के बारे में जानते ही सरपट बायचीबार पर सवार हो स्मिर्नोव के पास दौड़ पड़ी। उन्होंने जानकार, अनुभवी मीराबों को एकत्र कर उनके साथ नहर के सहारे-सहारे मेड़ के हर टुकड़े का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया कमजोर स्थानों पर पत्थर, सूखी झाड़ियां व हरी टहनियां पहुंचाने का इन्तजाम करवाया। मीराब बहे हुए किनारों को दृढ़ बनाने व उनकी मरम्मत करने के काम में जुट गये। जब अंधेरा होने लगा, नहर पर दौड़-धूप कर रहे किसानों ने लालटेनें जला लीं और नहर आदि से अन्त तक हिलती-डुलती, टिमटिमाती बत्तियों से जगमगा उठी।

इस प्रकार रात और रात बीत गयी सुबह जब आंधी ने अपने पंख समेट लिये और अचानक आनेवाली बाढ़ का खतरा टल गया, तो आयकोज ने मीराबों व स्मिर्नोव से विदा ली। स्मिर्नोव ने उसे

दफ्तर में आराम करने और झपकी लेने के लिए मनाया, पर आयकीज जल्दी में थी।

"नहीं, इवान निकितिच, नीन्द बाद में पूरी करते रहेंगे! सच कहा जाये, तो इस वक्त किसी किसान को सोने की फुरसत नहीं है!"

"पर कादीरोव तो शायद नेक इनसान की मीठी नीन्द सो रहा होगा और सपने में देख रहा होगा कि शैतान हमें कैसे कड़ाहों में तल रहे हैं।"

"कादीरोव के पास इस समय दूसरों से ज्यादा काम हैं। क्योंकि उसे अपने सामूहिक फार्म की चिन्ता जो लगी रहती है!" आयकीज ने स्मिर्नोव की ओर अनिमेष देखा और हंस पड़ी। "ओह, इवान निकितिच! आपकी दाढ़ी तो काफी बढ़ गयी! और आखें बिलकुल धुंधी जा रही हैं!"

स्मिर्नोव ने आनंद से एक ज़ोरदार अंगड़ाई ली

"काश, सो लेता इस वक्त दाढ़ी बाद में बना लेना और आखिरकार सामान्य, शान्त जीवन जी पाता!"

"तो फिर सो जाइये ना, इवान निकितिच!"

किन्तु स्मिर्नोव ने केवल हाथ झटकार दिये। आयकीज से सहृदयता से कसकर हाथ मिलाकर वह किशोरसुलभ स्फूर्ति और किंचित् अधीर चाल से जलागार लौट गये।

आयकीज ने वह सारा दिन स्तेपी में बिताया। वह थोड़ी देर कपास-उत्पादकों के साथ रही पोगोदिन के खेत-कैंप में गयी, वृद्ध हलीम-बाबा से मिली, जो जमीन में आंधी द्वारा उखाड़े पौधों की मकड़ियों जैसी जड़ें रोप रहे थे।

आंधी ने हर जगह – स्तेपी में, गांव में और खेत-कैंपों में अपने भयावह, अवगम्य चिह्न छोड़ दिये थे। रास्ते के किनारों की खाइयां, मोरियां, सड्डू रेत, मिट्टी के ढेलों और टूटी हुई डालों व पत्तियों से भर गये थे। नालियों में पीला और गदला पानी बह रहा था स्तेपी में सक्साऊल या नागदौनों की हर झाड़ी के तले रेत का टीला बन गया था। जोती हुई स्तेपी पर आंधी ने रेत की मोटी तह बिछा दी थी। उसने अपनी ज़हरीली ज़बान से कपास के खेत चाट डाले थे, कपास के कोमल हरे पौधों को लगभग सिरों तक रेत में दबा दिया था,

उन्हें गर्मी धूप में तप दिया था और वे सारे के सारे मानो रुई धरम की तरह ही गर्मी में सूखे हुए से नजर आ रहे थे।

किसानकारी धांकिया अन्तरिमावासियों के लिए यही बात सही थी लेकिन सारी थोड़ी कोशिश व मेहनत से नाम, जब कपास बोयी गयी थी उसका भरपूर मौसम में कुछ हद तक मुकाबला पहली बार हुआ था। इसमें जिस तरह अप्रत्याशित था और अन्तरिमावासियों ने उसके पार होने पर छोड़े थे। अब जब आंधी शान्त हो चुकी थी, सामूहिक कार्य को सभी पक्षों का शीघ्रातिशीघ्र इलाज करना आवश्यक था।

पांसोविन ने मेरा बैंक में "आगत मगाई" अभियान छेड़ दिया। मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनवालों ने अहाते से तेल और गाड़ी हटा दी, आंधी से परिपूर्ण हुए पाइ व पुनर्निर्मित मकान की छत की मरम्मत की, तेल व ईंधन के कुछ औजार ट्रैक्टरों के कल-पुर्जे निकाल लिये, स्टेशन में पहुंचाये गए बैंक व बैगनों में सब कर्मी ने जमा किया। उन्हें नींद खान और विश्राम के समय में कटौती करनी पड़ी। किन्तु आंधी पर प्राप्त विजय ने लोगों में जोश भर दिया, और अब उन्हें अपने चिर-अभीप्सित सपने – अपनी भूमि पर विजय पाने – को प्राप्त करने से कुछ भी नहीं रोक सकता था।

किसान भी ट्रैक्टर-चालकों जैसी भावना से अभिभूत हो नालियां साफ करने, कपास के पौधों के इर्द-गिर्द ढेले तोड़ने, मिट्टी को ढीली करने, पौधों का अतिरिक्त पोषण व उनमें पानी देने में जुट गये। जिन पौधों में पहली मुर्झायी पत्तियां निकल चुकी थीं, लोगों ने उन्हें हरा-भरा रखने, आजादी व तेजी से बढ़ने देने के लिए, मानो मौसम कभी बिगड़ा ही नहीं था, अपने श्रमसाध्य, रहस्यमय व बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य – कपास या सफेद सोने के सृजन – में कोई कसर नहीं छोड़ी।

खेतों में ट्रैक्टर अपने पीछे कल्टीवेटर खींचते घरघर करते चल रहे थे वे कपास की कतारों के मध्य उथली हलरेखायें बनाते जा रहे थे, जिनमें नालियों से छोड़ा पानी मन्थर गति से बह रहा था।

वृद्ध अमूरजाक-अता भी किसी से पीछे नहीं रह रहे थे। उनकी सफेद दाढ़ी, टोपी के सफेद बेलबूटों, सफेद चोगे, धूप में सांवले धुले सीने – सब पर धूल की मोटी तह जम गयी थी, लगता था जैसे किसी ने उनकी पीठ पर गरम-गरम हथेली रख दी हो। लेकिन

क्या वह अपनी पुत्री, अपनी टोली सामूहिक किसानों को धोखा दे सकते थे, जिन्होंने आलिमजान के साथ मिलकर पक्का वादा किया था कपास को बचा लेंगे!

आखिरकार उमूरज़ाक-अता ने जब मीठा-मीठा दर्द करती कमर सीधी की, तो उन्होंने कादीरोव को अपने पास पाया। कादीरोव पेटी मे अंगूठे डाले और बाकी उंगलियों से तने हुए, खरबूज-से पेट पर टपटप करता खड़ा चिन्तित मुद्रा मे कपास की कतारों की ओर देख रहा था।

"अस्सलाम-अलैकुम, अब्बा," उसने वृद्ध कपास-उत्पादक की ओर देख सिर हिलाया। "देखा, आपकी बेटी के अभियान का क्या नतीजा निकला?"

उमूरज़ाक-अता ने कादीरोव के चेहरे पर एक चुभती रूखी नजर डाली।

"मेरी बेटी का इसमे कोई वास्ता नही है, अध्यक्ष।

'क्या कहा, कोई वास्ता नही है? आखिर किसकी जिद मे लोगों को अपने घर मे हटाकर स्तेपी मे भेजा गया था? तुम्हारी बेटी ने कृषि-टोलियों को कमजोर कर दिया इसी लिए अब आप लोगों को कपास बचाने के लिए कमरतोड कोशिश करनी पड रही है। मुझे तुम पर रहम आता है, अब्बा। तुम्हारी आखे कमजोर हो गयी हाथो मे दम नही रहा, कमर झुक गयी फिर भी तुम दिन-रात खेत मे मेहनत करते हुए दूसरो की गलतिया सुधार रहे हो

उमूरज़ाक-अता की आखे रुखाई से अर्थपूर्ण मुद्रा मे सिकुड गयीं।

"खयाल रखने के लिए शुक्रिया अध्यक्ष। लेकिन हमे तुमसे रहम नही – मदद की जरूरत है। तुम आखिर अनुभवी किसान हो तुम्हे जमीन की जानकारी है, कपास की जानकारी है।

"मैं मदद करने से इनकार नही करता। वादा करता हूँ अब्बा जो कर सकूँगा, करूँगा।

उमूरज़ाक-अता ने फिर कुदाल सभाल लिया और कादीरोव सड़क की ओर डग भरता चल दिया जहा उसका घोडा अपने मालिक का इन्तजार कर रहा था।

इन सारे दिनों अध्यक्ष बहुत परेशान था। जब आधी चली

८•

तो वह द्वेषपूर्ण भावना के कारण खुशी से फूला नहीं समा रहा था लो, बच्चू, आ गया मजा? और ज्यों-ज्यों आंधी का उत्पात बढ़ता गया, त्यों-त्यों उसकी खुशी बढ़ती रही "आविष्कारको" को, जिनसे उसे घृणा थी, जिन्होंने उसे जबरदस्ती खतरनाक, जोखिमभरे काम में फंसा दिया था, असफलता मिली, अब उनके मुंह बंद हो जायेंगे और खुदा का शुक्र है, उसे चैन से रहने देंगे!

किन्तु कुछ देर बाद उसे जैसे होश आया और कादीरोव ने झुंझलाकर खुद को फटकारा "वाह रे, गधे, आखिर तू किस बात पर खुश हो रहा है? क्या इस बात पर कि तेरे सामूहिक किसानों की मेहनत मिट्टी में मिल गयी? क्या इस बात पर कि उन पर मुसीबत टूट पड़ी और हरेक को, जिसको तू जानता है, जिसके साथ इतने साल साथ रहा, – चोट आयी, नुकसान पहुँचा?"

कादीरोव घोड़े पर लद गया और निस्स्वार्थ भाव से आंधी से जूझ रहे सामूहिक किसानों को नाक-भौंह चढ़ाये देखता कपास के खेतों के सहारे-सहारे निकल गया।

आखिर यह क्या कर सकते हैं? कमरतोड़ मेहनत कर रहे हैं, हर पौधे की सभाल कर रहे हैं, पर क्या फायदा? आंधी ने सारी स्तेपी को बर्फ की तरह रेत से ढक दिया, खेतों में सारी हलरेखाएं भर दीं। ऐसे में तो खुश होने के बजाय गला फाड़-फाड़कर रोना चाहिए।

उसके चेहरे पर उदासी और म्लानता का भाव आंधी के बाद भी बना रहा। वह स्पष्ट कल्पना कर रहा था कि यदि उन्होंने अछूती धरती में कपास बो दी होती और वह सब रेत में दब गया होता, तो क्या हुआ होता

कौन जाने, वे कपास को बचा भी पाते या नहीं? उसका, यानी, कादीरोव का कभी इतने विस्तृत कपास के भूखण्डों से वास्ता नहीं पड़ा, लेकिन तब सभी उसके पास भागे आते "क्या करें, अध्यक्ष? मदद करो, अध्यक्ष!" और अगर कपास बरबाद हो जाती, तब भी उसी से यानी कादीरोव से जवाब तलब किया गया होता!"

नहीं, कुछ भी कहिये, लेकिन आंधी फिर भी ठीक वक्त पर आयी उन दोनों की – कादीरोव की भी और सुलतानोव की भी – बात सच निकली। अब वे निर्भीकतापूर्वक और आत्मविश्वासपूर्वक कार्रवाई

"शोरवा बहुत स्वादिष्ट है।"

"आप नान के टुकडे करके उसमे डालिये," उस्ताद हजरतकुल ने सुझाव दिया। "नान के टुकडे पडे शोरवे से बढकर स्वादिष्ठ चीज कोई नहीं होती। फिर स्तेपी मे, ताजा हवा मे ऐसा शोरवा – कितनी मजेदार चीज होती है!"

"तुम मुझे मत सिखाओ!" कादीरोव ने बुरा मानते हुए कहा। "मैं आखिर शहरवालो मे से तो हूँ नही जो खेत मे बने शोरवे का मजा न जानूं! न जाने कितनी बार खेत मे खाना पडा है मुझे!"

उस्ताद हजरतकुल मुस्करा पडे

"खेत मे खाना और बात है यहा तो स्तेपी है! यहा आदमी बडे दिल से काम करता है और दो आदमियो की खुराक खाता है! अपने को सूरमा महसूस करता है!"

निर्माता खाने की ओर से ध्यान हटाये बिना उत्सुकतापूर्वक टोली-नायक व अध्यक्ष की बाते सुन रहे थे। उनकी नजरें चुभती महसूस कर कादीरोव झल्लाकर शोरवे के प्याले मे चम्मच छोड उठ खडा हुआ और उस्ताद हजरतकुल को ऊपर से नीचे तक देख आदेशात्मक स्वर मे झाडने लगा

"बहुत खा चुके आप लोग अछूती धरती मे शोरवा! अब पुरानी जमीन पर पुलाव खाने रहोगे! आज से आधे निर्माताओ को कृषि-कार्य टोलियो के साथ काम करना होगा! बाकी लोगो को गाव मे काम करना होगा और आधी से क्षतिग्रस्त घरो की पूरी तरह मरम्मत करनी होगी!"

'लेकिन नयी बस्ती का क्या होगा?'

'यह मेरा काम नही है। न मैंने यह काम छेडा है न ही मुझे इसकी परवाह है। हमे एक ही काम के बारे मे सोचना चाहिए इस साल कपास की भरपूर फसल कैसे चुनी जाये!'

उस्ताद हजरतकूल भी खडे होकर कादीरोव को रोषपूर्ण आखो से घूरने लगे

बेतुकी बात कर रहे हो अध्यक्ष! देखा हम कितना काम कर चुके है! आधी भी हम नही गेर पायी। नीव के गड्ढो मे रेत भर गयी थी – हमने उसे वहा से निकालकर फेंक दिया। सीमेन्ट

चूना, कीलें – सब हमने आधी से बचा लिया! और हमारा भट्ठा भी ज्यों का त्यों मौजूद है आजकल में ईंटें पकाना शुरू कर देंगे। अब सिर्फ काम ही काम करना है, और तुम हमें इसे छोड़कर जाने का हुक्म दे रहे हो। यह ढंग की बात नहीं है! हम समझते हैं कि गाँव में भी घरों की मरम्मत होनी चाहिए। ठीक है, हम इससे इनकार नहीं कर रहे हैं। हम कपास-उत्पादकों की भी मदद करने को तैयार हैं। कुछ लोगों को उधर भेज देंगे! लेकिन अछूती धरती में काम बंद कराना – तुम्हारे हाथ में नहीं है।" उन्होंने मुड़कर निर्माताओं की ओर देखा, जो अभी पूरा खाना नहीं खा पाये थे। "मैं ठीक कह रहा हूँ ना, प्यारो? "

उनमें से एक निर्माता उस्ताद हजरतकुल के पास आया। स्पष्ट दिख रहा था कि वह अनेक वर्षों से धूप में काम करता रहा था उसके चेहरे की चमड़ी डबलरोटी की पपड़ी जैसी कड़ी थी, सारी गहरी-गहरी झुर्रियों से भरी थी, दृष्टि कठोर और चुभती हुई थी। वृद्ध ने कादीरोव को सम्बोधित कर फटी हुई आवाज में कहा

"तुम अपनी हद से बाहर तो नहीं जा रहे हो, अध्यक्ष? ऐसे मामलों का फैसला आम सभा में होता है। सभा ने हमें सम्मानपूर्ण काम सौंपा है, और हम उसे छोड़नेवाले नहीं हैं। कभी नहीं छोड़ेंगे, जब तक कि लोग अपना मत नहीं बताते! "

कादीरोव ने घमण्डी मुस्कान के साथ आँखें सिकोड़ी

"आप लोग कहने लगे 'हम इनकार नहीं करते, हम भेज देंगे," 'हम छोड़नेवाले नहीं हैं'। अध्यक्ष क्या आप लोगों की नजरों में कुछ भी नहीं है? नहीं, प्यारो, अभी तो सामूहिक फार्म का अध्यक्ष मैं हूँ, न कि आप लोग! और मैं हर बात पर सभा नहीं करवाऊँगा! आप लोगों को बनियाना नहीं, बल्कि काम करना चाहिए! और काम के लिए जिम्मेदार मैं हूँ, मैं सामूहिक फार्म का अध्यक्ष! और मैं आदेश दे रहा हूँ अपना बोरिया-बधना समेटो और अपने सेन. गाँव रवाना हो जाओ! नहीं तो मैं आप लोगों के साथ दूसरी तरह बात करूँगा! मेरे निर्णय का अनुमोदन जिला अधिकारियों ने कर दिया है! मैं मैं आप लोगों को उच्चाधिकारियों की प्रतिष्ठा कम नहीं करने दूँगा! "

कादीरोव का अन्तिम वाक्य पूरा करते-करते गला रुद्ध हो गया। उसने चुप हुए निर्माताओं की ओर पागलों की-सी निगाह से देखा और उनसे विदा तक लिये बिना भारी-भारी डग भरता चलता गया।

उस्ताद हजरतकुल ने इतने जोर से गुद्दी खुजलाई कि उनकी टोपी गिर गयी, लेकिन उसे उठाने का ख्याल तक उन्हें नहीं आया उन्होंने आयकीज को बायचीवार पर सरपट अपनी ओर आते देख लिया और जल्दी से उसका स्वागत करने लपके।

टोली-नायक की क्षोभित शिकायतें सुनकर आयकीज मुस्करा दी।

यह बात है पुरानी बात दोहरायी जा रही है! कोई बात नहीं उस्ताद-अमाकी, सिपाहियों का कहना है, हथियार जंग के लिए तैयार रखना चाहिए! जाकर अध्यक्ष को ढूंढती हूँ।"

बारह

एक और एक ग्यारह

आयकीज को कादीरोव बेकबूलातवाले खेत के पास मिला। सामूहिक फार्म का अध्यक्ष अचानक अलतीनसाय आ पहुँचे जुराबायेव से बात कर रहा था। पास ही राजमार्ग पर जिला समिति के सचिव की पुरानी, धूल से ढकी जीप धूप में तप रही थी। कादीरोव और जुराबायेव के अगल-बगल एक तंग अर्द्धवृत बनाये सामूहिक किसान खड़े थे।

सदा यही होता जब कभी जुराबायेव आ पहुँचते मोटर खड़ी करते, स्थानीय टोली-नायकों में से किसी को अपने पास बुलाते और देखते-देखते लोग न जाने कैसे जिला समिति के सचिव के आगमन की सूचना पाकर उन्हें घेर लेते। जुराबायेव जीवन्त बातचीत में सबको शामिल करने का प्रयास करते, किसी नाजुक विषय पर जोरदार बहस भड़का देते, स्वयं भी चुप नहीं रहते, न चतुर, सर्वज्ञ प्रमाणपुरुष का रूप धारण करते, जो अन्तिम क्षण तक अपने निर्णायक शब्द गुप्त रखता है, बल्कि स्वयं भी बहस करते बायन करते, सलाह देते।

काम है। जिस काम को करने में कुछ लोग सक्षम हैं, उसे करना दूसरों के सामर्थ्य से भी है। इसमें कुछ तुम्हारी ही गलती है, अध्यक्ष।"

"बेशक! जरा-सी भी गडबड हो, तो कसूरवार अध्यक्ष! जब कि इस समय दोषियों को ढूढने के बजाय कपास को बचाना जरूरी है! कपास को बचाना चाहिए!"

"लेकिन उस तरह नही, जिस तरह आप उसे बचा रहे है!" आयकीज बीच में बोल पडी। "आप ही फैसला कीजिये हमारा, कामरेड जुराबायेव! कादीरोव ने अभी-अभी निर्माना-टोली को अछूती भूमि छोडकर आधी से क्षतिग्रस्त मकानों की मरम्मत करने गाव में जाने का आदेश दिया है। लेकिन अगर इनकी अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की अनिच्छा को ध्यान में न रखा जाये, तो इनकी इस कार्रवाई का कोई औचित्य नही है। आधी से केवल कुछ पुरानी, जीर्ण-शीर्ण झोपडिया ही टूटी हैं। और इस बात के लिए भी कि सामूहिक फार्म में अभी ऐसे घर मौजूद है, दोषी अध्यक्ष ही है!"

"ठीक है, मैं अपना कसूर मानता हूँ!" कादीरोव की आखो में बाज की-सी द्वेषपूर्ण चमक झलकी। लेकिन मेरी गलतिया तिल जितनी है, और आपकी, कामरेड उमूरजाकोवा ताड जितनी!" गफूर और कुछ अन्य सामूहिक किसान हस पडे, और कादीरोव ऊचे और आत्मविश्वासपूर्ण स्वर में बोलता रहा "कपास रेत में दबी है तो आपकी ही वजह से!"

"कही आपका यह तो खयाल नही है कि कपास के खेतो पर आधी भी मैंने ही चलाई थी?"

"इस समय मजाक का वक्त नही है, उमूरजाकोवा," कादीरोव ने दृढ व निश्चायक स्वर में कहा। "आपकी गलतिया हर आखवाला देख सकता है। आपने अभी तक सादी-सी पोशाक की सिलाई तो पूरी की ही नही, जिसे रोजाना पहना जा सके और सीने लगी पोशाक त्योहार के लिए! अब सादी पोशाक फटने लगी। उसके टाके-टाके खुल गये! मैं तो हमेशा ही कहता रहा हूँ दुम्बे की दुम की चर्बी में देगची में पकती कलेजी ज्यादा स्वादिष्ट होती है।"

"पर हम तो चाहते है कि देगची में कलेजी भी पके और चर्बीदार दुम भी," आयकीज ने कहा।

"सुना, अध्यक्ष, तुम्हारे किसान क्या कहते हैं?"

"कामरेड जुरावायेव! ये अपने फायदे की बात ही तो नही समझते हैं। क्योकि इन्हे अपना काम पूरा करने तक न जाने कितना पसीना बहाना पड जायेगा!"

"तुम हम पर रहम मत करो, अध्यक्ष!" बेक्बूता फिर बीच मे बोल पडा। "तुम्हे तो पिछले साल हम पर रहम करना चाहिए था, जब तुमने खेतो मे कपास चुननेवाली मशीने भेजने से इनकार कर दिया था!"

"वे मशीने सिर्फ कपास को बरबाद करती है।"

"लेकिन जो मशीने किसी तरह हम तक पहुँची, उन्होने तो एक भी पौधे को नुकसान नही पहुँचाया!" आलिमजान से न रहा जा सका। "इनकार करना, बेशक, आलोचना का सबसे आसान और सीधा तरीका है।"

"ऐ पार्टीसगठनकर्त्ता, अखबारो तक ने लिखा है कि इन मशीनो मे अभी कमिया हैं!"

"लिखते है, उन्हे पूरी तरह दोषमुक्त बनाने के इरादे से। यह तो हम सब की जिम्मेदारी है! और तुम तो पकाने के बजाय पका-पकाया मिलने का इन्तजार कर रहे हो अच्छी, उपयोगी मशीनरी को भी पास नही फटकने देते। कितने अरसे से हम तुम से इस बारे मे बहस कर रहे है!"

"हम मुश्किल काम से डरते नही है," बेकबूता ने कहा। "काम करना मुश्किल हो जाये, तो कोई मुसीबत नही आ जाती! बुरा तो तब होता है, जब जीना मुश्किल हो जाता है हम तो कोशिश ही यह करते हैं कि हम सब बेहतर जिन्दगी जिये, आजादी से जिये! इसकी खातिर हम खून-पसीना एक कर देने को तैयार है, अध्यक्ष!"

"ठीक है। आप लोग अछूती धरती को खेती योग्य बना लेगे, बस्ती बसा लेगे, लेकिन आधी फिर सब बरबाद कर देगी!"

"हम आधी के रास्ते मे हरी रक्षा-पात लगा देगे, रेत को जमा देगे, रेगिस्तान मे सक्साऊल बो देगे!" आयकीज ने उत्साहपूर्ण स्वर मे आपत्ति की। "ऐसी कोई समस्या नही, जिसका समाधान न किया जा सके, कामरेड कादीरोव! अगर हमने अक्ल से काम लिया,

लगन से काम किया, तो हर तरह की मुश्किल को आसान बना सकते है! काश आप भी सोचते कि हमें आंधी में, लू में कैसे बचना चाहिए!"

"उमूरजाकोवा का कहना ठीक है, अध्यक्ष," जुराबायेव ने कहा। तुम अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने का विरोध करने में जितनी शक्ति लगा रहे हो, जितना जोश दिखा रहे हो, उससे कहीं कम शक्ति और जोश अगर तुम सामूहिक किसानों की इस अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने, उसमें कपास की बोवाई करने, आंधी और लू से कपास को बचाने में लगाते, तो कितना अच्छा होता। अगर तुम अपने किसानों पर विश्वास करते तो उनकी मदद जरूर करते।"

कादीरोव पैर थोडे फैलाये, बुत-सा उदास, पेटी को इतना कसकर पकडे खडा था कि उसके किनारे उसकी हथेलियों और उंगलियों में गड रहे थे। उसकी मुद्रा उसकी निराशाजनक हठधर्मिता व्यक्त कर रही थी। यह लो, सब वैसा ही हुआ, जैसा कि उसने सोचा था! अब उस पर यानी कादीरोव पर सारे काम लाद दिये जायेंगे, और उनके बोझ के मारे उसकी कमर झुक जायेगी। जरा-सा गलत कदम रखा नहीं कि मुह की खानी पड गयी सामूहिक किसानों और टोली-नायकों के लिये लम्बे-चौडे वादे करना आसान होता है। उनका क्या जाता है! काम नहीं हुआ – उनका कुछ नहीं बिगडेगा, उनकी जिन्दगी पहले जैसी रहेगी न उससे बेहतर, न बदतर पर सब उसकी ओर उंगली उठा-उठाकर कहेंगे खराब अध्यक्ष है, सक्रिय नहीं है! और हटा देंगे! इसमें कोई शक नहीं, हटा देंगे! उसके लिए लोगों ने गड्ढा तो काफी पहले से ही खोदना शुरु कर दिया है। एक बार तो करीब-करीब उसकी छुट्टी ही कर दी गयी थी जब कि उसने अपनी सारी जिन्दगी दाव पर लगाकर सचालन करने का सम्मानित अधिकार प्राप्त किया है। उसने सामूहिक फार्म की स्थापना की है, उसे पाल-पोसकर बडा किया है, उसे उन्नति के शिखर पर । है इससे ऊपर पहुँचाने की तो फिलहाल जरूरत नहीं है! ‹० बाग नहीं छोडेगा, वह इतना मूर्ख नहीं है। वह ओखली नहीं देनेवाला, लेकिन ऐसा करने की कोशिश करेगा कि पीछे , बल्कि उमूरजाकोवा, आलिमजान और जुराबायेव को हटना

। कभी-कभार उच्चाधिकारियो का मुह जोहना भी बुरा नही होता देखना है, वहाँ इनकी "स्वेच्छाचारिता" की क्या प्रतिक्रिया होती मुलतानोव ने ठीक कहा था तेल देखो, तेल की धार देखो।

कादीरोव ने सिर उठाकर कधे उचकाये

"मैं क्या अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने के विरुद्ध हूँ, कामरेड राबायेव? लेकिन हमे सदा परिस्थिति को भली-भाति ध्यान मे रखना हिए। पर परिस्थिति अभी अनुकूल नही है।" उसने सामूहिक किसानो बीच गफूर को खोज लिया और उसे सकेत किया, "जरा इधर ओ, गफूर और कामरेड जुराबायेव को बता दो कि क्या तुम्हारी ली खुद अपने बल पर अपने खेत की कपास को बचा सकती है।"

गफूर आगे निकलकर कटु व फीकी मुस्कान के साथ बोला

"हम बेशक कोशिश करेगे, कामरेड जुराबायेव। लेकिन हमारी क्ति सचमुच कम ही है। हमारा टोली-नायक आदरणीय और योग्य नसान है, पर पिछले कुछ अरसे से उससे कोई काम ढग से नही पा रहा है।"

"ऐसा किस लिए?"

"उसे ठेस लगी है, कामरेड जुराबायेव! सगी बेटी भी जहर गलती है! बूढे मुरातअली के दिल को चैन नही है! फिर दूसरो के भी हाथ रुक जाते है। आखिर हमने कपास की खेती करना कुछ ही दिन हुए शुरू किया है, अनुभव नही है, अभी हाथ जम नही पाता टोली मे और लोग नहीं शामिल किये, तो कपास बरबाद हो जायेगी!"

"आपकी हम मदद करेगे!" करीम कह उठा। "अपने खेत का काम निबटाकर सारी टोली के साथ आपके यहाँ पहुँच जायेगे! मुरातअली चचा की मदद करने को मैं हमेशा तैयार हूँ!"

"कही अपना काम चौपट न कर बैठो," कादीरोव ने विषादपूर्ण स्वर मे कहा। "पिछडनेवाली टोली हमारे यहाँ एक थोडे ही है डूबते को बचाने जाओ, और वह उसे भी ले डूबे।"

उसी समय भीड मे से कुदालवाला युवक बाहर निकला

"मैं खुद भी पिछडनेवाली टोली मे से हूँ, अध्यक्ष! तुम हमारी टोली मे अक्सर आते रहते हो, तुमसे बेहतर भला और कौन जान सकता है कि हम क्यो सबसे पिछड रहे हैं! आधी के समय हमारे

खेत में दो-तीन आदमी ही काम कर रहे थे, बाकी रोज़ी-पहलवान के यहाँ चले गये थे उसके पिता को मरे दस साल हो चुके हैं, और उसे बरसी मनाने की सूझ आयी। देग भरके पुलाव पकाया, यार दोस्तों को बुला लिया और उनके साथ दिन भर दावत उड़ाई! "

"ओफ," बेकबूता ने दुखभरी सांस ली। "काश, आधी भी ऐसे ही आवारागर्दी करती! किज़िलकूम में कहीं बैठकर पुलाव उड़ाती, वोदका पीती और अपनी सरकारी ज़िम्मेदारियों के बारे में भूल जाती!"

सब हंस पड़े, केवल गफूर झल्लाकर चिल्लाया

"ये बेकबूता! अपनी कौम के रिवाजों की हंसी मत उड़ाओ!"

जुराबायेव ने गफूर की ओर ध्यानपूर्वक देख सिर हिलाया

"ये कौन-सा कौमी रिवाज हुआ, जिससे लोगों का नुक्सान होता हो?" वह युवा सामूहिक किसान की ओर मुड़े। "और टोली-नायक? उस वक्त आपका टोली-नायक कहाँ था?"

"हमारा आदरणीय टोली-नायक मुल्ला सुलैमान भी रोज़ी-पहलवान के यहाँ चला गया था। आख़िर वे पुराने दोस्त हैं! मैं यही कहना चाहता हूँ अध्यक्ष हमारे यहाँ से इस टोली-नायक को हटा ले। हमारी नाक में दम आ गया है उसके मारे बहुत हो चुका!"

"तुम सारी टोली की तरफ से मत बोलो!" काशीरोव ने उसे डपटा। "आप लोगों का टोली-नायक धुन का पक्का है, जोशीला है।"

"हाँ, जोशीला है! दावतों में! और धुन का ऐसा पक्का है कि अड़ जाये, तो कोई उसे टस से मस नहीं कर सकता! अध्यक्ष, तुम हमें और लोग देना चाहते हो ना? अगर टोली में लोग आ जाये, पर तौर-तरीका पहले जैसा ही रहता है, तो फायदा कम ही होगा।"

अब तक मौन रहे उमुरज़ाक़-अता ने अपने रूई जैसी सफ़ेद दाढ़ी पर गम्भीर मुद्रा में हाथ फेरा, चारों ओर नज़र डाली और सबको उनकी बात सुनने के लिए तैयार हुआ देख बुज़ुर्गों की तरह धीरे धीरे हर शब्द तौलते हुए काशीरोव को सम्बोधित कर बोले

"हम बूढ़े लोग तुम्हें कब से सलाह दे रहे हैं कि कामचोरों का साथ मत करो! लोग ईमानदारी से कमाई रोटी उन लोगों के साथ बाँटकर नहीं खाना चाहते, जो उन्हें उस रोटी को कमाने से रोकते

है। और मुफ्त टोली-नायकों को छूट नहीं देनी चाहिए! तुम उनकी तरफदारी मत करो, बल्कि हमें उनसे बचाओ।"

"अगर काम पूरा नहीं कर पाते है—उन्हे बदल दो, उनकी जगह ईमानदार मेहनतकशों को रखो!" आयकीज ने पिता का समर्थन किया। "और स्त्रियों को भी बेधड़क आगे बढ़ाइये, कामरेड कादीरोव! आपके यहाँ एक भी तो स्त्री टोली-नायक नहीं है! "

"यानी, अभी उस लायक नहीं हुई है "

"वाह अध्यक्ष, यह गलत है!" करीम ने खीजकर टोका और उपस्थित लोगों की मुस्कानों की परवाह किये बिना जल्दी में कह बैठा 'मेहरी तो है—कब से उपटोली-नायक का काम कर रही है! अब तो आ गया समय उसे टोली सौंपने का!"

"कौन है—मेहरी?" जुरावायेव ने जिज्ञासा प्रकट की।

करीम ने लेशमात्र भी हिचकिचाये बिना पटाक से कहा, मानो रिपोर्ट दे रहा हो

'वह भुगतअली की बेटी है, उनकी टोली में काम करती है। उसने सबसे पहले अछूती धरती में भेजे जाने की प्रार्थना की थी!"

"पर क्या वह टोली-नायक बनने योग्य है? आपका क्या खयाल है, उमुरजाक-अता? "

'क्यों नहीं, लड़की फुर्तीली है, माहिर है शान्त स्वभाव की है, वैसे किसी को अपना बुरा नहीं करने देगी! अब और क्या कहूँ, कामरेड जुरावायेव, भले लोगों के मामले में हम बहुत धनी हैं! "

कादीरोव फिर उदास, हठीली नजरों से अपने धूल में सने ऊँचे बूटों की नोकों को ताकने लगा। वह एकाएक चौंक उठा उसने सिर ऊँचा किया, उसकी आँखों में किंकर्तव्यविमूढ़ता की झलक दिखाई दी। उसे जुरावायेव की शान्त व किंचित् व्यंग्यमिश्रित आवाज सुनाई दी

"मालूम पड़ता है, तुम अपने सामूहिक किसानों पर सिर्फ विश्वास ही नहीं करते हो, बल्कि उन्हें अभी जानते तक नहीं हो। इनकी बातों को ध्यान से सुनो, अध्यक्ष! अपने सामूहिक फार्म के प्रति प्रेम के कारण कही बुद्धिमत्तापूर्ण, विश्वासपूर्ण बातों को सुनो! उनको

करो तब बात करो – तुम्हारे गुट के लिए जीना और काम करना आसान हो जायेगा। तुमने कहा, हमें परिस्थिति को ध्यान में रखना चाहिए। हां, ध्यान में रखना चाहिए, पर किस लिए? इसलिए कि उसे अपने लिए लाभदायक बना सकें!" बुरनाशेव ने दोनों हाथ पूरे फैलाये मानो उन्हें वे सब सामूहिक किसानों का आलिंगन करना चाहते हों, जिन्होंने अपने अन्तरकालिक अवकाश का समय सामूहिक फार्म के मामलों के बारे में बात करने, बहस-मुबाहसे पर खर्च कर दिया था। देखिये, सामूहिक फार्म में कितने दिलचस्प लोग हैं! इनके साथ तो पहाड़ उठाये जा सकते हैं!'

सामूहिक किसानों में से कुछ अपने अध्यक्ष की ओर कटु तिरस्कार की दृष्टि से देख रहे थे, कुछ छिपे व्यंग्य भाव से, कुछ कुतूहल से, कुछ अवसरवादी की तरह, किन्तु उनकी नज़रों में द्वेष भाव नहीं था। उन्होंने कादीरोव के साथ अनेक वर्ष तक कंधे से कंधा भिड़ाकर काम किया था और इस दौरान काफी सफलताएं प्राप्त कर चुके थे। कादीरोव के साथ वे भरपूर फसलों के लिए संघर्ष कर चुके थे और कादीरोव के साथ ही एक मेज़ पर बैठकर दावतें खा चुके थे। ऐसा भी हो चुका था, मुसीबत उनका दरवाज़ा खटखटाती – वे उसकी मुश्कें कस देते, कभी सूखे से उनके तन का आखिरी चिथड़ा भी छिन जाता, बड़ी तंगी से दिन कटते – पर उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी, सरकार से मदद मांगने, किसी तरह हवा खाकर जीते रहते, लेकिन वसन्त आते ही – फिर काम में जुट जाते! और यह सब उन्होंने कादीरोव के साथ, कादीरोव के ही सामने, उसकी मदद से, उसकी कुशल देख-रेख में किया था! सामूहिक किसान कादीरोव के आदी हो चुके थे, उसकी कमियों तक के। वे जानते थे कि वह हद से ज्यादा स्वाभिमानी और हठी है, पर वे केवल उस पर हंसते ही थे, मानो ऐसा होना उसी के हित में है। अध्यक्ष को उसकी तारीफों के पुल बांधा जाना पसन्द था – समाचारपत्रों में, रेडियो पर, सभाओं में, – लेकिन वह जब कोई काम हाथ में लेता था, तो उसे पूरा करके ही छोड़ता था।

सच पूछिये, तो कुछ अरसे से वह बुरे लोगों के साथ उठने-बैठने लगा था, घमण्डी हो गया था, हवा पर चलने लगा था। "चारों

ओर ज़िन्दगी बदल रही है, पर कादीरोव उसे पुराने से ही नाप रहा है!" एक बार आलिमजान ने पार्टी की मीटिंग में कहा था। "उसके घर में एक भी किताब नहीं दिखाई देती!" नौजवान क्षोभ के साथ कहते। "इज़्ज़तदार लोगों की बात मानता ही नहीं है," वृद्ध शिकायत करते।

लेकिन ऐसा कौन है, जिसमें कोई दोष न हो? जब पानी की खोज की जा रही थी, अध्यक्ष अड़ गया था, पर फिर चेत गया। आशा तो यही करनी चाहिए कि आज की बातचीत के बाद भी वह अक्ल से काम लेने लगेगा क्योंकि लोगों ने उससे बात की, सफ़ेद झक दाढ़ीवाले उमूरज़ाक़-अता ने उसे अक्लमंदी की सलाह दी, ज़िला समिति के सचिव कामरेड जुरावायेव ने उसे बहस में मात दी, उसकी कड़ी निन्दा की। सब उसे बता रहे हैं कि उसे किस रास्ते पर चलना चाहिए, क्या वह फिर भी रास्ता बदल लेगा? नहीं, नहीं, वह शायद ही अकेला पड़ना चाहे! वे—अलतीनसाय के किसान और उनका स्थायी अध्यक्ष फिर एक साथ हो जायेंगे। इसीलिए सामूहिक किसान हालांकि कादीरोव की ओर तिरस्कार भरी, निन्दासूचक दृष्टि से देख रहे थे, किन्तु वैर-भाव से नहीं।

इस बीच जुरावायेव बोलते रहे

"मेरे ख़याल में सारी बात साफ़ हो चुकी है, कामरेडो। ज़िला समिति के ब्यूरो ने निर्णय किया है अछूती धरती को कृषि योग्य बनाना है। लोगों ने सामूहिक फ़ार्म की सभा में भी और इस समय भी इसके पक्ष में मत व्यक्त किया है। ऐसे हालात में जनतंत्र की केंद्रीय समिति हमेशा हमारा समर्थन करती है कुछ नहीं तो मिर्ज़ाचूल पर बोले हमले को ही याद कर लीजिये! सरकार से जैसे भी हो सका उसने साहसी किसानों की मदद की। मुझे इसमें सन्देह नहीं कि वह अब भी मदद करेगी। फिर हममें भी हर तरह की बाधा हटाने की ताकत, इच्छाशक्ति और तमन्ना है! सब हमारे हाथ में है, दोस्तो!"

बैक्बूता ने अपना मज़बूत और अभी तक कंधे तक उघड़ा हाथ करीम के दुबले कंधे पर रख युवक को अपनी ओर खींचा और उसकी सूरज-सी धधकती आंखों में झांक कहने लगा

"तुम्हारे वाके दगा तो नहीं देंगे ना?"

बातों पर कान करो – तुम्हारे खुद के लिए जीना और काम करना आसान हो जायेगा। तुमने कहा ठोस परिस्थिति को ध्यान में रखना चाहिए। हां, ध्यान में रखना चाहिए, पर किस लिए? इसलिए कि उसे अपने लिए लाभदायक बना सकें!" जुरावायेव ने दोनों हाथ पूरे फैलाये, मानो उन्हें घेरे खड़े सामूहिक किसानों का आलिंगन करना चाहते हों, जिन्होंने अपने अल्पकालिक अवकाश का समय सामूहिक फार्म के मामलों के बारे में बात करने, बहस-मुबाहसे पर खर्च कर दिया था। "देखिये, सामूहिक फार्म में कितने विलक्षण लोग हैं! इनके साथ तो पहाड़ उठाये जा सकते हैं!"

सामूहिक किसानों में से कुछ अपने अध्यक्ष की ओर कटु तिरस्कार की दृष्टि से देख रहे थे, कुछ छिपे व्यंग्य भाव से, कुछ कुतूहल से, कुछ अवसरवादी की तरह, किन्तु उनकी नजरों में द्वेष भाव नहीं था उन्होंने कादीरोव के साथ अनेक वर्ष तक कंधे से कंधा भिड़ाकर काम किया था और इस दौरान काफी सफलताएं प्राप्त कर चुके थे। कादीरोव के साथ वे भरपूर फसलों के लिए संघर्ष कर चुके थे और कादीरोव के साथ ही एक मेज पर बैठकर दावतें खा चुके थे। ऐसा भी हो चुका था मुसीबत उनका दरवाजा खटखटाती – वे उनकी मुश्कें कस देते, कभी सूखे में उनके तन का आखिरी चिथड़ा भी छिन जाता, बड़ी तंगी में दिन कटते – पर उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी सरकार से मदद मांगते, किसी तरह हवा खाकर जीते रहते, लेकिन वसन्त आते ही – फिर काम में जुट जाते! और यह सब उन्होंने कादीरोव के साथ कादीरोव के ही सामने, उसकी मदद से, उसकी कुशल देख-रेख में किया था! सामूहिक किसान कादीरोव के आदी हो चुके थे, उसकी कमियों तक के। वे जानते थे कि वह हद से ज्यादा स्वाभिमानी और हठी है, पर वे केवल उस पर हंसते ही थे मानो ऐसा होना उसी के हित में है अध्यक्ष को उसकी तारीफों के पुल बांधा जाना पसन्द था – समाचारपत्रों में, रेडियो पर, सभाओं में, – लेकिन वह जब कोई काम हाथ में लेता था, तो उसे पूरा करके ही छोड़ता था।

सच पूछिये, तो कुछ अरसे से वह बुरे लोगों के साथ उठने बैठने लगा था, घमण्डी हो गया था हवा पर चलने लगा था। 'बारी

और जिन्दगी बदल रही है, पर कादीरोव उसे पुराने मे ही नाप रहा है।" एक बार आलिमजान ने पार्टी की मीटिंग मे कहा था। "उसके घर में एक भी किताब नही दिखाई देती।" नौजवान क्षोभ के साथ कहते। "इज्जतदार लोगों की बात मानता ही नही है," वृद्ध शिकायत करते।

लेकिन ऐसा कौन है, जिसमे कोई दोष न हो? जब पानी की खोज की जा रही थी, अध्यक्ष अड गया था, पर फिर चेत गया। आशा तो यही करनी चाहिए कि आज की बातचीत के बाद भी वह अक्ल से काम लेने लगेगा क्योंकि लोगों ने उससे बात की, सफेद भक दाढ़ीवाले उमूरज़ाक-अता ने उसे अक्लमंदी की सलाह दी, जिला समिति के सचिव कामरेड जुराबायेव ने उसे बहस मे मात दी, उसकी कडी निन्दा की। सब उसे बता रहे हैं कि उसे किस रास्ते पर चलना चाहिए, क्या वह फिर भी रास्ता बदल लेगा? नही, नही, वह शायद ही अकेला पडना चाहे! वे–अलतीनसाय के किसान और उनका स्थायी अध्यक्ष फिर एक साथ हो जायेंगे। इसीलिए सामूहिक किसान हालांकि कादीरोव की ओर तिरस्कार भरी, निन्दासूचक दृष्टि से देख रहे थे, किन्तु वैर-भाव से नही।

इस बीच जुराबायेव बोलते रहे

"मेरे खयाल से सारी बात साफ हो चुकी है, कामरेडो। जिला समिति के ब्यूरो ने निर्णय किया है अछूती धरती को कृषि योग्य बनाना है। लोगों ने सामूहिक फार्म की सभा में भी और इस समय भी इसके पक्ष मे मत व्यक्त किया है। ऐसे हालात मे जनतंत्र की केंद्रीय समिति हमेशा हमारा समर्थन करती है कुछ नही तो मिर्जाचूल पर बोले हमले को ही याद कर लीजिये! सरकार से जैसे भी हो सका उसने साहसी किसानों की मदद की। मुझे इसमे सन्देह नही कि वह अब भी मदद करेगी। फिर हममें भी हर तरह की बाधा हटाने की ताकत, इच्छाशक्ति और तमन्ना है! सब हमारे हाथ में है, दोस्तो!"

देक्बूला ने अपना मजबूत और अभी तक कधे तक उघडा हाथ करीम के दुबले कधे पर रख युवक को अपनी ओर खीचा और उसकी सूरज-सी धधकती आखो मे झाक कहने लगा

"तुम्हारे वाके दगा तो नही देगे ना?"

९*

हमारी मदद से आप निश्चिन्त रह सकते हैं!"

"और हम सदैव उराक की गार्द के जवानों की तरह डटे रहेंगे, एक कदम भी पीछे नहीं हटेंगे!"

येरनूरा व करीम का अनुसरण कर बाकी सामूहिक किसान भी मूढ़े से उनके पीछे आ तनकर खड़े हो गये, सचमुच गार्द के जवानों जैसे! जुराबायेव खुलकर मुस्कराये और उनकी ओर इंगित कर आयकीज से बोले

"देखा, अध्यक्ष? तुम्हारे किसानों को कपास की चिन्ता तुम से कम नहीं है। लेकिन इसके इसके अलावा हमारे यहाँ अधिकाधिक कपास होने की, जीवन को निरन्तर बेहतर ही बेहतर बनाने की भी चिन्ता है।"

"हूँ, ऐसा कौन नहीं चाहता!"

"तब तुम क्यों लोगों को अछूती धरती से निर्माण-स्थल से हटाना चाहते हो? तुम जरूर यही सोच रहे होंगे, बस्ती का निर्माण अभी रुका रह सकता है, उसकी हमें जल्दी नहीं है। नहीं, अध्यक्ष, हमें बस्ती की जरूरत है, सख्त जरूरत है! हमें स्तेपी से कई टन अतिरिक्त कपास पैदा करने के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को आकर्षित करना है। हम चाहते हैं कि लोग स्वेच्छा से यहाँ आयें और यहाँ के पुराने बाशिंदे बन जायें। इसी खातिर तो हम बढ़िया, आकर्षक बस्ती बना रहे हैं, जिसमें लोगों को बसने की इच्छा हो! वह चुम्बक की तरह गरीब पहाड़ी गाँवों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करे," जुराबायेव आयकीज की ओर मुड़े। "यहाँ, याद आया, कामरेड उमूरज़ाकोवा, तुम्हें अछूती धरती में सामूहिक फार्म का बाजार बनवाने के बारे में सोचने की सलाह देता हूँ। तब देखना एक भी नया अधिवासी स्तेपी छोड़कर नहीं जायेगा!"

"ठीक है, हम इस पर विचार करेंगे," आयकीज ने सहमति प्रकट की। "मेरा ख़याल है, पुनर्वास शुरू होते-होते बाजार भी बन जायेगा।"

जुराबायेव ने सब पर बारी-बारी से नजर डाली।

"ठीक है, कामरेडो, हम यह मानेंगे कि हमने चलते-चलाते सामूहिक फार्म की सभा कर ली, जो, जिसे कहना चाहिए, उच्च

सैद्धान्तिक स्तर पर हुई! मुझे आशा है कि कामरेड कादीरोव इसमे अपने लिए आवश्यक निष्कर्ष निकाल लेगे। क्यो, अध्यक्ष, काम करेंगे ना? "

कादीरोव हिचकिचाया और फिर अनिच्छापूर्वक बड़बड़ाया

"क्यों नही, काम करना चाहिए, न कि बातें बनाते रहना।"

जुरावायेव ने घड़ी पर नजर डाली

"ओहो! अध्यक्ष की बात सही है काम करने का वक्त हो गया। हम यहा बातो मे खो गये थे। हालाकि बातचीत, मेरे खयाल मे, लाभदायक रही।"

जब सामूहिक किसान जिला समिति के सचिव से सादर विदा लेकर चले गये, आलिमजान उनके पास आया

"एक मामले के बारे मे बात करनी है, कामरेड जुरावायेव। जानते है, मुझे एक चीज मे दिलचस्पी हो गयी है"

"तो तुम मेरे साथ गाड़ी मे बैठ जाओ, साथ गाव चलते है वहीं सारी बात कर लेंगे। उमरजाकोवा! तुम भी हमारे साथ चलो!"

"बड़ी खुशी से, कामरेड जुरावायेव!"

"और, अध्यक्ष, तुम हमें छोड़ने नही चलोगे?"

कादीरोव एक ओर देखता हुआ बड़बड़ाया

"मुझे बिलकुल फुरसत नही है, पिछड़नेवाली टोलियो को बढ़ावा देना है। आपने खुद ही मेरा काम बढ़ा दिया! लेकिन आपको आगाह किये देता हूँ, कामरेड जुरावायेव, अगर कुछ गड़बड़ हुई तो जिम्मेदार आप होंगे!"

"आप धमकी मत दीजिये, अध्यक्ष!" सदा शान्त रहनेवाली आयखोज उबल पड़ी। "हम डरपोको मे से नहीं है। जरूरत पड़ी तो जवाब देंगे।"

कादीरोव को कहने को कुछ नही सूझा और उसने केवल वही बात दोहरा दी

"यही तो, यही तो जवाब आपको देना होगा!"

इस भय से कि उसे फिर बहस मे फसा लिया जायेगा वह उदास मुद्रा मे सिर हिलाकर विदा ले अपने घोड़े की ओर बढ़ गया।

पुरानी कार खड़खड़, घरघर करती बाग़ी मानो किसी ने उस

पर वजनी सोटा दे मारा हो, और तेज़ी से अलतीनमाय की ओर दौड़ पड़ी।

कादीरोव को ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा, कोई उपकार करके घोड़ा उसके पास ले आया। और निस्सन्देह ऐसा केवल गफूर ही कर सकता था। कादीरोव ने अनुग्रह और कृपापूर्वक सिर हिलाया, जिसमें मित्रतापूर्ण कृतज्ञता का और अफसरशाही बेतकल्लुफी का भी पुट था, और काठी पर सवार होकर पूछा :

"अलीकुल कहा है?"

"शायद नहर के किनारे पर होगा। खाना खा रहा होगा।"

"यह बात है। मैं उसके पास जा रहा हूँ। कुछ देर बाद तुम भी वहा पहुँच जाना। बात करनी है।"

कादीरोव ने घोड़े को हाका और उसे स्तेपी या खेत, या छिड़कने वाली टोलियों की ओर नहीं, बल्कि अपने मददगार अलीकुल की तरफ दौड़ाने लगा, केवल उसी के आगे वह अपने दिल के गुबार निकाल सकता था

तेरह

अलीकुल की करतूतें

अलीकुल लम्बी और रंगबिरंगी जिन्दगी जी चुका था। उतनी ही लम्बी जितनी राहें उसने पार की थीं, वैसी ही रंगबिरंगी, जैसा चोगा वह पहना करता था।

उसे अनेक बार ठोकर खानी पड़ी, गिरना पड़ा, लेकिन बलवान और चौकस आदमी होने के कारण वह फिर उठता, फिर राह पर चल देता – शान्त और मधुर जीवन की तलाश में। अलीकुल को [illegible] में ही [illegible] बहुत पसन्द था।

अलीकुल का पिता मुसलमान [illegible] सौभाग्यशाली [illegible] में [illegible] था, [illegible] के बाज़ार में [illegible] बेचा करता था।

वे ज्यादा ठाठ से तो नहीं रहते थे, पर मुफलिसी में भी नहीं और अलीकुल को जीवन-सुख से रसदार, मधुर फल भाड़ने से कोई नहीं रोकता था। यह सच है कि उसके पल्ले केवल ऐशो-आराम ही नहीं बल्कि जिम्मेदारियां भी पड़ी – वह किशोरावस्था से ही पिता का हाथ बटाता रहा था। अलीकुल को यह काम पसन्द आ गया उसमें चालाकी सूझबूझ, लोगों के दिल के राज जानने की जरूरत थी। किशोर सौदागर ने बड़े उत्साह और खुशी के साथ अपने में इन आवश्यक गुणों का विकास किया। बजाज अपने इकलौते बेटे को देख-देख फूला नहीं समाता था। जब अलीकुल रंगबिरंगे चमकदार रेशमी कपड़ों से घिरा प्रफुल्ल बनावटी मुस्कान के साथ मेज पर खड़ा होता सीधे-सादे ग्राहकों में से किसी से शक्कर पड़ी चाय की प्याली पीने किसी को खुशबूदार चिलम का एक कश लगाने का अनुरोध करता पुचकारता बुलाता अपने माल की तारीफ करता न अघाता तो उसे बहुत अच्छा लगता।

अलीकुल एक नजर में ग्राहकों की हैसियत उनका अनुभव और मिजाज भांपने में माहिर था, और जब वह दूर स्तेपी इलाके से शादी या किसी त्योहार के लिए रेशमी कपड़े का टुकड़ा खरीदने आये किसी सीधे-सादे किसान को अपनी दुकान के सामने झिझकते देखता तो कीमत इतनी बढ़ा-चढ़ाकर बताता, जितनी और कोई सौदागर न बताता।

किसान – पूर्णतः सरलहृदय! – घमण्ड का दिखावा करने लगता (मुझे इन चीजों की पहचान है, मुझे चकमा नहीं दे सकते!) और सन्देह प्रकट करता सिर हिलाता महंगा है, मालिक

"महंगा है? अरे, आप भी क्या, चचा, यह तो इस इलाके की सबसे बढ़िया रेशम है, ऐसी आपको और कहीं नहीं मिलेगी! आपकी इज्जत करने की खातिर मैं आप से औरों से कम कीमत माग रहा हूं!"

अलीकुल मेज पर मद सरसराते कपड़े पटक देता, उलटता-पुलटता, बड़ी कुशलता से कभी ऐसे रखता, कभी वैसे, जिससे कि वे इन्द्रधनुषी रंगों में दमके, झिलमिलाये, अपनी चमक-दमक से ग्राहक की आंखें चौंधिया दें, और ग्राहक को ठण्डी सांसें लेने के सिवा और कोई चारा न रहता

"रेशम तो बढिया है! पर महगा है, मालिक। इतने पैसे मेरे पास नही हैं।"

अरे, छोडिये, सौदेबाजी नही करेंगे! मैं जानता हूँ, आप भले आदमी है, ठीक है, मैं आपको सस्ते में दिये देता हूँ!"

अलीकुल दाम कम करने लगता और तब तक कम करता रहता, जब तक कि ऐसी कीमत पर नही पहुच जाता, जो दुकानदार से बहस और उसकी आवभगत से थके ग्राहक को आरम्भ में बताये दाम की तुलना मे काफी उचित लगती, जब कि वास्तव मे वह मामान्य से काफी ऊची होती।

किसान को टुकडा सौपते हुए अफसोस के साथ जबान चटखाता "उफ, कितने सस्ते मे बेच दिया! ऐसे दिवाला निकलने देर नही लगेगी! आप अगर मुझे पसन्द नही आये होते, चचा, तो किसी कीमत पर दाम कम नही करता!"

ग्राहक पूर्णत सन्तुष्ट होकर चला जाता आखिर मैं ने इस दुकानदार से कीमत कम करवा ही ली! और अलीकुल अलीकुल भी खुशी से हाथ रगडता।

उसे चिलम के दम जैसा यह दिलचस्प और उत्तेजक खेल बड़ा पसन्द था और जीवन उसे पसन्द था ठाटदार, आसान।

बचपन में वह मजहबी मदरसे मे पढा था पर उसे व्यापार की तुलना में शिक्षा कम आकर्षक लगती थी स्कूली ज्ञान किशोर अलीकुल के पल्ले नहीं पडता था। अलीकुल ने बडी मुश्किल से हफ्तियक पूरी की पर उससे आगे नही बढ पाया। दोस्त अलीकुल की हंसी उडाते पर वह उनके मजाकों पर कोई ध्यान न देता वह मन ही मन खुद उन मूर्खों खडूसो पर हंसता था जो यह नही समझते थे कि पैसा बनाना ही एकमात्र रोचक काम होता है न कि ज्ञानार्जन जो उबाऊ होता है किसी काम का नही होता है स्कूल म बैठे-बैठे अलीकुल दुकान के सपने देखा करता था जिसमे रेशमी कपडों की मुलायम सुहावनी सरसराहट के बीच बढती [illegible] हजारों पन्नों [illegible] के बीच मगन हुए और फिर भी [illegible] – मुसलमान और अलीकुल की – और सब [illegible] सिक्कों की [illegible] खनक बीच-बीच में सुनाई पडती थी। अलीकुल स्वयं उस धारा को अपनी ओर [illegible]

रहता था, और ज्यों-ज्यों वह सयाना बनता जाता त्यों-त्यों खुशकिस्मत किशोर को बाज़ार अपनी ओर आकृष्ट करता जाता। उसका पिता, अनुभवी सौदागर मुसाख़ान भी अपने पुत्र की राय पर कान करता, उससे साथ सलाह करता जब कभी उसका वास्ता किसी नाज़ुक व पेचीदा सौदे से पड़ता।

अलीकुल ऐसे ही हर चीज़ से नफ़ा कमाने की कोशिश करता केवल अपने ही फ़ायदे की, अपनी ही खुशहाली व सलामती की चिन्ता करता दिन काटता रहा। वह दौलत की इबादत करने को तैयार था क्योंकि वह उसे ताक़त देती थी, उससे वह अपनी इज़्ज़त बढ़ा सकता था, चैन और ऐशो-आराम ख़रीद सकता था। उसकी नज़र इन सालों में सूई जैसी पैनी हो गयी थी और होंठ – धागे जैसे पतले। वह अपने मुख पर असीम विनम्रता से लेकर गहरे क्रोध तक का कोई भी भाव लाना सीख गया था। सच्चे भाव व इरादे दिल की गहराइयों में छिपाना सीख गया था। वह सुनने, याद रखने, तुलना करने, मूल्यांकन करने में कुशल था और अनुभवी हृदयज्ञ हो गया था। उसके आस-पड़ोस के लोग एकमत से दावा करते थे कि नौजवान सौदागर बहुत तरक्की करेगा।

किन्तु धन से आलोकित उसके मार्ग में नयी व्यवस्था, नये जीवन, नये लोगों ने बाधा डाल दी।

क्रान्ति के बाद मूसाख़ान और अलीकुल का धंधा धीरे-धीरे मंदा पड़ने लगा, ख़तम होने लगा। मूसाख़ान कोई दस वर्ष तक और दुकान चलाता रहा, लेकिन जब अलतीनसाय में सामूहिक फ़ार्मों की स्थापना होने लगी, एक रात उसे बंद कर गायब हो गया। बाद में उसे समरक़न्द के बाज़ारों में देखा गया। कुछ समय बाद अलतीनसायवासियों को उड़ती-उड़ती ख़बर मिली कि बज़ाज़ बुख़ारा से तस्करी के रेशमी कपड़े पहुँचाने से लगे घाटे के धक्के से मर गया।

कोई नहीं जानता था कि अलीकुल पिता के साथ शामिल था या नहीं, उसके काले कारनामों में उसकी मदद करता था या नहीं, पर वह स्वयं अलतीनसाय छोड़कर कहीं नहीं गया। उसने अपना घर बसा लिया, पत्नी ने एक पुत्री – नन्ही नज़ाकत को जन्म दिया, और अलीकुल अपने पुरखों की ज़मीन पर ही रहता रहा। वैसे शुरू में

उसने भी व्यापार करना नहीं छोड़ा। दुकान अब उसके पास नहीं रही थी, पर वह सामानबाजारी करने लगा था। अपनी पैनी नजर और कुशल व्यापार में उसे सौदा करने में खरीदने और स्थानीय बाजारों में दुगुने दामों पर बेचने में मदद मिलती रही। सारे अलती-नसायवासी सामूहिक फार्म में शामिल हो चुके थे, लेकिन अलीकुल अभी तक आस-पास के बाजारों में चक्कर लगाता रहता था। तथापि सारे उजबेकिस्तान की तरह अलतीनसाय में भी अब पुराने जीवन के बचे-खुचे कूड़े को उड़ा ले जानेवाली ताजा और तेज हवा बह रही थी। अलतीनसायवासी संदिग्ध कामों में लगे रहनेवाले अपने ग्रामवासी को तिरछी नजरों से देखते थे। उसके बारे में गाव में बुरी खबरें फैलने लगी। नयी परिस्थितियां उसके लिए कितनी ही कटु और कठिन क्यों न थी, पर अपने को उनके अनुकूल ढालना जरूरी था, और अलीकुल ने अपने सम्बन्धियों के जोर देने पर स्थानीय सामूहिक फार्म में शामिल होने के लिए प्रार्थनापत्र दे दिया।

उसके जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन हुए, पर उसका स्वभाव व रुझान पहले जैसे ही रहे. सौदागर के फुरतीले हाथ कुदाल के आदी हो गये, किन्तु उसका दिल दुकान की धुधली रोशनी में सरसराते अतीत में ही अटका रहा, और उन सब बातों से, जो वह अब देख और कर रहा था, उसे नफरत थी।

काम तपती धूप में भी करना पड़ता था और कड़ाके की ठण्ड में भी। काम कठोर और मोटा था, उस जुए से बिलकुल भी मेल नही खाता था, जो वह मेज़ के पास खड़ा प्राय खेला करता था, जिससे उसे पैसा मिलता था, पैसा – खनकते सिक्के, कुरकुरे नोटे, जो वह मूर्ख बनाये ग्राहको की जेब से बडी चालाकी, बडे धोखे के साथ उन्हे फुसलाकर निकलवा लेता था।

अलीकुल ने सामूहिक फार्म मे भी चालाकी और हीला-हवाला करने की कोशिश की, हर तरह झूठे-सच्चे बहाने बनाकर काम से जी चुराता रहा, पर इससे नुकसान खुद उसी का होता। इसके फलस्व-रूप अलीकुल का बिलकुल भी लिहाज न करनेवाले अध्यक्ष और सामूहिक किसान मीटिंगो मे उसे जोरदार झाड भी पिलाने लगे।

ने उस भेडिये की-सी नजरो से देखता, जिसकी

मुश्के बाध दी गयी हो। उसकी छोटी-छोटी आखों में द्वेष और घबराह
छिपी रहती थी। वह किसी न किसी तरह अपने दिल को पहले क
तरह सुकून पहुचानेवाली शान्ति, समृद्धि व पडोसियो का सम्मान वाप
पाने के लिए दिमाग लडा रहा था, पर कोई तरकीब सूझ ही नह
पा रहा था।

उसने सामूहिक फार्म से निकलने और अपना गाव छोडकर च
जाने का फैसला किया। उसे केवल यही डर रोके हुआ था कि इ
तरह कायरतापूर्वक चम्पत होने से उसकी और भी ज्यादा बदनाम
होगी। शर्म तो मौत से भी बुरी होती है।

एक बार सर्दी की समाप्ति पर सामूहिक फार्म की सभा ने ठण्
के बावजूद पहाडो मे जोताई करने का निर्णय किया।

उस समय तक घाटी मे बर्फ पिघल चुकी थी। जमीन धूप
गरमाने लगी थी। लेकिन पहाडो मे ठण्ड हड्डियो को बेध रही थी
तेज़ हवा चल रही थी, न दिन मे शान्त होने का नाम लेती थी
न रात में।

तथापि सामूहिक किसान न हवा से डरे, न ठण्ड से। वे वसन्
कालीन प्रथम सूर्य-किरणो द्वारा कृपणता से दुलारी पहाडियो की ढला
पर जमीन के टुकडे चुनकर जोताई और बोवाई में जुट गये।

अलीकुल हलवाहे के रूप मे किसी काम का नही था, इसलि
उसे बीजो की बोरियाँ छकडो से उमूरज़ाक-अता की टोली वाले खे
तक ढोने का काम सौंपा गया। उमूरज़ाक-अता द्वारा उसके लाये ग
के बोने तक इन्तज़ार करता अलीकुल एक ओर चला जाता, धू
सेकने की कोशिश करता हुआ हवा की ओर पीठ कर लेता, कूदता
हवा से जमे जा रहे गालो व कानो को ज़ोर-ज़ोर से मलता और ठिठ
हुए हाथो पर फूक मारता। उमूरज़ाक-अता यदा-कदा खेत के छो
पर ठिठुरते हुए उछल-कूद रहे अपने सहायक की ओर देखकर केव
मुस्करा देते और सिर हिलाते

अगली बोरी खाली करने के बाद उमूरज़ाक-अता अलीकुल क
आवाज़ देने के लिए मुडे, पर उनका मुँह खुला का खुला रहा गया
अलीकुल का कही नाम-निशान न था वृद्ध ने उसे कई बार आवा
दी, लेकिन हवा शायद उनके शब्द कही उडा ले गयी सहायक

उसने भी व्यापार करना नहीं छोड़ा। दुकान अब उसके पास नहीं रही थी, पर वह चालबाजी करने लगा था। अपनी पैनी नजर और कुशल व्यवहार से उसे सौदा सस्ते में खरीदने और स्थानीय बाजारों में ऊंचे दामों पर बेचने में मदद मिलती रही। सारे अलतीन-सायवासी सामूहिक फार्म में शामिल हो चुके थे, लेकिन अलीकुल अभी तक आस-पास के बाजारों में चक्कर लगाता रहता था। तथापि सारे उज्बेकिस्तान की तरह अलतीनसाय में भी अब पुराने जीवन के बचे-खुचे कूड़े को उड़ा ले जानेवाली ताजा और तेज हवा बह रही थी। अलतीनसायवासी सक्रिय कामों में लगे रहनेवाले अपने ग्रामवासी को तिरछी नजरों से देखते थे। उसके बारे में गांव में बुरी खबरें फैलने लगीं। नयी परिस्थितियां उसके लिए कितनी ही कटु और कठिन क्यों न थीं, पर अपने को उनके अनुकूल ढालना जरूरी था, और अलीकुल ने अपने सम्बन्धियों के जोर देने पर स्थानीय सामूहिक फार्म में शामिल होने के लिए प्रार्थनापत्र दे दिया।

उसके जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन हुए, पर उसका स्वभाव व रुझान पहले जैसे ही रहे, सौदागर के फुरतीले हाथ कुदाल के आदी हो गये, किन्तु उसका दिल दुकान की धुंधली रोशनी में सरसराते अतीत में ही अटका रहा, और उन सब बातों से, जो वह अब देख और कर रहा था, उसे नफरत थी।

काम तपती धूप में भी करना पड़ता था और कड़ाके की ठण्ड में भी। काम कठोर और मोटा था, उस जुए से बिलकुल भी मेल नहीं खाता था, जो वह मेज के पास खड़ा प्रायः खेला करता था, जिससे उसे पैसा मिलता था, पैसा – खनखने सिक्के, कुरकुरे नोटे, जो वह मूर्ख बनाये ग्राहकों की जेब से बड़ी चालाकी, बड़े धोखे के साथ उन्हें फुसलाकर निकलवा लेता था।

अलीकुल ने सामूहिक फार्म में भी चालाकी और हीला-हवाला करने की कोशिश की, हर तरह झूठे-सच्चे बहाने बनाकर काम से जी चुराता रहा, पर इससे नुकसान खुद उसी का होता। इसके फलस्व-
अलीकुल [illegible] भी लिहाज न करनेवाले अध्यक्ष और सामूहिक
[illegible] झाड़ भी पिलाने लगे।
[illegible] की-सी नजरों से देखता, जिसकी

मुश्के बाध दी गयी हो। उसकी छोटी-छोटी आखो में द्वेष और घबराहट छिपी रहती थी। वह किसी न किसी तरह अपने दिल को पहले की तरह सुकून पहुचानेवाली शान्ति, समृद्धि व पडोसियो का सम्मान वापस पाने के लिए दिमाग लडा रहा था, पर कोई तरकीब सूझ ही नही पा रहा था।

उसने सामूहिक फार्म से निकलने और अपना गाव छोडकर चले जाने का फैसला किया। उसे केवल यही डर रोके हुआ था कि इस तरह कायरतापूर्वक चम्पत होने से उसकी और भी ज्यादा बदनामी होगी। शर्म तो मौत से भी बुरी होती है।

एक बार सर्दी की समाप्ति पर सामूहिक फार्म की सभा ने ठण्ड के बावजूद पहाडो में जोताई करने का निर्णय किया।

उस समय तक घाटी में बर्फ पिघल चुकी थी। ज़मीन धूप मे गरमाने लगी थी। लेकिन पहाडो में ठण्ड हड्डियो को बेध रही थी तेज़ हवा चल रही थी, न दिन में शान्त होने का नाम लेती थी न रात मे।

तथापि सामूहिक किसान न हवा से डरे, न ठण्ड से। वे वसन्त-कालीन प्रथम सूर्य-किरणो द्वारा कृपणता से दुलारी पहाडियो की ढलानो पर ज़मीन के टुकडे चुनकर जोताई और बोवाई में जुट गये।

अलीकुल हलवाहे के रूप में किसी काम का नही था इसलिए उसे बीजों की बोरियाँ छकडो से उमूरज़ाक-अता की टोली वाले खेत तक ढोने का काम सौंपा गया। उमूरज़ाक-अता द्वारा उसके लाये गेहूँ के बोने तक इन्तज़ार करता अलीकुल एक ओर चला जाता, धूप सेकने की कोशिश करता हुआ हवा की ओर पीठ कर लेता, कूदता हवा से जमे जा रहे गालो व कानों को ज़ोर-ज़ोर से मलता और ठिठुरे हुए हाथों पर फूक मारता। उमूरज़ाक-अता यदा-कदा खेत के छोर पर ठिठुरते हुए उछल-कूद रहे अपने सहायक की ओर देखकर केवल मुस्करा देते और सिर हिलाते

अगली बोरी खाली करने के बाद उमूरज़ाक-अता अलीकुल को आवाज़ देने के लिए मुडे, पर उनका मुंह खुला का खुला रहा गया। अलीकुल का कही नाम-निशान न था वृद्ध ने उसे कई बार आवाज़ दी, लेकिन हवा शायद उनके शब्द कही उडा ले गयी सहायक ने

कोई जवाब नहीं दिया। क्रुद्ध और चिन्तित उमूरज़ाक़-अता जल्दी-जल्दी नाला पार करके उस शीरमण्ड की ओर गये, जिसके पीछे ही उनका लापता शागिर्द छिप सकता था। अलीकुल वहीं मिला। वह बैठा था। उसके दांत बज रहे थे और आंखों में आंसू चमक रहे थे।

उमूरज़ाक़-अता सहानुभूति के साथ उसके ऊपर झुके:

"तुम्हें क्या हुआ भाई? बीमार तो नहीं हो गये?"

"आपके सामूहिक फार्म के लिए मैं अपनी कमर और नहीं तोड़ूंगा!" अलीकुल चिल्लाया। 'मैं आपके लिए कोई गधा तो हूं नहीं, जो ऐसी ठण्ड में काम करूं! मैं चला जाऊंगा!'

उमूरज़ाक़-अता एक ठण्डी सांस ले स्वयं बीज की गाड़ी की ओर चल पड़े।

जमा देनेवाली, कोड़े की-सी मार मारनेवाली हवा तेज होती जा रही थी।

अलीकुल को शीरमण्ड के पीछे से, जहां खुले खेत की तुलना में कहीं ज्यादा गरमी और चैन था, किसी भी तरीके से बाहर आने को तैयार करना असम्भव हो गया। उमूरज़ाक़-अता के उसके ज़रा-से पास आते ही वह कराहना और आहें भरना शुरू कर देता। वह समझ गया था कि उमूरज़ाक़-अता दयालु व्यक्ति हैं और उनका दिल किसी को थोड़े से कष्ट में देखकर पसीज जाता है।

इधर अलीकुल आहें भरता रहा, उधर उमूरज़ाक़-अता बोरियां ढोते रहे। आखिर वृद्ध के धैर्य का बांध टूट गया, और उन्होंने अलीकुल के सामने आकर, जिसके दांत बज रहे थे, कठोर स्वर में कहा:

"सुनो, प्यारे, तुम किसी दुकान में नहीं हो। आलस करने की कोई ज़रूरत नहीं है। बीमार हो—डाक्टर के पास जाओ। ठीक हो—काम करो। काम करोगे, तो बदन में गर्मी आ जायेगी।"

अलीकुल कंधों को हाथों से जकड़े और ज्यादा ठिठुरने लगा। यह समझकर कि उसे मनाने के लिए की जा रही उनकी सारी कोशिशें चिकने घड़े पर बूंद जैसी हैं, उमूरज़ाक़-अता क्रुद्ध स्वर में बोले:

"दूर हो जा मेरी नज़रों से! मैं तेरे बिना भी काम निबटा लूंगा।"

वह बिना मुड़कर देखे डग भरते खेत की ओर चल दिये, और

अलीकुल उन्हे अमर्ष घृणापूर्ण दृष्टि से देखता हुआ, दुनिया भर को, अनथक वृद्ध को, सामूहिक फार्म को, नये जीवन को, जो बार-बार उसका गला घोंट रहे थे, गालियाँ देता धीरे-धीरे घर की राह चल दिया।

वह घर पर बीमारी का बहाना करके कई दिन तक निराशाजनक व कष्टदायक विचारों मे डूबा लेटा रहा। फिर उसने एक घुप अंधेरी रात मे शहर से किराये पर लाये छकडे मे सामान लादा, पत्नी व बेटी को साथ लिया और चुपचाप अलतीनसाय छोड़कर नयी जिन्दगी शुरू करने चला गया।

दुकान, धोखाधडी से जमा की गयी सम्पत्ति और भूतपूर्व प्रतिष्ठा से वंचित होने के बाद उत्पन्न हुई अलीकुल की विकलता आखिरकार समाप्त हो गयी। अलीकुल ने जिन्दगी में बहुत कुछ भोगा, अब उसे अत्यन्त कष्टदायक शर्मिन्दगी और अपमान भी सहना पड़ा, और उसने मन-ही-मन कसम खायी आगे कोई उसे दयनीय हालत मे और अपमानित नही देख सकेगा। वह नयी व्यवस्था मे भी जीवन की बगिया मे अपने लिए आरामदेह कोना ढूढ कर रहेगा। जरूरत केवल पूरा हिसाब लगाने, तौलने और सोचने-समझने की है।

उसने बनियों की तरह मन-ही-मन हिसाब लगाया खेत मे काम करने से कोई फायदा नही होनेवाला – जितना काम करिये, उतनी ही आमदनी होगी। यह तो वैसे ही हुआ, जैसे कोई चीज उसी दाम पर बेच दी, जितने पर खरीदी और नफा कुछ नही कमाया। टोली-नायक, भण्डारी, सहकार-समिति का प्रबन्धक होना अलग बात है। उनमे मजे उड़ाने की गुजाइश भी रहती है – वह कभी नुकसान मे नही रहेगा, सामूहिक फार्म की मोटी रोटी से थोड़ा बड़ा और जरा ज्यादा स्वादिष्ट टुकड़ा तोड लिया करेगा। वह चतुर है और वर्तमान व्यवस्था मे भी अपने को इस तरह ढाल लेगा कि उसमे भी फायदा उठा लिया करेगा।

शुरुआत के लिए खेत मे आम कपास-उत्पादक की तरह काम किया जा सकता है, कुछ दिन ईमानदारी से, ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनी खूबियाँ दिखाने के लिए लगन से काम करना है। वह सब सह लेगा, ससम्मान इस कठिन परीक्षा मे उत्तीर्ण होगा। लेकिन जब वह

बोझ लदे ऊट दुनिया को अपनी मूर्खतापूर्ण व गर्वीली आखो से नीचे की ओर हेठी से देखते हुए धीरे-धीरे और अकडकर डग भरते गुजरते थे, फुरतीले, अडियल गधे दुलकी चाल से निकलते थे, क्लान्त राहगीर सिर भुकाये जाते थे। रास्ते पर चहल-पहल खूब रहती थी, पर चायखाना सूना पडा रहता था। वह किसी को विरले ही आकर्षित कर पाता था देखने मे वह बिलकुल नीरस था, और वहा केवल गदी प्यालियो मे घटिया चाय ही मिल सकती थी।

अलीकुल के आने तक यही हाल रहा था। वह तुरन्त समझ गया कि इस सामूहिक फार्म मे चायखानावाले के लिए मशहूर होना बहुत ही आसान है। जीवन वहा सुख-साधनरहित एव अव्यवस्थित था सामूहिक फार्म का अपना क्लब नही था, किसानो के लिए आराम करने की जगह कही नही थी, और चायखानावाला यदि स्नेहपूर्ण व चिन्ताशील हो, तो ग्राहक वहा एक के बाद एक टूटे पड सकते थे।

यह सब अच्छी तरह से तौलकर अलीकुल ने बहुत जल्दी वहा व्यवस्था स्थापित कर दी कही से देग ले आया, एक छोटा-सा सायबान लगा लिया – देखते-देखते चायखाने मे बावरचीखाना तैयार हो गया। उसने चायखाने की दीवारो पर दुबारा पलस्तर कर लिया। अल-तीनसाय से गृहस्थी के अन्य सामान के साथ लाये कालीन लकडी के चबूतरो पर बिछा दिये (ऐसे काम के लिए उसने कालीनो के मामले मे कजूसी नही की!)। वह चाय के साथ फूली-फूली नान, जो किसी बात मे समरकन्द की नान से उन्नीस नही होती थी, भुने हुए मटर और अत्यन्त मीठी और रेशम के कोयो जैसी सफेद झक मिठाई – परवरदा परोसता था। गर्मी से क्लान्त हुए ग्राहक मिट्टी मे गाडकर रखे विशाल लम्बोतरे घडो मे भरे शीतल जल या ठण्डी हुई चाय से प्यास बुझा सकते थे, और जिन्हे भूख सता रही होती उनका लजीज पुलाव इन्तजार कर रहा होता था।

किन्तु अलीकुल को यह भी कम लगा और शीघ्र ही "विशिष्ट" ग्राहको के लिए आरक्षित और सबसे महगे कालीन बिछे चबूतरे के कोने मे गायको और वादको ने स्थान ग्रहण करना शुरू कर दिया।

कुछ ही महीनो मे चायखाने का कायापलट हो गया। उसमे सुबह से शाम देर गये तक ग्राहको की भीड लगी रहती थी।

गीतों के साथ-साथ गुथा दुतारे का क्रन्दन गूंजता रहता। चाय की प्यालियों और पुलाव की तश्तरियों से हल्की-हल्की भाप उठती रहती, और चेहरे पर चिपकाई हुई सी चापलूसी भरी क्षीण मुस्कान के साथ फुरतीला अलीकुल चाबीदार पुतले की तरह एक ग्राहक के पास से दूसरे के पास दौड़ता रहता।

यहां लोग वैसे ही एकत्र होते, जैसे किसी क्लब में। सामूहिक फार्म को इस "क्लब" से मोटी आय होने लगी, और अध्यक्ष तो चायखाना-प्रबन्धक की प्रशंसा करता न थकता। वह अलीकुल के पास अकसर आता रहता था, और अलीकुल धीरे-धीरे किसी तरह उसे अपनी चाल में फंसाने का मौका तलाश रहा था। कुछ समय पूर्व का निर्धन, ईमानदार, किन्तु अदूरदर्शी तथा शैशव व किशोरावस्था में भूखों मरनेवाला अध्यक्ष अपने व अपने सामूहिक किसानों के लिए सम्पन्न जीवन के सपने देखा करता था और उसके साथ थोड़ी-सी भी नेकी करनेवाले लोगों के साथ, बिना सचाई की तह तक पहुंचे उनकी अथक गतिविधियों के विस्तार में गये बिना, उत्साहपूर्ण व्यवहार करता था।

उसने संगठनकर्त्ता व मितव्ययी प्रबन्धक के रूप में अलीकुल की प्रतिभा पर तुरन्त विश्वास कर लिया, क्योंकि चायखानावाला उस कार्य में दक्ष था जो उसे, अध्यक्ष को नहीं आता था। अलीकुल ने विशिष्टता प्राप्त करने और अपने संरक्षक के सामने यह सिद्ध कर दिखाने का निर्णय किया कि वह कितना योग्य है। अलीकुल ने एक बार अध्यक्ष व उसके मित्रों के आगमन की पूर्वसूचना पाकर अपने पैसों से बाजार से मोटा-ताजा एक दुम्बादार मेढ़ा खरीदकर ताजा गोश्त को मुलायम व खुशबूदार रखने के लिए उसे सिरके में डुबो दिया और अपने रिश्तेदारों की सहायता से ऐसे सीक-कबाब तैयार किये कि उन्हें देखते मात्र से मेहमानों की लार टपकने लगी।

नान के टुकड़े से तलवार सरीखी लम्बी सीक से मुंह में घुलनेवाले रसीले गोश्त का टुकड़ा निकालते हुए अध्यक्ष ने उपदेशात्मक स्वर में कहा

साधारण जनता को किस्सा कहना सीखना हो तो इनसे सीखे! और मुंह में बड़ा सा टुकड़ा डाल और उंगलियां बारबार अपने

बोला "पहले ऐसे मीठ-शबाब केवल जमींदार ही खाते थे और आज देखिये हम कितनी अच्छी जिन्दगी जी रहे हैं! चायखाने में बैठे मीठ-शबाब ऐसे गटक रहे हैं, जैसे मालदार आदमी हों!"

उसने अपना पेट थपथपाया और फिर गोलकर डकारें लगाते और अलीकुल दिल पर हाथ रख सलाम करता हुआ बोला

"जनता की सेवा के लिए मैं खुशी से मेहनत करूँगा!"

कुछ ही दिनों बाद अलीकुल को सामूहिक फार्म के गोदाम का प्रबन्धक नियुक्त कर दिया गया। अलीकुल की आगे खुशी की खुशी रह गयी यही तो जगह थी, जहाँ फायदा उठाया जा सकता था! उसने बिना सब्र किये तुरन्त पराये माल को हड़पना शुरू कर दिया। गोदाम से सामूहिक फार्म का अनाज चोरी से बाहर जाने लगा खाद के ढेर देखते-देखते घटने लगे, लेकिन पदार्थ की अविनाशिता के नियमानुसार गाव में मामूली-से घर के पास, जिसमें अभी तक अलीकुल रह रहा था, दिन दूनी और रात चौगुनी गति से बढ़िया मकान खड़ा होने लगा, जिसकी ओर गोदाम का प्रबन्धक बड़े गर्व व आत्मसन्तोष के साथ देखा करता।

अचानक बिना मेघ के वज्रपात हुआ सामूहिक किसानों ने जिन्हें बुद्धिमान, दूरदर्शी व उत्साही अध्यक्ष की जरूरत थी अलीकुल की दावतों के प्रशंसक पर विश्वास करना बंद कर दिया। नये अध्यक्ष की नजर पैनी और छिद्रान्वेषी साबित हुई। उसके अलीकुल की सम्पत्ति पर ऐसी नजर डालने की देर थी कि वह तुरन्त फिर बीमार पड़ गया। इस बार बीमारी लम्बी खिंच गयी। अलीकुल की पत्नी सबको यह विश्वास दिलाकर कि उसे बहुत तेज बुखार है और वह बेचारा न खाता है, न पीता है, केवल बड़बड़ाता और कराहता है, बीमार" के पास सम्बन्धियों व हाल ही में बने दोस्तों को छोड़कर किसी को नहीं फटकने देती थी।

उसकी पत्नी के "बुलेटिनों" के अनुसार अलीकुल का तापक्रम उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा था और इस प्रकार उसे काफी पहले ५०° सेंटीग्रेड से ऊपर पहुँच जाना चाहिए था। कोई दो सप्ताह बाद, ठीक उसी समय, जब लेखा-परीक्षण समिति ने जाच के दौरान गोदाम में भारी मात्रा में जौ, गेहूँ और खाद गायब पाया, सारे गाव में

यहाँ भी उसका हार्दिक स्वागत किया गया उन दिनों मिर्ज़ापुर के सामूहिक फार्मों को हर पेशे के कर्मियों की आवश्यकता थी। सो नये स्थान में भी अलीकुल को यार-दोस्त मिल गये।

आरम्भ के महीनों में अलीकुल सामूहिक फार्म के कार्यालय में चौकीदार का काम करता रहा। विनयशील व फुर्तीला होने के कारण ऐसा लगा कि वह अध्यक्ष को पसन्द आ गया है। अध्यक्ष अपने कक्ष में कदम रखता कि मेज पर भाप छोड़ती हरी चाय और अलीकुल की ही भेंट की हुई चिलम अपने स्वामी की प्रतीक्षा करती दिखाई देती। अध्यक्ष घोड़े जोतने को मुंह खोलता कि फौरन घोड़े हाजिर हो जाते। वह यह भी न पाता कि दिन भर खेत में रहकर थक गया है भूखों मर रहा है, और अलीकुल उसके आगे पुलाव की तश्तरी रख देता खाइये, जनाब अपना ही पकाया हुआ है

अलीकुल मन-ही-मन अपनी सफलता की खुशी मनाने को तैयार था पर अध्यक्ष ने एक बार उसका बनाया पुलाव पूरी तरह खतम कर अपनी चतुर आंखें सिकोड़ी, सोच में डूबे हुए सिर हिलाया और व्यंग्य व प्रशंसा मिश्रित स्वर में कह उठा

"कुछ भी हो, तुम हो बड़े तेज़!

उसके बाद उसने अपनी पुरानी किरमिज़ की वास्कट की जेब में से छोटा-सा मुड़ा-तुड़ा बटुआ निकालकर, पैसे गिन हक्के-बक्के हुए अलीकुल को देते हुए व्यंग्य व कृतज्ञता व्यक्त करती मुस्कान के साथ कहा

"तुम्हारा शुक्रिया, कामरेड, चाय के लिए भी, पुलाव के लिए भी और चिलम के लिए भी। मुझे तुम्हारा कर्ज़दार होना अच्छा नहीं लगता। ये लो पैसे, मैंने पूरा हिसाब लगा लिया है। तुम मुझे बेचते रहे, और मैं तुमसे खरीदता रहा। तुमने भी नुकसान नहीं उठाया, और मेरा अन्तःकरण भी शुद्ध रहा। तुम शायद खुद भी समझते होगे हमारे लिए सर्वोपरि है–ईमानदारी से जीना। और ख़याल रखने के लिए एक बार फिर शुक्रिया।"

उस रात अलीकुल को काफी देर तक नीन्द न आ सकी

किन्तु शीघ्र ही किसी अन्य पर आयी विपदा ने उसका साथ दिया, और अपने लिए मंगलकारी घटना का चतुराई से लाभ उठाकर

१०*

अफवाह फैल गयी कि अलीकुल मरणासन्न है। अलीकुल के मित्रों ने बड़ी तेजी से दौड़-धूप शुरू कर दी। कुछ "दवादारू" लाने लगे, कुछ बीमारी के अतिरंजनापूर्ण किस्से सुना-सुनाकर जिन्दों के हृदयों में करुणा का भाव उत्पन्न करने का प्रयास करने लगे, कुछ मरणोन्मुख के सिरहाने अथक ड्यूटी देने लगे, और मरणासन्न ज्वर सन्निपात की अवस्था में लेटा कृतज्ञतापूर्वक सोचता रहा "बस, यार दोस्त ही काम आते हैं, दौलत नहीं।"

जब अध्यक्ष अभागे भण्डारी के पास पहुँचा, अलीकुल ने कराहों और ठण्डी सांसों से उसका स्वागत किया, अलीकुल की पत्नी ने-ठण्डी सांसों और सुबकियों से। अध्यक्ष ने "बीमार" को कुछ न कहने का निर्णय किया। सामूहिक फार्म के कार्यालय ने केवल इतना ही किया कि "हानि की क्षतिपूर्ति" के लिए अलीकुल से उसका नया लगभग पूरा बना घर छीन लिया और गोदाम-प्रबन्धक के पद पर एक अन्य सामूहिक किसान को नियुक्त कर दिया।

जेल जाने से चमत्कार से बचकर कुछ महीनों बाद अलीकुल ने बिस्तर से उठने का साहस जुटा लिया और सिर पर नीली छींट का कमरबंद कसकर घर से बाहर निकला। वह कुछ दिनों तक मक्का की टहनियों-सा सिकुड़ा काँपता, कराहता, कभी बगल दबाता तो कभी कमर पकड़ता गाँव में भटकता रहा और अचानक सामूहिक फार्म से ऐसा गायब हुआ जैसे गधे के सिर से सींग। कुछ लोगों का कहना था कि उसे आखिर जेल में बंद कर दिया गया, कुछ ने अटकलें लगायीं कि अलीकुल को किसी कमजोर सामूहिक फार्म ने लुभाकर अपने यहाँ रख लिया, लेकिन भूतपूर्व भण्डारी के मित्र व सम्बन्धी यकीन दिलाकर कहते कि उसकी बीमारी फिर उभड़ आयी और पत्नी बीमार को अपने वतन आलतीनसाय ले गयी।

किन्तु वास्तव में अलीकुल वह सब मालूम कर, देख और गुनकर जो उसके लिए मालूम करना, देखना और गुनना जरूरी था, समझ गया कि अब वहाँ और रहने से उसे कोई लाभ नहीं होगा और रात के अंधेरे में चुपचाप गाँव छोड़, गिर-दरिया पारकर उसने एक ऐसे सामूहिक फार्म को अपनी सेवाएं उपलब्ध कराने का प्रस्ताव किया जहाँ उसे तब तक कोई नहीं जानता था।

वहाँ भी उसका हार्दिक स्वागत किया गया उन दिनो मिर्ज़ाचूल के सामूहिक फार्मो को हर पेशे के कर्मियो की आवश्यकता थी। तिस पर नये स्थान मे भी अलीकुल को यार-दोस्त मिल गये।

आरम्भ के महीनो मे अलीकुल सामूहिक फार्म के कार्यालय मे चौकीदार का काम करता रहा। विनयशील व फुरतीला होने के कारण ऐसा लगा कि वह अध्यक्ष को पसन्द आ गया है। अध्यक्ष अपने कक्ष मे कदम रखता कि मेज़ पर भाप छोडती हरी चाय और अलीकुल की ही भेट की हुई चिलम अपने स्वामी की प्रतीक्षा करती दिखाई देती। अध्यक्ष घोडे जोतने को मुह खोलता कि फौरन घोडे हाजिर हो जाते। वह कह भी न पाता कि दिन भर खेत मे रहकर थक गया है, भूखो मर रहा है, और अलीकुल उसके आगे पुलाव की तश्तरी रख देता खाइये, जनाब, अपना ही पकाया हुआ है "

अलीकुल मन-ही-मन अपनी सफलता की खुशी मनाने को तैयार था, पर अध्यक्ष ने एक बार उसका बनाया पुलाव पूरी तरह खतम कर अपनी चतुर आखे मिकोडी, सोच मे डूबे हुए सिर हिलाया और व्यग्य व प्रशसा मिश्रित स्वर मे कह उठा

"कुछ भी हो, तुम हो बडे तेज़!"

उसके बाद उसने अपनी पुरानी बिरजिस की बडी-सी जेब मे से छोटा-सा मुडा-तुडा बटुआ निकालकर, पैसे गिन हक्के-बक्के हुए अलीकुल को देते हुए व्यग्य व कृतज्ञता व्यक्त करती मुस्कान के साथ कहा

"तुम्हारा शुक्रिया, कामरेड, चाय के लिए भी, पुलाव के लिए भी और चिलम के लिए भी। मुझे तुम्हारा कर्ज़दार होना अच्छा नही लगता। ये लो पैसे, मैंने पूरा हिसाब लगा लिया है। तुम मुझे बेचते रहे, और मैं तुमसे खरीदता रहा। तुमने भी नुकसान नही उठाया, और मेरा अन्तःकरण भी शुद्ध रहा। *तुम शायद खुद भी समझते होगे* हमारे लिए सर्वोपरि है – ईमानदारी से जीना। और खयाल रखने के लिए एक बार फिर शुक्रिया।"

उस रात अलीकुल को काफी देर तक नीन्द न आ सकी

किन्तु शीघ्र ही किसी अन्य पर आयी विपदा ने उसका साथ दिया, और अपने लिए मगलकारी घटना का चतुराई से लाभ उठाकर

10*

अलीकुल मुस्तफा अपनी चिर अभिलषित समृद्धि के उज्ज्वलतर भवि-
पर एक साथ कई कदम आगे बढ़ गया।

गाँव से बाहर खेतों में बहनेवाली पानी की नहर के किनारे पर सामूहिक फार्म की पनचक्की लगी हुई थी। अचानक को उस चक्की पर आज अनाज का आटा पिसवाने की जरूरत आ पड़ी। अलीकुल ने स्वयं आटा ले आने की इच्छा व्यक्त की। तूफान हो रहा था, पर चौकीदार उससे नहीं घबराया। किन्तु तूफान ने देखते-देखते मूसलाधार वर्षा का रूप धारण कर लिया, और जब अलीकुल चक्की पर पहुँचा, जमीन पर एक अतिविशाल जलप्रवाह बह रहा था। अलीकुल पूरी तरह तर हो गया, उसके कपड़े बदन से चिपक गये और हालांकि वह घुटने से नीचे नहीं उतरा था, फिर भी उसके ऊँचे बूटों में भी पानी भर गया था। उस कोठरी के पास पहुँचकर, जिसमें चक्कीवाला रहता था, अलीकुल देहलीज पर बने बड़े-से डबरे में कूद गया और दरवाजा खटखटाने लगा। किसी ने जवाब नहीं दिया। अलीकुल ने गुस्से में गालियां दीं और चारों ओर नजर दौड़ाई। कोहरे भरी बारिश के मोटे पर्दे में से उसे कुछ दूरी पर घबराहट में दौड़-धूप करता व्यक्ति दिखाई दिया। बूटों में छपछप करता अलीकुल दृढ़ता-पूर्वक डग भरता नहर की ओर चल पड़ा, और किनारे पर पागलों की तरह भागता व्यक्ति कार्यालय के चौकीदार को पहचान, हाथ पर हाथ मार उसकी ओर लपका। वह बुरी तरह कांप रहा था, उसके दांत बज रहे थे, होंठ हिल रहे थे।

"म... मदद करो दोस्त, ब... बचाओ... पानी... पानी किनारे तोड़कर बह रहा है! मैं यहां... हाल ही में आया हूँ... मैं... मैं शहर का हूँ..."

यह चक्कीवाला था। वह वास्तव में सामूहिक फार्म में कुछ ही दिन हुए आकर बसा था, अपना काम भली भांति नहीं जानता था, और अचानक आयी बाढ़ ने उसे किंकर्तव्यविमूढ़ कर दिया था। अलीकुल के साथ-साथ पैर घिसटकर चलते हुए चक्कीवाला शिकायत करने लगा

"भा... भाड़ में जाये यह चक्की! लगता है यह हजार साल पुरानी है! ह... हवा तेज चली कि इसके अजर-पजर बिखर जायेंगे। पानी तेजी से बहते ही इसका चक्का जाम हो जायेगा!"

उस समय पानी वास्तव में तेजी से बहने लगा था, और खतरी के लिए खतरा पैदा हो गया था। अलीकुल बडी मुश्किल से नहर का फाटक बंद करने और प्रवाह दूसरी शाखा में मोड़ने में सफल हुआ। चक्कीवाले ने उसकी मदद नहीं की बल्कि उसके काम में बाधा डालता रहा।

किन्तु सम्भावित भावी लाभ को स्मरण रखते हुए अलीकुल ने न ताकत की परवाह की, न स्वास्थ्य की मानो वह जानता था कि उसकी कोशिशें व्यर्थ नहीं जायेगी और वह बाद में पूरा लाभ उठा लेगा।

और उसका अन्दाज़ सही निकला। इस घटना के पश्चात् अलीकुल को चक्कीवाला बना दिया गया, और चक्कीवाले को – चौकीदार। अलीकुल को अध्यक्ष की आखो में आयी अविश्वास की व्यंग्यपूर्ण चमक दूर करने में सफलता मिल गयी। अब उसकी पुरानी उपकारिता एक प्रकार से नये परिप्रेक्ष्य में देखी जाने लगी क्योंकि उसे श्रम के क्षेत्र में "कारनामा" कर दिखाने में सफलता मिली थी। और यह बात किसी के भी मन में नहीं आयी कि इस "कारनामे" का मूल सुविचारित चाल थी।

चोर को कोतवाल बना दिया गया। अलीकुल चक्की का कामकाज सभालने लगा। अपने कड़वे अनुभव से सबक सीखकर अब वह सावधानी बरतने लगा। वह, जैसा कि कहते हैं, "बड़े उत्साह से काम करता रहा," "अपनी सारी शक्ति उसमें लगाता रहा" "पहलकदमी करता रहा" और कुछ समय तक उसकी प्यारी गुल्लक केवल ईमानदारी से कमाये पैसों से ही भरती रही।

चक्की पर अलीकुल की जिन्दगी बुरी नहीं कट रही थी। उसके चारों ओर पोपलर, कैरागाच, बेद के वृक्ष उगे हुए थे, नहर का पानी दोनों किनारों के सहारे-सहारे लगे पेड़ों की छायाओं के कारण सदा काला रहता था। पानी से ठण्डक की लपटें उठती थी आसपास के इलाके का यह सबसे रमणीय स्थान था, और काम से खाली दिनों में अलीकुल की जागीर में मधुर शान्ति व्याप्त रहती थी।

लेकिन अलीकुल की थोड़े पर सन्तोष करने की इच्छा नहीं थी।

एक वर्ष बाद ही उसने सामूहिक फार्म की खत्तियों पर हाथ फेर दिया। वैसे उसने यह काम इस तरह किया कि आरम्भ में उसका

अलीकुल तुरन्त अपनी चिर-अभीप्सित समृद्धि के ऊबड़-खाबड़ मार्ग पर एक साथ कई कदम आगे बढ़ गया।

गाव से बाहर तेज़ी से बहनेवाले पानी की नहर के किनारे पर सामूहिक फार्म की पनचक्की लगी हुई थी। अध्यक्ष को उस चक्की पर अपने अनाज का आटा पिसवाने की ज़रूरत आ पड़ी। अलीकुल ने स्वय आटा ले आने की इच्छा व्यक्त की। बरसात हो रही थी, पर चौकीदार उससे नही घबराया। किन्तु बरसात ने देखते-देखते मूसलधार वर्षा का रूप धारण कर लिया, और जब अलीकुल चक्की पर पहुँचा, ज़मीन पर एक अतिविशाल जलप्रपात बह रहा था। अलीकुल पूरी तरह तर हो गया, उसके कपड़े बदन से चिपक गये और हालांकि वह छकड़े से नीचे नही उतरा था, फिर भी उसके ऊचे बूटो में भी पानी भर गया था। उस कोठरी के पास पहुँचकर, जिसमें चक्कीवाला रहता था, अलीकुल देहलीज पर बने बड़े-से डबरे में कूद गया और दरवाजा खटखटाने लगा। किसी ने जवाब नही दिया अलीकुल ने गुस्से मे गालिया दी और चारो ओर नज़र दौड़ाई। कोहरे सरीखे बारिश के मोटे परदे में से उसे कुछ दूरी पर घबराहट में दौड़-धूप करता व्यक्ति दिखाई दिया। बूटो से छपछप करता अलीकुल दृढ़ता-पूर्वक डग भरता नहर की ओर चल पड़ा, और किनारे पर पागलो की तरह भागता व्यक्ति कार्यालय के चौकीदार को पहचान, हाथ पर हाथ मार उसकी ओर लपका। वह बुरी तरह कांप रहा था, उसके दात बज रहे थे, होंठ हिल रहे थे।

"म   मदद करो, दोस्त, ब   बचाओ   पानी   पानी किनारे तोड़कर बह रहा है! मैं यहां   हाल ही मे आया हूँ   मैं शहर का हूँ   "

यह चक्कीवाला था। वह वास्तव मे सामूहिक फार्म मे कुछ ही दिन हुए आकर बसा था, अपना काम भली भांति नहीं जानता था और अचानक आयी बाढ़ ने उसे किंकर्तव्यविमूढ़ कर दिया था। अलीकुल के साथ-साथ पैर घिसटकर चलते हुए चक्कीवाला शिकायत करने लगा

"भा   भाड़ मे जाये यह चक्की! लगता है यह हज़ार साल पुरानी है! ह   हवा तेज़ भारी कि इसके अंजर-पंजर बिखर जाएं।
` ` से बरसे ही इसका चक्का जाम हो जायेगा!"

उस समय पानी वास्तव में तेज़ी से बहने लगा था, और चक्की के लिए ख़तरा पैदा हो गया था। अलीकुल बड़ी मुश्किल से नहर का फाटक बंद करने और प्रवाह दूसरी शाखा में मोड़ने में सफल हुआ। चक्कीवाले ने उसकी मदद नहीं की बल्कि उसके काम में बाधा डालता रहा।

किन्तु सम्भावित भावी लाभ को स्मरण रखते हुए अलीकुल ने न ताक़त की परवाह की, न स्वास्थ्य की मानो वह जानता था कि उसकी कोशिशें व्यर्थ नहीं जायेंगी और वह बाद में पूरा लाभ उठा लेगा।

और उसका अन्दाज़ सही निकला। इस घटना के पश्चात् अलीकुल को चक्कीवाला बना दिया गया, और चक्कीवाले को – चौकीदार। अलीकुल को अध्यक्ष की आंखों में आयी अविश्वास की व्यंग्यपूर्ण चमक दूर करने में सफलता मिल गयी। अब उसकी पुरानी उपकारिता एक प्रकार से नये परिप्रेक्ष्य में देखी जाने लगी क्योंकि उसे श्रम के क्षेत्र में "कारनामा" कर दिखाने में सफलता मिली थी। और यह बात किसी के भी मन में नहीं आयी कि इस "कारनामे" का मूल सुविचारित चाल थी।

चोर को कोतवाल बना दिया गया। अलीकुल चक्की का कामकाज सभालने लगा। अपने कड़वे अनुभव से सबक सीखकर अब वह सावधानी बरतने लगा। वह, जैसा कि कहते हैं, "बड़े उत्साह से काम करता रहा," "अपनी सारी शक्ति उसमें लगाता रहा," "पहलकदमी करता रहा" और कुछ समय तक उसकी प्यारी गुल्लक केवल ईमानदारी से कमाये पैसों से ही भरती रही।

चक्की पर अलीकुल की जिन्दगी बुरी नहीं कट रही थी। उसके चारों ओर पोप्लर, कैरागाच, बेद के वृक्ष उगे हुए थे नहर का पानी दोनों किनारों के सहारे-सहारे लगे पेड़ों की छायाओं के कारण सदा काला रहता था। पानी से ठण्डक की लपटें उठती थीं आस-पास के इलाके का यह सबसे रमणीय स्थान था और काम से खाली दिनों में अलीकुल की जागीर में मधुर शान्ति व्याप्त रहती थी।

लेकिन अलीकुल की थोड़े पर सन्तोष करने की इच्छा नहीं थी।

एक वर्ष बाद ही उसने सामूहिक फार्म की सम्पत्तियों पर हाथ फेर दिया। वैसे उसने यह काम इस तरह किया कि आरम्भ में उसका

कोई चीज सिद्ध करना कठिन हो गया। उसने चक्की के पास निजी मुर्गीखाना खोल लिया क्योंकि दाना तो वहां मुफ्त का सुलभ था—अनाज और आटा हर बार कुटाई, पिसाई, उतराई में बिखरता रहता था। अलीकुल की पाली हुई मुर्गियों व बतखों की बाजार में बड़ी मांग थी। नये मछलीबाड़े का धंधा जोर पकड़ने लगा। शीघ्र ही अलीकुल को सामूहिक फार्म के अनाज में से, जो उसे पीसने के लिए दिया जाता था, थोड़ा-सा हिस्सा "उधार" लेने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस बार अभ्यास को पसन्द नहीं किया गया। वह दृढ़निश्चयी कर्मिन था और उसने स्वयं अलीकुल को निकाल दिया।

अलीकुल की मुनाफाखोरी जंगली चोन्मे के फूल से भी क्षणभंगुर सिद्ध हुई। और फिर सब नये सिरे से शुरू करना पड़ गया।

अब वह हर नये सामूहिक फार्म में पिछले फार्म की अपेक्षा अधिक समय तक टिकने लगा और एक सामूहिक फार्म से दूसरे सामूहिक फार्म में उत्तरोत्तर अधिक मान-मना के जाने लगा। वह जीवन-सागर की उत्ताल तरंगों में अधिकाधिक आत्मविश्वास के साथ टिका रहने लगा। असफलताओं ने केवल अलीकुल की बहुत समय से स्वभावगत साधनसम्पन्नता व सतर्कता जैसी विशिष्टताओं को एक नये और उच्च स्तर पर पहुँचा दिया। वह लोगों के बीच हाथ-पाँव मारते और भटकते रहने से जीवन व लोगों को समझकर पक्का काइयां बन गया। भूतपूर्व सौदागर की आकांक्षाएं व स्वभाव पहले जैसे ही बने रहे, लेकिन उसकी मानसिकता, उसके स्वभाव की विशेषताएँ एक प्रकार से घिस-घिसकर पैनी हो उठीं जीवन ने उनको पैना कर दिया, वैसे ही जैसे पेंसिल से अच्छा व स्पष्ट लिखने के लिए उसकी नोक पैनी की जाती है। अलीकुल तेजनजर था—और ज्यादा तेजनजर हो गया, चुप्पा था—और ज्यादा चुप्पा हो गया, किसी का विश्वास प्राप्त करना उसे आता था, पर वह अपनी इस कला में "पूर्णतया दक्ष" हो गया। उसके वास्तविक लक्ष्यों व अभिप्रायों को जान पाना कठिनतर होता गया।

किन्तु दुनियादारी के अनुभवों के साथ-साथ अलीकुल का बुढ़ापा भी आ गया। दाढ़ी का रंग कुछ धूसर-सा होकर वह छीदी हो गयी, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयीं, कमर झुक गयी जिससे अलीकुल और

छोटे कद का लगने लगा। केवल उसकी चाल वैसी ही जीवत और तेज रह गयी जैसी जवानी मे थी, और हाथो की ताकत शायद कुछ बढ ही गयी।

अपने एक पुनर्वास के दौरान अलीकुल अपनी पत्नी को खो बैठा वह रात मे, गाडी मे, रास्ते पर छाये पुष्प-सदृश नीले तारो से भरे आकाश को उदासी से ताकती मर गयी।

अलीकुल के निकट सम्बन्धियो मे से केवल एक बेटी ही बच रही। अपने दिल की सारी तपिश, जो उसमे बच रही थी, उसने किशोरी नज़ाकतखा पर लुटा दी।

नज़ाकतखा मे बचपन से ही रूपसी होने के लक्षण दिखाई देने लगे थे, और जब वह चौदह बरस की हुई, उस पर सबसे अच्छे, अपनी कीमत जाननेवाले लडको ने नज़रे गडानी शुरू कर दी। यही नही उससे कुछ बडी उम्र के मर्द भी मर्यादा का उल्लघन कर उसकी कोमल त्वचा व लाल-लाल गालोवाले चेहरे, मुनहली चमक और लम्बी, कोमल बरौनियोवाली आखो को देर तक ताकते रहते थे। वह ऊचे कद की और सुगठित थी और किसी का भी सिर फेर सकती थी।

अलीकुल नज़ाकतखा को बेहद प्यार करता था। किन्तु उसके दिल मे परिपक्व हुई भावनाए कुछ विकृत थी, और बेटी के प्रति अलीकुल के प्रेम से उसे न कोई लाभ प्राप्त हुआ, न ही कोई खुशी।

खुद अलीकुल को जीवन-वृक्ष के किसी अत्यन्त मीठे फल का स्वाद चखने का किसी प्रकार अवसर नही मिल पाया था, किन्तु वह अपनी पुत्री के लिए उन्हे तोडने के सपने देखता रहता था। वह ऐश उडाये, खुशहाली मे जिये, बाग के गुलाब-सी खिली रही, उसे देख-देखकर लोग जले, अचरज करते रहे! और उसके बाद उसके बाद वह उसकी किसी ठोस और प्रभावशाली व्यक्ति से शादी करवा देगा। फिर नज़ाकतखा व उसका पति अलीकुल के बुढापे मे उसके सुख-चैन से जीने का प्रबन्ध करेगे।

आये दिन के पुनर्वासो के कारण नज़ाकतखा की पढाई अनियमित रही और वह बडी मुश्किल से सातवी कक्षा तक पहुँच पायी। पिता उसे काम से बचाता रहा। यह मानने के कारण कि युवती के रूप

का मूल्य ज्ञान बुद्धि व कार्यकुशलता से अधिक होता है, अलीकुल अपनी रूपसी पुत्री को गुम की मानी की तरह सम्भाल कर बैठा रहा। यदि उसके लिए सम्भव होता, तो वह उसकी सुन्दरता को भी आंखों दम तक अपनी उस सन्दूक में बंद करके रखता जिसमें वह अपना धन व मूल्यवान वस्तुएं रखता था।

पुत्री के लिए मिठाइयां खरीदते समय उसे बालियां, पहुंचियां व कण्ठी से सजाते समय अलीकुल मन-ही-मन हिसाब लगाता रहता था कि उनसे उसके रूप की कीमत और कितनी बढ़ गयी। नज़ाकतखा को निहारते समय वह सन्तोष के साथ सोचा करता था योग्य से योग्य वर ऐसी लड़की को खुशी से ब्याहकर अपने घर ले जाने को तैयार हो जायेगा!

'अपने भविष्य का खयाल रखो बेटी, ' वह स्नेहपूर्वक नज़ाकतखा को उपदेश देता। और तुम्हारा भविष्य – अच्छा पति ही है किसी बड़े ओहदेदार से शादी की, तो जैसे दिन चाहे, वैसे जियोगी। तुम्हारा भरा-पूरा घर होगा, महंगे से महंगे कपड़े और जेवर होंगे, जो किसी और के पास नहीं होते! अब्बा का कहा मानो, बिटिया, वह तुम्हारा भला चाहता है

नज़ाकतखा बिगड़ैल, चंचल और मनमौजी लड़की की तरह बड़ी होती रही। उसका जीने का ढंग उबाऊ था। उसकी सहेलियां नहीं के बराबर थी पिता उसे हर ऐरी-गैरी से मेल-जोल बढ़ाने की इजाज़त नहीं देता था। पुस्तके वह पढ़ती नहीं थी रूपसी बाला को पुस्तकों की क्या जरूरत है? नज़ाकतखा दिन भर पोशाकें तैयार करती रहती घरेलू काम-काज में पिता का हाथ बंटाती और शाम को अलीकुल के मित्रों का दुतार-वादन व गीतों से मनोरंजन करती। मेहमानों की आंखें उसके प्यारे-प्यारे चेहरे व सुगठित शरीर से हट ही नहीं पाती थी और नज़ाकतखा उन्हें अकसर नखरीली और शैरखाही नज़रों से जवाब दिया करती थी। मर्दों के ध्यान देने से उसके अहंकार को प्रोत्साहन मिलने लगा, और उबाऊ, खोखले एकरस जीवन से उसके मूर्ख व तुच्छ हृदय में अस्पष्ट दुराशाएं उत्पन्न होने लगी

इसका परिणाम यह हुआ कि नज़ाकतखा ने पिता की योजनाओं और सपनों पर विनाशकारी प्रहार कर दिया। पुत्री की सरलता से

पूर्ण विश्वास के कारण उसने ध्यान ही नहीं दिया कि कैसे उसमें और उसके मेहमानों में से एक में, जो सामूहिक फार्म के क्लब का सचिव था और जिसे प्रेम-गाथाओं के सुन्दर से सुन्दर शब्द कण्ठस्थ थे, घनिष्ठता बढ़ गयी। अलीकुल को बेटी की बदनामी का पता तभी चला जब उसने उसे अनचाहे एक दुहती का नाना बना दिया। उस समय तक नजाकतसा का प्रेमी दूर जा चुका था उसे सेना में बुला लिया गया था और वह अलीकुल से उसकी पुत्री के साथ विवाह के लिए पिता का आशीर्वाद पाने की बात भूलकर गांव से चला गया था

अलीकुल मातमी चेहरा लिये घूमता रहा, पर उसने बेटी को कोई सजा नहीं दी उसे झिड़कने का मौका हाथ से निकल चुका था। इसके अलावा जब अलीकुल की योजनाओं पर पानी फिर रहा था, तो वह केवल एक ही बात के बारे में सोच रहा था ढहे हुए मकान की जगह नया मकान कैसे खड़ा किया जाये।

और फिर दुर्भाग्य ने अलीकुल का साथ दिया। बालिका कुछ ही दिन जिन्दा रहकर बीमार पड़ गयी और मर गयी। अब नजाकतसा की बदनामी का कलंक छिपाना कुछ आसान हो गया। पिता और पुत्री कोई बहाना बनाकर एक दूरस्थ गांव में जा बसे, और उनकी असलियत की किसी को भनक भी नहीं पड़ी।

मर्द फिर मीठे पर मक्खी की तरह नजाकतसा पर टूटे पड़ने लगे। अलीकुल दिल में लाभकारी दामाद ढूंढ़ने की लालसा सजोये आजकल मिलनेवाले अवसर हाथ से नहीं जाने दे रहा था। वह ऊंची लोगों की कृपादृष्टि प्राप्त करने के लिए पुत्री की सुन्दरता को चारे की तरह इस्तेमाल कर रहा था। काफी सोच-विचारकर उसने नजाकतसा को काम पर लगाने का फैसला किया आस-पास के लोग मेहनत से जी न चुरानेवाली उज्बेकी युवतियों का बहुत आदर और उन पर विश्वास करते हैं। श्रम की सुकृतियों का मूल्य बढ़ने लगा

नजाकतसा पिता के सामने स्वयं को दोषी अनुभव करती हुई उसकी हर बात मानती थी और उसे यह भारी नहीं लगता था। अलीकुल खुद नीचे 'मोटे' काम से नफरत करने के कारण बेटी के लिए कुछ 'बौद्धिक" काम ढूंढता रहा पुस्तकालय में, सहकारी समिति में, सामूहिक फार्म के कार्यालय में मिलनसार नजाकतसा

हो चुका था। केवल अपने इलाके में सदा के लिए बसना, हर कीमत पर सम्मान, शान्ति और सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त करना ही बाकी रह गया था, जिनके सपने वह अपनी जवानी से ही देखता आया था।

और अलीकुल अलतीनसाय लौट आया।

चौदह

फिर अलतीनसाय में

अलतीनसाय में लोग अलीकुल की काली करतूतों के बारे में न जाने कब से भूल चुके थे और उन्हें अपने हमवतन के पुनरागमन पर प्रसन्नता भी हुई। शुरू में वह अपने एक सम्बन्धी के यहां रहा। अलतीनसायवासियों में से सबसे उबाऊ लोगों ने अलीकुल से उसकी वहां अनुपस्थिति के वर्षों में उसकी जिन्दगी के बारे में उगलवाने की पूरी कोशिश की, पर वह उनके सारे प्रश्नों का अन्यमनस्कता से जवाब देता रहा और केवल अर्थपूर्ण भाषा में ज़ोर देकर कहता रहा कि वह उस दौरान और कहीं नहीं, मिरज़ाचूल में कुशल कपास-उत्पादकों व अपने पेशे के सच्चे विशेषज्ञों के लिए सुप्रसिद्ध सामूहिक फार्मों में रहता और काम करता रहा था। वह यानी अलीकुल उनसे काफी कुछ सीख चुका है और अनेक बार बोनस भी पा चुका है

बुद्धिमान ग्रामवासियों ने शीघ्र ही उससे "मिरज़ाचूलवासी" का पीछा छोड़ दिया और उसके कामों के सच्चे सबूतों की प्रतीक्षा करने लगे। उन्हें ज़्यादा देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा

कुछ दिन आराम करने के बाद अलीकुल ग्राम सोवियत में युवा "अधिकारी" आयतीज़ से मिलने, उसे शुभ विवाह की बधाई देने और वृद्ध उमुरज़ाक-अता की सेहत के बारे में पूछने गया। शिष्टाचार के नाते यह उसका कर्तव्य था और उसे निभाना लाभदायक भी था और सुखदायक भी

अलीकुल सम्भाषिणी के शब्दो पर विचार करता हुआ कुछ क्षण मौन रहा और फिर उस पर निगाहे टिकाये धीरे-धीरे बोला

"तुम अपने बाप की लायक बेटी हो, आयकीज-जान। उन्होने अपने जमाने मे मुझे सही रास्ते पर चलाने की कोशिश की थी, पर मैने उनकी नही सुनी, और देखो अक्ल आने तक मुझे कितने दुख, कितनी मुसीबने भोगनी पडी है!" अलीकुल की आखे डबडबा आयी, उसने उन्हे उगलियो से पोछ और शान्त होकर पूछा "मोहतरम उमूरज़ाक-अता की सेहत कैसी है? कितना अरसा हो गया उनसे मिले हुए! "

अलीकुल की बातो से द्रवित होकर आयकीज उसके साथ भलमनसाहत और प्यार से बातचीत करती रही उसके इस प्रश्न के उत्तर मे कि क्या वह सामूहिक फार्म मे काम करना चाहता है, अतिथि ने स्वीकारात्मक उत्तर दिया। आयकीज़ खुश हो गयी

"बहुत अच्छी बात है, अलीकुल-असाकी! हमे अनुभवी कपास-उत्पादको की ज़रूरत है। मै कादीरोव से बात करूँगी, आप इस बीच प्रार्थनापत्र लिख दीजिये।"

अलीकुल ने विदा लेते हुए बातो ही बातो मे पूछ लिया

"आजकल क्या हाल है हमारे अध्यक्ष के? मुझे याद है, पहले वह बडा जुझारू नौजवान था! मीटिगो मे वह मुझे कई बार डाट चुका है "

आयकीज़ ने अनिश्चितता से सिर हिलाया

"वक्त के साथ-साथ लोग बदलते रहते हैं आपने खुद ही कहा कि तब से न जाने दुनिया कितनी बदल चुकी है। कादीरोव कुछ घमण्डी हो गया है, उस पर चरबी छा गयी है। लेकिन आप फिक्र मत कीजिये, अलीकुल-असाकी, आपको वह कुछ बुरा नही कहेगा। उसके सामूहिक फार्म मे कपास की खेती होती है कुशल कामगार अमोल होते है। इतना तो कादीरोव समझता है "

कादीरोव के साथ बातचीत के दौरान, जिसके पास आयकीज ने अलीकुल को भेजा था, वह यह कहना नही भूला कि उसने यदि अपने सामूहिक फार्म की सफलताओ के बारे मे न सुना होता, तो उसमे वह शायद ही लौटकर आया होता। और अगर अफवाहो पर

विश्वास किया जाये, तो कादीरोव सरीखे अध्यक्ष के साथ मिलकर बड़े-बड़े काम किये जा सकते हैं, और वह यानी अलीकुल ही-ही सभी लोगों की तरह बुरे ख्यालों से अछूता नहीं है, इज्जत और नाम पाने के खिलाफ नहीं है।

कादीरोव ने सन्तुष्ट होकर खीसें निपोडीं। अलीकुल को एक टोली में मीराब बना दिया गया।

उसका दर-दर की ठोकरें खाने का अनुभव और मिर्जाचूल में बितायी जिन्दगी उसके लिए व्यर्थ नहीं रही थी वह बहुत कुछ देख चुका था, मिर्जाचूलवासियों से काफ़ी कुछ सीख चुका था। सिंचाई का समय आने पर अलीकुल ने अपने ग्रामवासियों को आश्चर्यचकित और खुश कर दिया। वह सिंचाई "प्लावन पद्धति" से नहीं, जैसा कि अभी तक 'किजिल-युलदुज़' में होता आया था, बल्कि नये तरीक़े से, हलरेखाओं में सरकण्डों की नलियों से पानी छोड़कर करता था। शीघ्र ही अलीकुल के दूसरे टोलियों के टोली-नायक व मीराब शिष्य बन गये और "प्रवर्तक" सहर्ष उन्हें अपना अनुभव बाटने लगा।

कादीरोव के साथ अलीकुल अदब से पेश आता था, और अवसर मिलने पर उसकी अतीत व भविष्य की सेवाओं की समुचित प्रशंसा करने से नहीं चूकता था। अनुभवी हृदयज्ञ और तरह-तरह के लोगों से व्यवहार में पटु व्यक्ति के लिए आत्माभिमानी अध्यक्ष की कमज़ोर रग को पकड़ना बायें हाथ का खेल था। फिर भी वह "प्लावन पद्धति" को बुद्धिमत्तापूर्वक अस्वीकार कर कादीरोव की महत्वाकांक्षा की उपजाऊ जमीन में चापलूसी भी वैसे ही थोड़ा-थोड़ा करके छोड़ता था, जैसे सिंचाई करते समय पानी छोड़ता था। इस प्रकार उसने केवल कादीरोव से कृपालुता ही नहीं, सम्मान भी प्राप्त कर लिया।

अलीकुल दोस्त नहीं बनाता था। पर अपनी पैनी और सधी हुई नजर से उसने, शिकार को दबोचते बाज़ की तरह, अलतीनसाय-वासियों में डेयरी के भोंडे, आलसी, ढोल जैसे मोटे प्रबन्धक गोबी पहलवान, अपने पेट को पूजनेवाले पिछड़नेवाली टोली के नायक मुल्ला सुलैमान और कुछ अन्य खाने-पीने व ऐश लूटने के शौकीनों को खोज लिया था। वह समय-समय पर उन्हें अपने यहाँ दोपहर या शाम के खाने पर बुलाता रहता था। अलीकुल खातिरदारी

करने मे कजूसी नही करता था वह जानता था कि यदि एक रूबल को सही ढग से खर्च किया जाये, तो उसके दो रूबल बन सकते है।

बाकी अलतीनसायवासियो के साथ अलीकुल समान रूप से सौजन्यता के साथ-साथ सतर्कता से पेश आता था। उसे बोलने से ज्यादा सुनना पसन्द था। सम्भाषी की बात सुनते समय वह ध्यान मे डूबा होठ हिलाया करता था या प्रशसापूर्ण मुद्रा मे सिर हिलाकर सहमति व्यक्त कर दिया करता था। यदि छिपाने की आवश्यकता न हुई, तो अपने व्यक्तिगत विचार वह बातचीत के अन्त मे सक्षेप मे, प्रभावशाली ढग से, गरिमा के साथ व्यक्त करता था। अलीकुल मीटिगो मे भाषण नही देता था, तटस्थ रहता था। यदि उसके सामने कोई बहस छिड जाती, तो वह मौन साधे रहता, कोई न कोई उचित बहाना बनाकर वहा से चले जाने की कोशिश करता। गाव मे उसका नाम "चुप्पा अलीकुल" रख दिया गया था, पर ये शब्द सम्मान के साथ ही कहे जाते थे

श्रेष्ठ मीराब के यश ने बढिया बुलडोज़र की तरह अलीकुल का आगे का रास्ता साफ और समतल कर दिया। उसे सामूहिक फार्म का मीराब बनाये जाने पर सबने इसे यथापेक्षित माना। अलतीन-सायवासियो को लगता था कि अलीकुल पहले की तुलना मे बिलकुल दूसरा व्यक्ति बनकर वापस आया है। काम वह दूसरो से बुरा नही करता था। बहुत से तो कपास-उत्पादक के काम मे उससे उन्नीस ही पडते थे। रहता भी वह वैसे ही था, जैसे सब। वैसे उसका अतीत याद रखनेवाले लोग बदगुमानी से सिर हिलाया करते थे "यह तो चक्की के दो पाटो मे से भी सही-सलामत निकल आये!" किन्तु बाकी लोग, बहुमत उन्ही का था, यही मानते थे कि नया मीराब ईमानदार, सीधा-सादा किसान है "यह तो बिलकुल गऊ है!"

कादीरोव आये दिन अलीकुल के यहा जाया करता था सलाह करने, डीग हाकने, अपने दुश्मनो की शिकायत करने नज़ाकतखा के गीत सुनने, जिस पर वह वैसे ही नज़रे गडाये रहता था, जैसे दूध पर बिल्ली। एक बार अध्यक्ष अपने मीराब के पास सुलतानोव को लेकर आया। अलीकुल प्यारे मेहमानो की ठकुरसुहाती करने के लिए कोई कसर छोडने को तैयार नही था। उसने गोश्त के सूर

[illegible] [illegible] [illegible] अंगूर, मेवा और शरबत थे, जिनसे हरे-
भरे [illegible] मालूम पड़ते थे जो [illegible] रही थी [illegible] [illegible] थीं।
[illegible] ने कनखियों द्वारा ही कभी सुल्तानोव की ओर तो कभी
कादीरोव की ओर देखते हुए [illegible] अपने मेज [illegible] [illegible] शुरू।
सुल्तानोव भोजन से भी सन्तुष्ट हुआ, शराब से भी और मुस्कानों
से भी। उसके दूर से [illegible] [illegible] [illegible] की निगाहियों की तरह
[illegible] रहे थे। अनीकुल को उस प्रदान किये गये आनन्द के लिए
धन्यवाद देते हुए सुल्तानोव ने बड़ी उदारता से अपने [illegible]
की कविता के रूप में मनोहर एक पुष्प भाषण ही दे डाला।
सुल्तानोव ने खाने के बाद, जब सारा का ध्यान [illegible] की
[illegible] में ले लिया, कपास की फसल देखने की इच्छा व्यक्त की।
गृहस्वामी और अतिथि तीनों बढ़िया नस्ल के तेज घोड़ों पर सवार
होकर [illegible] [illegible] से कपास के खेतों की ओर रवाना हो गये। एक खेत
के पास, जिसमें गुलबाहार की टोली काम कर रही थी, सुल्तानोव
ने असन्तुष्ट मुद्रा में भौंहें सिकोड़कर घोड़ा रोक दिया। खेत के एक
छोर से दूसरे छोर तक हलरेखाएं खिंची हुई थीं, पर मीराब ने शायद
अपने अनुभव की कमी के कारण खेत में पानी भरने का फैसला कर
लिया था। सुल्तानोव की तिरछी नजर देखते ही अनीकुल जल्दी
से घोड़े से उतर, बूट पैंट घुटने-घुटने पानी में घुस गया और उसने
नाली बंद कर दी। इसके बाद खनिज खाद का एक खाली पैकेट ढूंढ़कर
मीराब ने उससे नलकी-सी बनाई, उसके तंग मुंह को खेत को नाली
से अलग करनेवाले मिट्टी की जलावरोध में ठूंसकर पानी को सावधानी-
पूर्वक समान रूप से हलरेखाओं में छोड़ने लगा।

सुल्तानोव को अनीकुल की चुस्ती बहुत अच्छी लगी। रकाबों
में थोड़ा खड़ा हो हाथ को अभिनन्दन की मुद्रा में उठाकर उसने
आवाज दी:

"शाबाश, मीराब!" और कादीरोव की ओर पलटकर बोला:
"ऐसे लोगों की कीमत समझनी चाहिए, अध्यक्ष! इनकी बेधड़क
नेतृत्वकारी पदों पर तरक्की करनी चाहिए। तुम्हारे सामूहिक फार्म
ने कपास में हाथ हाल ही में डाला है, इसलिए कपास-उत्पादक विशेषज्ञों
को संभालकर रखो। हाथ और पैर पकड़कर रखो! मेरे विचार में

यह मीराब उर्वरता समिति के अध्यक्ष के पद के लिए सबसे योग्य उम्मीदवार है।"

इस बीच अलीकुल मीराब को आवश्यक निर्देश दे चुका था। नाली में हाथ धोकर, उन्हें चोगे के पल्ले से पोंछकर उसने जूते पहने और अपने हमसफ़रों के पास लौट आया।

"शाबाश, मीराब!" सुलतानोव ने फिर उसकी प्रशंसा की।

अलीकुल ने चिन्तापूर्ण मुद्रा बनाकर विनम्र स्वर में कहा

"कामरेड सुलतानोव, मैंने तो सिर्फ़ लापरवाह मीराब की गलती ठीक की है क्योंकि सामूहिक फ़ार्म की रोटी ईमानदारी से मेहनत करके ही कमानी चाहिए! "

खाने की मेज पर सुलतानोव के साथ हुई कुछ मुलाकातों के बाद अलीकुल उर्वरता समिति का अध्यक्ष बन गया। अब वह खेतों में विरले ही जाया करता था, लेकिन अलतीनसायवासियों को उसके डींग-भरे उपदेश अक्सर सुनने पड़ने लगे, जो प्राय इन शब्दों से शुरू होते थे "हमारे यहां मिरज़ाचूल में तो " अर्थ इसका यह होने लगा कि स्थानीय सामूहिक किसान मिरज़ाचूलवासियों से बहुत पीछे हैं और केवल उर्वरता समिति का अध्यक्ष ही उन्हें सही ढंग से मिरज़ाचूली पद्धति" से कपास की खेती करना सिखा सकता है। फिर भी अलीकुल लोगों के साथ सदा नम्र और मिलनसार रहा और ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी सामूहिक कर्मी से मिलने पर वह मनोहारी शिष्टाचार के साथ उसका हाथ पकड़कर उत्साहवर्धक मैत्रीपूर्ण ढंग से न मुस्कराया हो।

अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की सबरों ने अलीकुल को बौखला कर दिया व्यर्थ की चिन्ताओं और दौड़-धूप की उसे जरूरत सबसे कम थी। लेकिन सामूहिक फ़ार्म की सभा में जिसमें अछूती भूमि पर हमला बोलने की योजना पर विचार किया गया वह मौन साधे रहा और उसने केवल ब्यूरो की बैठक के बाद ही कादीरोव को तुगाबायेव व आयतीज के बारे में अपने विचारों से अवगत कराया जो कादीरोव की सेवाओं की कोई परवाह किए बिना स्पष्ट रूप से उसकी जड़ काटने की कोशिश कर रहे थे

अलीकुल समझता था कि उसकी मुसाहबी सुलतानोव और कादी

11 47

रोज की मातहती पर निर्भर करती है और दुर्भाग्य से अलीकुल व उसके मित्रों को [illegible] करने की ताकत बढ़ रहा था। उसने ईमानदारी और [illegible] की चट्टानों की तरह उसके मन व [illegible] जीवन के मार्ग की बाधाएं बने हुए थे।

अलीकुल की सहायता से [illegible] नवाबखाना को सामूहिक फार्म के कार्यालय में एक अच्छे स्थान पर नियुक्त करवाने में सफल हो गया। उसने मुल्लाबाबा को [illegible] दिया था, और उसके हाथ में एक और तुरुप का पत्ता आ गया था। और जब लोगों पर आंधी चली, तो अलीकुल का दिल [illegible] खुशी से बाग-बाग हो उठा।

फिर भी वह [illegible] मुठभेड़ से कसमसाता रहा। उसके पुराने यार [illegible] ने जब उसे बताया कि वह [illegible] से बदला लेना चाहता है तो अलीकुल ने आश्चर्यपूर्वक सिर हिलाया

"अरे, अरे, बुरी बात सोची है तुमने, प्यारे। सिर्फ बेवकूफ ही बदले का रास्ता अपनाते हैं।" फिर धीरे से बोला, "एक बहुत अच्छी कहावत है, प्यारे, दुश्मन को दुशाले में लपेटकर मारना चाहिए।"

पन्द्रह

नहर के किनारे

जुराबायेव व सामूहिक किसानों के साथ मुठभेड़ के बाद क़ादीरोव इसी "सान्त्वनादाता" के पास गया था। कपास के खेतों का चक्कर काटकर वह नहर के किनारे-किनारे उस स्थान की ओर चल दिया, जहां अब अलीकुल कभी-कभी अपने दोस्तों के साथ हर खाने को लम्बी और शानदार दावत में बदलकर खाना खाया करता था। क़ादीरोव अक्सर ऐसी बेफिक्र मण्डली में शामिल हो जाया करता था और उसे अपने दोस्तों के मेज पर दिलचस्प बातचीत का आनन्द लेते हुए नेक [illegible] के बाद तन व मन को इस पैमाने पर आराम देने में कुछ भी [illegible] नजर नहीं आता था।

धूप खौलते पानी की तरह कधो और पीठ को जला रही थी। किनारे पर फैली घास व फूलो मे नशीली, उमसदार सुगन्ध आ रही थी। घोडे की भीगी अयाल अस्त-व्यस्त हो रही थी। कादीरोव का चेहरा पसीने से तर-बतर हो रहा था, पर उसे गरमी की जैसे परवाह ही नही थी। उसके तिचने माथे पर कई बल पड गये थे, दिमाग मे कष्टकर विषादमय विचार चक्की के भारी पाटो की तरह घूम रहे थे

कादीरोव को इतने कठिन प्रश्नो पर कभी इस तरह सिर खपाना नही पडा था। दुराग्रही विचारो के कारण सिर फटा जा रहा था, जब कि दिमाग में हठ, क्रोध व विकलता का भवर उफान खा रहा था।

जुराबायेव के साथ हुई बहस मे कादीरोव उद्विग्न हो उठा था। जुराबायेव ने उसे सबके सामने बच्चे की तरह फटकार दिया, और वह अध्यक्ष, केवल चुपचाप खडा आखे झपकाता रह गया। वह सबके खिलाफ अकेला रह गया। बूढो तक ने उसका पक्ष नही लिया, जब कि उसकी सारी ज़िन्दगी उनकी आखो के आगे गुज़री है। क्या वे भूल गये कि उसने कैसे कुलको को बेदखल किया था, कैसे एक-एक ईंट चुनकर अलतीनसाय का सामूहिक फार्म बनाया था, कैसे खुद सामूहिक किसानों के घरो मे समृद्धि और खुशी लाया था? जुराबायेव और आयकीज़ नये जीवन के लिए आह्वान कर रहे है। लेकिन इस समय क्या अलतीनसायवासियों की ज़िन्दगी पहले से बुरी है? पहले उनके खेतो मे रोगिल गेहूँ ही उगा करता था, जब कि आज कपास खिल रही है, और यह सम्पदा सामूहिक फार्म के लिए लम्बे अरसे के लिए काफी रहेगी।

सारा काम ढग से चल रहा था सामूहिक फार्म की खेती शनै-शनै अर्थोवरता से जमती जा रही थी, कादीरोव पहले गेहूँ पैदा करना सीखा, फिर–कपास, सादगी से जी रहा था, व्यर्थ मे दिमाग नही लडाता था, अपने अनुभव और ज्ञान मे वृद्धि करते हुए रोजाना एक ही तरह का काम किया करता था, सारे सामूहिक किसानों के साथ मिल-जुलकर रहता था, और खुदा का शुक्र है, किसी ने उसे किसी का बुरा करते नही देखा लेकिन नही, "जोशीले" लोग आ पहुँचे गुल-गपाडा मचाने लगे। वह अभी अलतीनसाय भूखण्ड मे जबरदस्ती

11*

सिंचाई गयी परती जमीन में अपनी स्थिति का निर्धारण करने भी न पाया, उसके अनुसार अपने को ढाल भी न पाया, उसका अर्थ होने भी न पाया कि उसके मत्थे अछूती धरती मढ़ने लग गये। अछूती धरती! निस्सीम स्तेपी में जान फूंकना मजाक थोड़े ही होता है। यह तो उफनती नदी में छलांग लगा लेना ही है, पार कर भी पायेगा या नहीं – कुछ पता नहीं। तिस पर अगर उन लोगों ने अछूती धरती पर विजय पा भी ली, तो प्रशंसा आयकोज़ और जुराबायेव की होगी, और कादीरोव को कोई नहीं पूछेगा! यश उन्हें मिलेगा और कादीरोव को – ठेंगा। उसको कोई भी तो नहीं समझना चाहता! उसमे किसी ने भी सहानुभूति नहीं दिखाई! लेकिन उसके नाम धरने में सब उस्ताद हैं "कादीरोव सामूहिक फार्म की प्रगति में रोड़े अटका रहा है। कादीरोव के विचारों को फफूंद लग गयी है। कादीरोव सामूहिक फार्म से ज्यादा अपने को प्यार करता है!" केवल जानी दुश्मन ही गर्मी को जाड़ा और साफ आसमान को बादलों से ढका बताकर उस पर छींटे उछाल सकते है। कभी ऐसा होता भी है कि जिस आदमी ने सामूहिक फार्म की स्थापना की हो, वही उसे पीछे घसीटे? नहीं, वह ऐसी झिड़कियों के लायक नहीं था! कादीरोव अपने सामूहिक फार्म को प्यार करता है! क्योंकि वह बिना सामूहिक फार्म के अपने अस्तित्व की कल्पना भी नहीं करता, यह उसका सामूहिक फार्म है, उसने सारी जिन्दगी कष्ट भोगकर यहाँ स्वामी होने का सम्माननीय अधिकार प्राप्त किया है और वह किसी को भी – हा, हा, कामरेड जुराबायेव! – किसी को भी इस अधिकार को पाँव तले नहीं रौंदने देगा।

घोड़ा आराम से नहर के किनारे-किनारे चल रहा था। धूप से मुरझाई घास उसकी टापों तले क्षीण स्वर में सरसरा रही थी एकाएक घोड़ा ठोकर खा गया अगले पैरों के बल गिर पड़ा, सवार के हाथ से लगाम छूट गयी और वह स्वयं कदमबाज के सिर के ऊपर से उछलकर धम्म से गरम जमीन पर जा गिरा। आजादी महसूस करते ही घोड़ा तत्क्षण पानी की ओर लपका और प्यास से तड़पते होंठ उसमें डाल जल्दी-जल्दी पानी पीने लगा।

अचानक गिरने से हक्का-बक्का हुआ कादीरोव काफी देर तक

होश में न आ सका, सिर किंचित् पीछे किये, हथेलियां जमीन पर जमाये निरुद्देश्य सामने की ओर ताकता बैठा रहा। अन्त में वह कराहता हुआ उठ खड़ा हुआ, लुढ़की हुई टोपी उठाकर उसमें फौजी कमीज व बूटों की धूल झाड़ी, आंखों तक खींचकर सिर पर पहनी और ऊंची घास में बड़ी मुश्किल से मिले चाबुक से बूटों पर फटकारता हुआ भयानक मुद्रा में घोड़े की ओर बढ़ा। घोड़े को स्वामी के अपने पास पहुंचने का पता भी नहीं चला। कादीरोव ने पानी में गिरी लगाम पकड़ी और झल्लाकर अपनी ओर खींची और घोड़े पर अपनी पूरी ताकत से चाबुक मारा। घोड़ा एक ओर भागने लगा, लेकिन मालिक ने पूरे ज़ोर से लगाम खींच उसकी पसीने से तर पीठ पर फिर चाबुक फटकारा। कादीरोव केवल तुरन्त शान्त हुए निरीह पशु पर अपने प्रभुत्व से पूर्णतया सन्तुष्ट होकर, उस पर अपना सारा गुस्सा उतारकर काठी पर बड़ी मुश्किल से चढ़ा और उसे दुलकी चाल से दौड़ाता आगे चल पड़ा। घुड़सवारी से अध्यक्ष का चित्त शान्त हो गया। उसने जेब से नसवार की डिबिया निकाली, उसे काठी की नोक पर मारकर खोला और जबान के नीचे थोड़ा-सा नसवार रखकर मन-ही-मन अपने मित्रों और शत्रुओं से बातचीत करने लगा

वाह रे, बेवकूफ़ा, तूने भी अध्यक्ष पर छींटाकशी की लगता है तेरी याददाश्त भी तुझे धोखा दे गयी है। तू जब नंगे पैर अलतीनसाय की धूलभरी गलियों में भागा करता था, कादीरोव तभी सामूहिक फार्म के अध्यक्ष के पद पर आसीन था। जब तेरी मां, भिखारिन विधवा को, जो रोटी के एक टुकड़े के लिए ज़मींदारों के दरवाज़े खटखटाया करती थी, हालत खराब हुई, तो कादीरोव ने सबसे पहले उसकी ओर मदद का हाथ बढ़ाया था और उसे खींचकर सामूहिक फार्म में ले आया था। और तुझे खुद को टोली-नायक किसने बनवाया? तू अपने अध्यक्ष की सारी नेकी का बदला नमकहरामी से चुका रहा है, उसे तबाह करने के इच्छुक लोगों की हां में हां मिला रहा है।

अकेला गफ़ूर आज कादीरोव की मदद को आया। लेकिन उससे गफ़ूर से क्या फायदा? क्योंकि वह तो हाल ही में जेल से छूटकर आया है, जहां वह चोरी के इलज़ाम में कैद था काश अध्यक्ष के पक्ष में किसी और ने आवाज उठाई होती लेकिन सारे के सारे

[illegible] उसे [illegible]
कि [illegible] और [illegible]
[illegible] मुख पर [illegible],
[illegible] कीजिये। नहीं, कभी नहीं, [illegible]
[illegible] फिर नहीं [illegible] फिर अभी [illegible]
[illegible], अभी तक तो मुकदमा [illegible] जारी रहा है, [illegible]

थोड़ा आगे [illegible] जा रहा था, कादीरोव गाँव में हुआ [illegible] के [illegible] पर [illegible] जा रहा था। अचानक उन्हें [illegible] इस [illegible] के किनारे पर लम्बी-चौड़ी सराय की ओसारी में अपने दोस्त दिखाई दे गये। वे शाम का खाने के लिए बैठे ही थे। वहाँ अलीहान था, रोज़ी-पहलवान भी, अलीहान की खूबसूरत बेटी नजाकतखा थी जो अध्यक्ष को अपने में पसन्द आ चुकी थी और मटमैले चेहरे और काली दाढ़ीवाला मुल्ला-गुर्सैमान थी। इन्हीं हाल सुनकर सबने पलटकर देखा और अध्यक्ष का अभिवादन किया। उठ खड़े हुए मुल्ला-गुर्सैमान ने घोड़े से उतरने में उनकी मदद की और कादीरोव पीठ में पीछे से छुरा न भोंकनेवाले, उसे अभिवादन बातों से न उकतानेवाले अपने सच्चे दोस्तों के बीच पहुँच गया। उसे आराम मिला और जानी-पहचानी शान्ति महसूस हुई। वह आराम से जमीन पर बिछाई हुई गुदड़ी पर बैठ गया, जिस पर भूरा करारी नान, ताज़ा खीरे, टमाटर, लाल व काली मिर्चें, हरा प्याज़, गहरे लाल के बने अनार और जीरे की सुगंध छोड़ता चर्बीदार भेड़ का ठण्डा मास (रोज़ी-पहलवान फार्म से लगभग पूरी लोथ ही उठा लाया था!) सजाये हुए थे।

"निस्सदेह लम्बी उम्र पाओगे, अध्यक्ष!" रोज़ी-पहलवान ने जिन्दादिली से टिप्पणी की। "ठीक खाने के वक्त पर पहुँचे हो। हमने अभी खाना शुरू नहीं किया है। बातचीत और खूबसूरत नजाकतखा के गानों से दिल बहला रहे थे।"

कादीरोव की दायीं ओर बैठी नजाकतखा ने रोज़ी-पहलवान के कथन की पुष्टि करते हुए अपनी नाजुक उंगलियों से दुतार के तार छेड़ दिये, जिसे वह अपने साथ लायी थी, और नटखट अदा से अध्यक्ष की ओर देखा।

"अपनी बेटियां ऐसे दूल्हों को ब्याहनेवाली माओं को अपने को दुनिया में सबसे ज्यादा खुशनसीब महसूस करना चाहिए!"

"अरे, अरे, बस भी कीजिये," कादीरोव जबरदस्ती मुस्कराकर कह उठा। "मामों की खुशनसीबी से पेट नहीं भरता!"

"सुभान-अल्लाह!" अलीकुल ने अपना सुर मिलाया और सीने पर हाथ रखकर विनोदपूर्ण औपचारिकता के साथ कहने लगा "हम कसम खाकर कहते हैं, अध्यक्ष, कि हमारे पेट में चूहे दौड़ रहे हैं। हम सब हमला बोलने के लिए बेताब हैं! रोजी-पहलवान, जरा गोश्त इधर बढ़ाना।"

अलीकुल चमड़े की काली म्यान में से चाकू निकालकर बड़ी कुशलता से चर्बीदार, खुशबूदार भेड़ के मांस के छोटे-छोटे टुकड़े काटने लगा। मुल्ला-सुलैमान ने सब्जियां सभाल लीं। उसके चाकू तले से बड़ी-सी रकाबी में टमाटरों, खीरों और प्याज के गोल-गोल टुकड़े कटकर गिरने लगे। और रोजी-पहलवान रहस्यपूर्ण मुद्रा में उठकर अपने सहभोजियों को आगे सार नहर के पास पहुंचा और आवाज की ओर उठाये हाथों में ब्रान्डी की बोतल व आश्चर्यजनक रूप से मुल्ला-सुलैमान के लम्बोतरे सिर से मिलता-जुलता सरदा उठाये – उसमें केवल काली कुच्ची दाढ़ी की ही कमी थी – बड़ी शान से लौट आया।

बोतल और सरदे से पानी टपक रहा था जब कि रोजी-पहलवान के मुखारविंद से बेतरतीब मजाकों के साथ-साथ चापलूसी भरे शब्दों की झड़ी लगी हुई थी

"यह मेरी तरफ से है, प्यारे दोस्तो। सरदा मैंने खास तौर से हमारे मोहतरम अध्यक्ष के लिए उगाया है। मैंने लड़की की तरह उसका खयाल रखा है! और फिर मैंने उसकी दोस्ती बाके कप्तान से कराने का फैसला किया, जिसका नाम है – चार सितारोंवाली ब्रान्डी!" उसने बोतल हवा में हिलायी और अपनी जगह पर बैठते हुए आशा बधाते हुए आगे कहा "राज की बात बताऊं, वहां ठण्डे पानी में इसकी एक और सहेली छिपाकर रखी हुई है "

"वाह कितना मीठा सरदा है!" कादीरोव ने तारीफ की।

"कहते हैं सरदा सुबह खाना चाहिए, नहीं तो वह कड़वा लगेगा,

इतना [illegible] [illegible] [illegible] तो, इसको [illegible] का [illegible] है। [illegible]
[illegible] मे [illegible] सुबह हो या! सारे को [illegible] [illegible]
[illegible] दिया और सारे से सुबह की ताज़गी आ गयी! [illegible]
[illegible] [illegible] से कैसा सुहावना! आखिर हम इसकी बगवानी है, [illegible]
[illegible] हो हो जानकारी है!'

[illegible] रोज़ी-पहलवान अतिथि ने किंचित् ईर्ष्या [illegible] [illegible] मित्र की प्रशंसा की। 'हर बात का पहल में ही ध्यान रखता है। हमेशा आगे की सोचता है!'

प्रशंसा से उत्साहित होकर रोज़ी-पहलवान और [illegible] [illegible] बोलने लगा:

मैं तो हमेशा आन्तरिक प्रेरणा पर भरोसा रखता हूँ। यदि मुझे आन्तरिक प्रेरणा मिलती है तो बेधड़क जोखिम उठा सकता हूं! मुझे याद है वसन्त में हमारे अध्यक्ष ने मुझसे उनके लिए एक [illegible] का कहा था। मैं फौरन बाजार रवाना हो गया। मुझे एक गाय पसन्द आ गयी। नसल का पता नहीं, कितना दूध देती है–पता नहीं कौन-सा चारा पसन्द करती है–इसका भी पता नहीं। दोस्त मेरा इरादा बदलने के लिए मनाने लगे भाड़ में जाने दो इस काम को। लेकिन मैं सोचने लगा अब हो सो हो, सतर्क व्यक्ति जब तक सोचता रहता है निर्भीक अपनी सोची कर गुज़रता है। मैंने गाय खरीद ली और आज उसके बछड़ा हुए तीन दिन हो चुके हैं। रोजाना एक बाल्टी दूध देती है। और वह भी कैसा! जगमग-जगमग करता रहता है जैसे तारों भरा आसमान! भाग्य को फूंक मारो ही निरी चिकनाई नजर आती है। इसलिए अब तुम्हें मिठाई खिलानी होगी, अध्यक्ष!'

कादीरोव ने जी भरके हंसने के बाद रोज़ी-पहलवान का कंधा थपथपाया।

"आदमी नहीं, हीरा है! हर चीज के लिए तुम्हारा शुक्रिया, प्यारे!"

"हां, जानकारी रखते है हर चीज की!" डेयरी के प्रबन्धक ने शेखी बघारते हुए कहा। 'अब हम इस फायदेमंद खरीदारी की खुशी मे गला तर करेंगे!"

उसने बड़ी फुरती से हाथ मारकर बोतल का डाट हटा दिया। ब्रान्डी हिली तक नहीं। चिन्तित बाज के गिलासों को भरकर रोज़ी-पहलवान ने कादीरोव को सम्बोधित किया

"तुम आज कुछ उदास हो, अध्यक्ष लग रहे हो, पर आंखों में गुस्सा भलक रहा है। छिपाओ मत, दोस्त, यहां सब अपने हैं।"

कादीरोव ने बिना उत्तर दिये अपनी ब्रान्डी पी डाली, भेड़ के मांस का एक टुकड़ा मुंह में डाला और अगले जाम के लिए बायां हाथ बढ़ाकर और ब्रान्डी ढाल ली। उसका चेहरा तमतमा उठा आंखों में भयावह लालिमा छा गयी। अलीकुल ने जल्दी से टमाटर और खीरे की रकाबी उसकी ओर सरका दी उन पर खूब सारी मिर्च छिड़क दी और काटे में कई टुकड़े उठाकर अध्यक्ष को दे दिये। ग्रास चबाते हुए कादीरोव बड़बड़ाया

"गुस्सा नहीं आयेगा पहले तो जवान मुर्गों से ही बचाव करना पड़ता था, लेकिन आज तो खुद जुराबायेव से ही झड़प हो गयी। वे अछूती धरती का अपना राग अलापते फिरते हैं और उनके सुर में सुर न मिलाओ – शोर मचाने लगते हैं।"

"अरे, प्यारे कुत्ते के भौंकने से हाथी नहीं डरता।" अलीकुल ने कहा। "तुम भी तो पीछे नहीं रहे ना?"

"बहस करते-करते मेरा गला बैठ गया लेकिन उन्हें कोई कायल कर सकता है! एक ही रट लगाते रहे हजार काम एक साथ ही करने चाहिए! कोई उन्हें जरा समझाकर तो देखे!

"शायद उन्हीं के बारे में कहा गया है जो बिन सहारे खेले जुआ, आज न मुआ, कल मुआ," रोज़ी-पहलवान ने टिप्पणी की।

"पर वे तो जिये ही जा रहे हैं मजे से! और इसके अलावा दूसरों के लिए कुआं खोद रहे हैं। आप लोगों ने जरा सुना होता उन्होंने मुझे कैसी-कैसी सुनाई कहने लगे 'तुम आलसियों का पक्ष लेते हो।' यानी आलसी आप लोग हैं! मेरे सबसे अच्छे मददगार सबसे भरोसेमंद सहारे! और सुल्तान-सुलैमान, तुम्हारी तो धज्जियां ही उड़ा दीं। किसानों ने मुर्गों की तरह तुम्हारे पर नोच डाले। उन्होंने सारी बातों का हवाला दिया पालीमें का भी और न जाने किन-किन बातों का "

वह पाया था, सब उगलने लगा। "मैंने कहा 'मेरे दोस्तों पर कीचड़ उछालने का मतलब मुझ पर, यानी कादीरोव पर कीचड़ उछालना है! और मैं अपनी प्रतिष्ठा पर आंच नहीं आने दूंगा, कामरेड जुराबायेव! मैं बीस साल से ज्यादा सामूहिक फार्म का संचालन कर रहा हूं! आप लोग मुझे धकेल बाहर नहीं कर सकेंगे, मेरी जगह अपने चहेतों को नहीं बिठा सकेंगे। कादीरोव की जड़ें हजार बरस पुराने चिनार जैसी मजबूत हैं।'"

कादीरोव ने सहसा मौन होकर सिर झुका लिया बैल की तरह फुफकारा। अलीकुल ने दूसरी बोतल से, जिसे मुल्ला-सुलैमान ले आया था, भरा गिलास उठाया। सबके मौन को भंग करते हुए उसने सविनय प्रशंसा के साथ कहा

"जो जुराबायेव से इस तरह से बात कर सकता है उसका दिल शेर का समझो!"

नजाकतखा अपनी दोनों हथेलियां अध्यक्ष के कंधे पर रखकर उसकी आंखों में झांककर फुसफुसायी

"शेर का दिल तो आपका ही है, अध्यक्ष! आपका ही है!"

कादीरोव ने मौन साधे उसके हाथों पर हाथ फेरा और अपने फ़ौलादी गले में ब्रान्डी का बड़ा-सा जाम उलट लिया।

आज आनन्द नहीं आ सका और जब हवा में बातें करते साइकिल पर आलिमजान खाना खा रहे लोगों के पास पहुंचा, उसने उन्हें सोच में खोया और उदास पाया उनके उतरे हुए चेहरे देखकर आलिमजान किंचित् मुस्करा दिया। वह सबको स्वाद से खाने की कामना करके कादीरोव को बुलाकर एक ओर ले गया।

"आप लोगों ने यह दावत बेमौके की है, अध्यक्ष।"

"हूं तुम हमें कहीं भूखे रहने का आदेश तो नहीं देने जा रहे हो, पार्टी-संगठनकर्त्ता? हम खाने के समय सामूहिक फार्म के महत्त्वपूर्ण मामलों पर विचार कर रहे हो तो?"

आलिमजान ने नजाकतखा की ओर सिर हिलाकर संकेत किया

"और यह?"

"मोहतरम अलीकुल की बेटी हमारे लिए खाना पकाने को राजी हो गयी थी हमें इस काम के लिए बिलकुल भी फुरसत नहीं है।"

"तुम और पूरी तरह मेरी गरदन पर सवार हो जाओ!" कादीरोव गुर्राया और जैसा कि उसके साथ होता था, जब वह किसी से झगड़ता था, उसकी भौहे तन गयी, गरदन पर पसीना आ गया और माथे पर मोटे-मोटे बल पड़ गये।

"बेकार गुस्सा करते हो, अध्यक्ष," आलिमजान ने मित्र-भाव से कहा। "क्योकि हमारे लोगो और सामूहिक फार्म के लिए इस साल ज्यादा दूध का उत्पादन करना बेहतर होगा।"

कादीरोव ने नफरत से होठ फुलाये और द्वेषपूर्ण, दुस्सहढग से दात निपोड़े

"मेरे ख़याल में तुम हो बड़े तेज! तुम्हे कपास भी दो दूध भी, अछूती धरती भी और मकई भी! एक तीर से एक साथ दो नही, कई शिकार करना चाहते हो!"

"माना, पर तीर-कमानो का जमाना तो बीत चुका है" आलिमजान ने आपत्ति की। "आज हम बेहतर हथियारो से लैस हैं। इसलिए, अध्यक्ष, दिल छोटा करने की जरूरत नही है। लगभग सारे काम मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनवाले पूरे कर रहे हैं, तुम्हे तो सिर्फ पौधो की सभाल के लिए छोटी-सी टोली देनी पड़ेगी। और रोजी-पहलवान साइलो-गर्त तैयार कर लेगा, यह उसी की जिम्मेदारी है।"

"क्यो नही, क्यो नही," कादीरोव ने म्लान व्यग्य के साथ कहा। "तुम्हे न जाने क्या-क्या सूझती रहती है, और पसीना मैं बहाता रहूँ! यानी तुम तो विधान-निर्माता सत्ता हो, और मैं कार्यकारिणी। मुझे केवल आज्ञापालन करना और तुम्हारे निर्देशो को कार्यरूप मे परिणत करना चाहिए"

आलिमजान ने केवल क्लान्त निराशा के साथ एक ठण्डी सास ली।

"तुम बड़े टेढे हो गये हो, अध्यक्ष फिर मुह फुला लिया, फिर अपना बिल ढूढने लगे। क्योकि जूरावायेव ने तो तुम्हे बुलाया था, पर तुम्ही ने हमारे साथ जाने से इनकार कर दिया। और आज हमने प्राथमिक तौर पर सारी बाते तय कर ली।"

"ये 'हमने' किसने?"

"कामरेड जूरावायेव ग्राम सोवियत के अध्यक्ष और सामूहिक फार्म के पार्टी-सगठन के सचिव की हैसियत से मैंने।"
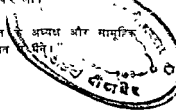
"क्या! ग्राम सोवियत की अध्यक्षा—तो आयकीज़ ही है न?"

"हां, आयकीज़ "

"तब फिर तुम्हें कहना चाहिए था, मैं और मेरी पत्नी।"

आलिमजान ने विस्मय से कंधे उचकाये

"ठीक है, यही सही मैं और मेरी पत्नी। हम सब सारी बातों पर विचार करके इस निष्कर्ष पर पहुँचे: सामूहिक फ़ार्म अक्तूबर में कपास की बोवाई करने से पहले उसमें मकई पैदा कर सकते हैं। काम यह बहुत भारी नहीं है, पर साथ ही बहुत लाभदायक है। मैंने मीटिंग न बुलवाने का फ़ैसला किया, काम ज़ोरों पर है, बोवाई का मौसम है, लेकिन मैंने टोली-नायकों से सलाह कर ली है। सब इसके पक्ष में हैं। बस तुम्हारी राय बाक़ी रह गयी है।"

"टोली-नायकों से सलाह किस लिए की?" कादीरोव ने नाराज़ होने की तैयारी से शक्की स्वर में पूछा। "आख़िर उन्हें तो तुम्हारी मकई से कोई वास्ता पड़ना नहीं है!"

"कुछ भी हो, उनकी राय जानना ज़रूरी था। टोली-नायक—सामूहिक फ़ार्म का दिल होता है!"

कादीरोव गुस्से के मारे हांफने लगा, अब उसके माथे पर भी पसीने की मोटी-मोटी बूंदें उभर आयीं।

"तो यह बात है यानी तुम मेरे पास सबसे आख़िर में आये हो? यानी मेरी सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष की कोई हैसियत ही नहीं है। सामूहिक फ़ार्म के खेत का डरावा हूं! सामूहिक फ़ार्म का चौकीदार हूं! यही मतलब लगाऊँ तुम्हारी बातों का?"

आलिमजान ने कादीरोव की ओर ध्यानपूर्वक देखकर कुछ सोचते हुए व्यंग्यपूर्ण और किंचित् दया-भाव से सिर हिलाया। अध्यक्ष को क़ायल करना इस समय व्यर्थ था। मूर्खतापूर्ण नाराज़गी, झूठी महत्त्वाकांक्षा ने उसकी आंखों पर परदा डाल दिया था और उसे सब टेढ़े-मेढ़े शीशे की तरह उलटा दिखाई दे रहा था।

"तो सुनो अध्यक्ष," आलिमजान ने शुष्क व दृढ़ स्वर में कहा। "कोई तुम्हारे अधिकारों का हनन नहीं करने जा रहा है। लेकिन लगता है तुम भूलने लगे हो कि तुम्हारी कुछ ज़िम्मेदारियां भी हैं तुम अगर अपने अपमान और अपनी प्रतिष्ठा को लेकर इतना

के बजाय यह सोचो कि चारे की सफलतापूर्वक बोवाई कैसे की जाये तो ज्यादा अच्छा रहेगा। पार्टी-सगठन इस काम पर नजर रखेगा।'

साइकिल पर सवार होकर उसने कादीरोव की ओर पलटकर जो किंकर्तव्यविमूढ हुआ खडा रह गया था, चेतावनी दी

"मैंने जो बात तुमसे कही है, वह पार्टी का निर्देश है ध्यान मे रखो।"

कादीरोव बिना सिर उठाये धीरे-धीरे झोपडी की ओर चल दिया उसके मित्रो मे फीकी चुप्पी छाई हुई थी। कादीरोव पर आतुर और प्रश्नात्मक निगाहे टिक गयी। उसने धम्म से अपनी जगह पर बैठ सलाद की रकाबी मे काटे से उलटा-पलटा और उसे गुस्से मे इतने जोर से सुरजी पर दे मारा कि वह कई बार उछला, फिर चीखा

"चुप क्यो हो? क्या तुम्हे साप सूघ गया है? तुम्हारे अध्यक्ष को कीचड मे गिराकर रौदे जा रहे है, रौदे जा रहे है और तुम सब मुह बाये बैठे रहे!"

अलीरुल झिझकते हुए खासा और दोषी की तरह खुशामदी ढग से मुस्कराया

"तुम्हे रौदने के लिए तो, अध्यक्ष हिन्दुस्तान के सारे हाथियो की जरूरत पडेगी ही-ही तुम हम पर भरोसा रखो, अध्यक्ष हम तुम्हे मुसीबत मे अकेला नही छोडेगे। तुम पर चाहे जैसी गुजरे हम हमेशा मदद करेगे। कथनी से भी और करनी से भी। हम – तुम्हारी, और तुम – हमारी ही-ही

उसी समय गफूर खाना खा रहे लोगो के पास पहुँचा। कादीरोव उसकी ओर तिरछी नजर देखकर गुस्से से बडबडाया

"तुम तुम्हारा इन्तजार करने के लिए मजबूर करते हो, टोली-नायक"

गफूर ने हाथ झटकार दिये

"आप क्या हमारे टोली-नायक को नही जानते है? हमारी नाक मे दम कर रखा है उसने! उसके बहता चाहिए मुह पर थूकने है, पर वह अपमानियो की जी-हजूरी करता रहता है कपास को बचाने के लिए एडी-चोटी का पसीना एक कर रहा है। यह कपास सिर्फ मेरी अनमोल भानजी की बदौलत आधी से बच सकी है, अल्लाह

"सुलतानोव?" कादीरोव समझ गया।

"तुमने बिलकुल ठीक सोचा, अध्यक्ष। मसल मशहूर है जौहरी को ही हीरे की परख होती है। क्या यह सुलतानोव पर लागू नहीं होता? उसे भले-बुरे आदमी की पहचान है। वह हमारे अध्यक्ष का आदर करता है, वह मेरे घर का सबसे मनचाहा मेहमान है। और वह मुसीबत में हमें अकेला नहीं छोड़ेगा, भाइयो

"सो तो है " कादीरोव ने म्लान स्वर में कहा, "लेकिन जवान मुर्गे उसके भी तो चोंचें मार रहे हैं।"

"अरे, अरे, अध्यक्ष, क्या माने रखती हैं उसके लिए उनकी चोंचों की मार?" अलीकुल की योजना के प्रति आकर्षित हुआ गेजी-पहलवान उत्तेजनापूर्वक हाथ हिलाता हुआ कह उठा। "उनकी नुकता-चीनी तो मच्छर के काटने जैसी होती है खुजाया और दूर हो गयी। आखिर सुलतानोव तो जिले का मालिक है! वह जुरावायेव से नहीं डरता है। कहते हैं, वह जुरावायेव और आयकोज में शेर की तरह जूझा था। ऐसे अधिकारी के लिए तो जान तक देते दिल नहीं दुखे!"

"सही है, भाई," अलीकुल ने सिर हिलाया। "सुलतानोव बड़ा आदमी है और हमारी मदद करेगा। और यह याद रखो जो धावे, सो पावे! तुम, अध्यक्ष, कल जिला मुख्यालय में कामरेड सुलतानोव के पास जाओ। उनके लिए ज़रा एक मोटा-ताज़ा भेड़ा लेते जाना हमारी चिट्ठी पर ही-ही टिकट ज़रा कीमती ही लगा होना चाहिए। ऐसे काम बनने का ज़्यादा भरोसा रहता है। और मैं सोचता हूँ, कामरेड सुलतानोव यह चिट्ठी अख़बार को भिजवाने में इनकार नहीं करेंगे "

"हूँ उर्वरता समिति का अध्यक्ष पते की बात कह रहा है," कादीरोव ने सोच में डूबे हुए कहा। "लेकिन तुम्हारे ख़याल में शिकायत पर दस्तख़त किसको करने चाहिए "

"मैं दस्तख़त करूँगा!" गफ़ूर ने तत्परता से कहा।

"नहीं, भई नहीं" अलीकुल ने विरोध किया। तुम्हारी बहुत तारीफ़ की जानी चाहिए पर तुम्हारे दस्तख़त दस्तख़त मुल्ला-सुलैमान करे उसकी लगाम रेत में दबी पड़ी है और टोली कमज़ोर है! और कोई बाहर का आदमी भी दस्तख़त करे, सो बहुत अच्छा

१२

लोगों की कमी है। जैसे सूरज जमीन की नमी सोख लेता है, जैसे आदमी को कमजोर बना देता है, वैसे ही अछूती धरती ने कुन्नी टोली का सारा खून चूस लिया, उसकी ताकत खतम कर दी। बद्दू किसान कमरतोड़ मेहनत कर रहे हैं, फिर भी आधी से ज्यादा जमीन को किसी तरह ठीक नहीं कर पा रहे हैं और हमारे देश में अनमोल सफेद सोना बरबाद हुआ जा रहा है, बरबाद हो रहा है, उन लोगों की गलती से, जिन्होंने बेमौके और अपनी ताकत न आंकते हुए, सस्ते में नाम कमाने के लिए एक बार में ही इतने लम्बे-चौड़े रेगिस्तान को फतह करने की ठान ली।"

सब मन्त्रमुग्ध-से अलीकुल की बात सुनते रहे। मुल्ला-मुनौवर अपनी उभरी हुई आंखों से सीधा वक्ता के मुंह में देख रहा था। शेख व गफूर के चेहरों पर निराशाजनक मूर्खतापूर्ण एकाग्रचित्तता व्याप्त थी। केवल रोशी-पहलवान सारा सिकोड़े चालाक बूढ़े का इशारा समझने की कोशिश करता रहा था। अलीकुल श्रोताओं पर पड़े असर से सन्तुष्ट होकर तत्परता से बोला "यही लिखेंगे!"

"हम यही लिखेंगे, प्यारे।"

सबसे पहले रोशी-पहलवान को होश आया। उसने किंचित् अविश्वास के साथ मुस्कराकर झिझकते हुए पूछा

"आखिर किसे लिखेंगे, अलीकुल?"

"किसे लिखेंगे?" अब अलीकुल की विस्मित होने की बारी थी। "अखबार को। हमारे जिले के अखबार को। आप देख ही रहे हैं कि आयकीज की शिकायत करने का आधार हमारे पास है। और अगर अपने दिमागों पर जोर दें, तो कुछ और मसाला ढूंढ़ लेंगे और इस बादलों तक मंडरानेवाली हमारी चिड़िया के पर काट डालेंगे। प्रेस बहुत शक्तिशाली होता है, भाइयो।"

"क्या लोग हमारी बात पर विश्वास कर लेंगे?" शेख पहलवान ने सन्देह व्यक्त किया। वह तो इस बात का आदी हो चुका था कि उस पर लोग विश्वास नहीं करते हैं।

"हम काम ऐसे करेंगे कि लोग विश्वास कर लेंगे। हम राई का पहाड़ बना लेंगे! ऐसे अधिकारी भी हैं, जो आयकीज और तुराबाय से ज्यादा तेज-नजर और अक्लमन्द हैं।"

"सुलतानोव ?" कादीरोव समझ गया।

"तुमने बिलकुल ठीक सोचा, अध्यक्ष। मसल मशहूर है जौहरी को ही हीरे की परख होती है। क्या यह सुलतानोव पर लागू नहीं होता ? उसे भले-बुरे आदमी की पहचान है। वह हमारे अध्यक्ष का आदर करता है, वह मेरे घर का सबसे मनचाहा मेहमान है। और वह मुसीबत में हमें अकेला नहीं छोड़ेगा, भाइयो

"सो तो है " कादीरोव ने म्लान स्वर में कहा, "लेकिन जवान मुर्गे उसके भी तो चोंचें मार रहे हैं।"

"अरे, अरे, अध्यक्ष, क्या माने रखती हैं उसके लिए उनकी चोंचों की मार ?" अलीकुल की योजना के प्रति आकर्षित हुआ रोजी-पहलवान उत्तेजनापूर्वक हाथ हिलाता हुआ कह उठा। "उनकी नुक्ता-चीनी तो मच्छर के काटने जैसी होती है खुजाया और दूर हो गयी। आखिर सुलतानोव तो जिले का मालिक है! वह जुरावायेव से नहीं डरता है। कहते हैं, वह जुरावायेव और आयकोज़ से शेर की तरह जूझा था। ऐसे अधिकारी के लिए तो जान तक देते दिल नहीं दुखे!"

'सही है, भाई," अलीकुल ने सिर हिलाया। "सुलतानोव बड़ा आदमी है और हमारी मदद करेगा। और यह याद रखो जो धावे, सो पावे! तुम, अध्यक्ष, कल जिला मुख्यालय में कामरेड सुलतानोव के पास जाओ। उनके लिए जरा एक मोटा-ताजा भेड़ा लेते जाना हमारी चिट्ठी पर ही-ही टिकट जरा कीमती ही लगा होना चाहिए। ऐसे काम बनने का ज्यादा भरोसा रहता है। और मैं सोचता हूँ, कामरेड सुलतानोव यह चिट्ठी अखबार को भिजवाने से इनकार नहीं करेंगे "

"हूँ उर्वरता समिति का अध्यक्ष पते की बात कह रहा है," कादीरोव ने सोच में डूबे हुए कहा। "लेकिन तुम्हारे ख़याल से शिकायत पर दस्तख़त किसको करने चाहिए "

'मैं दस्तख़त करूँगा!" गफ़ूर ने तत्परता से कहा।

नहीं, भई, नहीं," अलिकुल ने विरोध किया। "तुम्हारी बहुत तारीफ़ की जानी चाहिए, पर तुम्हारे दस्तख़त दस्तख़त मुल्ला-मुनैमान करे उसकी बदनाम रेत में दबी पड़ी है और टोपी कमज़ोर है! और कोई बाहर का आदमी भी दस्तख़त करे, तो बहुत अच्छा

रहे जिससे हमारे लड़ाई झगड़े में कोई बाधा न हो" उसने प्यार से नजाकतखा पर नजर डाली और दूरानुदेश किन्तु किंचित् शरमाये स्वर में धीरे से बोला "मुझे भी, बेटी, इस चिट्ठी पर दस्तखत करने होंगे"

"यह बात है! मुझे तो आप लोगों के काम की जरा-सी भी समझ नहीं है!"

"तुम तो सामूहिक फार्म के दफ्तर में बैठती हो, बेटी, वहां बहुत-सी बातें देखने में आती हैं. सामूहिक फार्म में जो कुछ होता है उसका पता तुम्हें हुए बिना नहीं रह सकता। वैसे, मुल्ला-सुर्नबान, क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुम्हारी दोनों कपास की फसल ठीक करने में असफल रहेगी?"

अगर पूरा जोर लगाया जाये "

"हाँ पूरा जोर लगाओगे, तो कमर टूट जायेगी। और मुश्किल तुम्हारा कोई अदा नहीं करेगा। हम मान लेते हैं कि तुम्हारे खेत में कपास ने ही-ही अपनी पूरी उम्र पा ली। और इसमें कसूर तुम्हारा नहीं, आयकोज का है। आयकोज और उसके सरपरस्तों का.. बस, आप लोग, यही लिख दीजिये।"

"अच्छा! आयकोज नेक है, उसने मेरा कभी बुरा नहीं किया "

"यह तो और भी अच्छी बात है, बेटी, तब तुम पर ज़रूर विश्वास करेंगे। और आयकोज के बारे में तुम मत सोचो। बेहतर रहेगा, अगर अपने भविष्य के बारे में सोचो। हमारे अध्यक्ष ऐसी चिट्ठी के लिए तुम्हें झुककर सलाम करेंगे। और कामरेड सुलतानोव भी सन्तुष्ट हो जायेंगे। ज़िद मत करो, प्यारी बेटी "

नजाकतखा ने प्रश्नात्मक दृष्टि से कादीरोव की ओर देखा। कादीरोव ने एक लम्बी ठण्डी सास ली

"क्या किया जाये, सुन्दरी? इस झक्की लड़की को काबू में नहीं किया, तो वह हमें ज़िन्दगी भर रुलाती रहेगी।"

नजाकतखा अपनी झिझक तुरन्त न मिटा सकी। उसे आयकोज पर भी दया आ रही थी और इसके साथ-साथ वह पिता और कादीरोव को भी खुश करना चाह रही थी। यह सच है कि कादीरोव अधेड़ आदमी है, शादीशुदा है। लेकिन उसकी पत्नी बुड्ढी और बदसूरत है।

और अध्यक्ष आये दिन उनका मेहमान बनता रहता है और खाली हाथ नही आता है कभी नज़ाकतखा को आसुओं जैसे पारदर्शी या मूग की बूद जैसे लाल मनको का कठा भेट करता है, कभी उसके लिए नयी पोशाक खरीद देता है, कभी शरमाता हुआ भोडे ढग से जेब मे से महगे इत्र की शीशी निकालकर उसके सामने कर देता है, और तब कमरा बाग की तरह महकने लगता है हो सकता है कुछ स्त्रिया ऐसी हो, जो इसका लोभ सवरण कर सके, लेकिन नज़ाकतखा ऐसा नही कर सकती। ठाठदार पोशाक देखकर उसका सिर चकराने लगता है यहा तक कि नज़ाकतखा अपनी मामूली सी तनख्वाह भी, पिता की अनुमति से, कपडो, दुम-छल्लो पर खर्च करती है और कार्यालय मे त्योहार के मौको जैसे सज-धजकर जाती है। लेकिन तनख्वाह तो सिर्फ एक-दो ब्लाउजो और कगनो के लिए ही काफी होती थी। और नज़ाकतखा बेवकूफ तो थी नही जो कई हफ्तो तक एक ही पोशाक मे घूमती फिरे। सुन्दरता बादल के सदृश होती है वह अथक रग बदलते रहने के कारण आखो को प्रसन्न करता रहता है – कभी हिम-धवल हो जाता है, कभी गुलाबी, कभी सुनहला, तो कभी मोती समान झिलमिलाता हुआ, और उसे अनन्त काल तक निहारा जा सकता है। नज़ाकतखा भी वैसे ही आज अलबेले बेल-बूटे कढी हुई रगबिरगी टोपी पहने हुई है, तो कल चुस्त* की काली टोपी और अगले दिन सबसे दिलकश रग का हल्का रूमाल बाधे है उसके सौन्दर्य की आदी हुई नजरे बार-बार मौन प्रशसा के भाव के साथ फिर उस पर टिक जाती, और ये नजरे उत्तेजित करती, शरमाती नही, वह कादीरोव के उपहारो से इनकार नही कर सकती। फिर यदि पिता को गुस्सा आ गया, तो वह उसे बडी बन्दिश मे रखेगा नज़ाकतखा ने हिचकिचाकर फिर कनखियो से कादीरोव की ओर देखा और नज़रे झुकाकर नम्र स्वर मे कहा

"वैसा ही होगा, जैसा आप चाहते हैं, अध्यक्ष जैसा आप बतायेगे, मैं वैसा ही लिख दूँगी "

---

* चुस्त – फरगाना वादी का एक शहर जो अपनी बढिया टोपियो के लिए मशहूर है।

"कितनी समझदार है!" अलीकुल प्रसन्न हुआ। "मैं जानता हूँ, बेटी, कि आयकीज ने तुम्हारे साथ अच्छा बरताव किया, तुम्हें काम पर लगाया। लेकिन तुम्हें तो सिर्फ सच्ची बात लिखनी है। और सचाई, बेटी," अलीकुल ने सीने पर दुआ मांगने की मुद्रा में हाथ रखकर कृत्रिम विनम्र भाव से आंखें आकाश की ओर उठाईं, "सचाई सबसे ऊपर है! कृतज्ञता से भी ऊपर है। हूँ, तुम कुछ कहना चाहते हो, गफूर?"

गफूर न जाने कब से खीजता, नाराज होता अपनी बकरी दलील से उनकी आपसी बातचीत को समृद्ध बनाने का अवसर पाने की प्रतीक्षा करता हुआ हांफ रहा था। अलीकुल के सवाल का जवाब उसने प्रति प्रश्न में दिया।

"पर जुराबायेव का क्या होगा?"

"जुराबायेव?"

'वाह रे अलीकुल खुद ही सोचो, अगर चिट्ठी पर दस्तखत सिर्फ मुल्ला-सुलैमान और नजाकतखा करेंगे, तो हम उसमें जुराबायेव को कैसे ठूंसेंगे? यहां जरा बड़े लोगों के दस्तखतों की जरूरत है।"

"लेकिन मेरे खयाल से," अलीकुल धीरे-धीरे बोला, "हमें अभी जुराबायेव को छेड़ने की जरूरत ही नहीं है। ग्राम सोवियत की अध्यक्षा की अलग बात है, और..."

"वाह रे वाह!" गफूर ने उसे बात पूरी नहीं करने दी। "क्या सांपनाथ, क्या नागनाथ – आखिर हैं तो सांप ही!"

"नहीं, भई, नहीं! पहाड़ी पर से छोटा-सा पत्थर लुढ़काओगे, तो वह बिना शोर किये नीचे लुढ़क जायेगा। लेकिन बड़ा लुढ़काया, तो शोर होगा, हंगामा होगा। और हमें शोर की क्या जरूरत है?"

"लेकिन आयकीज के पीछे तो जुराबायेव पत्थर की दीवार की तरह खड़ा है! जुराबायेव को नहीं डुबाया, तो वह आयकीज को भी उसके बाल पकड़कर बाहर खींच लेगा!"

"हूँ... तुमने कभी बिलियर्ड खेला है?"

"तुम जानते ही हो, मुझे कभी बिलियर्ड जैसे खेलों के लिए फुरसत नहीं मिली।"

"लेकिन मैं खेला हूँ... बड़ा पेचीदा खेल होता है यह, भाइयो!

चोट एक गेंद पर की जाती है, और पाकेट में दूसरा जा गिरता है कामरेड जुरावायेव को आयक्रीज़ को बचाने का मौका नहीं मिल पायेगा— वह मुद उसे अपने साथ ले डूबेगी। उसके लिए एक ही रास्ता बचेगा— कलवित कामगार से नाता तोड लेना। और उस योजना से भी, जिसे उसने बदनाम किया "

नज़ाकतया ने ठिठुरन के कारण कंधे सिकोडे नहर की ओर से नम और कंपा देनेवाली ठण्डी हवा बहने लगी थी। दोपहर का खाना हमेशा की तरह देर तक चलता रहा था, शाम का समय हो चला था दिन भर में न जाने क्या-क्या न देखकर क्लान्त सूरज पर्वत शिखरों के पीछे जा छिपने की जल्दी में था।

कादीरोव कराहता हुआ उठ खड़ा हुआ। बाकी लोग भी उठ खड़े हुए। पास ही में मुरझायी निपतिया खा रहे अध्यक्ष के घोडे ने सिर हिलाया और पुकारता और स्वागत करता-सा हिनहिना उठा अपने स्वामी की तुलना में वह बुरा ज्यादा देर तक याद नहीं रखता था कादीरोव ने गफूर व मुल्ला-सुलैमान को जल्दी से अपने खेतों में पहुँचने का हुक्म दिया उनका देर तक गैरहाज़िर रहना शायद वैसे ही निन्दा किये जाने का आधार बन चुका होगा। उन सबने शाम को अलीकुल के यहाँ एकत्र होने की बात तय कर ली। नज़ाकतख़ा बरतन समेटने लगी। अलीकुल अध्यक्ष के साथ अकेले रह जाने पर दिल पर हाथ रखकर एक बार फिर मार्मिक स्वर में उसे विश्वास दिलाने लगा

"तुम मुझ पर हर मामले में भरोसा रख सकते हो अध्यक्ष। तुमसे सब मुह फेर सकते हैं, पर अलीकुल मुसीबत की घडी में भी वफादार दोस्त बना रहेगा। ऐसा आदमी तुम्हारे पास है, जिस पर तुम भरोसा रख सकते हो, अध्यक्ष "

भारी-भरकम कादीरोव के पास खड़ा अलीकुल दुबला-पतला और छोटा-सा लग रहा था।

है, अध्यक्ष हम तुम्हे मुसीबत मे अकेला नही छोडेगे ऐसा आदमी है तुम्हारे पास, जिस पर तुम भरोसा रख सकते हो, अध्यक्ष "

जिला केंद्र जानेवाला मार्ग अछूती धरती मे होकर गुजरता था, वह घुडसवार की दायी ओर फैली हुई थी। वह रही अछूती धरती, जिसे उनका सामूहिक फार्म कृषि योग्य बना रहा है वह रहे दूसरे सामूहिक फार्मो की जमीनो मे लगे खेत और वह रही अभी तक अछूती वीरान स्तेपी। वह बाल झडे ऊट की खाल जैसी लग रही थी, पर इतने विस्तार मे फैली हुई थी कि आख मे उसका ओर-छोर नजर नही आ सकता था, उसे कृषि योग्य बनाने की बात तो दूर रही। कोई जरा कोशिश करके देखे ऐसे विस्तार को जोतने, जीवनदायी जल पिलाने, नुकीली रेत उडानेवाली गरम हवाओ से उसकी रक्षा करने की! और यदि चमत्कार हो भी जाये, यहाँ कपास पैदा हो भी जाये, वह हर हालत मे बरबाद हो जायेगी क्योकि ऐसी कोई शक्ति नही, जो यहाँ समय पर फसल उठा सके! यह ठीक है कि आलिमजान फिर मशीनो के उपयोग पर जोर देगा। लेकिन मशीनो का कोई भरोसा नही। मशीनो पर भरोसा करते रहिये, और खुद कोई गलती न कीजिये! इस स्तेपी की खिली हुई कपास के श्वेत फेन मे डूबे होने की कल्पना करना निस्सन्देह बहुत आकर्षक लगता है। तब तो सामूहिक फार्म मालदार हो जाये! लेकिन फिलहाल तो पिछले बरसो में जोडी दौलत से काम चलाया जा सकता है। जैसे कि अभी तक चलता ही आया है! कादीरोव की जिले मे तारीफ की जाती थी, सामूहिक किसानो मे से किसी ने मोटरसाइकिल खरीदी, तो किसी ने साइकिल, और किसी को भी उस पर यानी अध्यक्ष पर उगली उठाने का साहस नही होता था न आयकीज को, न जुरा-बायेव को। तब काम भी ठाठ से किया करते थे और रहते भी ठाट से थे। लेकिन अब

कादीरोव ने टोपी से चेहरा व गरदन पोछे और घोडे को तेजी से दौडाने के लिए टिटकारी मारी। अच्छा ही यदि वह जिला मुख्यालय मे जरा जल्दी पहुँच जाये, गुलनाजोव के साथ दोपहर का खाना खाये और खाने पर दोस्तो की तरह इधर-उधर की बाते कर सके कुछ

उस पर पूरा भरोसा रखा जा सकता है, वह वफ़ादार और ईमानदार कामगार है, और उसने यह कहा था "सामूहिक फार्म की सम्पत्ति को अपनी आँख की पुतली से भी ज्यादा सम्भालकर रखता हूँ मेरे यहाँ हिसाब किताब बिल्कुल ठीक रहता है, कोई उसमें मीन-मेख नहीं निकाल सकता। इस भेड़े को कामरेड सुलतानोव के यहाँ से आइये, यह उन्हीं का भेड़ा है और आदरणीय कामरेड सुलतानोव चिन्ता न करें, हमारे यहाँ सामूहिक फार्म के सारे मवेशियों की गिनती कर ली गयी है, और सामूहिक फार्म को पराई भेड़ों की कोई ज़रूरत नहीं है आपकी भेड़ें हमारे यहाँ चरती हैं यह ठीक है आज उनकी संख्या कितनी है—इस बारे में तो बस गेंदी-पहलवान ही ज्यादा जानता है।

कादीरोव ने भेड़ के गोश्त से भरी गुर्जी पर तिरछी नज़र डाली और किंचित् स्पष्ट रूप से धीमे सोचा जो लोग जीने के शौकीन होते हैं उनसे बात करना ज़रा आसान होता है! ईमानदारी से कहा जाये, तो ऐसे लोगों के साथ ही निभ सकती है उसने यदि ऐसी सेवा का प्रस्ताव आयरोव या जुरावायेव का किया होता तो उसके लिए अचानक बड़ी भारी मुसीबत खड़ी हो गयी होती। और सुलतानोव की मदद की जाये तो वह कभी एहसान उतारने में पीछे नहीं रहता। उससे फसल की कटाई के समय शहर से ज्यादा लोग सामूहिक फार्म में भेजने की प्रार्थना की जाये तो क्या वह इनकार कर सकेगा? जुरावायेव जैसा तो फौरन चिल्ला पड़े आखिर तुम्हारे सामूहिक फार्म में ही क्यों? दूसरे सामूहिक फार्मों में श्रम-शक्ति की ज़रूरत तुम्हारे सामूहिक फार्म से कम नहीं है! सचमुच सनकी ही है! लेकिन ज़रूरत पड़ने पर कादीरोव भी तुम्हारे लिए अच्छा काम कर सकता है जिसे कहना चाहिए—सेवा के बदले में सेवा। ज़िन्दगी में सब कुछ इसी पर टिका हुआ है। वरना वह सामूहिक फार्म की खेती का काम कभी चला सकता था? लेकिन, कामरेड जुरावायेव यह बात बस तुम्हारे ही समझ में नहीं आ सकती तुम सच्चे दोस्तों की परख करना नहीं जानते तुम बेशक सारी बात गुप्त रखने पर भी अपनी भेड़ें सामूहिक फार्म के रेवड़ में नहीं छोड़ोगे। वाह रे, ईमानदारो! अपनी बात पर ऐसे अड़ते हैं कि कोई उन्हें किसी तरह वहाँ से नहीं

सकता सकता! इसीलिए तो ऐसे गैरमामूली कदम उठाने पड़ते हैं

कादीरोव ने सिर हिलाया उसे जुगशायेव पर तरस भी आने लगा जो यह समझने को भी तैयार नहीं थे कि जिन्दगी बड़ी पेचीदा चीज है और हठधर्मिता व दुराग्रहता के सहारे कोई ज्यादा आगे नहीं बढ़ सकता। "आदरणीय जुगशायेव कादीरोव का, जिसे इतने सालों से जानते हो, पक्ष लेने को तैयार नहीं हुए, तो फिर दोषी खुद ही को ठहराते रहो आयकोज पर छोड़ा गया तीर तुम्हें भी घायल करेगा, प्यारे कामरेड जंग आखिर जंग ही होती है! और जंग में सारे तरीके जायज होते हैं।"

कादीरोव जब जिला केंद्र में घुसा, उसकी विषण्ण मनःस्थिति का नाम-निशान तक बाकी नहीं रहा था। पराये शब्द रूपी मधुमक्खियाँ अब अपनी उबाऊ भनभनाहट से उसे परेशान नहीं कर रही थीं, वे अगोचर रूप में उसके व्यक्तिगत विचार बन गयीं, और उसे युद्ध में वहम करने की इच्छा नहीं रही थी। शक्ति की बचत करने व युयुत्सा को सुदृढ बनाये रखना आवश्यक था गंभीर मुठभेड़ होगी!

घोड़े की टापें पत्थर के रास्ते पर बजने लगीं। जिला केंद्र का मुख्य मार्ग बिलकुल साफ-सुथरा रखा जाता था। पत्थर का रास्ता, डामर बिछे हुए फुटपाथ, ताजा सफेदी किये हुए बाड़े, जिनके पीछे से कुंचित वृक्ष मानो उत्कंठातुर हुए-से बाहर को लटके हुए थे कादीरोव ने जिला कार्यकारिणी समिति में हो लेने का फैसला किया शायद सुलतानोव अभी वहीं हो। उसने डामर बिछा हुआ चौक पार किया, जिसकी ओर जिला पार्टी समिति की इमारत की खिड़कियाँ खुलती थीं (कादीरोव ने उस ओर नजर तक उठाकर नहीं देखा)। उसने कुछ और घर पीछे छोड़कर घोड़े को ठीक लम्बे-चौड़े बाग के प्रवेश-द्वार के सामने रोक दिया। बाग के भीतर जिला कार्यकारिणी समिति का कार्यालय दिखाई दे रहा था। कार्यालय की इमारत पुरानी होने के बावजूद मजबूत थी। जब मुख्य चौक में नये घरों का निर्माण कार्य आरम्भ किया गया, सुलतानोव ने जिला कार्यकारिणी समिति वहाँ से जाने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह उसकी पुरानी स्थिति से पूर्णत सन्तुष्ट था, इसके अलावा अब जिला कार्यकारिणी समिति

ज़िला पार्टी समिति से कुछ दूर हो गयी थी, जिससे मुलतानोव को किसी के अधीन होने की कुछ कम अनुभूति होने लगी थी।

ज़िला कार्यकारिणी समिति की इमारत हरियाली में डूबी हुई थी, भवन की ओर जानेवाली रोड़ी पड़ी हुई चौड़ी वीथि के सहारे-सहारे नीची बेंचें पड़ी हुई थीं। वहाँ हर चीज़ प्रतीक्षा करने की दृष्टि से बनाई गयी थी। मुलतानोव का स्वागत-कक्ष आरामदेह और साफ़-सुथरा था, एक अलग मेज़ पर पत्रिकाएं पड़ी थीं। बाग़ अपनी सफ़ाई और छाया से आकर्षित करता था, भवन में घुटन महसूस होने लगे – बाग़ में चले जाइये, बेंच पर बैठकर सुस्ता लीजिये, छाया में सोच-विचार कर लीजिये, हो सकता है आपके इतने मामूली-से काम के कारण आपको ज़िला कार्यकारिणी समिति में आकर अध्यक्ष को, जिसके सिर पर हमेशा ही ढेरों काम होते हैं, परेशान करने की ज़रूरत ही न हो। नहीं, मुलतानोव को कोई भी इस बात का ताना नहीं दे सकता था कि वह मुलाकातियों का ख़याल नहीं रखता! और उसके सिर पर ढेरों काम रहते हैं, इसका यकीन भी बड़ी आसानी से आ सकता था क्योंकि यदि वह इतना व्यस्त न रहता होता, तो भला लोगों को उससे मुलाकात के लिए कभी घंटों इन्तज़ार करने के लिए मजबूर कर सकता था?

दोपहर हो चुकी थी वृक्ष के तले पूरी गोल छाया पड़ रही थी। कादीरोव ने पटरी के सहारे-सहारे बहनेवाली नाली की रक्षा कर रहे पोपलर के वृक्षों में से एक से घोड़े को बांधा, फाटक में घुसकर कार्यकारिणी समिति के बाग़ में पहुँचा और परेशान हो रहे प्रार्थियों की ओर मुड़-मुड़कर उत्कर्ष भावना से देखता, रोड़ी पर चर्र-मर्र करता, डग भरता उस भवन की ओर चल दिया, जिसके द्वार कादीरोव के लिए सदा खुले रहते थे। वह यहाँ अपने लोगों में गिना जाता था। ज़िला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष की उत्कृष्ट व क्रोधी स्टेनो आकस्मिक मुलाकातियों को अपरिवर्तनीय वाक्य से दृढ़तापूर्वक रोक रही थी "कामरेड मुलतानोव के यहाँ मीटिंग हो रही है!" लेकिन कादीरोव का स्वागत वह सदा सौजन्यपूर्ण मुस्कान के साथ करती थी

"जी, जी, कामरेड मुलतानोव के यहाँ मीटिंग हो रही है, पर आपका वह इन्तज़ार कर रहे हैं" और गोपनीय रूप से आगे कहती

का सामान लेकर आ गये। ऐ बेगम! ज़रा कादीरोव से अपना भेडा ले लो, ख़ुदा करे मारी भेड इसी तरह ढेरो बच्चे देती रहे! यहाँ लाओ इस मरदूद को, यहाँ तहख़ाने मे। यहाँ जन्नत जैसी ठण्डक है!"

सुलतानोव की अत्यधिक थकान विशिष्ट ढग से व्यक्त होती थी वह जीवन्त व हसमुख हो उठता था, उसकी मुस्कानो की फुलझडियाँ सूर्य-किरणो की दीप्ति मे होड करती थी, उसके विनोदपूर्ण आदेश हास्यमय सूक्तियो मे बदल जाते थे कादीरोव ने सुलतानोव के पास आकर उसका हाथ अपने दोनो हाथो मे दबाकर अभिवादन किया और उसकी मन स्थिति से अछूता न रह पाकर मज़ाक किया

"कामरेड सुलतानोव, क्या तुम सोचते हो कि जन्नत मे ठण्डक रहती है?"

"जब बाहर गरमी हो, मैं कहता हूँ ठण्डी जगह मुझे जन्नत जैसी लगती है। जब बाहर ठण्ड हो, तो मैं जन्नत की कल्पना बडी सारी अगीठी के रूप मे करता हूँ! और जब मेरी ख़ातिरदारी मस्त सीक-कबाबो से की जाती है, तो मैं ख़यालो मे जन्नत की तरह उस सीक-कबाब की दुकान मे पहुँच जाता हूँ, जहाँ के सीक-कबाब किसी हूर के होठो जैसे रसीले और कोमल होते हैं जन्नत, अध्यक्ष, वह चीज है, जो हमे इस वक्त नसीब नही हो पा रही है।" सुलतानोव ने हसकर कादीरोव का कधा थपथपाया। "लेकिन हम लोग ख़ुद धरती पर स्वर्ग बना रहे है। है ना, प्यारे अध्यक्ष?"

सुलतानोव के घर, आगन, बातो और उसकी आकृति तक से ठोस ख़ुशहाली और सुखमय जीवन मे प्रेम की गन्ध आ रही थी। कादीरोव के सन्तप्त हृदय मे सुखद शान्ति छा गयी उसने प्रशसा व द्वेपमिश्रित दृष्टि से सुलतानोव के आगन मे बने नये भागो व फुलवारियो की ओर देखा, और उसकी आखो पर नज़र रख रहा गृहस्वामी आत्मसन्तोष से मुस्कराया

"देखा, अध्यक्ष? धरती पर स्वर्ग है! नही, तुम ज़रा इस निकुज को देखो – विश्व का आठवा आश्चर्य है यह!"

निकुज देखकर चित्त सचमुच प्रसन्न हो उठता था नीना तैलरग अभी तडका तक नही था, चारो ओर फूलो की कुशल सजावट

के पत्थरों से कल्पित किए हुए थे। निकुंज के चारों ओर बहुत बड़े
नक्काशीदार जाले लगे थे, गुच्छ रूप में आयात, उन पर अंगू
विभिन्न ... चढ़ाई कर रहे थे। क्यारियों बेल-बूटों से विभि
... से ... व गृहस्वामी के जीवन के लिए ... उत्पन्न क
रहा विशाल विलासी भारी फानूस लटका हुआ था। ऐसा ही झाड़
फानूस कार्यालय के एक बार नगर के एक नेता के कोठे में देखा था...
हालांकि गुलसानोव के निकुंज में बार बार लगा रहे झाड़-फानूस
में ... के बल्ब केवल एक ही बल्ब जलता था, पर गृहस्वामी को
इस पर शर्म नहीं महसूस होती थी। गुलसानोव के आगन की प्रत्येक
वस्तु उसकी उदार प्रकृति का प्रमाण दे रही थी, और यदि वस्तुएँ
बोल सकतीं तो वे स्वामी के गौरवशाली विचार एक सुर में व्यक्त
कर उठतीं   हम ऐसे ठाठ से रहते हैं।"

फिर भी गुलसानोव को सुख-साधनों तथा सुविधाओं से तात्कालिक
स्थापित करना आता था। निकुंज के आधार का काम कंक्रीट का
तहखाना दे रहा था, जिसकी दीवारें आधी जमीन में धंसी हुई थीं।
तहखाने में हर प्रकार के खाद्य-पदार्थ रखे जा सकते थे वहाँ झुलसती
गर्मी में भी जीवनदायी शीत का साम्राज्य रहता था। निकुंज से कुछ
दूरी पर, तीव्र, पारदर्शी जलवाली नाली के मार्ग में एक छोटा-सा
हौज शीशे की तरह झिलमिला रहा था, उस पर भी कंक्रीट का पलस्तर
किया हुआ था। उसमें पानी हमेशा बर्फीला रहता था; इस पानी
में डुबोकर रखे गये अंगूर व पेय शीतल हो जाते थे और भरी गर्मी
में भूखे पेटों के लिए सौगुना अधिक लाभदायक हो जाते थे

निकुंज गृहस्वामी के गर्व का विषय था। सुलतानोव उस पर से
सन्तुष्ट व पुलकित दृष्टि हटाये बिना लम्बा-चौड़ा भाषण देता रहा

"शानदार है ना? क्यों, अध्यक्ष! तुम तो यह समझते हो
तुम जिन्दगी का मतलब जानते हो! और जिला समिति में लोग
मेरे घर को लेकर मेरी नाक में दम करते रहते हैं· तुम्हें इतने ठाठ
से   शोभा नहीं देता, लोग क्या कहेंगे! लेकिन कौन-से लोग?
... उनकी जबानों से आदमी कभी नहीं बच सकता
... से जिओ, चाहे मामूली ढंग से जिओ, आदमियों को
गरीबी दिखाने की क्या जरूरत है, अध्यक्ष? हम इसलिए

तो संघर्ष और मेहनत नहीं करते कि बुरी जिन्दगी जिये। मेरे पिता ने सन् बीस के बादवाले दशक में धनियों को यहाँ से मार भगाया था। क्या मैं उन्हें कभी मेरी खिल्ली उड़ाने का मौका दे सकता हूँ? पिता ने तो उज्ज्वल भविष्य के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया, पर बेटा, जिले का मालिक गये-गुजरे दीवाने से भी बुरी जिन्दगी जीता रहे? नहीं! जरा सब लोग देखें कि सोवियत सत्ता ने मुझे, मामूली किसान के बेटे को क्या दिया है!", सुलतानोव ने गर्वपूर्वक अपनी सम्पत्ति पर नजर दौड़ाई और कादीरोव की ओर मुड़कर गोपनीय ढंग से बोला· "मुझे – सुन रहे हो, अध्यक्ष? – मुझे एक बार सामन्त कहा गया। ऐसे ही बकने लगे· तुम्हारी चाल-ढाल, कामरेड सुलतानोव, जागीरदार-जमीन्दारों की सी है! हा! हा! लेकिन कम्युनिज्म में तो सब वैसे ही जियेंगे, जैसे मैं। क्या इसका मतलब यह है कि सब सामन्त बन जायेंगे? इसके अलावा इस सब में, जो तुम यहाँ देख रहे हो, मेरा पसीना और मेरी मेहनत की कमाई भी लगी है! क्या तुम सोचते हो, यह चहारदीवारी मेरे लिए सामूहिक किसानों ने खींची है? मैंने खुद, खुद ने उनकी मदद की – देख रहे हो मेरे हाथों में पड़े फफोले? और अगर मैंने मेरी मदद करने के लिए कहा भी, तो इसमें शर्मिन्दा होने की बात ही क्या है? मैं क्या दूसरों के लिए कम कोशिश करता हूँ? देखो, कितने बड़े ज़िले का नेतृत्व करता हूँ! यह बोझ हल्का नहीं है, भाई..." सुलतानोव एक मिनट के लिए विचारमग्न हो गया और फिर कुछ सोचकर जल्दी से बोला "अरे, मैं भी क्या अपनी बातों से तुम्हारा माथा खपाने लगा! बातें कम, काम ज्यादा करना चाहिए! चलो, निकुंज में चलते हैं, अध्यक्ष। बैठकर आराम करेंगे..."

वे लकड़ी की सीढ़ी से निकुंज में चढ़े। सुलतानोव कादीरोव के बैठने तक प्रतीक्षा किये बिना बड़े मजे से फर्श पर बिछे मार्गीलानी* रेशम के शानदार गद्दे पर, परों के गुदगुदे तकिये पर कोहनियां टिकाये टांगें पसारकर लेट गया और उसने मेहमान को भी वैसे ही गद्दे पर पालथी मारने को कहा

---

* मार्गीलान – काफी पुराने जमाने से अपने रेशमी कपड़ों के लिए प्रसिद्ध उज़्बेकिस्तान का शहर।

13 47

[illegible] से कैसे [illegible]। आप पर [illegible] सकते!'

[illegible]

[illegible] ... इसीलिए [illegible] ... किन्तु [illegible] ... मुद्रा में [illegible] ... रहा था।

"हाँ, हमारे अध्यक्ष," गुरुस्वामी आगे बोला, "अभी सब लोग ऐसे नहीं रहते हैं जैसे कि [illegible] विभाग के तौर पर जैसे कामरेड [illegible] अब नहीं।' हम नेता लोगों के तो पद ही हमें [illegible] करना चाहिए [illegible] औपचारिकता [illegible] करने को बाध्य करते हैं। हम सारी जनता की नजर में रहते हैं।' फिर जिले में मेहमान भी कम नहीं आते हैं प्रांत से भी केंद्र से भी और विदेशों से भी' और वे ठहरने किसके यहाँ हैं? जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष के यहाँ! क्योंकि मेरा घर जिले में सर्वश्रेष्ठ है। अरे जिले में ही क्या सारे प्रांत में! कुरुबायेव तक तो किसी सम्मानित अतिथि के हमारे यहाँ पधारने पर उसे मेरे यहाँ भेजते हैं खुद बड़ी खुशी से उसे ठहरा सकते हैं पर ठहराने की कोई जगह ही नहीं है।' और तुम जरा कल्पना करो कारोगोव अगर जिला कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष उसका स्वागत तंग और पुराने घर में करे तो ऐसा अतिथि क्या सोचेगा? कहेगा 'लगता है इनका जिला सबसे पिछड़े हुए जिलों में से है।' अगर यह अपना ही ख्याल नहीं रख सकता, तो फिर जनता का क्या ख्याल रख सकेगा!'

"नहीं, अध्यक्ष, नेता की प्रतिष्ठा मजबूत नींव पर टिकी होनी चाहिए! तुम जरा सोचो जनता ने हमें उच्च पद सौंपे हैं, हमें अपने ऊपर मालिक बनाकर रखा है क्या यह संयोगवश किया है? नहीं, संयोगवश नहीं। हमें जनसाधारण में से चुना गया है, क्योंकि—मैं तुम्हें साफ-साफ बता दूँ—कुछ ऐसे लोग होते हैं, जिनके भाग्य में

ही कथाकार-उपन्यासकार, इंजीनियर, लेखक वगैरह बनना लिखा होता है लेकिन ऐसे लोग भी हैं, जो मानो नेतृत्वकारी कार्यों के लिए ही पैदा हुए हैं, – जैसे तुम और मैं। तुम क्या इंजीनियर के रूप में ही अपनी कल्पना कर सकते हो? या कृषिविद के रूप में? नहीं? और मैं भी। हम नेतृत्वकारी कार्यकर्ता हैं और हम लोग गिने-चुने हैं क्योंकि हर कोई नेतृत्व करने योग्य नहीं होता। तुम ज़रा ध्यान से सुनो प्यारे, यह शब्द कैसा लगता है। मुख्तानोव ने उंगली उठाकर हर्षावेश में उच्चारण किया "'नेता!' ज़रा जीवन में हमारे स्थान के बारे में सोचो! आम जनता होती है, कहने का मतलब है – साधारण मेहनतकश। साधारण नेता, अफसर होते हैं जिन्हें जनता आगे बढ़ाती है और वे उसे अपने पीछे लेकर चलते हैं। अफसर आम जनता के आगे, और नेता – जनता के ऊपर। यह बिल्कुल युद्ध जैसा है, दस्तों के कमान-अफसर सैनिकों को लेकर हमला बोलते हैं जब कि सैनिक कमान टेकरी से युद्ध पर नज़र रखती है या नक्शे की सहायता से। उनके लिए हर बात पर नज़र रखना ज़रूरी होता है। उसकी पैनी नज़र से कुछ नहीं छूटना चाहिए! क्योंकि उसकी ज़िम्मेदारी ज़्यादा होती है! एक राज़ बताऊँ, मुझे कभी-कभी आम लोगों से ईर्ष्या होती है। अपना काम निबटाया – और आज़ाद हो गये। जो जी में आये करिये, जो जी में आये सोचिये। लेकिन मेरे कार्य का समय निश्चित नहीं है। ज़िम्मेदारी से एक मिनट तक के लिए मुक्त नहीं हो सकता। यह नहीं कि काम का दिन ख़तम हो गया, तो ज़िम्मेदारी भी ख़तम हो गयी। न ऽऽ ही, प्यारे! कभी-कभी तो आदमी रात-रात भर नहीं सो पाता, बराबर माथा खपाना पड़ जाता है कहीं ज़िले की नाक न कट जाये, आमदनी के अंदर किसी तरह ख़र्च चलावें, प्रांत के सामने अपना लेखा-जोखा किस तरह चतुराई से पेश करें? या फिर कोई ज़िम्मेदाराना भाषण देना है, लिखने बैठे, पर बात है कि बनती ही नहीं! यानी फिर तुम्हारी नींद हराम। नतीजा यह होता है कि तुम्हें अपनी कुरसी पर दिन में भी जागते रहना पड़ता है और रात में भी। तो फिर क्या मुझे अवकाश के क्षणों में आराम करने का अधिकार नहीं है? क्योंकि मुझे आराम की ज़रूरत पड़ती है काम के लिए। मुझे अपने पद के अनुरूप ऐसी ज़िन्दगी जीने का हक़ है!

13*

लाल की छटा में तो सोने की अगूठी ही निखार ला सकती है, है ना, अध्यक्ष? वरना मेहनत करना ही बेकार है।"

सुलतानोव के दिल में घर करनेवाले भाषण में भरकी आने लगी थी। कादीरोव गृहस्वामी की बात बिना पूरी तरह कान करे सुन रहा था और खुद बड़े आराम से अपनी तद्रिल-अन्यमनस्क नज़रें ख्वारेज़्मी कालीनों से भाड़-फानूस पर, भाड़-फानूस से एक कोने में लगे शीशे, शीशे से मदिग्ध रूप से अक्षत-कन्या की-सी ताज़गीवाली पुस्तकों से सजी ऊँची, खुली अलमारी पर डालता निकुंज की सज्जा का निरीक्षण कर रहा था। यह अनुमान लगाया जा सकता था कि पुस्तकों ने अपने लिए निकुंज जैसा अनुपयुक्त ठिकाना केवल गृहस्वामी की उच्च कोटि की सांस्कृतिक आवश्यकताओं का आधिकारिक प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए ही चुना था।

युवा गृहस्वामिनी को निकुंज के पास आते देख कादीरोव अपने को राहत की सांस लेने से बड़ी मुश्किल से रोक पाया सुलतानोव का शब्दाडम्बर पूरी तरह कादीरोव की समझ में नहीं आया था वह भोजन को कहीं अधिक सहजग्राह्य मानता था। पत्नी को लगन लिये देख सुलतानोव ने अपना भाषण रोक दिया और हाथ पर हाथ मारता हुआ कह उठा

तैयार हो जाओ अध्यक्ष, आदरणीय कामरेड पुलाव हमारे यहां पधार रहे हैं! "

गृहस्वामिनी ने उनके आगे पुलाव का लगन रख दिया, बारीक कटी मूली, मिट्टी के प्याले में मिर्च, नमक व सुगन्धित रैहान मिला छेना, दही ले आयी। वह तेज़ी से और बिना शोर किये चल-फिर रही थी। लगता था कालीन पर रकाबियां प्याले, तश्तरियां बिना उसके सहयोग के स्वत प्रकट होती जा रही हैं। खाना परोसकर वह वैसे ही निःशब्द गायब हो गयी, जैसे वह थी ही नहीं

अतिथि और गृहस्वामी मौन साधे पुलाव निगलने लगे।

सुलतानोव स्वा स्वाद से रहा था। वह सारे काम सुरनिपुर्ण ढग से करता था खाना, पीना, आराम करना, जुरमाना किये गये लोगों को टेलीफोन पर और मीटिंगों में अच्छी-खासी भाड़ लगाना, निर्देश देना, रिपोर्टें और सूची-पत्र तैयार करना, बाग में टहलना, फूलों

के पौधे लगाना, मेहमानों की आवभगत करना, शिकार करना। वह यदि बहस भी करता, अपनी सफाई देता या पश्चाताप करता, तब भी उसे आनन्द की अनुभूति होती वह आत्म-प्रशंसा करता चिकने, स्वादिष्ट व तेज मसालेदार-से शब्दों से भरे समोसे तैयार करने के अपने कौशल पर प्रसन्न होता एक-एक शब्द बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से बोलता।

सुलतानोव को जिन्दगी से प्यार था। बल्कि जिन्दगी से खुद से। इसी सवेदनशील व आत्मत्यागी प्रेम की खातिर उसने साधारण मनुष्य के शान्त जीवन का त्याग कर दिया था अपने सिर पर पार्टी-सदस्यता तथा उत्तरदायित्व का इतना भारी बोझ उठाने का फैसला किया था। किन्तु काम करते समय भी वह अपने व कार्य के मध्य छिड़े गहरे संघर्ष का निर्णय अपने हित मे करने का पूरी लगन से प्रयास करता खुद को एक मिनट के लिए भी नही भूलता था। इस मामले मे भी उसका अपना व्यावहारिक दर्शन था, किंचित् सरलीकरण के बाद जिसका सार यह था पद पर टिके रहने के लिए व्यस्त रहने का ढोंग रचना आवश्यक है। निस्सन्देह वह अपने "सिद्धान्त" का खुले तौर पर प्रचार नही करता था। यह फलसफा, जो उसने अभी-अभी कादीरोव के सामने झाड़ा था, वह सुलतानोव के लिए एक प्रकार से मन का बोझ हल्का करना ही था—उसके लिए किसी विश्वस्त व्यक्ति के सामने कम-से-कम उन सब बातो का एक अश ही वह डालना आवश्यक हो गया था, जो उसके मन मे घुमड रही थीं। सुलतानोव अपने "सिद्धान्त" का पालन कभी-कभी अपने व्यक्तित्व के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, आत्म-रक्षा की सहज-वृत्ति के वशीभूत होकर अनजाने में भी करता रहता था।

"आदमी कही भी काम क्यो न करे उसे सर्वप्रथम चुन-चुनकर अपने अधीनस्थ व्यक्तियों और विशेषत अपने उच्च अधिकारियो का समर्थन प्राप्त कर लेना चाहिए," —यह उसका प्रथम नीतिवचन था। उसे केवल उत्तम कर्मचारी बनना चाहिए या केवल ऐसा माना जाना चाहिए? —इस धर्मसकट का समाधान सुलतानोव बिना सोचे-विचारे अवरोक्त के पक्ष मे करता था, क्योकि वैसा होना, वैसा माने जाने से अत्यन्त कठिन होता है यदि आप प्रयास करते हैं, पर आपके

मे सारे प्रात का निरीक्षण कर लिया, कोई घटे भर मे काम के सारे मोर्चे का ध्यानपूर्वक जायजा ले लिया। ऐसे पैमाने पर काम करते है वह! प्रथम सचिव अपने सहयोगी की सक्रियता से आश्चर्यचकित रह गये, पर लगता है उन्हे किसी बात का पता तक न चल सका लेकिन सुलतानोव को इसका पता था। उसमे और अब्दुल्लायेव मे काफी पहले से पटने लगी थी। यह अब्दुल्लायेव ही तो थे, जिन्होंने जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष पद के उम्मीदवार के रूप मे सुलतानोव का नाम सुझाया था और उसका समर्थन भी किया था।

निस्सन्देह जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष के कार्य के बारे मे राय केवल रिपोर्टों व भाषणो के आधार पर नही, बल्कि सर्वप्रथम जिले की प्रत्यक्ष स्थिति के आधार पर कायम की जाती है। लेकिन उसके जिले मे काम कुल मिलाकर ढग से चल रहा है सामूहिक किसान कोशिश तो कर ही रहे हैं! फिर जिला समिति भी ऊघती नही रहती। अभी तक जिला समिति जिले के आर्थिक निर्देशन के रूप मे काफी जिम्मेदारिया अपने ऊपर लेती आयी थी, और सुलतानोव इससे पूर्णतया सन्तुष्ट था। उसे स्थानीय सोवियतो के अधिकारो के विस्तारण की बात बिलकुल भी पसन्द नही थी। वह वैसे ही काफी पहलकदमिया करता रहा है, जब रिपोर्टों मे खटकनेवाली बातो को दबाना पडता था। अधिकारो के विस्तारण मे जिम्मेदारी बढ जाने का खतरा पैदा हो जाता है और कुछ भी हो, जिम्मेदारी उठाने से उसके बारे मे बाते करना कही ज्यादा अच्छा लगता है। इस तरह तो जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष के पद का आकर्षण ही समाप्त हो जायेगा

लेकिन जब तक पद सुलतानोव को पसन्द रहा, वह उसकी बाहरी हस्तक्षेपो से रक्षा करते हुए इस मे इतना सफल हुआ कि उसे जिले मे भी, प्रात मे भी नियमित वक्ता (नेताओ मे इसी की तो कदर की जाती है) और कार्य मे अत्यधिक व्यस्त व्यक्ति के रूप मे जाना जाने लगा। भले ही सब अपनी आखो से देखकर आश्वस्त न हो पाये हो कि वह कितना व्यस्त रहता है, पर इस बारे मे कम-से-कम सभी को मालूम था। तिस पर अब्दुल्लायेव सदा जोर देकर कहते रहते थे कि सुलतानोव अत्यन्त अध्यवसायी कर्मचारी है

सुलतानोव को पता भी नही चला कि पुलाव का लगन कब उसके

पेंदे में अंकित गृहस्वामी के कुलनाम तक खाली हो गया। उसने बुरी तरह हाफ रहे कादीरोव की ओर जिन्दादिली से देखकर पेशकश की

"एक बार और हो जाये, अध्यक्ष? पुलाव तो ऐसा पका है कि सब उगलियां ही चाटते रह जाओ।"

कादीरोव निढाल होकर तकियों पर ढुलक गया और उसने अपना लाल हुआ चेहरा निकुंज के आर-पार बह रही हवा के हल्के झोंके की ओर कर लिया

"ठहरो, कामरेड मुलतानोव जरा दम तो ले लेने दो।"

"अरे, हम तो धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके "

"ठहरो। मैं आखिर यहाँ खाने तो आया नहीं हूँ। मुझे तुमसे एक बात करनी है।"

"तो पुलाव खाते-खाते ही बातचीत भी कर लेंगे या नहीं, चलो पहले काम निबटा ले। अच्छा, बताओ, क्या बात है?"

"हमारे सामूहिक फार्म में लोग ग्राम सोवियत के अध्यक्ष से नाखुश हैं।"

"उमूरज़ाकोवा से?" मुलतानोव ने खीसे निपोड़ी और अपनी गरदन पर मुक्का मारा। "मेरे यहाँ सवार हो रही है, तुम्हारी उमूरज़ाकोवा! अच्छा, अच्छा, बताओ!"

"बात यह है कि उसे अपने पर बहुत घमण्ड हो गया है," कादीरोव ने उदासी से कहा। "सामूहिक फार्म में अपने घर की तरह हुक्म चलाती है और उसे अपनी अछूती धरती के सिवा कुछ सूझता ही नहीं है।"

"*अड़ियल हठधर्मिता है,*" *मुलतानोव ने निर्णय दिया।*

"और क्या! उसके मुह से बस यही सुनाई देता है अछूती धरती, अछूती धरती! जब कि इस अछूती धरती ने सामूहिक फार्म का सारा अर्क निचोड़ लिया है! इस तरह हमारी योजना भंग हो सकती है!

यह बात है?"

'और भंग होगी ही! आंधी ने हमें ऐसी धमकियां दी हैं कि हमें अभी तक होश नहीं आ पा रहा है। अब किसे फुरसत है अछूती धरती के लिए!

"ठीक कहते हो, अध्यक्ष। सारे लोगों को आंधी से हुई हानि को दूर करने के लिए संघटित करना चाहिए।"

"मैंने संघटित किया। लेकिन मुझे इसके लिए ही डांट खानी पड़ी।"

"उमूरज़ाकोवा से?"

"उससे भी और जुराबायेव से भी।"

"अच्छा फिर?"

"फिर कपास की रक्षा करने के लिए मैंने लोगों को बस्ती के निर्माण कार्य से हटाकर अछूती धरती में भेजा। कुल मिलाकर मैंने दृढ़ कदम उठाये। उमूरज़ाकोवा मुझ पर बाज़ की तरह टूट पड़ी! कहने लगी 'तुम्हें जनता पर विश्वास नहीं है। जनता में इतनी शक्ति है कि अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने के लिए भी काफी रहेगी और कपास की रक्षा करने के लिए भी।'"

"कोरी लफ्फाजी है!"

जाहिर है, लफ्फाजी ही है! बस इससे मुझे कोई राहत नहीं मिलती। उमूरज़ाकोवा सब कुछ पहले की तरह बनाये रखने में कामयाब हो गयी खेतों में लोग कम पड़ रहे हैं, और हम हैं कि बस्ती बनाकर अपना दिल बहला रहे हैं।"

सुलतानोव कादीरोव की बात सुनता रहा, इसके साथ-साथ वह मन-ही-मन उस सूत्र को खोज रहा था, जिसके अंतर्गत उमूरज़ाकोवा की गतिविधियों की परिभाषा की जा सके। सूत्रबद्ध करने से सुलतानोव को बहुत शान्ति मिलती थी, उसे अपनी सूत्रबद्ध करने की शक्ति में विश्वास था और वह जानता था कि थोड़े-से सूत्र प्रमाणों व प्रमाणीकरण से अधिक कारगर होते हैं किसी पर ठप्पा लगा दीजिये, फिर आपको नहीं, बल्कि उसको ही अपनी सफाई पेश करनी होगी।

"तो यह बात है जानते हो, अध्यक्ष, इसे क्या कहते हैं? स्वेच्छाचारिता! उमूरज़ाकोवा अपने को एक छोटा-मोटा अधिनायक समझ बैठी है जो उसके दिमाग में आता है, बस वही अच्छा है! और बाकी लोगों की राय पर ध्यान देने की ज़रूरत ही नहीं है। ज़रा याद करो, यह अछूती धरतीवाला बखेड़ा शुरू कैसे हुआ था। उमूरज़ाकोवा ने मेरी भी परवाह नहीं की, हालांकि प्रत्यक्ष रूप से

यह मेरे ही अधीन है। मैंने उसे एक बार फिर सब सोचने-विचारने, जल्दबाजी न करने की कितनी ही सलाह क्यों न दी, पर वह अपनी योजना लेकर भागी-भागी जुरावायेव के पास पहुंच गयी! उसने मेरी परवाह किये बिना कार्रवाई करने का फैसला कर लिया! लेकिन नतीजा क्या हुआ? जिला समिति ने प्रस्ताव पास कर दिया—हालांकि मैंने ब्यूरो की बैठक में चेतावनी दे दी थी कि उमुर्जाकोवा की जोखिमभरी योजनाएं पार्टी के निर्देशों के पूर्णतया प्रतिकूल हैं,—जब कि उन्हें पूरा करने की जिम्मेदारी जिला कार्यकारिणी समितिवालों और सामूहिक फार्मों के अध्यक्षों को सौंपी गयी है! यह भी उमुर्जाकोवा की ही चालें हैं! वह सबसे ज्यादा शोर मचाती है, उसकी बातें सुनी जायें, तो लगता है कि स्थानीय सोवियतों के पास अपने काम कम हैं, यानी उन्हें और काम सौंप दिये जायें। इसीलिए जिला समिति ने हमारे साथ यह बोझ बांट लिया... हूं... यानी, तुम कहते हो, वह अपनी बात पर अड़ी रही?" सुलतानोव ने हाथ फैलाकर आनन्दपूर्वक जम्हाई ली और व्यंग्यपूर्ण लापरवाही से कह उठा "बेवकूफ हो तुम सब के सब... बेवकूफ हो! एक छोकरी तक को सीधा नहीं कर सकते।"

"पर उसने तो सबके दिमाग खराब कर दिये हैं! जनता भी पागल-सी हो उठी है: सब छोड़ दो और उन्हें अछूती धरती दो!"

"लोग तो हमारे यहां हैं ही ऐसे, उन्हें बस शोर मचाने का मौका मिलना चाहिए। लोगों को तो परी-कथाएं अच्छी लगती हैं। क्योंकि परी-कथाओं में तो सभी महावीर होते हैं ना! तुम मुझे बस यह बताओ: क्या तुम्हारे सामूहिक फार्म में संजीदा और अक्लमंद लोग नहीं हैं?"

कादीरोव ने साश्चर्य सुलतानोव की ओर देखा: वह मानो भांप गया था कि बेवक्त आये मेहमान का इरादा क्या है। यानी इसका मतलब यह था कि उनके विचार एक दूसरे से मिलते-जुलते थे... जब यही बात है, तो शर्माने की जरूरत ही क्या रह गयी। और कादीरोव दृढ़ स्वर में कहने लगा:

"उन्हीं लोगों ने तो मुझे तुम्हारे पास भेजा है, कामरेड सुलतानोव। हमारे "सक्रिय कार्यकर्त्ताओं" ने हमारी नाक में दम कर दिया है, हमारे धैर्य का बांध टूट चुका है! समझ में नहीं आता कि क्या करें—

सामूहिक फार्म का उत्थान करे, या उमूरज़ाकोवा के साथ जूझे। ऐसी बहसो मे सिर्फ काम मे ध्यान ही हटता है। इसीलिए हमने फैसला किया है "

"ऐ "हम" कौन-कौन है?"

"तुम डरो मत, कामरेड मुलतानोव, ये सब लोग काबिल है। उन्होने ही उमूरज़ाकोवा की सारी करतूतो के बारे मे ज़िले के समाचारपत्र मे छापने की सलाह दी है। उसके बाद, हो सकता है, प्रान्तीय समाचारपत्र मे भी। मैं यह पत्र लाया हूँ जिसे कहना चाहिए नोट "

कादीरोव ने फौजी कमीज़ की जेब खोलकर उसमे से अच्छी तरह तह किया हुआ कागज़ निकालकर मुलतानोव की ओर बढाया।

"ओहो!" मुलतानोव मे जान आ गयी। "मालूम पडता है तुम लोगो ने सारी बातो का ध्यान रखा है! किसने लिखा है?"

"लिखा तो सभी ने है लेकिन इस पर हस्ताक्षर हमारे कार्यालय की कर्मचारी नज़ाकतखा और टोली-नायक मुल्ला-सुलैमान ने किये हैं। उनके खेतो को ही तो आंधी से सबसे ज़्यादा नुकसान पहुँचा है। वहाँ कपास बरबाद हो गयी!"

"क्या कहा, बरबाद हो गयी? यह तो बहुत ही अच्छी बात है " किन्तु मुलतानोव तत्क्षण चुप हो गया और शोक व महानुभूतिपूर्ण मुखमुद्रा बना ली। "अफसोस की बात है, बहुत अफसोस की। इसके लिए किसी को बहुत कडी सज़ा भुगतनी पडेगी।"

"बेशक! "

"इसका मतलब यह है," मुलतानोव ने कहा, "कि इस पत्र को लिखनेवालो मे से एक सामूहिक फार्म के कार्यालय मे काम करता है, दूसरा मुक्तभोगी टोली-नायक है। यह तो अच्छी बात है। उन्हे ही तो सारी बातो की जानकारी है उन पर लोग ज़रूर विश्वास करेंगे।"

कादीरोव को फिर आश्चर्य हुआ इस बार इसलिए कि मुलतानोव तथा अलीकुल के विचारो मे कितनी समानता है।

और मुलतानोव बोल-बोलकर सोच-विचार करता रहा

"नज़ाकतखा के पिता ने भी अपने सद्गुण सबके सामने रखे

है। बहुत ही बढ़िया मामला है! हूं... जानते हो, भाग्य यह लिखा हुआ नहीं है। भाग्य की बनावट... हुआ नहीं है! इस बात का भी अफसोस होता है कि यह बात मेरे दिमाग में नहीं आयी। आखिर हम पेरा के बारे में भूल कैसे गये? अब तो हम तुम्हारी इस उम्मीद-वारी को बाल बराबर बाहर निकाल दूं! ज़रा ठहरो, मैं अभी आता

गुस्तानोव कुर्सी से उठकर दस मन्जिला टेलीफोन की ओर बढ़ा, जो दीवार के एक खंभे पर लगा था।

मुझे समाचार-पत्र का नम्बर चाहिए। आप क्या बहरे हो गये हैं? मुझे समाचार-पत्र की लाइन दीजिये। मैं गुस्तानोव बोल रहा हूं... समाचार-पत्र? ज़रा पुपुर्री को बुला दीजिये... अस्सलाम-अलैकुम प्यारे! अरे हां, और कौन हो सकता है? हां-हां, सुनो, क्या तुम थोड़ी देर को मेरे यहां आ सकते हो? बहुत ही अच्छी बात है। क्या? अरे, ऐसे ही एक मज़ेदार मसाला है। हां-हां! तोहफा हुआ अगर ठीक से पेश आओगे! फ़ौरन, फ़ौरन, वरना हमारे यहां चुनाव ठण्डा हुआ जा रहा है।

गुस्तानोव के अपने स्थान पर लौटने पर कादीरोव ने तकिये पर चमकते पत्र की ओर संकेत करके याद दिलाया

"तुम पढ़ तो लेते कि हमने इसमें क्या-क्या लिखा है..."

"अभी लो, अध्यक्ष, हर काम का अपना वक्त होता है।"

गुस्तानोव ने बड़े आराम से सींग के बने फ्रेमवाला चश्मा नाक पर चढ़ाया और कादीरोव का लाया पत्र बिलकुल आंखों के करीब लाकर पढ़ने में मग्न हो गया। वह पढ़ता भी सुरुचिपूर्ण ढंग से था, प्रत्येक पंक्ति का आनन्द लेते हुए, जो अंश उसे पसन्द आ रहे थे और जिन अंशों के बारे में सन्देह उत्पन्न होता उनके प्रति अपने मत को रेखांकित करते हुए। कभी वह असन्तोष से अपनी कोयले जैसी काली भौंहें हिलाने लगता था, कभी प्रशंसात्मक विजयपूर्ण ढंग से खुलकर हंसने लगता था, तो कभी खुशी के मारे चटकारे भरता कह उठता था "वाह शाबाश! कितना ज़ोरदार लिखा है!" पत्र पूरा पढ़कर वह कोई एक मिनट तक कुछ सोचता रहा और फिर द्वेषपूर्वक आंखें सिकोड़े ... किसी को सम्बोधित किये धमकियां देने लगा

"जरा ठहर तू ऐसे सस्ते मे नही छूट सकेगा !" किन्तु तत्क्षण चुप हो गया और खिली मुस्कान के साथ विनोदपूर्वक शिकायत करने लगा "न जाने क्यो देर कर रहा है यह अखबारी रुस्तम ! जब कि कहता था मेरा एक पैर यहां, दूसरा – वहां होगा। मालूम है, अध्यक्ष, उसके पैर कैसे है ? पाबासो-से ?"

फिर भी यूसुफी ऐन वक्त पर आ पहुँचा – ठीक उसी क्षण जब लगन मे पुलाव दुबारा परोसा गया।

अखबारनवीस कुछ केचुए जैसा लगता था वह केचुए की तरह लम्बा और पतला और केचुए जैसा ही उबाऊ और मटमैला था। उसकी आखो मे कोई भाव नही झलक रहा था, जिस पर ऐनक के मोटे-मोटे शीशे उन्हे बडी मजबूती से ढके हुए थे। यूसुफी का चेहरा लम्बोतरा और उसकी ऐनक बहुत बडी थी, इसलिए उसकी आखे शीशो से उतनी नजर नही आती थी, जितने कि खोपडी से चिपके कान। पतले, रक्तहीन होठ शायद नही जानते थे कि मुस्कान किसे कहते हैं। साही के कांटो-से एकसार खडे बाल किंचित धूसर, मटमैले रग के थे यूसुफी के कधो पर पुराना मटमैला कोट ऐसे लटका हुआ था जैसे हैगर पर टगा हुआ हो, किरमिच के बूट उसकी लम्बी व पतली टागो के लिए बहुत बडे थे, लगता था जैसे बूट मे पैर वैसे ही घूम रहा है, जैसे घानी मे लट्ठा। यूसुफी की आयु का अनुमान लगाना कठिन था, जब कि उसका रुझान जान पाना इससे भी ज्यादा मुश्किल था और भावनाओ व विचारो का अन्दाज लगाना तो पूर्णतया असम्भव था। उसके शुष्क चेहरे की वर्णहीनता, अनभिव्यक्ति व रहस्यात्मकता सम्भाषी को भयभीत कर देती थी।

उच्च अधिकारियों के साथ यूसुफी पूरी आजादी के साथ तो नही, पर बिना जीहुजूरी से पेश आता था। उसने अनिच्छा से पहले सुलतानोव से और फिर कादीरोव से हाथ मिलाया और गद्दे पर इतनी चतुराई से बैठ गया कि उसके भोंडे पैरो ने किसी को परेशान नही किया। अपने ऐन मौके पर पहुँचने के बारे मे घिसा-पिटा मजाक सुनाकर यूसुफी बडी बेतकल्लुफी से पुलाव पर टूट पडा। वह जल्दी-जल्दी और खूब खा रहा था, उसकी ठोडी पर चर्बी बह रही थी, चर्बी उसके कोट की चिक्कट लौटों पर भी टपक रही थी।

है। बहुत ही बढ़िया कलाकार है! हूँ... नाचते हो... अच्छा, पर लिखता बुरा नहीं है। अच्छाई की कमान पूरा नहीं है! इस बात का भी अफ़सोस होता है कि यह बात मेरे दिमाग़ में नहीं आयी। आख़िर हम देश के बारे में भूल कैसे गये? अब तो हम तुम्हारी इस उम्र आकांक्षा को कस पकड़कर बाहर निकाल देंगे! ज़रा ठहरो, मैं अभी आता

गुलतालोव कुर्सी से उठकर इस कमरा टेलीफ़ोन की ओर बढ़ा जो खिड़की के पास खम्भे पर लगा था।

मुझे सम्पादक-महोदय का नम्बर चाहिए। आप क्या बहरे हो गये हैं? मुझे सम्पादक-महोदय की लाइन दीजिये। मैं गुलतालोव बोल रहा हूँ। सम्पादक-महोदय? ज़रा पुगुर्री को बुला दीजिये। अस्सलाम-अलैकुम प्यारे! अरे हाँ, और कौन हो सकता है? हा-हा! सुनो, क्या तुम थोड़ी देर को मेरे यहाँ आ सकते हो? बहुत ही अच्छी बात है। क्या? अरे, ऐसे ही एक मज़ेदार मसाला है। हा-हा! तोहफ़ा हुआ, अगर ठीक से पेश आओगे! फ़ौरन, फ़ौरन, वरना हमारे यहाँ चुनाव ठण्डा हुआ जा रहा है।

गुलतालोव के अपने स्थान पर लौटने पर कादीरोव ने तकिये पर चमकते पत्र की ओर गर्दन करके याद दिलाया

"तुम पढ़ तो लेते कि हमने इसमें क्या-क्या लिखा है"

"अभी तो, अध्यक्ष, हर काम का अपना वक्त होता है।"

गुलतालोव ने बड़े आराम से सींग के बने फ्रेमवाला चश्मा नाक पर चढ़ाया और कादीरोव का लाया पत्र बिलकुल आँखों के करीब लाकर पढ़ने में मग्न हो गया। वह पढ़ता भी सुरुचिपूर्ण ढंग से था, प्रत्येक पंक्ति का आनन्द लेते हुए, जो अंश उसे पसन्द आ रहे थे और जिन अंशों के बारे में सन्देह उत्पन्न होता उनके प्रति अपने मन को रेखांकित करते हुए। कभी वह असन्तोष से अपनी कोयले जैसी काली भौंहें हिलाने लगता था, कभी प्रशंसात्मक विजयपूर्ण ढंग से खुलकर हँसने लगता था, तो कभी ख़ुशी के मारे चटकारे भरता कह उठता था "वाह शाबाश! कितना ज़ोरदार लिखा है!" पत्र पूरा पढ़कर वह कोई एक मिनट तक कुछ सोचता रहा और फिर द्वेषपूर्वक आँखें सिकोड़े बिना किसी को सम्बोधित किये धमकियाँ देने लगा

"ज़रा ठहर तू ऐसे सस्ते मे नही छूट सकेगा!" किन्तु तत्क्षण चुप हो गया और खिली मुस्कान के साथ विनोदपूर्वक शिकायत करने लगा "न जाने क्यो देर कर रहा है यह असवारी रुस्तम! जब कि कहता था मेरा एक पैर यहाँ, दूसरा – वहाँ होगा। मालूम है, अध्यक्ष, उसके पैर कैसे है? पावासों-से?"

फिर भी यूसुफ़ी ऐन वक्त पर आ पहुँचा – ठीक उसी क्षण, जब लगन मे पुलाव दुबारा परोसा गया।

अखबारनवीस कुछ केंचुए जैसा लगता था वह केंचुए की तरह लम्बा और पतला और केंचुए जैसा ही उबाऊ और मटमैला था। उसकी आखो मे कोई भाव नही झलक रहा था, तिस पर ऐनक के मोटे-मोटे शीशे उन्हें बडी मजबूती से ढके हुए थे। यूसुफ़ी का चेहरा लम्बोतरा और उसकी ऐनक बहुत बडी थी, इसलिए उसकी आखे शीशो मे उतनी नज़र नही आती थी, जितने कि खोपडी से चिपके कान। पतले, रक्तहीन होठ शायद नही जानते थे कि मुस्कान किसे कहते है। साही के काँटो-से एकसार खडे बाल किंचित धूसर, मटमैले रग के थे यूसुफ़ी के कधो पर पुराना मटमैला कोट ऐसे लटका हुआ था, जैसे हैंगर पर टगा हुआ हो, किरमिच के बूट उसकी लम्बी व पतली टागो के लिए बहुत बडे थे, लगता था जैसे बूट मे पैर वैसे ही घूम रहा है, जैसे घानी मे लट्टू। यूसुफ़ी की आयु का अनुमान लगाना कठिन था, जब कि उसका रुझान जान पाना इससे भी ज्यादा मुश्किल था और भावनाओ व विचारो का अन्दाज लगाना तो पूर्णतया असम्भव था। उसके शुष्क चेहरे की वर्णहीनता, अनभिव्यक्ति व रहस्यात्मकता सम्भाषी को भयभीत कर देती थी।

उच्च अधिकारियो के साथ यूसुफ़ी पूरी आज़ादी के साथ तो नही, पर बिना जीहुज़ूरी से पेश आता था। उसने अनिच्छा से पहले मुलतानोव से और फिर कादीरोव से हाथ मिलाया और गद्दे पर इतनी चतुराई से बैठ गया कि उसके भोंडे पैरो ने किसी को परेशान नही किया। अपने ऐन मौके पर पहुँचने के बारे मे घिसा-पिटा मज़ाक सुनाकर यूसुफ़ी बडी बेतकल्लुफी से पुलाव पर टूट पडा। वह जल्दी-जल्दी और खूब खा रहा था, उसकी ठोढी पर चर्बी बह रही थी, चर्बी उसके कोट की चिक्कट लौटो पर भी टपक रही थी।

है। बहुत ही बढ़िया कारनामा है [illegible] जानते हो [illegible] पर लिखा गया नहीं है। सुल्तान की कलम [illegible] नहीं है। तुम बस यह मैं असन्तोष होता है कि यह खत मेरे दिमाग में नहीं आयी। लेकिन इस लेख के बारे में भूल कैसे सके? बस यों हम सुल्तानी इस [illegible] मल्कोवास का काम [illegible] बाहर निकाल देंगे! जरा ठहरो, मैं अभी आता

गुलतानोव कुर्सी से उठकर बड़ा भारी टेलीफोन की ओर बढ़ा जो खिड़की के एक कोने पर लगा था।

मुझे सम्पादक साहब का नम्बर चाहिए। आप क्या कहते हो रहे हैं? मुझे सम्पादक साहब की लाइन दीजिये। मैं गुलतानोव बोल रहा हूं सम्पादक साहब! जरा सुपुर्दी को सुना दीजिये अस्सलाम-अलैकुम प्यारे! अरे हां और कौन हो सकता है? हां-हां सुनो क्या तुम थोड़ी देर को मेरे यहां आ सकते हो? बहुत ही अच्छी बात है। क्या? अरे लेख ही एक मजेदार मसाला है। हां-हां! नोटबुक दुगना असर ठीक से पेश आओगे! फौरन फौरन वरना हमारे यहां पुलाव ठंडा हुआ जा रहा है।

गुलतानोव के अपने स्थान पर लौटने पर कादीरोव ने तकिये पर चमकते पत्र की ओर संकेत करके याद दिलाया

तुम पढ़ तो लेते कि हमने उसमें क्या-क्या लिखा है

'अभी तो अभ्यास हर काम का अपना वक्त होता है।'

गुलतानोव ने बड़े आराम से सींग के बने फ्रेमवाला चश्मा नाक पर चढ़ाया और कादीरोव का लाया पत्र बिलकुल आंखों के करीब लाकर पढ़ने में मग्न हो गया। वह पढ़ता भी रुचिपूर्ण ढंग से था, प्रत्येक पंक्ति का आनन्द लेते हुए, जो अंश उसे पसन्द आ रहे थे और जिन अंशों के बारे में सन्देह उत्पन्न होता उनके प्रति अपने मन को रेखांकित करते हुए। कभी वह असन्तोष से अपनी कोयले जैसी काली भौंहें हिलाने लगता था, कभी प्रशंसात्मक विजयपूर्ण ढंग से खुलकर हंसने लगता था, तो कभी खुशी के मारे चटकारे भरता वह उठता था "वाह शाबाश! कितना जोरदार लिखा है!" पत्र पूरा पढ़कर वह कोई एक मिनट तक कुछ सोचता रहा और फिर द्वेषपूर्वक आंखें सिकोड़े बिना किसी को सम्बोधित किये धमकियां देने लगा

"जरा ठहर तू ऐसे सस्ते में नहीं छूट सकेगा!" किन्तु तत्क्षण चुप हो गया और खिली मुस्कान के साथ विनोदपूर्वक शिकायत करने लगा "न जाने क्यों देर कर रहा है यह असवारी रुस्तम! जब कि कहता था मेरा एक पैर यहां, दूसरा – वहां होगा। मालूम है, अध्यक्ष, उसके पैर कैसे हैं? पावासों-से?"

फिर भी यूसुफी ऐन वक्त पर आ पहुँचा – ठीक उसी क्षण, जब लगन में पुलाव दुबारा परोसा गया।

असवारनवीस कुछ केंचुए जैसा लगता था वह केंचुए की तरह लम्बा और पतला और केंचुए जैसा ही उबाऊ और मटमैला था। उसकी आंखों में कोई भाव नहीं झलक रहा था, तिस पर ऐनक के मोटे-मोटे शीशे उन्हें बड़ी मजबूती से ढके हुए थे। यूसुफी का चेहरा लम्बोतरा और उसकी ऐनक बहुत बड़ी थी, इसलिए उसकी आंखें शीशों में उतनी नजर नहीं आती थीं, जितने कि खोपड़ी से चिपके कान। पतले, रक्तहीन होंठ शायद नहीं जानते थे कि मुस्कान किसे कहते हैं। साही के कांटों-से एकसार खड़े बाल किंचित धूसर, मटमैले रंग के थे यूसुफी के कंधों पर पुराना मटमैला कोट ऐसे लटका हुआ था, जैसे हैंगर पर टंगा हुआ हो, किरमिच के बूट उसकी लम्बी व पतली टांगों के लिए बहुत बड़े थे, लगता था जैसे बूट में पैर वैसे ही घूम रहा है, जैसे घानी में लट्ठा। यूसुफी की आयु का अनुमान लगाना कठिन था, जब कि उसका रुझान जान पाना इससे भी ज्यादा मुश्किल था और भावनाओं व विचारों का अन्दाज लगाना तो पूर्णतया असम्भव था। उसके शुष्क चेहरे की वर्णहीनता, अनभिव्यक्ति व रहस्यात्मकता सम्भाषी को भयभीत कर देती थी।

उच्च अधिकारियों के साथ यूसुफी पूरी आजादी के साथ तो नहीं, पर बिना जीहुजूरी से पेश आता था। उसने अनिच्छा से पहले मुल्लानोव से और फिर कादीरोव से हाथ मिलाया और गद्दे पर इतनी चतुराई से बैठ गया कि उसके भोंडे पैरों ने किसी को परेशान नहीं किया। अपने ऐन मौके पर पहुँचने के बारे में घिसा-पिटा मजाक सुनाकर यूसुफी बड़ी बेतकल्लुफी से पुलाव पर टूट पड़ा। वह जल्दी-जल्दी और खूब खा रहा था, उसकी ठोड़ी पर चर्बी बह रही थी, चर्बी उसके कोट की चिक्कट लौटों पर भी टपक रही थी।

मुलतानोव हालांकि उसके ऊपर अपने अधिकार का अनुभव कर रहा था, फिर भी उसने अखबारनवीस को मनाने की इच्छा से बातचीत की शुरुआत "अखबारी रुस्तम" को सम्बोधित कर सुनायी गयी मज़ाकिया प्रशंसा से ही की।

"अध्यक्ष, तुम इसकी सादगी पर मत जाओ! यह अपने व्यंग्यात्मक लेख भयानक तख़ल्लुस "उत्कीर"* के नाम से यों ही नहीं लिखता है। इसकी कलम की नोक में ज़हर रहता है!" फिर उसने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ आगे कहा, "क्यों? मार ही डालता है ना? सच है ना? सच कहूँ, तो मैं खुद भी इससे खौफ़ खाता हूँ हा-हा "

अखबारनवीस के पतले होंठों पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान की छाया झलकी। सच कहें, तो वह इस बात पर बहुत खुश हो रहा था कि मुलतानोव ने उसका स्वागत सम्मानित अतिथि की तरह किया है, किन्तु अपनी प्रसन्नता प्रकट नहीं होने दे रहा था।

बातचीत में शनैः शनैः रंग आने लगा। मुलतानोव ने उसे प्राप्त हुई दीर्घकालीन भविष्यवाणी के बारे में बताया, जिसके अनुसार अच्छे दिनों के आने की आशा थी, चटकारे ले-लेकर उन ज़िम्मेदार कामरेडों के निजी जीवन के कुछ चटपटे किस्से सुनाये, जिन्होंने उसकी फलदायक गतिविधियों के किसी न किसी चरण में उसे अपना संरक्षण प्रदान किया था। कादीरोव ने बड़े उत्साह के साथ बताया कि किस प्रकार उसके सजग नेतृत्व में सामूहिक किसान हाल ही में आंधी से जूझे थे। यहाँ तक कि यूसुफ़ी ने भी पाठकों के कुछ पत्रों के बारे में बताया, जिनसे उसने यानी यूसुफ़ी ने काफ़ी "मसालेदार" लेख तैयार किये थे।

चुटकुलों के बाद उनका स्थान मज़ेदार किस्सों ने, डींगभरी कहानियों ने लिया, फिर—एक दूसरे की तारीफ़ों के पुल बांधे जाने लगे।

लेकिन सम्भाषी केवल एक ही चीज़ के बारे में बात नहीं कर रहे थे, उस पत्र के बारे में जिस के कारण यूसुफ़ी को बुलाया गया था और जिसकी वजह से कादीरोव वहाँ आया था। अखबारनवीस जानता था कि मुलतानोव ने उसे व्यर्थ नहीं बुलवाया है। इसका मतलब

* —पैना (उज़्बेकी भाषा में)।

यही है कि काम गम्भीर है, यानी यह काम पूरा करना ही होगा। इस तरह का खाना इस लायक था कि मालिक के लिए दिल से मेहनत की जाये। कादीरोव भी सुल्तानोव पर भरोसा रखे चुप था यह सुल्तानोव के सामने खुद को दब्बू व अनुभवहीन भेड़ मानता था। मेजबान व मेहमानों के मध्य परस्पर मौन समझ की भावना उत्पन्न हो गयी थी

दावत के अन्त में सुल्तानोव ने ऐसे जैसे उसे किसी नगण्य बात का स्मरण हो आया हो बड़ी बेफिक्री से यूसुफी को कादीरोव का पत्र दे दिया

"लो प्यारे, पढ़ डालो।

यूसुफी ने पत्र को निरछा रख उस पर सरसरी नजर डाल दस्त खतों को देखकर अनिश्चित स्वर में हुंकार भरी

हूं को दस्तखत है?

'क्या कुछ गड़बड़ है?' कादीरोव ने चिन्तित स्वर में पूछा।

'नहीं, नहीं पत्र विश्वासजनक है। लेकिन दो दस्तखत कुछ कम है! हूं अगर मैं इसमें छोटा-मोटा लेख गढ़ डालूं, तो कैसा रहे?"

"जैसे बेहतर रहे, वैसे ही करो प्यारे," सुल्तानोव ने क्लान्त स्वर में उत्तर दिया। सामूहिक फार्म चले जाओ। लोगों से बात करो। वहां ऐसे कामरेड है, जो भरोसा करने लायक है। मिसाल के तौर पर उर्वरता समिति का अध्यक्ष अलीकुल फिर मु मु

"मुरातअली से बात की जा सकती है ' कादीरोव ने सुझाया।

"हां, मुरातअली से बात कर लेना। पर वह कौन है?"

"हमारे श्रेष्ठ टोली-नायकों में से एक। उमूरजाकोवा से सख्त नाराज है। नयी बस्ती मे जाकर नही बसना चाहता।"

"यह तो बहुत अच्छा होगा " सुल्तानोव ने कहा। और यूसुफी को सम्बोधित कर धीरे से कह बैठा "वैसे तुम्हें सिखाने की जरूरत ही क्या है! विद्वान को शिक्षा देना – उसे बिगाड़ देना ही होना है। तुम खुद सब पता लगा लोगे। कादीरोव तुम्हारी मदद करेगा। और यह काम निबटने पर सब शिकार पर जायेंगे। स्तेपी में हिरन बहुत है ना, अध्यक्ष?"

"अभी तक एक भी शिकारी खाली हाथ नहीं लौटा है! हिरन खुद गोलियों के आगे सीना करते हैं।"

"वाह, क्या कहने! खूब शिकार मारेंगे और अब दोस्तो, एकाध घंटे की झपकी लेने का सुझाव पेश करता हूँ आखिर मुझे शाम को काम करना है "

प्रस्ताव एकमत से स्वीकार कर लिया गया।

शाम को कादीरोव को विदा करते समय सुलतानोव उसके कंधे पर हाथ रखकर डींग हाकता हुआ बोला

"देखा, काम कैसे हो रहा है? जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, तुम्हें किसी बात की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है। सब ठीक हो जायेगा!"

कादीरोव के दिल में फिर शंकाओं का तूफ़ान मच गया। उसने एक ठण्डी सांस ली

"हम कहीं बुरा तो नहीं कर रहे हैं?"

"अरे दोस्त, तुम भी क्या, आग भड़काकर खुद रफूचक्कर होना चाहते हो? न ऽऽ ही, ऐसे काम नहीं चलनेवाला पीछे हटने का मौका निकल चुका है। और यह गांठ बांध लो, प्यारे जंग और प्यार में सब जायज़ है "

सत्तरह

मेखरी और करीम

गरमियों के रविवार की एक शाम को अलतीनसाय में ताशकन्द के कलाकारों का एक कंसर्ट आयोजित किया जानेवाला था।

अलतीनसाय के युवाओं का चैन जाता रहा आखिर राजधानी के कलाकार आनेवाले हैं, कोई मज़ाक थोड़े ही है! बहुत से अलतीनसायवासियों ने उनके कार्यक्रम रेडियो पर सुने थे, पर उन्हें अपने यहाँ सामूहिक फार्म में देखने का अवसर अभी तक नहीं मिल पाया था। हालांकि हाथ से लिखे पोस्टरों पर कंसर्ट के दिन की सूचना दी

जा चुकी थी, पर युवक-युवतियों से शायद रहा नहीं जा रहा था, वे एक मिनट की फुरसत पाते ही फौरन आलिमजान, करीम या आयकोज़ के पास पहुंच जाते और एक ही सवाल पूछते कलाकार आये या नहीं? आयकोज़ उन्हें धैर्यपूर्वक समझाती कि कंसर्ट के होने में अभी इतने दिन बाकी हैं और इसकी घोषणा पोस्टरों में की जा चुकी है। आलिमजान जब उसके पास ग्राम सोवियत में आया, तो उसने थककर शिकायत की

"देख रहे हो, कंसर्ट हमारे किसानों के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण घटना है! लगता है हम उनको जरूरत से ज्यादा नहीं बिगाड़ते है।"

हमारा क्या दोष है? ऐसी परम्परा ही पड़ी हुई है विख्यात कलाकार नामी सामूहिक फार्मों में ही कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं", आलिमजान व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया। "जैसे उन सामूहिक फार्मों के किसानों को, जिनके सामूहिक फार्मों ने प्रसिद्धि प्राप्त नहीं की, गीत व नृत्य उतने पसन्द नहीं हों, जितने कि अग्रणी किसानों को। हमीं की बात है हम लोग कभी-कभी कला को श्रम की सफलताओं के बोनस का रूप दे देते हैं। लेकिन यह तो रोटी की तरह है, जिसकी सभी को जरूरत होती है!"

आयकोज़ ने पति के कंधे पर हाथ रख दिया

ठीक है, बिलकुल ठीक है गीत, नृत्य, नाटक से लोगों को कितनी खुशी होती है! अम्मा को ही लो इन दिनों उन्हें चैन ही नहीं है बस कलाकारों का इन्तज़ार कर रहे हैं।" वह विचारमग्न हो गयी। "तुमने लक्ष्य किया या नहीं, कुछ अरसे में वह दुबले हो गए हैं, सूख गये हैं"

"काम बहुत है, आयकोज़। आजकल सभी के पास बहुत काम है।"

आयकोज़ मौन हो गयी, फिर हिचकिचाती हुई उदास स्वर में बोली, न जाने उलाहना देते हुए या पूछते हुए

"शायद इसीलिए हम एक दूसरे के साथ इतना कम रह पाते हैं"

आलिमजान ने त्योरियां चढ़ाईं

"शिकायत हमें नहीं करनी चाहिए, आयकोज़। हमने स्वेच्छा

१४-४५

जब वह भौहो को सिकोडती, उनके चौडे छोर मिलकर एक स्याह, भवरे धब्बे मे बदल जाते। आज यह धब्बा विशेष रूप से बार-बार प्रकट हो रहा था

मुरातअली मानो जानबूझकर खेत से जाने की जल्दी नही कर रहा था। पडोस के खेतो मे भी अब कोई नही रहा था, मुरातअली ने अपने सामूहिक किसानो तक को कपडे बदलने के लिए अपने-अपने घर भेज दिया था। खेत मे केवल वह और मेम्री ही रह गये थे। पैदल कतारताल जाने के लिए अब देर हो चुकी थी। मुरातअली देख रहा था कि बेटी असन्तुष्ट है, वह उसकी परेशानी समझता था युवती को ऐसे समारोह मे काम के कपडो मे पहुँचना शोभा नही देता। किन्तु वृद्ध के लिए पुत्री की व्याकुलता की समीचीनता स्वीकार करना कठिन था, और वह हठपूर्वक मन-ही-मन यही सिद्ध कर रहा था कोई बात नही, काम के कपडे सम्मानप्रद कपडे होते हैं, और सान्ध्य-कार्यक्रम मे सब अपने ही लोग होगे, उसके तथा मेहरी जैसे ही मेहनत-कश होगे। सब जानते हैं कि उनका घर वहाँ से कितना दूर है। काम जोरो पर होने पर उन्हे कई बार अलतीनसाय मे खेत-कैंप मे या सम्बन्धियो के यहाँ रात बितानी पडती रहती है। आधी के दौरान भी ऐसा ही हुआ था और आधी के बाद के पहले दिनो मे भी। इस दौरान मुरातअली अपने खूबानी के वृक्ष तक मे पानी नही दे पाया था, जब कि इतनी गर्मी पड रही थी कि पेड सूखते-सूखते बचा था। उसमे कल पानी देना चाहिए चल? क्या इसका अर्थ यह है कि कसर्ट के बाद उसे और मेम्री को फिर रात मे लम्बा रास्ता पैदल तय करना पडेगा? कोई बात नही, उनके पैर मजबूत हैं, और झपकी का मजा कुछ और ही होता है।

मुरातअली ने ऐन पहाडियो के ऊपर चढे सूरज पर नजर डाली। गाव मे कुछ और करना नही रहा था। मेम्री समय न गँवाने के लिए मिट्टी को ढीला कर रही थी, कपास के पौधो के इर्द-गिर्द ढूहे बना रही थी। उसने अलतीनसाय रवाना होने से पहले खुद यह जाच करने का फैसला किया था कि मुख्य नाली की मोरिया मजबूती से बद की गयी हैं या नही।

उसने कमर सीधी करके बेटी को आवाज दी

वनज कुसुम की तरह खिलता रहता था कड़ाके की गर्मी उसे झुलसाती रहती, तेज हवाएं उसे छितराती रहती, शुष्क हिम से उसकी कांपती पंखड़ियों को पाला मारता रहता। प्रेमी चोरी-छिपे मिलते रहते थे और बिछुड़ते अपनी इच्छा से नहीं थे अब जिन्दगी बदल चुकी है, पर बुजुर्ग लोगों के लिए पुरानी परम्पराओं को त्यागना कठिन है। मुरातअली को ही लीजिये वह मेहनत नये ढंग से करता है, पर जीना पुराने ढंग से चाहता है। निस्सन्देह वह मेस्वरी का विवाह उसे नापसन्द व्यक्ति से नहीं करेगा, वह पुत्री की खुशी की कदर करता है। किन्तु उसे प्रेम करने का अधिकार भी नहीं है, जब तक कि पिता उस प्रेम को अपनी स्वीकृति से निष्पाप घोषित नहीं कर देता। अर्थात शुरू में प्रेम में एक दूसरे की सहमति प्राप्त कर लेनी चाहिए, माता-पिता को सूचित कर देना चाहिए और केवल इसी के बाद प्रेम करना चाहिए और वह भी उसे सबसे गुप्त रखते हुए। निश्चय ही पिता को कभी ऐसे प्रेम का अवसर नहीं मिला था, जैसा कि उसे और करीम को। वह नहीं समझता कि उन दोनों के लिए प्रेम शनैः शनैः सूर्य की दीप्ति से आलोकित होता भोर है। और भोर किसी परम्परा के अधीन नहीं हो सकता।

करीम के साथ उसकी मुलाकातों के बारे में जानने पर अब्बा ने कहा था "देखो, बेटी, तुम सारे गांव के सामने मेरी नाक कटवा दोगी"। लेकिन क्या प्यार करना अपमानजनक है? क्योंकि आजकल दुलहनों के बदले में महर नहीं बांधा जाता है, युवक तथा युवती प्रेम का मूल्य एक दूसरे के प्रति प्रेम से चुकाते हैं। समय आने पर मेस्वरी व करीम स्वयं मुरातअली के पास जाकर उससे शान्तिपूर्ण दीर्घ-जीवन का आशीर्वाद मांगेंगे। लेकिन लगता है पिता को इसी बात से तो डर लगता है? क्या उसे डर है कि मेस्वरी करीम के घर चली जायेगी और वह अकेला रह जायेगा? वह मेस्वरी को बहुत प्यार करता है। कहना चाहिए वह उसके लिए आंखों का तारा भी है और नूर भी। बूढ़े मुरातअली का बेटी को छोड़कर कोई अपना नहीं है।

मेस्वरी ने अपना काम छोड़कर, सोच में डूबे-डूबे अपनी खोयी-खोयी नजरें कहीं दूर टिका दीं। उसने सुबकी जैसी एक ठण्डी सांस छोड़ी। उसे एकाएक पिता पर दया आने लगी वह नेक है, अच्छा

"बैठो, मेमरी, चलते हैं।"

"कहाँ?"

"कहाँ? कतारताल! मैं जब खेत से चला, तो देखा तुम अभी खेत में ही हो। जब कि तुम्हें कपड़े बदलने चाहिए।"

"धन्यवाद, करीम पर तुम्हारे पास मोटरसाइकिल कहाँ से आयी?"

"मैं भागा-भागा ट्रैक्टर चालकों के पास गया और इवान-अका से इसे माग लाया। आज वह बिना मुश्की घोड़े के काम चला सकते हैं। जब कि तुम्हारे और मेरे लिए," करीम ने विनोदी अर्थ-पूर्णता के साथ उंगली उठाकर कहा, "यह जीवन-मरण का सवाल है!"

"ओह, धन्यवाद, करीम! एक बार फिर धन्यवाद!"

करीम ने दुखी मन से ठण्डी सास ली

"यानी क्या मैंने इतनी मेहनत सिर्फ धन्यवाद पाने के लिए की है?"

"तो क्या तुम्हें मेरी कृतज्ञता कम लगती है?"

मेखरी डरते-डरते चारों ओर नज़र डालकर झुकी और करीम के कपोल पर चुम्बन अंकित कर लाज से लाल हो झिझककर पीछे हट गयी। करीम का भी चेहरा लाल हो उठा, पर वह पुरुष था और पुरुष को किसी भी प्रकार की परिस्थिति में किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना शोभा नहीं देता। करीम ने दिलेरी दिखाते हुए कहा

"मैं तूफ़ान की तरह उड़ता तुम्हारे पास आया हूँ, मेखरी! मैं इससे ज्यादा बड़े इनाम के लायक हूँ!"

मेखरी और एक कदम पीछे हट हँसती हुई बोली

"करीम, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि किसी को भी अपने अतीत की सेवाओं के भरोसे नहीं जीना चाहिए!"

"मेखरी!"

"ज़रा मेरा इन्तज़ार करो, करीम, मैं कुदाल उठा लाती हूँ।"

मेखरी उस क्यारी तक, जिसमें वह कुदाल छोड़ गयी थी, भागकर पहुँच भी न पायी कि टेकरी के पीछे से मुरादअली आता दिखाई दे गया। मेखरी दुविधा में पड़ रुक गयी, उसने मुड़कर सड़क की तरफ देखा, फिर पलटकर टेकरी की ओर यदि वह पिता की प्रतीक्षा करती है, तो उसे कतारताल जाने का ख़याल ही छोड़ देना चाहिए।

और यदि उसकी आज्ञा के बिना जाती है, तो पिता का क्रुद्ध होना निश्चित है। आखिर क्या करे?

मुरातअली ने पुत्री की ओर हाथ हिलाया। मेखरी निरुत्तर खड़ी रही। किन्तु तभी वह आगे लपकी और कुदाल उठाकर तत्क्षण वापस भाग चली। शर्म से लाल हुई और हाफती हुई वह बिना कुछ कहे मोटरसाइकिल पर करीम के पीछे बैठ गयी और जल्दी मचाने लगी

"जल्दी चलो!"

करीम ने मुड़कर देखा, उसके चेहरे पर किंकर्तव्यविमूढ़ता व्याप्त थी

"पर मुरातअली-अमाकी का क्या होगा? वह तुम पर भी नाराज होंगे और मुझ पर भी।"

मेखरी की भौंहें हठपूर्वक जुड़कर स्याह रोयेंदार धब्बा बन गयीं

"चलो, करीम! कमुरवार अब्बा ही हैं। वह सब लोगों की तरह नहीं जीना चाहते! वह मुझे नहीं समझना चाहते, चलो भी, करीम!"

करीम ने हथेली का भोंपू बनाकर उसे मुह से लगाकर आवाज दी "ऐ मुरातअली-अमाकी हम कलारताल होकर आते हैं! जल्दी लौट आयेंगे!"

सड़क से न करीम ने देखा, न ही मेखरी ने कि मुरातअली का चेहरा कैसा बुझ गया, उसकी अक्षमाशील आंखों से कैसे चिनगारियां छूटने लगीं

अठारह

शुद्ध-हृदय

अगले दिन की सुबह निर्मल व शान्त थी। प्रकृति मानो अपनी हाल की गलती को सुधारने की जल्दी में अत्यन्त उदार हो उठी थी उसने लोगों को मेघशून्य आकाश, सूर्य का शान्त प्रकाश व स्फूर्ति-दायक पवन भेंट किये

किन्तु मुरातअली को किसी भी चीज से खुशी नहीं हो रही थी – न हवा से, न सूरज से। उसके चेहरे पर उदासी छायी हुई थी और वह अकसर सोच में डूब रहा था। वह मेखरी की ओर न देखने की कोशिश कर रहा था। मेखरी भी अपनी कसूरवार नजरें उठा नहीं पा रही थी। गयी पूरी शाम और आज पूरी सुबह पिता व पुत्री एक दूसरे से बात नहीं की थी। वे कसर्ट मे साथ रहते हुए भी मौन बैठे रहे, एक भी शब्द मुह से निकाले बिना पैदल घर गये और काम पर आये।

और वे इस समय भी चुप थे।

मुरातअली ने किसी पर भी नुक्ताचीनी नहीं की, किन्तु सभी किंचित् उदास थे शायद टोली पर भी टोली-नायक की मन स्थिति का प्रभाव पड चुका था।

मुरातअली अपने कठोर व हठीले स्वभाव के लिए प्रसिद्ध था, और किसान उससे कुछ डरते थे। डरते भी थे और प्यार भी करते थे वह कुछ कर्कश जरूर था, पर न्यायप्रिय और ईमानदार था। वह ताकतवरों की चापलूसी नहीं करता था, न ही कमजोरों से बदला लिया करता था, उसका हृदय निष्कपट व शुद्ध था, और यदि उसे किसी बात पर क्रोध भी आता था, तो वह दो टूक बात कहता था, बिना रहम किये और बिना डरे। अपने दल में वह किसी से भेद नहीं करता था, सबके साथ सख्त व कठोर था, कामचोरों को छूट नहीं देता था और गफूर तक को भी, जिसे वह अपना मित्र मानता था, उसकी लापरवाही के लिए उसे माफ नहीं करता था। लेकिन दूसरों के साथ सख्ती बरतते हुए मुरातअली अपने पर भी दया नहीं करता था, वह मेहनत डर से नहीं, दिल से करता था। अनुभवी, कुशल कपासउत्पादक अपना काम भली-भांति जानता था और उससे निस्वार्थ भाव से प्रेम करता था, और जब वह किसी को काम करके दिखाता कि कपास की सभाल कैसे करनी चाहिए, तो सारा दल कुशल वृद्ध कामगार को प्रशसा की दृष्टि से देखता रहता।

केवल गफूर टोली-नायक को कोई खास पसन्द नहीं करता था किन्तु वह अपनी भावनाएं व विचार छिपाये रखने में कुशल था

इस समय अन्य किसानों की तरह मुराद के चेहरे से भी किन्तु सहानुभूति झलक रही थी, जब कि मन-ही-मन मुरात मु रहा था क्यों दोस्तों, अच्छा नहीं लग रहा है? तु हो ही इसी लायक मुफ्तखोर हो!"

मुरातअली ने सारी उपलब्धियों का ब्यौरा सुनाकर सबों से कृषक उत्पादकों के काम की जाँच की और मेल-जोल की ओर ध्यान दिया जहाँ लगातार बैठना था जिससे बात करना जरूरी था। वृद्ध चलता जा रहा था और सारे समय अपने आप से बहस करता जा रहा था उसका हृदय पुत्रों को दोषी ठहरा रहा था, जब कि विवेक उसे उचित ठहरा रहा था। हृदय उसके सारे निर्णयों और व्यवहार को उचित मान रहा था जब कि विवेक उन्हें स्वीकार नहीं कर रहा था।

गाँव तक पहुँचने से पहले मुरातअली रुक गया और अनायास ही उसकी दृष्टि उस दिशा में टिक गयी, जहाँ नयी बस्ती बन रही थी। वह बस्ती की ओर देखना नहीं चाहता था। बस्ती में वृद्ध मुरातअली को कोई रुचि नहीं होनी चाहिए थी। किन्तु कुछ भी हो उसका मुख नये गाँव की दिशा में ही मुड़ा हुआ था।

मुरातअली मन-ही-मन निर्माताओं की प्रशंसा किये बिना न रह सका। कितनी तेजी से काम कर रहे हैं! कुछ दिन पहले तक स्तेपी में अकेला तम्बू दिखाई देता था और मुरातअली को वह दिन याद है, जब उसके पास लम्बा और बलूत जैसा गठा हुआ उस्ताद हुब्बतकुन उसके पास आया था। अब वहाँ तम्बू नहीं रहा था। जहाँ वह कभी लगा हुआ था, वहाँ नवनिर्मित घरों की सीधी, साफ-सुथरी कतारें खड़ी हुई थीं, जैसे पायोनियर अपनी सभा में एकत्र हुए हों, जिसमें मुरातअली को भी अक्सर उदीयमान पीढ़ी को अपने कष्टमय अतीत के किस्से सुनाने के लिए निमंत्रित किया जाता था। वहाँ से भी दिखाई दे रहा था कि वे घर कितने सुन्दर हैं बढ़िया किस्म की दीवारें, स्लेट की छतें, बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ! कमरों के अंदर बाहर जैसा उजाला रहता होगा, और जाड़े की बर्फीली हवाओं को गरम आवास में एक भी दरार ढूँढ़े नहीं मिलती होगी। फर्शों से भी ठण्ड नहीं

आती होगी, फर्श लकड़ी के है, उन पर पुआल बिछाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। और कबारिस्तानवाला घर बस ढहने ही वाला है गरमियों में उसमें अंधेरा रहता है, और जाड़े में ठण्ड रहती है हिमझंझावात की बर्फीली धाराएं किवाड़ों के नीचे से, छोटी-छोटी खिड़कियों और जीर्ण-शीर्ण छत की दरारों से तेज सांपों की तरह कमरे में रेंगती घुसने लगती है। बचाव का एकमात्र साधन—सन्दूक रह जाता है। नया घर बनाना चाहिए लेकिन वह मुराअली अपने पुराने घर के बदले में सोती का यह सारी बस्ती भी लेने को तैयार न हो! वह समझता है कि बेटी का मन यहाँ आने को करता है। पर मुरातअली पहाड़ों का आदी है वह पहाड़ी है, वह सदियों पुराने वृक्ष की तरह है जिसकी जड़े कबारिस्तान की जमीन की गहराई में जमी हुई है। कबारिस्तान में उसके लिए सब अपना है हर पत्थर हर डाल धूप में सूखती जमीन की हर दरार भी वहां उसे सब कुछ उसके भोगे सुख-दुःख, उसके उन प्रियजनों की याद दिलाता है, जिन्हें वह खो चुका है कबारिस्तान में जीवन अपना प्रवाह बदले बिना बीत रहा है, आखिर उसकी आयु भी तो ऐसी है कि अब अभ्यागत शान्ति को ठुकराना असम्भव हो गया है। मुरातअली को लगता था कभी नींद खुलने पर उसे अपने ऊपर खुबानी की हरी-भरी टहनियां नजर नहीं आयीं, तो कहर टूट पड़ेगा इस समय वह नये गांव की ओर देख रहा है पर उसकी आंखों के आगे खुबानी का वृक्ष घूम रहा है कबारिस्तान का आभूषण व गौरव, वह वृक्ष, जिसकी सम्भाल स्वयं मुरातअली ने की है, जो मुरातअली के दिल का एक टुकड़ा बन गया है। यह समझना सेख्री के बूते के बाहर की बात है वह जवान और चंचल है। आयकीज भी वृद्ध मुरातअली की बात नहीं समझती। उनकी अपनी दुनिया है, उसकी—अपनी। बेहतर हो यदि वे उसका पीछा छोड़ दें, उसे अपनी वृद्धावस्था के अन्तिम दिन शान्ति व निश्चिन्तता से बिताने दें। लेकिन नहीं, सब केवल अपनी ही नहीं, उसकी भी चिन्ता करते हैं, जैसे जीवन ने उसे तो बुद्धि प्रदान ही नहीं की है। करीम तक, उसका पक्ष लेने और इस प्रकार भावी ससुर की कृपा-दृष्टि के योग्य बनने के स्थान पर, अवसर मिलते ही उसे मनाने लगता है। सेख्री को उसी ने पथभ्रष्ट किया है, वही उसे सगे बाप

सिगार पीने को उकसाता है। कल उसे मोटरसाइकिल पर बिठाकर बाजार ले गया... बिलकुल शर्म नहीं रही उसे! नौजवान आजकल किसी की नहीं सुनते हैं। अपनी मर्जी के मालिक बने हुए हैं। जैसा चाहते हैं वैसा ही करते हैं। हद से ज्यादा आजादी दे दी गयी है इन्हें, हद से ज्यादा...

मुरातअली आज के गुनाहों, विशेषत: करीम के सारे दोष गिनने भी न पाया था कि उसके पीछे स्वयं करीम आ खड़ा हुआ। अपने विषादपूर्ण विचारों में खोये वृद्ध को पता भी न चला कि वह कब उसके पास आ पहुँचा।

'मुरातअली-अमाकी, मैं आपके पास...'

मुरातअली ने युवक पर एक कठोर दृष्टि डाली और कोई उत्तर नहीं दिया।

'मुरातअली-अमाकी, मुझे आपसे कुछ जरूरी बात करनी है।"

"क्या चाहिए तुम्हें?" मुरातअली रूखे स्वर में गुर्राया।

करीम शर्माकर सकुचा गया... इस समय उसका मन कर रहा था कि या तो वह वहाँ से चला जाये, या धरती में समा जाये। किन्तु वह पुरुष था, और पुरुष को आधे रास्ते में रुकना शोभा नहीं देता। वह वृद्ध टोली-नायक से महत्त्वपूर्ण बातचीत करने आया था, इसलिए उसे अपने संकोच पर काबू पाकर काम पूरा करने की जरूरत थी।

"आप कलवाली बात के लिए हम पर नाराज मत होइये, मुरातअली-अमाकी। मेकरी कपड़े नहीं बदल पायी होगी... मैंने आपको आवाज तो दी थी।'

'तुम सिर्फ चिड़चिड़े बुड्ढे के सामने अपना दोष स्वीकार करने के लिए काम छोड़कर आये हो? यह तो किसी और समय भी किया जा सकता था। और करने की बिलकुल जरूरत भी नहीं थी... टूटी का क्या जोड़ना? गाठ पड़े और न रहे।"

"मुरातअली-अमाकी! मैं सिर्फ इसीलिए नहीं आया हूँ... मैं आपसे कुछ सीखने, कुछ सलाह करने आया हूँ... क्योंकि हम पड़ोसी हैं, और दोनों ही टोली-नायक हैं। ठीक है ना, मुरातअली-अमाकी?"

"यह तो तुमने बड़ी दूर की सोची, सूक्ष्मदर्शी लड़के," मुरातअली ने ... मुस्कराये कहा।

किन्तु करीम ने ताना अनसुना कर दिया और उसी तरह घबराहट मे बोलता रहा

"और हा हमारे खेत मे कपास मे कलियां निकल आयी है! जानते है, हमने इसमे सफलता कैसे पायी, मुरातअली-अमाकी? हमने अतिरिक्त खाद पहली जोताई के साथ ही दे दी थी।"

"हूँ" मुरातअली ने दुर्भाव से भौंहे सिकोड धीरे-धीरे कहा। "यानी तुम मुझे सिखाने आये हो?"

"क्या कह रहे है आप, मुरातअली-अमाकी! मैं तो केवल यही कहना चाहता था कि यह बहुत लाभप्रद है।"

"तो फिर अपने राज़ अपने पास ही रखते ना! जहाँ जरूरत न हो, वहाँ टाग मत अडाओ!"

करीम नही समझ पाया कि मुरातअली ने यह द्वेष भाव से कहा या खीज के कारण और वह बडी गम्भीरता से उसे श्रम के अनुभवो के आदान-प्रदान के लाभो के बारे मे बताने लगा

"ऐसा क्यो करता, मुरातअली-अमाकी! हमें तो एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। मैं आपको उस तरीके के बारे मे बताता हूँ, जिसका इस्तेमाल हमारी टोली ने किया, और आप हमारे अनुभव का लाभ उठाकर हमसे आगे निकल जायेगे। आप तो सामूहिक फार्म के सर्वश्रेष्ठ कपास-उत्पादक हैं! और आपको देख-देखकर मुझे भी आपसे होड करने की इच्छा होगी। हम इसी तरह एक दूसरे का मुकाबला करते रहेगे, और सामूहिक फार्म समृद्ध होता जायेगा। जहाज के लिए जलदीप के बिना चलना कठिन होता है, मुरातअली-अमाकी। और आदमी खुद तो अपना जलदीप नही बन सकता।"

मुरातअली करीम की बाते मौन साधे सुन रहा था, जब कि उसके मन मे अविवेकपूर्ण हठीला क्रोध उबल रहा था। उसे करीम का बाल-सुलभ उत्साह और बाल-सुलभ उपदेशात्मक स्वर भी खिजला रहे थे। लडका बेशक बात पते की कह रहा है लेकिन मुरातअली इस दुधमुहे को अपना गुरु मानने को हरगिज तैयार नही हो सकता! कितना ढीठ है! बेटी से चोरी-छिपे इश्क लडाता है, और बूढे को उपदेश देता है कि कैसे जीना चाहिए, कैसे काम करना चाहिए। मुरातअली खुद किसी न किसी तरह इन सारी बातों को समझ लेगा!

के खिलाफ जाने को उकसाता है। कल उसे मोटरसाइकिल पर बिठाकर कलारताल ले गया, बिलकुल शर्म नहीं रही उसे। नौजवान आजकल किसी की नहीं सुनते हैं। अपनी मर्जी के मालिक बने हुए हैं। जैसा चाहते हैं, वैसा ही करते है। हद से ज्यादा आज़ादी दे दी गयी है इन्हें, हद से ज्यादा

मुरातअली आज के युवाओं, विशेषत करीम के सारे दोष गिनने भी न पाया था कि उसके पीछे स्वयं करीम आ खड़ा हुआ। अपने विषादपूर्ण विचारों मे खोये वृद्ध को पता भी न चला कि वह कब उसके पास आ पहुँचा।

"मुरातअली-अमाकी, मैं आपके पास "

मुरातअली ने युवक पर एक कठोर दृष्टि डाली और कोई उत्तर नहीं दिया।

"मुरातअली-अमाकी, मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बात करनी है।"

"क्या चाहिए तुम्हें?" मुरातअली रूखे स्वर में गुर्राया।

करीम शर्माकर सकुचा गया इस समय उसका मन कर रहा था कि या तो वह वहाँ से चला जाये या धरती में समा जाये। किन्तु वह पुरुष था, और पुरुष को आधे रास्ते में रुकना शोभा नहीं देता। वह वृद्ध टोली-नायक से महत्त्वपूर्ण बातचीत करने आया था, इसलिए उसे अपने संकोच पर काबू पाकर काम पूरा करने की ज़रूरत थी।

"आप कलवाली बात के लिए हम पर नाराज़ मत होइये, मुरातअली-अमाकी। मेहरी कपड़े नहीं बदल पायी होती मैंने आपको आवाज़ तो दी थी।"

"तुम सिर्फ चिड़चिड़े बुड्ढे के सामने अपना दोष स्वीकार करने के लिए काम छोड़कर आये हो? यह तो किसी और समय भी किया जा सकता था। और करने की बिलकुल ज़रूरत भी नहीं थी टूटी का क्या जोड़ना? गाठ पड़े और न रहे।"

"मुरातअली-अमाकी! मैं सिर्फ इसीलिए नहीं आया हूँ मैं आपसे कुछ सीखने, कुछ सलाह करने आया हूँ क्योंकि हम पड़ोसी है, और दोनों ही टोली-नायक है। ठीक है ना, मुरातअली अमाकी?"

"यह तो तुमने बड़ी दूर की सोची, घुन्नसदी लड़के मुरातअली ने बिना मुस्कराये कहा।

किन्तु करीम ने ताना अनसुना कर दिया और उसी तरह घबराहट मे बोलता रहा

"और हा हमारे खेत में कपास मे कलिया निकल आयी है! जानते हैं, हमने इसमें सफलता कैसे पायी, मुरातअली-अमाकी? हमने अतिरिक्त खाद पहली जोताई के साथ ही दे दी थी।"

"हूँ" मुरातअली ने दुर्भाव से भौहे सिकोड धीरे-धीरे कहा। "यानी तुम मुझे सिखाने आये हो?"

"क्या कह रहे है आप, मुरातअली-अमाकी! मैं तो केवल यही कहना चाहता था कि यह बहुत लाभप्रद है।"

"तो फिर अपने राज़ अपने पास ही रखते ना! जहाँ जरूरत न हो, वहाँ टाग मत अडाओ!"

करीम नही समझ पाया कि मुरातअली ने यह द्वेष भाव से कहा या खीज के कारण और वह बडी गम्भीरता से उसे श्रम के अनुभवो के आदान-प्रदान के लाभो के बारे मे बताने लगा

"ऐसा क्यो करता, मुरातअली-अमाकी! हमे तो एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। मैं आपको उस तरीके के बारे मे बताता हूँ, जिसका इस्तेमाल हमारी टोली ने किया, और आप हमारे अनुभव का लाभ उठाकर हमसे आगे निकल जायेगे। आप तो सामूहिक फार्म के सर्वश्रेष्ठ कपास-उत्पादक है! और आपको देख-देखकर मुझे भी आपसे होड करने की इच्छा होगी। हम इसी तरह एक दूसरे का मुकाबला करते रहेगे, और सामूहिक फार्म समृद्ध होता जायेगा। जहाज के लिए जलदीप के बिना चलना कठिन होता है, मुरातअली-अमाकी। और आदमी खुद तो अपना जलदीप नही बन सकता।"

मुरातअली करीम की बाते मौन साधे सुन रहा था, जब कि उसके मन मे अविवेकपूर्ण हठीला क्रोध उबल रहा था। उसे करीम का बाल-सुलभ उत्साह और बाल-सुलभ उपदेशात्मक स्वर भी खिजला रहे थे। लडका बेशक बात पते की कह रहा है लेकिन मुरातअली इस दुधमुहे को अपना गुरु मानने को हरगिज तैयार नही हो सकता! कितना ढीठ है! बेटी से चोरी-छिपे इश्क लडाता है, और बूढे को उपदेश देता है कि कैसे जीना चाहिए, कैसे काम करना चाहिए। मुरातअली खुद किसी न किसी तरह इन सारी बातो को समझ लेगा!

अभी तक दुधमुँहे सुझावों के बिना काम चलाता आया है और आगे भी चलाता रहेगा।'

धृष्टता के ऐसे प्रदर्शन पर भौंहें सिकोड़कर मुरातअली ने बड़ी मुश्किल से क्रोध पर नियंत्रण रखते हुए रुखाई से कहा

'सुनो, आदरणीय टोली-नायक, मैं तुमसे बड़ा हूँ और तुमसे बहुत ज्यादा देख चुका हूँ। मैंने जब पहली बार हाथों में कुदाल सम्भाला था, तुम्हारा जन्म भी नहीं हुआ था। चूहे के हाथ लगी हल्दी की गिरह, पंसारी ही बन बैठा! बूढ़े मुरातअली को सीख देना तुम्हारे जैसे दुधमुँहे का काम नहीं है! तुम नये तरीके से जितनी कपास पैदा करोगे, उससे ज्यादा मैं पुराने तरीके से पैदा कर लूँगा। अपने खेत लौट जाओ, टोली-नायक। टोली को तुम्हारा इन्तजार करने को मजबूर मत करो।'

अप्रत्याशित रूप से मेखरी ने उनकी बातचीत में दखल दे दिया। वह कुछ ही दूरी पर काम कर रही थी और पिता व करीम की सारी बहस सुन रही थी। युवती सीधी खड़ी होकर और मुरातअली की ओर पलटकर गम्भ एव आसुओ से रुधी आवाज में चिल्लायी

"आप उसके साथ इस तरह क्यों पेश आ रहे हैं, अब्बा? उसने आपका क्या बिगाड़ा है? उसका इरादा नेक था!"

"चुप करो, बेटी!" पूरी तरह आगबबूला हुआ मुरातअली उस पर चिल्लाया। "मेरे पास इसके अलावा भी बहुत-से सलाहकार हैं! ऐ, तुम खड़े क्यों हो, टोली-नायक? मैंने जो कहा, वह सुना या नहीं?"

किन्तु करीम निराश होनेवालो मे से नही था। जाने से पहले उसने देर तक मेखरी की ओर देखा, उसका समर्थन पाने की आशा से नही, बल्कि अपनी उस दृष्टि से उसका उत्साह बढाने के उद्देश्य से "डटी रहो, मेखरी! दिल छोटा मत करो! मैं पीछे हट रहा हूँ, पर हार नही मान रहा हूँ।" मेखरी ने भी हौले से सिर हिलाकर उसे वैसा ही मौन उत्तर दिया "तुम मेरी चिन्ता मत करो, करीम। अब्बा जिद्दी है, पर अभी तक कोई नही जानता कि जिद करने मे कौन किसे मात देता है। मेरी उपटोली तुम्हारी टोली के उदाहरण का अनुसरण करेगी। और सब वैसे ही होगा, जैसा फैसला हम करेंगे!"

मुरातअली करीम से विदा लिये बिना ही खेत-कैंप की ओर चल दिया। तभी एक लम्बा, दुबला-पतला व मोटे शीशोंवाला चश्मा लगाये एक अपरिचित लंबे-लंबे डग भरता उसके पास आ पहुँचा।

"मुझे बताया गया है कि तुम टोली-नायक मुरातअली हो," लम्बू ने कहा और प्रश्नात्मक दृष्टि से, पर बिना विशेष कुतूहल के वृद्ध कपास-उत्पादक को एकटक देखने लगा।

"ठीक बताया गया है मैं मुरातअली हूँ। पर तुम कौन हो?"

"मैं अखबार से आया हूँ। हमारे, जिले के अखबार से। तुमने मेरा नाम जरूर कई बार देखा होगा यूसुफी। तखल्लुस – उत्कीर।"

मुरातअली सोच में डूबा होंठ चबाता रहा। वह जिले का समाचार-पत्र विरले ही पढ़ा करता था और एक भी संवाददाता को कुलनाम से नहीं जानता था।

"तखल्लुस उत्कीर? बड़ा अजीब नाम है तुम्हारा, बेटे नहीं, मैंने ऐसा नाम नहीं सुना।"

यूसुफी ने वृद्ध को यह समझाना आवश्यक नहीं समझा कि तख-ल्लुस नाम नहीं होता, वह मुस्कराया तक भी नहीं।

"मुझे तुमसे एक-दो बातें करनी हैं, टोली-नायक।"

"मैं काम पर हूँ, बेटे।"

"कोई बात नहीं, काम इन्तजार कर लेगा," अखबारनवीस ने तिरस्कारपूर्वक कहा। "मेरा काम कहीं ज्यादा जरूरी है।"

"तो फिर हौज़ के पास चलते हैं, तखल्लुस," मुरातअली ने हताश हो ठण्डी सांस लेकर सुझाव दिया, "वहाँ बेंच है।"

वह संवाददाता को हौज़ की ओर ले गया, इस प्रकार के हौज़, जिनमें पानी निथरता था, हर खेतकैंप में थे।

वृद्ध का चेहरा पूर्ववत् अस्नेही व उदास बना रहा। यह लम्बा, अजीब से नाम और चश्मे की ओट में छिपी नज़रोंवाला सख्त अख-बारनवीस उसे पसन्द नहीं आया था, लेकिन आखिर वह सरकारी आदमी था, और मुरातअली बेंच पर उसके पास बैठकर उसके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार हो गया।

यूसुफी ने नोटबुक निकालकर पुलिस-इंस्पेक्टर की तरह सख्त तथा शुष्क स्वर में कहा

"मुझे तुमसे कुछ सवाल पूछने होंगे। कहते हैं, आपके यहाँ हाल ही में आंधी आयी थी। यह कब हुआ? उसमें नुक़सान क्या ज्यादा हुआ था?"

मुरातअली ने आगंतुक की ओर कुछ हैरानी से देखा

"आंधी आयी थी, यह सही है। और उसने मुसीबतें भी कम नहीं ढायीं। लेकिन यह तो पुरानी बात हो चुकी है। कपास के पौधे स्वस्थ हो गये हैं, और हमारा इरादा अच्छी फसल उठाने का है। तुम्हें इसी में दिलचस्पी है ना, बेटे?"

नोटबुक पर फिसलती जा रही यूसुफ़ी की पेंसिल बीच में ही रुककर हवा में लटकी रह गयी।

"मुझे हर चीज़ में दिलचस्पी है, टोली-नायक! और सबसे पहले तुम्हारी ग्राम सोवियत की अध्यक्षा उमूरज़ाकोवा की हरकतों में। क्योंकि उसी के ही आदेश पर तो कृषि-टोलियों के किसानों को अछूती धरती और बस्ती के निर्माण-कार्य पर भेजा गया है ना?"

मुरातअली सतर्क हो उठा। इस नोटबुकवाले आदमी को उससे क्या चाहिए? उसने आयकीज़ का ज़िक्र करके मुरातअली को इस तरह टकटकी बांधे अर्थपूर्ण दृष्टि से क्यों घूरा?

"आयकीज़ का इसमें कोई दोष नहीं है, बेटा उसे हमें आदेश देने की आज़ादी नहीं है। यह फ़ैसला खुद हमने किया है

"और इसके परिणामस्वरूप कृषि टोलियां कमज़ोर हो गयीं?" पत्रकार ने बोलना जारी रखा। "क्योंकि अब, उदाहरण के लिए तुम्हारी टोली में तो ज़रूर ही लोग कम पड रहे हैं। है, ना?"

मुरातअली ने सामने फैले कपास के खेत की ओर हाथ घुमाया

"देखते हो, तवल्लुग उल्कीर? यह कपास मेरी टोली के लोगों ने उगाई है। एक-आध साल बाद आओगे, तो देख लोगे कि हमने अछूती धरती में कैसी कपास उगाई है। लिखो, तवल्लुग उल्कीर, लिखो। मैं तुम्हें हमारे किसानों के बारे में बताऊँगा। उनमें से हरेक के बारे में पूरी किताब लिखी जा सकती है।"

यूसुफ़ी की पेंसिल रुकी रही

"टोली-नायक, तुम क्या यह चाहते हो कि मैं उमूरज़ाकोवा के बारे में प्रशंसात्मक लेख लिखूँ?

"आयकीज ने तो हमारा बहुत भला किया है। क्योंकि उसी ने हमारा हाथ पकड़कर हमें अछूते, अनमोल खजाने का रास्ता दिखाया "

"और क्या उस नयी बस्ती का रास्ता भी, जिसे वह आपके ही हाथों, पर्वतीय गावों के वासियों को वहाँ बसाने के लिए बनवा रही हो? तुम्हें क्या जल्दी ही गृहप्रवेश का उत्सव मनाना पड़ेगा, टोली-नायक?"

मुरातअली का मुह फक हो गया।

"मैं कदम तक नहीं रखूँगा उस गाव में। पुरखों की जमीन छोड़कर जाने के लिए मुझे कोई मजबूर नहीं कर सकता है। क्या उमूरजाकोवा को ऐसे अधिकार मिले हैं, तसल्लुम उत्कीर?"

"कौन जाने मैंने सुना है कि उमूरजाकोवा को हुक्म चलाने का शौक है। तुम बेकार उसका पक्ष ले रहे हो। इसकी कोई तुक नहीं। उमूरजाकोवा बिछौना तो गुदगुदा बिछा देगी, पर उस पर सोना हराम हो जायेगा तुम्हें तो जरूर ही मालूम होगा कि मुल्ला-सुलैमान के खेत में कपास अब बचाई नहीं जा सकती?"

"अगर मैं अध्यक्ष की जगह होता, तो मैंने उस कामचोर को काफी पहले ही टोली-नायक के पद से हटा दिया होता। आयकीज़ उसे यह सलाह न जाने कितनी बार दे चुकी है! "

यूसुफी के होंठों पर व्यग्यमिश्रित सहानुभूति की मुस्कान खेल गयी

"तुम्हारे साथ कोई बात तय करना मुश्किल है, टोली-नायक कभी तुम उमूरजाकोवा को कोसने लगते हो, तो कभी उसकी तारीफ करने लगते हो क्या तुम अभी तक अपने दोस्त और दुश्मन में फर्क करना नहीं सीखे हो?"

मुरातअली कुछ क्षण मौन रहा, फिर उसने उठकर अखबारनवीस से आँखें बराबर कर घूरा। वह खड़ा रहते हुए भी बैठे हुए यूसुफी से थोड़ा ही ऊँचा था।

"ज़िन्दगी ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है, तसल्लुम उत्कीर। ज़िन्दगी ने मुझे सचाई पहचानना और सच बोलना सिखाया है। दूसरों की चुगलखोरी और अपना तिरस्कार रेत की तरह होते हैं वे आदमी की आँखों पर परदा डाल सकते हैं। लेकिन मेरी नज़र बुढ़ापे की नज़र

है, देती है।' और मुझे जो अपने काम की मदद में नजर आता है
मुझे उससे बेहतर दिखाई देता है। अपने अखबार में यह लिख देना
जनज़ुम उर्फीर कि बूढ़ा मुरादअली कभी भी दूसरों के काम
नहीं बनेगा। यह तुम लिख सकते हो। और आयकीज के बारे में य
लिख देना वह हर मामले में जनता से सलाह करती है, और लोग
उसका आदर करते है। माफ करना बेटा, पर मेरा काम करने का
वक्त हो चला है।'

युसुफी ने अपनी नोटबुक बंद कर ली।

'मैं भी जल्दी में हूँ। मुझे मालूम है आयकीज इस समय कहाँ मिल सकेगी?'

मुरादअली अभी तक केवल अतिथि के प्रति आदर के कारण अपने पर नियंत्रण रखे हुए था। किन्तु अब उससे न रहा जा सका और उसने दृढ़ स्वर में कहा

' उसे अछूती धरती में ढूँढो। लेकिन यह याद रखो हम किसी को उमुरज़ाकोवा का अपमान नहीं करने देंगे। उसका अपमान–हमारा अपमान होगा। '

मुरादअली जल्दी से खेत-कैंप की ओर चल दिया। युसुफी भौंहे सिकोड़कर उसे जाते देखता रहा, फिर न जाने क्यों चश्मा उतारकर उसे रूमाल से, जो बेशक साफ नहीं था, देर तक पोंछता रहा मानो सुलतानोव द्वारा उसे सौंपे गये, उसे पसन्द आये भंडाफोड़ी मामले में अपनी अगली चाल पर विचार कर रहा हो, फिर किनारे-किनारे चलकर अछूती धरती पहुँचने के इरादे से डग भरता नहर की ओर रवाना हो गया।

उन्नीस

प्रेत

आयकीज़ खेत-कैंप में पांगोदिन के पास उस समय पहुँची, जब वे ट्रैक्टर-चालक, जिन्हें दूसरी पाली में काम करना था, सुबह से थके-हारे अपने साथियों से पाली सँभाल रहे थे। स्तेपी में छोड़े गये

ट्रैक्टर बिना लोगों के असाधारण रूप से अनाथ व परित्यक्त लग रहे थे, मानो उस विस्तार में वे अनावश्यक हों   हल की बाट जोह रही धरती और स्थिर व निष्क्रिय खड़े ट्रैक्टर – इसमें कुछ विरोधाभासी और अस्वाभाविक लग रहा था।

काम से लौटे ट्रैक्टर-चालक दोपहर के तपते सूरज की ओर अपनी कास्यवर्णी मासल पीठे किये ज़ोर-ज़ोर से फूत्कार करते नालों में हाथ-मुह धो रहे थे। उनमें से कुछ, जो कपडे बदल चुके थे, अब जल्दी-जल्दी भोजनालय में जा रहे थे। पहले वह उडती रेत से रक्षा के लिए लटकाये गये झिरझिरे सूती कपडे के परदोंवाले लम्बे शेड के रूप में थे, पर आधी के बाद भोजनालय के चारों ओर प्लाईवुड की दीवार खडी कर दी गयी थी।

आयकीज़ ने कार्य की प्रगति के बारे में पोगोदिन से ब्योरेवार पूछताछ की, रेत से ढके खेतों की दुबारा जोताई कर चुके और बडी लगन से किज़िलकुम पर हमला बोल रहे ट्रैक्टर-चालकों से बातचीत की, वह दुबले-पतले, जोशीले बाके एक्सकेवेटर-चालक का, जो उसे पहली मुलाकात से ही पसन्द आ गया था, ध्यान रखना भी नहीं भूली। लडका अपने एक्सकेवेटर के पास जाने की जल्दी में था। उसकी मसें भीगने ही लगी थी, उसके पूर्णत   किशोर-सुलभ चेहरा चिन्ताकुल था, पीरीकती-पोल्ये* जैसे फूले-फूले, गोल-गोल श्वेताभ बालों का ढेर धूप में झिलमिला रहा था। 'कुकरौंधा!' आयकीज़ ने फिर स्नेहपूर्वक सोचा। उसने यह जानने में रुचि दिखाई कि एक्सकेवेटर-चालक का काम कैसा चल रहा है। लडके ने, जो सबसे अधिक इस बात से डरता था कि कहीं उसे बहुत छोटा न समझ लिया जाये थोडा अकडकर गम्भीरता से वादा किया

"कामरेड अध्यक्ष, मैं जल्दी ही नहर का अपना टुकडा तैयार करके सौंप दूँगा। अब आपका ही काम बाकी रह गया है पानी छोडिये।"

"पर तुम्हारे काम की क्वालिटी कैसी है?" पोगोदिन ने पूछा।

---

* पीरीकती-पोल्ये – स्तेपी में उगनेवाला एक पौधा, जो सूखने पर हवा के साथ लुढकता रहता है।

"घोड़ी!" लड़के से स्वर गम्भीर न रखा जा सका, उसकी आँखों में मजाक की गति और आवाज में शान-गुमान भर आया। "मेरा ट्रैक्टर सबसे बढ़िया है और मेरा दूसरा मस्त गुलगुल है! मैंने ट्रैक्टर से उसे इनाम दिया है, जैसे इनाम रखकर। गत साल्टी के पहले जैसा है, दीवारें शीशे से ज्यादा चिकनी है! यह देख लीजिये कामरेड उमुरजाकोवा।"

"मैं देख चुकी हूँ," आयकीज ने मुस्कराकर उसे तसल्ली दिलाई। "तुम्हारा ट्रैक्टर सचमुच बहुत बढ़िया है! उसे हमारी ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद।"

आयकीज ने सुबह से मुँह में एक कौर भी नहीं डाला था। पोलोदिन शायद यह भाँप गया और उसने उसे भोजनालय चलने का निमन्त्रण दिया। उन्होंने नाली के पानी में हाथ धोये और कुछ ही क्षणों बाद वे शेड में जमीन में गाड़ी हुई मेजों में से एक पर बैठे थे।

भोजनालय में शीतल धुंधलका छाया हुआ था, विश्वास नहीं होता था कि बाहर, प्लाईवुड के तख्तों की दूसरी ओर अपने ऊर्ध्व-बिन्दु पर पहुँचा जून का सूरज तेजी से तप रहा है।

आयकीज के सामने उसका पुराना परिचित सुवानकुल बैठा दिखाई दिया। अपनी थाली पूरी करके वह उतने ही महावीर-सुलभ उत्साह से, जिससे वह जमीन जोतता था, अपने मनपसन्द मस्तावा का दूसरा प्याला खाली कर रहा था। आयकीज ने सुवानकुल का बारीक बटा रैहान डाला मस्तावा खतम करके सिर उठाया और सुवानकुल से कहा

"मैं कल बेकबूता से मिली थी, उन्होंने तुम्हें दिली सलाम कहा है। वह कह रहे थे हम हफ्ते-भर से नहीं मिले हैं। यह जिन्दगी में पहली बार हुआ है "

सुवानकुल ने उदासी से सिर हिलाया

"क्या हाल है उस बेचारे के, मेरे बिना? हम दोनों तो दाँत काटी रोटी खाते थे।"

"वह पूछ रहे थे कि तुम्हारा उनके बगैर काम कैसे चल रहा है। कह रहे थे 'मेरा दोस्त कोक-ताऊ पहाड़ जैसा सुस्त है। जब तक वह बूट पैरों पर चढ़ाता है, वसन्त भी बीत जाता है, गर्मी

भी और पतझड भी'।" आयकीज़ अनजाने में मुस्कराकर आगे बोली "कह रहे थे, 'अछूती धरती में उसका काम शायद ही चल रहा हो। उससे कह देना कि मैं उसके हिस्से का काम करने को तैयार हूँ और उसे उससे ज्यादा जल्दी पूरा कर दूँगा।' उन्होंने ऐसा ही कहा था।"

"वाह, कितना बढ़िया इनसान है!" सुवानकुल ने जबान तक चटकारी, मानो उसे विश्वास नहीं हो रहा हो कि उसका कोई इतना चिन्ताशील मित्र है। "अपनी फिक्र छोड़कर सगों की तरह मेरी फिक्र करता है! सुनो, आयकीज़, क्या लोग सच कहते हैं कि आंधी चलने पर हवा बेकबूता को हजार किलोमीटर दूर उड़ा ले गयी थी? बाप रे बाप! वैसे खाता तो वह हाथी जितना है, शायद उसी के बारे में कहा गया है पिद्दी को कितना ही खिलाइये–न सावन हरी, न भादो सूखी।"

"कितने शैतान हैं!" पोगोदिन प्रशंसात्मक स्वर में कह उठा। "एक दूसरे के बिना जी नहीं सकते, पर मिलते ही मुर्गों की तरह एक दूसरे पर टूट पडते हैं। तुम, सुवानकुल, इतनी दूर बैठकर भी बेकबूता पर वार करने से नहीं चूकते।

"वह मुझ से क्या मुकाबला करेगा!" सुवानकुल ने तिरस्कार-पूर्वक कहा। "उसके दिमाग पर चर्बी की तहें चढ़ी हुई हैं। तुम उससे कह देना, आयकीज़, कि खाने पर इतना जोर न दिया करे।"

यह कहकर सुवानकुल कराहता हुआ मेज़ पर से उठा और खाना लाने चल दिया।

आयकीज़ ने हँसकर पोगोदिन की ओर देखा

"तुम्हीं ने, इवान बोरिसोविच, सुवानकुल को लालच देकर अपने यहाँ बुलाया है, सच्चे दोस्तों को जुदा कर दिया।"

"जुदाई से दोस्ती और पक्की होती है, आयकीज़! हमें इस बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए कि किसने किसको लुभाकर वहाँ बुलाया है। तुम प्रान्तीयता का रवैया मत अपनाओ!"

लोला के साथ उसकी सगाई होने के बाद से पोगोदिन कुछ विनम्र तथा सहृदय हो गया था। वह अपने कर्मियों की गलतियों के प्रति पूर्ववत् सख्ती का रवैया अपनाता था, किन्तु यदि अब उसे किसी को झिड़कना पड जाता, तो वह दोषी को सदय भर्त्सना की दृष्टि से

देखो!' लड़के से स्वर गंभीर न रखा जा सका, उसकी आँखों में चमक आ गयी और आवाज में बालसुलभ गर्व झलकने लगा। 'मेरा एक्स्केवेटर सबसे बढ़िया है और मेरा दूसरा सबसे खूबसूरत है! मेरे एक्स्केवेटर ने उसे हमवार खोदा है, जैसे नापकर। नल मकड़ी के जाले जैसा है, दीवारें शीशे से ज्यादा चिकनी हैं! खुद देख लीजिये, कामरेड उमुरजाकोवा।"

"मैं देख चुकी हूँ," आयकीज ने मुस्कराकर उसे तसल्ली दिलाई। "तुम्हारा एक्स्केवेटर सचमुच बहुत बढ़िया है! उसे हमारी ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद।"

आयकीज ने सुबह से मुंह में एक कौर भी नहीं डाला था। पोलो दिन शायद यह भांप गया और उसने उसे भोजनालय चलने का निमन्त्रण दिया। उन्होंने नाली के पानी में हाथ धोये और कुछ ही क्षणों बाद वे रोड से जमीन में गाड़ी हुई मेजों में से एक पर बैठे थे।

भोजनालय में शीतल धुंधलका छाया हुआ था, विश्वास नहीं होता था कि बाहर, प्लाईवुड के तख्तों की दूसरी ओर अपने ऊर्ध्व-बिन्दु पर पहुँचा जून का सूरज तेजी से तप रहा है।

आयकीज के सामने उसका पुराना परिचित सुवानकुल बैठा दिखाई दिया। अपनी पाली पूरी करके वह उतने ही महावीर-सुलभ उत्साह से, जिससे वह जमीन जोतता था, अपने मनपसन्द मस्तावा का दूसरा प्याला खाली कर रहा था। आयकीज ने सुवानकुल का बारीक कटा रैहान डाला मस्तावा खतम करके सिर उठाया और सुवानकुल से कहा

"मैं कल बेकबूता से मिली थी, उन्होंने तुम्हें दिली सलाम कहा है। वह कह रहे थे हम हफ्ते-भर से नहीं मिले हैं। यह जिन्दगी में पहली बार हुआ है "

सुवानकुल ने उदासी से सिर हिलाया

"क्या हाल हैं उस बेचारे के, मेरे बिना? हम दोनों तो दांत काटी रोटी खाते थे।"

"वह पूछ रहे थे कि तुम्हारा उनके बगैर काम कैसे चल रहा है। कह रहे थे: 'मेरा दोस्त कोक-ताऊ पहाड जैसा सुस्त है। जब पैरों पर चढ़ाता है, बसन्त भी बीत जाता है, गरमी

भी और पतझड भी'।" आयकीज अनजाने मे मुस्कराकर आगे बोली "वह रहे थे, 'अछूती धरती मे उसका काम शायद ही चल रहा हो। उससे कह देना कि मैं उसके हिस्से का काम करने को तैयार हूँ और उसे उससे ज्यादा जल्दी पूरा कर दूँगा।' उन्होने ऐसा ही कहा था।"

"वाह, कितना बढिया इनसान है!" सुवानकुल ने ज़बान तक चटकारी, मानो उसे विश्वास नही हो रहा हो कि उसका कोई इतना चिन्ताशील मित्र है। "अपनी फिक्र छोडकर सगो की तरह मेरी फिक्र करता है! सुनो, आयकीज, क्या लोग सच कहते है कि आधी चलने पर हवा बेकबूता को हजार किलोमीटर दूर उडा ले गयी थी? बाप रे बाप! वैसे खाता तो वह हाथी जितना है, शायद उसी के बारे मे कहा गया है पिद्दी को कितना ही खिलाइये–न सावन हरी, न भादो सूखी।"

"कितने शैतान है!" पोगोदिन प्रशसात्मक स्वर मे कह उठा। "एक दूसरे के बिना जी नही सकते, पर मिलते ही मुर्गों की तरह एक दूसरे पर टूट पडते है। तुम, सुवानकुल, इतनी दूर बैठकर भी बेकबूता पर वार करने से नही चूकते।"

"वह मुझ से क्या मुकाबला करेगा!" सुवानकुल ने तिरस्कार-पूर्वक कहा। "उसके दिमाग पर चर्बी की तहे चढी हुई है। तुम उससे कह देना, आयकीज, कि खाने पर इतना ज़ोर न दिया करे।"

यह कहकर सुवानकुल कराहता हुआ मेज़ पर से उठा और खाना लाने चल दिया।

आयकीज़ ने हसकर पोगोदिन की ओर देखा

"तुम्ही ने, इवान बोरिसोविच, सुवानकुल को लालच देकर अपने यहाँ बुलाया है, सच्चे दोस्तो को जुदा कर दिया।"

"जुदाई मे दोस्ती और पक्की होती है, आयकीज़! हमे इस बात पर ध्यान नही देना चाहिए कि किसने किसको लुभाकर कहाँ बुलाया है। तुम प्रातीयता का रवैया मत अपनाओ!"

सोना के साथ उसकी सगाई होने के बाद से पोगोदिन कुछ विनम्र तथा सहृदय हो गया था। वह अपने कर्मियो की गलतियो के प्रति पूर्ववत् सख्ती का रवैया अपनाता था, किन्तु यदि अब उसे किसी को झिडकना पड जाता, तो वह दोषी को सदय भर्त्सना की दृष्टि से

देखता था, मानो खीज रहा हो कि किसी ने उसका मानसिक सुख भंग कर दिया हो, उसे ऊँची आवाज मे बोलने के लिए मजबूर कर दिया हो, उसे उस पोगोदिन के रूप मे न रहने दिया हो, जिसे वेरा प्यार करती थी विनम्र, सकोची, अपनी खुशी मे मदहोश।

खाना खा लेने के बाद पोगोदिन ने रूमाल से होठ पोछे और आयकीज की ओर षड्यत्रकारियों की तरह देख मन्द्र स्वर मे बोला

"और मीठे के नाम पर, प्रिय अध्यक्ष, मैंने तुम्हारे लिए एक निराली चीज तैयार रखी है तुमने अभी तक मेरे तरबूज और सरदे का खेत नही देखा है?"

"क्या वही, जिसके चक्कर मे तुम सामूहिक प्रस्थान से पहले पड़े हुए थे? तुमने उसे मुझे दिखाया था।"

"तब तो सिर्फ फूल ही निकले थे, आयकीज! अब देखो जरा उसे! सारे तरबूजों-सरदो के खेतो का राजा है!"

"तुमने तो अपनी तारीफ के पुल बाध दिये, इवान बोरिसोविच," आयकीज हस पड़ी। "इसमे हमारे आदरणीय अध्यक्ष का प्रभाव महसूस हो रहा है मुझे।"

पोगोदिन मुह फुलाकर कादीरोव की नकल उतारता हुआ आत्म सन्तोषपूर्वक आडम्बरपूर्ण ढग मे बोलने लगा

"यह मेरा तरबूजों और सरदो का खेत है, कामरेड उमूरबाकोव!" उसने अपनी छाती पर मुक्का मारकर कहा। "मैंने अपने मशीन ट्रैक्टर-स्टेशनवालों के लिए खून-पसीना एक करते हुए मेहनत की है। खुद ग्राम सोवियत के अध्यक्ष ने मेरी पहलकदमी की प्रशसा की थी!"

"क्या आपका अपने तरबूजों-सरदों के खेत को बड़ा करने का इरादा नहीं है, कामरेड पोगोदिन?" उसके विनोदपूर्ण स्वर के अनुरूप स्वर मे आयकीज ने पूछा। "अछूती धरती मे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है और आपके सरद बगान की तबीयत सभी को पसन्द आयेगी।"

"खेत को बड़ा करने का?" पोगोदिन ने आश्चर्य और तिरस्कार पूर्वक कहा "मूर्खतापूर्ण योजना है। बड़े पैमाने पर काम करने की जरूरत है!" भी बहस नहीं था यह मन भी नहीं था और वह कोई विचार नहीं करता था। खेतो मे पानी बनाती

"दुम्बे की दुम पर लटकती चर्बी से बेहतर होती है!" आयकीज ने विनोदपूर्वक उसकी बात पूरी कर दी और पोगोदिन को जल्दी के लिए कहा "ठीक है, ठीक है, अब चलिये दिखाइये सेत।

पूर्वरचित घर, जिसमे ट्रैक्टर-दल का "मुख्यालय" था और स्मिर्नोव से मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के निदेशक द्वारा हथियाये गये साफ-सुथरे हरे वैगनो के पास से गुजरकर पोगोदिन व आयकीज खेत-कैंप तथा तरबूजो के खेत के किनारे-किनारे जा रही नाली पर पहुँच गये। कुछ ही दूरी पर झुकी-झुकी कोमल पत्तियो से सजे-धजे युवा वृक्षो की सुघड कतारे नजर आ रही थी। वृद्ध हलीम-बाबा की अनथक सहायिका लोला का लगाया यह छोटा-सा बाग ट्रैक्टर-कैंप के पास हाल ही मे वजूद मे आया था। लोला ने श्रम व्यर्थ नही किया था अपनी मेहनत के पुरस्कार के रूप मे उसे इवान बोरिसोविच से अक्सर मिलने रहने की सम्भावना प्राप्त हो गयी थी

कुछ दिन पहले आयी आधी ने इस खेत मे भी अपना रग दिखाया था सरदो व तरबूजो की किंचित् उठे हुए किनारोवाली गहरे हरे रग की पत्तिया रेत के कारण धुधली पड गयी थी, कही-कही पत्तियो पर रेत अभी तक जमी हुई थी। पोगोदिन ने दुख से सिर हिलाया

"देखा, आयकीज? इस मरदूद आधी ने मेरे सरदो को भी नही बख्शा। मैं फुरसत मिलते ही यहा भागकर आता हूँ और नये घर मे सुघड गृहणी की तरह सब ठीक करता हूँ।"

पोगोदिन के शब्दो मे चिन्ता झलक रही थी जब कि मुख पर शान्तचित्तता व सन्तोष का भाव था। इवान बोरिसोविच को अपने सेत पर गर्व था, उसने खुद ही सरदे व तरबूज बोये थे खुद उनका पोषण किया था, सभाल की थी, पर आधी ने उसका काम बढाकर उसका खेत मे लगाव और गहरा कर दिया था क्योकि मनुष्य अपने सर्जन के लिए जितने अधिक कष्ट भोगता है वह उसे उतना ही अधिक प्रिय होता जाता है

आयकीज को नाली के पास छोडकर पोगोदिन ने क्यारियो के बीच जाकर बडी सावधानी से लताओ के सूखे तने सीधे किये, पत्तियो पर से रेत झाडी। वह उसके लिए असामान्य सावधानी से कदम रख रहा था, धातुओ से निरन्तर वास्ता पडते रहने के कारण सादने

"दुम्बे की दुम पर लटकती चर्बी से बेहतर होती है।" आयकीज ने विनोदपूर्वक उसकी बात पूरी कर दी और पोगोदिन को जल्दी के लिए कहा "ठीक है, ठीक है, अब चलिये दिखाइये मत।

पूर्वरचित घर, जिसमें ट्रैक्टर-दल का 'मुख्यालय' था, और स्मिर्नोव से मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के निदेशक द्वारा हथियाये गये साफ़-सुथरे हरे वैगनों के पास से गुज़रकर पोगोदिन व आयकीज खेत-कैंप तथा तरबूज़ों के खेत के किनारे-किनारे जा रही नाली पर पहुँच गये। कुछ ही दूरी पर झुकी-झुकी कोमल पत्तियों से सजे-धजे युवा वृक्षों की सुघड़ कतारें नज़र आ रही थीं। वृद्ध हलीम-बाबा की अनथक सहायिका लोला का लगाया यह छोटा-सा बाग ट्रैक्टर-कैंप के पास हाल ही में वजूद में आया था। लोला ने श्रम व्यर्थ नहीं किया था अपनी मेहनत के पुरस्कार के रूप में उसे इवान बोरिसोविच से अक्सर मिलते रहने की सम्भावना प्राप्त हो गयी थी

कुछ दिन पहले आयी आंधी ने इस खेत में भी अपना रंग दिखाया था सरदों व तरबूज़ों की किंचित् उठे हुए किनारोंवाली गहरे हरे रंग की पत्तियां रेत के कारण धुंधली पड़ गयी थीं कहीं-कहीं पत्तियों पर रेत अभी तक जमी हुई थी। पोगोदिन ने दुख से सिर हिलाया

"देखा, आयकीज़? इस मरदूद आंधी ने मेरे सरदों को भी नहीं बख्शा। मैं फुरसत मिलते ही यहां भागकर आता हूँ और नये घर में सुघड़ गृहणी की तरह सब ठीक करता हूँ।"

पोगोदिन के शब्दों में चिन्ता झलक रही थी जब कि मुख पर शान्तचित्तता व सन्तोष का भाव था। इवान बोरिसोविच को अपने खेत पर गर्व था, उसने खुद ही सरदे व तरबूज़ बोये थे खुद उनका पोषण किया था, सभाल की थी, पर आंधी ने उसका काम बढ़ाकर उसका खेत से लगाव और गहरा कर दिया था क्योंकि मनुष्य अपने सर्जन के लिए जितने अधिक कष्ट भोगता है, वह उसे उतना ही अधिक प्रिय होता जाता है

आयकीज को नाली के पास छोड़कर पोगोदिन ने क्यारियों के बीच जाकर बड़ी सावधानी से लताओं के सूखे तने सीधे किये पत्तियों पर से रेत झाड़ी। वह उसके लिए असामान्य सावधानी से कदम रख रहा था, धातुओं से निरन्तर वास्ता पड़ते रहने के कारण सावले

पर उनके ऊपर केवल [illegible] के पेड़ से धूप से ढकी [illegible] [illegible] खरबूजों के [illegible] छिलकों का स्पर्श कर रहे थे। खरबूज अभी हरे और [illegible] के पेड़ [illegible] बढ़े थे, [illegible] भी अभी पके नहीं थे, पर धू[illegible] [illegible] [illegible] मधुर सुगन्ध [illegible] रही थी।

पांगोदिन एक मेंड़ों के पास रुक गया और झुककर बिना मुँ[illegible] [illegible] से अपनी मेहमानिनी को पास बुलाया

ज़रा देखना तो, आयकीज़!

आयकीज़ जल्दी से पांगोदिन के पास पहुँची। इवान बोरिसोविच भी [illegible] [illegible] के साथ [illegible] में कुछ ही बढ़े [illegible] खरबूज की ओर सिर से संकेत किया। यह शीघ्र पकनेवाली किस्म का खरबूजा – कल्खोज़[illegible] था। पांगोदिन ने उसे तोड़कर हथेली में उस पर [illegible] [illegible] [illegible]। खरबूजा धूप में स्वर्णपिण्ड के सदृश चमचमा उठा। उसने खरबूजे को आयकीज़ की ओर बढ़ाया

देखो, पूरी तरह पक चुका है! सारी आदियों को ठेंगा दिखाता हुआ पक गया!

आयकीज़ ने उसे पांगोदिन से लेकर हाथ में तौला और प्रशंसात्मक विस्मय के साथ सिर हिलाया। खरबूजा छोटा होते हुए भी पत्थर-सा भारी था। उसे अपने चेहरे के पास लाकर आयकीज़ ने पीले छिलके से निकलती मधुर व अद्वितीय भीनी-भीनी सुगन्ध सूँघी।

'यह है मीठा!' इवान बोरिसोविच ने कहा। 'नाली पर चलते हैं, प्यारी मेहमानिन, दोपहर का खाना बादशाहों की तरह खाना करेंगे, अछूती धरती में उगे पहले खरबूजे का स्वाद चखेंगे!'

नाली के किनारे आयकीज़, जो मेमने के चमड़े के छोटे बूट पहने हुई थी, बड़ी जुर्राबों से घुटनों तक ढके पैरों के ऊपर साधारण छींट के कुरते का पल्ला डालकर पैर पानी की तरफ करके घास पर बैठ गयी। पांगोदिन ने भोजनालय से बचाकर लायी नान अपनी मेहमानिन को दी और बूट के मोज़े में से बड़ा दुटवा चाकू निकालकर खरबूज़े की एक-सी फाँकें काटीं और जब आयकीज़ ने उसे चख लिया, तो उल्लसित स्वर में पूछा

"अच्छा है ना?"

आयकीज़ ने प्रशंसात्मक ढंग से सिर हिलाया, क्योंकि ताज़ा खरबूज़े

के साथ नान खाने से बढ़कर स्वादिष्ट खाना कुछ नहीं हो सकता।

पोगोदिन ने अपनी फाक जल्दी से खा डाली और जब तक आयकीज खरबूजा खा पाती, इसने नाली के किनारे कुछ दूर जाकर उकड़ूं बैठ मेड पर से कुछ ढेले फेंककर खेत में पानी छोड़ दिया और गोंच में डूबा आजाद हुई उच्छृंखल धाराओं की तीव्र गति को मन्त्रमुग्ध-सा देखता हुआ वैसे ही कलकल करती नाली के पास बैठा रहा। पानी अपना रास्ता रोक रही लताओं के आस-पास डबर बनाता पुलकित व सन्तुष्ट होता बुदबुद करता क्यारियों के बीच से बहने लगा। सूखी धरती अपनी गोद में पल रही जड़ों को जीवनदायी रस प्रदान करने की तत्परता से पानी क्षुधातुरता से तीव्र गति से सोखती जा रही थी। पक्षी भी चुग्गा मिलते ही इतनी तत्परता से उसे अपने शावकों के पास ले जाते हैं।

पोगोदिन ने खेद के साथ एक ठण्डी सांस लेकर पानी फिर बंद कर दिया और हाथ धोकर उठ खड़ा हुआ। उसकी स्वप्निल दृष्टि लोलो द्वारा लगाये गये युवा वृक्षों पर टिक गयी। बाग की उस ओर कपास के खेत दृष्टिगोचर हो रहे थे। निकटवर्ती खेत को पार करता एक बेडौल व लमटगा आदमी आ रहा था। उसके डग लम्बे थे पर वह पैर ऐसे रख रहा था मानो उसे उन्हें दलदली कीचड़ से से निकालना पड रहा हो। उसके लम्बे डगों व धीमी चाल से पोगोदिन स्थानीय समाचारपत्र के कर्मचारी यूसुफी को पहचान गया।

"लगता है हमारे पास कोई मेहमान आ रहा है," उसने आयकीज की ओर लौटते हुए कहा और विस्मय से कंधे उचकाकर आगे कहा, "न जाने कौनसे शैतान ने इसे यहां भेजा है?"

"इवान कोरिसोविच!" आयकीज ने उपेक्षा से कहा।

"'इवान कोरिसोविच' क्या? मुझे यह नमूना पसन्द नहीं है। यह आदमी नहीं प्रेत है! दूध में मक्खी है!" पोगोदिन ने गुस्से से कहा। "इससे तो काली बिल्ली का रास्ता काटना बेहतर होगा।"

यूसुफी बाग का मोड़ पार करके आयकीज व पोगोदिन के निकट आता जा रहा था। आयकीज घास से उठ खड़ी हुई।

"अस्सलाम-अलैकुम, कामरेड यूसुफी!"

"अस्सलाम-अलैकुम !" पोगोदिन ने बिना विशेष सौजन्य के दोहरा दिया।

"व अलैकुम-अस्सलाम," यूसुफी ने रुखाई से जवाब दिया और आयकीज़ की ओर मुड़कर उससे बोला "मुझे कुछ मिनट का समय दीजिये, कामरेड उमुर्ज़ाकोवा। हम कहाँ बातचीत कर सकते हैं?"

"यहीं!" आयकीज ने किनारे की ओर संकेत किया। "यहाँ क्या बुरा है?"

"दिली बातचीत के लिए सबसे अच्छी जगह है," पोगोदिन ने द्वेषपूर्वक टिप्पणी की। "सभी जानते हैं कि प्रकृति काव्य-सृजन के लिए प्रेरणा प्रदान करती है।"

यूसुफी ने भौंह तक नहीं हिलाई, केवल एक उकताहट-भरी उड़ती नजर पोगोदिन पर डाली और संकेतपूर्ण ढंग से खासकर आशा-भरी नजरों से आयकीज को एकटक देखने लगा।

"खरबूजा खायेंगे?" आयकीज ने मित्रतापूर्ण ढंग से कहा। "इवान बोरिसोविच बड़ी खुशी से खिलायेंगे। ये अछूती धरती के पहले फल हैं।"

"मैं यहाँ खरबूजे खाने नहीं आया हूँ," अतिथि ने कहा, हालांकि उसके शब्दों में खीज झलक रही थी, पर उसके स्वर में खीज का अभाव था, आवाज़ पूर्ववत् भावहीन और उबाऊ बनी रही।

यूसुफी ने तिरछी नज़र से पोगोदिन की ओर देखा, और उसकी उदासीन दृष्टि से इवान बोरिसोविच ने सहनशील व हठपूर्ण विनती भाप ली "तुम जाओ, तुम मुझे परेशान कर रहे हो।" पोगोदिन ने इस प्रार्थना की उपेक्षा करने का फैसला किया, पर उसे बुलाने के लिए एक नौजवान ट्रैक्टर-चालक भागता हुआ आ पहुँचा इवान बोरिसोविच को टेलीफोन पर बुलाया गया था। वह एक ठण्डी साँस लेकर अनिच्छापूर्वक पूर्वरचित घर की ओर चला गया।

यूसुफी घास पर बैठ गया और उसने नोटबुक में देखकर पूछताछ शुरू कर दी। यूसुफी के स्वर व कठोर मुख-मुद्रा से कोई सन्देह नहीं रह गया था यह पूछताछ ही थी। किन्तु आयकीज किसी प्रकार भी उसका लक्ष्य नहीं भाँप पायी। पत्रकार को जिन सूचनाओं में रुचि थी, वे एक दूसरे से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं रखती थीं, प्रश्न बेतरतीब थे। लगता था वह एकमात्र उसे ही ज्ञात व स्पष्ट योजना के अन्तर्गत

कार्य कर रहा है, और वह लेख, जिसके कारण वह अलतीनसाय आया था, पहले से तैयार है, तथा यूसुफी आयकीज के उत्तरों में केवल खुद को ज्ञात तथ्यों की पुष्टि का आधार खोज रहा है।

आयकीज के साथ बातचीत से पूर्व ही उसके कार्यकलापों के बारे में उसकी अपनी "निजी", सुलतानोव व कादीरोव की सुभाई राय कायम हो चुकी थी। आयकीज से बातचीत के दौरान वह मन-ही-मन ऐसे वाक्य चुन रहा था, जिनका उद्देश्य उसके लेख को उपयुक्त रूप में विश्वासोत्पादक बनाना था "कामरेड उमूरजाकोवा ने स्वयं स्वीकार किया" "स्वयं उमूरजाकोवा के शब्दों में यह पूर्णत स्पष्ट हो जाता है"। वह आयकीज की कार्रवाइयों, सुभावों व निर्णयों को समझने का प्रयास नहीं कर रहा था, यह उसकी योजनाओं में शामिल नहीं था। उसके लिए केवल एक ही बात महत्त्वपूर्ण थी कि आयकीज तथ्यों को स्वीकार कर ले, जिन्हें बाद में वह आयकीज के लिए हानिकारक रंग में पेश करने में सफल हो जायेगा। आयकीज ने उन तथ्यों का प्रतिवाद नहीं किया। वह नहीं समझती थी कि अखबार-नवीस का लक्ष्य क्या है। यूसुफी को उत्तर देते समय उसकी आवाज में हैरानी झलक रही थी, किन्तु जिन बातों के बारे में वह उससे पूछताछ कर रहा था, वे हुई थी और वह शान्तिपूर्वक उनकी पुष्टि कर रही थी। हां, सामूहिक फार्म इस समय जिस ज़मीन को कृषि योग्य बना रहा था, वह अभी तक अनुपजाऊ मानी जाती रही थी। हां, यहां आंधियां व तेज़ लू अकसर चलती रहती हैं। हां हाल में आयी आंधी से सामूहिक फार्म को काफी क्षति पहुँची है। लेकिन

फिर भी जैसे ही "लेकिन" कहा जाता, अखबारनवीस आयकीज को टोककर उससे अगला सवाल पूछने लगता। आयकीज कंधे उचकाकर जवाब देने लगती – उसके लिए और कोई चारा नहीं रह जाता। वह यूसुफी को किसी प्रकार नहीं समझा सकी कि अछूती धरती की अनुर्वरता के मत का अनेक प्रयोगों तथा स्वयं जीवन द्वारा खण्डन किया जा चुका है, कि उसके सुभाव पर हलीम-बाबा ने अपने बाग के एक टुकड़े पर कपास की बोवाई की और अछूती धरती के उस टुकड़े पर कपास खिलने भी लगी है, कि इस प्रदेश के किसी भी इलाके का आंधियों से होनेवाली हानि का बीमा नहीं करवाया गया है, कि हाल

"क्या कभी उन दोनों की एक दूसरे से तुलना की जा सकती है? हम जितनी जल्दी बस्ती का निर्माण पूरा कर लेंगे, उतनी जल्दी ही प्रवासी सामूहिक किसानों को पूरी शक्ति से और विशेषत कपास के खेतों में काम करने का अवसर मिल सकेगा।"

"हो सकता है, हो सकता है," यूसुफी ने अस्पष्ट स्वर में गुर्राकर फिर नोटबुक में कुछ निशान लगाया। "मैंने सुना है कि एक खेत में हूँ शायद मुल्ला-सुलैमान की टोली के खेत में कपास फिर भी बरबाद हो गयी है?

आयकोज की आखे धुधला गयी, उसने खोखली आवाज में कहा

"इस मामले में शायद हमने पूरी सावधानी नहीं बरती उस टोली को काफी पहले ही सभाल लेना चाहिए था। कामरेड यूसुफी अच्छा होगा कि आप कुछ टोलियों के पिछड़ने के कारणों का पता लगायें। वे कोरे कागज़ में धब्बों की तरह हैं। सामूहिक फार्म आपका बहुत आभारी होगा।"

लेकिन यूसुफी आयकोज की बात अब सुन ही नहीं रहा था। वह अपनी नोटबुक बद करके बेढब तरीके से जड़वत् (मोटर का टुटका नाप इसी तरह सुनता है) मुड़ा हुआ और बातों ही बातों में पूछा

"बताइये, क्या स्थानीय पार्टी सगठन के सचिव आलिमजान आपके पति हैं?"

"हा लेकिन इसका इससे क्या वास्ता "

"हर चीज का वास्ता है। द्वद्ववाद हमें यही शिक्षा देता है यूसुफी ने उपदेशगर्भित स्वर में कहा। "क्या वह भी अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने के पक्ष में हैं?"

"सामूहिक फार्म के सभी कम्युनिस्टों ने हमारी योजना के पक्ष में मत दिया है। हा, उधर इस योजना के प्रवर्त्तकों में से एक – पोगो-दिन आ रहे हैं। वह इस बारे में आपको मुझसे ज्यादा अच्छी तरह बता देंगे।"

यूसुफी एकदम मुड़ा – पोगोदिन वास्तव में उनके पास आ रहा था। सोच में डूबे-डूबे अरवाग्नवीस ने होठ चबाकर घड़ी ऐन अपनी ऐनक के पास ले जाकर जल्दी से कहा

"मुझे अफसोस है, मैं जल्दी में हूँ। पोगोदिन के साथ मैं फिर

की आंधी के कुप्रभावों को लगभग पूर्णतया दूर कर दिया गया है। इन सब बातों के बारे में यूसुफी ने उसे कुछ कहने का अवसर ही नहीं दिया। किन्तु क्या उन बातों के स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता थी, जो सबके लिए वैसे ही स्पष्ट थीं? आयकीज़ यूसुफी को उसके लेखों व हास्य-स्तम्भ की बदौलत जानती थी। आयकीज़ को यदा-कदा उनकी उद्दन्ड शैली खटकती, किन्तु इसमें उसे अखबारनवीस की ईमानदारी में सन्देह करने का कोई आधार नहीं मिलता। केवल एक बात थी, जो उसे सतर्क कर रही थी यूसुफी उसके उत्तरों को नहीं लिख रहा था, बल्कि अपनी नोटबुक में कुछ रेखांकित कर रहा था

"कृपया यह बताइये," यूसुफी ने इस बीच अपनी नोटबुक के पृष्ठ पर तिरछी नजर डालकर पूछना जारी रखा, "कि आपको ग्राम सोवियत में ढूंढ पाना मुश्किल होता है, कभी-कभी तो आप कई दिन अछूती धरती में बिताती हैं। क्या ग्राम सोवियत की अध्यक्षा की हैसियत से आपका मुख्य कार्य – अछूती धरती को कृषि योग्य बनाना ही है?"

आयकीज़ मुस्करा उठी

"आप खुद भी बेशक यह समझते होंगे कि ग्राम सोवियत के अध्यक्ष को केवल कक्ष में बैठा रहनेवाला कर्मचारी नहीं होना चाहिए। जनता ने हमें उसकी सबसे प्रमुख व महत्त्वपूर्ण कार्य में मदद करने के लिए चुना है। और इस समय नयी जमीन को कृषि योग्य बनाना सर्वोपरि है। और इसमें मेरे काम में बाधा नहीं "

"समझ गया, समझ गया," यूसुफी ने उसे फिर टोक दिया और नोटबुक का पन्ना पलटकर पूछने लगा "सुना है कि आप ही ने हठ किया था कि कपास के खेतों में काम कर रहे सामूहिक किसानों के एक भाग को अछूती धरती और नयी बस्ती के निर्माण कार्य पर भेज दिया जाये?"

"ऐसा खुद सामूहिक किसानों ने ही किया। क्योंकि जहां केवल एक आदमी से काम चल रहा था, कादीरोव ने अत्यधिक सावधानी बरतते हुए दो आदमी लगा रखे थे। उनकी मशीनरी के बारे में भी अच्छी राय नहीं है। इसके अलावा "

"आपके विचार में क्या अधिक महत्त्वपूर्ण है कपास पैदा करना या गांव का निर्माण?"

"क्या कभी उन दोनो की एक दूसरे से तुलना की जा सकती है? हम जितनी जल्दी बस्ती का निर्माण पूरा कर लेगे, उतनी जल्दी ही प्रवासी सामूहिक किसानो को पूरी शक्ति से और विशेषत कपास के खेतो मे काम करने का अवसर मिल सकेगा।"

"हो सकता है, हो सकता है," यूसुफी ने अस्पष्ट स्वर मे गुर्राकर फिर नोटबुक मे कुछ निशान लगाया। "मैने सुना है कि एक खेत मे हूँ शायद मुल्ला-सुलैमान की टोली के खेत मे कपास फिर भी बरबाद हो गयी है?

आयकीज की आखे धुधला गयी, उसने खोखली आवाज मे कहा

"इस मामले मे शायद हमने पूरी सावधानी नही बरती उस टोली को काफी पहले ही सभाल लेना चाहिए था। कामरेड यूसुफी, अच्छा होगा कि आप कुछ टोलियों के पिछडने के कारणो का पता लगायें। वे कोरे कागज मे धब्बों की तरह हैं। सामूहिक फार्म आपका बहुत आभारी होगा।"

लेकिन यूसुफी आयकीज की बात अब सुन ही नही रहा था। वह अपनी नोटबुक बद करके बेढब तरीके से जडवत् (मीटर का टूटवा नाप इसी तरह खुलता है) खडा हुआ और बातों ही बातो मे पूछा

"बताइये, क्या स्थानीय पार्टी सगठन के सचिव आलिमजान आपके पति हैं?"

"हा लेकिन इसका इससे क्या वास्ता "

"हर चीज का वास्ता है। द्वद्ववाद हमे यही शिक्षा देता है," यूसुफी ने उपदेशगर्भित स्वर मे कहा। "क्या वह भी अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने के पक्ष मे है?"

"सामूहिक फार्म के सभी कम्युनिस्टो ने हमारी योजना के पक्ष मे मत दिया है। हा, उधर इस योजना के प्रवर्तकों मे से एक – पोगोदिन आ रहे हैं। वह इस बारे मे आपको मुझसे ज्यादा अच्छी तरह बता देंगे।"

यूसुफी एकदम मुडा – पोगोदिन वास्तव मे उनके पास आ रहा था। सोच मे डूबे-डूबे अखबारनवीस ने होठ चबाकर घडी गेन अपनी ऐनक के पास ले जाकर जल्दी से कहा

"मुझे अफसोस है, मैं जल्दी मे हूँ। पोगोदिन के साथ मैं फिर

कभी बात कर लूँगा। आपका धन्यवाद, कामरेड उमूरजाकोवा, आपने बहुत-सी बातें स्पष्ट करने में मेरी काफ़ी मदद की।"

उसने ढीले-ढाले ढंग से आयकीज़ से हाथ मिलाया और पोगोदिन के निकट आने की प्रतीक्षा किये बिना सारस की जैसी भोंडी, लम्बी चाल से डग भरता नाली से दूर चला गया।

आयकीज़ उसे जाते हुए देखती रही। उसके चेहरे पर तनाव छाया था। बातचीत के अन्त में उसे दाल में कुछ काला नज़र आने लगा था, पर वह अपना बचाव केवल बहस में कर सकती थी जब कि यूसुफ़ी बहस करने से कतरा गया था।

उसने आयकीज़ को पूरी बात कहने का मौक़ा ही नहीं दिया - वह पूछता रहा और आयकीज़ जवाब देती रही। वह शायद इससे सन्तुष्ट था। किन्तु क्या यह आयकीज़ के लिए लाभदायक था?

पोगोदिन खुशख़बरी लेकर आया था। उसका चौड़ा, [illegible] चेहरा ख़ुशी से खिला हुआ था मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में तमाम पुर्ज़े की नयी कम्बाइनें आ गयी थीं। वह आयकीज़ को भी ख़ुश करना चाहता था पर उस पर नज़र डालकर खिन्न हो उठा। उसने यूसुफ़ी की दूर जाती आकृति की ओर संकेत करके पूछा

'उसे क्या चाहिए था?'

"कुछ अजीब-सी बात है," आयकीज़ ने धीरे-धीरे, मानो कुछ सोचते हुए जवाब दिया। "वह मुझसे अपनी धरती और [illegible] के बारे में पूछ रहा था। मुझे कुछ ऐसा महसूस होता है कि वह शायद शायद वह मुझ पर कोई दोष मढ़ना चाहता है। वह मुझसे इन्स्पेक्टर की तरह बात कर रहा था जिसे अपराध का पहले से ज्ञान हो। लेकिन अपराध क्या हुआ है?"

"ठीक है और यानी मेरा इन्तज़ार करने की उसे इच्छा नहीं हुई? सचमुच अजीब बात है।"

"हो सकता है मैं ग़लती पर हूँ," आयकीज़ ने कहा। "शायद वह तो सभी के साथ इसी तरह बात करता है।"

"और इसका अन्त कभी शुभ नहीं होता।" पोगोदिन ने [illegible] पूर्ण निश्चिन्तता से आयकीज़ से नज़र मिलाकर [illegible]

[illegible] आयकीज़। कुछ गड़बड़ी नज़र आते ही [illegible]

कीच भी रही थी। [illegible] के [illegible] शब्द थे, अ
से पूर्ण [illegible] था। आयकीज को इस विचार मात्र से ही
[illegible] को अनुभूति हुई कि उसके इर्द-गिर्द अभी ऐसे लोग है,
तरह के काम कर सकते है। उसे वह सब स्मरण हो आया, जो
दिन से गुप्ती के बारे मे कहा था। मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के
की सब बात याद [illegible] हुई। वह जीवन को ज्यादा अच्छा
उसकी बातो को ध्यान आयकीज मे बेहतर थी। अब कि व
है, अविश्वासी है किन्तु उसकी अपनी बात भी सही है, व
विश्वासघात मे नही है क्योकि लोगो पर विश्वास करना
जीवन का नियम है। केवल सतर्क रहना आवश्यक है। उसे वि
भी होना चाहिए और सतर्क भी।

आयकीज अनायास गहरी सोच मे डूब गयी इस लेख को
कैसा माने ? अभी तक उसे केवल कटु उदासी और पीडा तक म
हो रही थी, लेकिन रोष नही। किसी को गलत समझना कष्टद
होता है। यह ज्ञात होने पर कि मुझे लोग समझ नही सके, कि मु
मार्ग मे अचानक एक नयी बाधा उत्पन्न हो गयी है, बहुत कटु म
है। लेकिन क्या इस कारण से घबराना चाहिए ? लेख असत्य
व दुर्भावनापूर्ण है। किन्तु आयकीज के भाग्य मे वह क्या बदल स
है ? कुछ नही ! आयकीज अपनी सत्यता मे जैसी निश्चयी थी, वै
ही अभी भी है। वह किसानो के बेहतर जीवन के लिए संघर्ष कर र
थी और संघर्ष करना नही छोडेगी। इस समय उस पर कीचड उछा
गयी है। किन्तु बेईमान हाथ द्वारा उछाले गये कीचड के धब्बे ईमान
नाम पर नही लगेंगे। और अगर लग भी जाये – तो भी क्या ! दूसरे
रोव भले ही अपनी प्रतिष्ठा की खातिर घबराता रहे, आयकीज निन्द
से नही डरती है – बस उसके उज्ज्वल लक्ष्यो को कलंकि
न किया जाये

वह फिर समाचारपत्र उठाकर दुबारा लेख बडे ध्यान से पढ़ने
[illegible] प्रत्येक पंक्ति मे उसके कुलनाम पर छींटाकशी
[illegible] को अत्यन्त स्पष्ट नजर आ गया है
[illegible] योजना पर किया गया है, जिसका जन्म और
[illegible]पूरण के मध्य हुआ था। लेख सब आयकीज है

जीवन में कुछ नहीं बदल रहा था, लेकिन अछूती धरती के भाग्य को, सामूहिक-फार्म के भाग्य और साधारण किसानों के भविष्य को प्रभावित कर सकता था! शत्रु ने अपने अधम लक्ष्यों – हां, अधम! – के लिए तलवार खींचकर पार्टी के मंच, समाचार-साधनों की शक्ति का उपयोग किया है। यह शायद उसका पहला वार है, इस वार से बचना चाहिए और दूसरे वार से बचने की भी तैयारी करनी चाहिए। जब कि उसने तो बड़ी लापरवाही से रक्षा के विचार की उपेक्षा कर दी थी! यदि केवल उसी के बारे में बात हो रही होती, यदि लेख से केवल उसका ही बुरा होने का खतरा होता, तब तो शायद आयकीज का मौन साधना उचित भी होता। किन्तु लेख केवल उसके अकेली के लिए ही खतरनाक नहीं है अपनी रक्षा करनी चाहिए – नहीं आत्म-रक्षा ही नहीं, बल्कि उस कार्य की रक्षा के लिए हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिए, जिसके लिए आयकीज भी, पोगोदिन भी, बूढ़े हलीम-बाबा भी, युवा एक्सकेवेटर-चालक भी, वेकबूता, करीम और सेमरी भी संघर्ष कर रहे हैं! यदि प्रांतीय समिति में यूसुफी के एक भी शब्द पर विश्वास कर लिया गया, तो केवल आयकीज के लिए ही नहीं बल्कि सभी के लिए मुश्किल हो जायेगी!

आयकीज अखबार को एक ओर फेंक मेज से उठ खड़ी हुई और जाकेट की जेबों में झटके से हाथ डाल उत्तेजित हुई कमरे में चहल-कदमी करने लगी। भली-भाँति सोच-विचार कर लेना जरूरी था कि संघर्ष कैसे करना चाहिए, रक्षा किससे करनी चाहिए। यूसुफी के पीछे निस्सन्देह कोई ठोस विरोधी है। क्या सुलतानोव? या कादीरोव? या उनके समर्थकों में से कोई? लेकिन उनके मोर्चे तो तोड़ दिये गये-से लगते थे। लेकिन आखिर वे हथियार क्यों नहीं रख रहे हैं? ऐसा क्या है, जो उन्हें सबके लिए स्पष्ट और आवश्यक योजना का इतना प्रचण्ड विरोध कर रहे हैं? क्या वे वास्तव में यह नहीं समझते हैं कि वे जनता की इच्छा के विरुद्ध जा रहे हैं? या फिर केवल इसी-लिए कि उनकी बात सही नहीं है। वे अत्यन्त निष्ठुरता से उन लोगों पर वार कर रहे हैं, जिनकी स्थिति न्यायसंगत है? सदा यह अनुमान लगा पाना असम्भव है कि वे क्या करने की ठानते हैं, अपनी भ्रान्ति व दुर्बल क्रोध से अंधे हुए क्या चाल चलते हैं! और मुख्य बात यह

१६*

आयसीज बत्ती जलाकर ग्राम गोवियन की जमीन के नक्शे के पास आ गयी। हरी पेंसिल से रेखाच्छादित नहरों व नालियों की बारीक रेखाएँ कपास के भूखण्डों के मध्य से बनाई गी नीली नसों की तरह निकल रही थी। मानचित्र में पहाड़ों को पीले रंग से दिखाया गया था तथा कसबे व गाँव – लाल वर्गों व आयतों के समूहों के माध्यम से। केवल अछूती स्तेपी रंगों से वंचित थी। "मानचित्र पर श्वेत धब्बा," आयकीज ने सोचा और अछूती धरती को कपास के खेतों से अलग करनेवाली बिन्दीदार रेखा पर उंगली चलाई। "जब कि मानचित्र पर एक भी श्वेत धब्बा नहीं रहना चाहिए। मैं इसी की खातिर मोर्चा लूंगी।" और उसने मन-ही-मन दोहराया "बस सारी बातें अच्छी तरह सोच-समझ लेनी चाहिए" उसकी नजर टेलीफोन पर पड़ी। "जुरावायेव को फोन करूँ? नहीं, कल तक इन्तजार किये लेती हूँ। अभी समय है। न जाने क्या मुसीबत टूट पड़े!"

आयकीज घर काफी देर से लौटी। आलिमजान अभी तक शहर से नहीं लौटा था। उमूरज़ाक-अता सो रहे थे। उनकी सांस भारी और रुक-रुककर चल रही थी। आयकीज दबे पांव उनके पलंग के करीब गयी। उसने स्नेह व आशंका के साथ उनके चेहरे पर नज़र डाली। चेहरा कुछ पिचक गया था, आंखों के नीचे नीली-नीली झुर्रियाँ पड़ गयी थी। वृद्ध पिछले कुछ समय से अस्वस्थ था और आयकीज ने उसे आज खेत में नहीं जाने दिया था। दोपहर में काम से कुछ समय निकालकर वह घर हो आयी थी, पिता को खाना खिला गयी थी, दवाई पीने के लिए मजबूर कर गयी थी। उमूरज़ाक-अता इलाज कराना पसंद नहीं करते थे फिर इस बार उन्होंने बेटी का कहा मान लिया था वह जल्दी से जल्दी चलने-फिरने लायक हो जाना चाहते थे। उन्होंने डाक्टर को नहीं बुलवाने दिया। अभी डाक्टरों से जान-पहचान करना जल्दबाजी होगी, क्योंकि वह अभी तो सौ के नहीं हैं!

पिता की नीन्द खराब न करने की कोशिश करती आयकीज दबे पाव अपने कमरे में चली गयी। वह यह न देख पायी कि उसके मुड़ते ही उमूरज़ाक-अता ने थोड़ी आंखें खोलकर सिर उठाया और बेटी को स्नेहपूर्ण व चिन्ताकुल आंखों से जाते देखते रहे। वह आज का समाचारपत्र कभी का पढ़ चुके थे

श्रम – हमारा हथियार

आयकीज़ गहरी नीन्द सोयी और देर से जागी। सूरज की सुनहरी किरणों ने दीवारों को रंगकर चटकीले प्रतिबिम्बों से सजा दिया था वह पिता के कमरे में गयी, पर उमूरज़ाक़-अता वहाँ नहीं थे। उनका बिस्तर सलीके से तह किया रखा हुआ था। आयकीज़ घबरा उठी क्या वह सचमुच काम पर चले गये हैं? उन्हें तो घर से बाहर निकलना मना है! उन्हें लेटे रहना चाहिए, उन्हें शान्ति व आराम की ज़रूरत है।

आयकीज़ होंठ चबाकर बागीचे में भागी मानो अनश्वर वृद्ध को रोक सकती हो। पिता तसले पर झुके खड़े हाथ-मुँह धो रहे थे। उनके बदन पर चोगा नहीं था और लम्बे सफ़ेद कुरते के कॉलर से झुर्रीदार सूखी चमड़ीवाली गरदन दिखाई दे रही थी। उमूरज़ाक़-अता की चेष्टाएं मन्द थी वह बड़ी मुश्किल से नाली पर झुक-झुककर अंजलियों से पानी भर-भरकर धीरे-धीरे सीधे खड़े हो रहे थे और मुँह, गरदन व सीना भी धीरे-धीरे धो रहे थे। पीछे से कदमों की आहट सुनकर उन्होंने मुड़कर स्नेहपूर्वक बेटी से दुआ-सलाम किया

"सलाम, आयकीज़! मुझे इस बात की खुशी है कि तुम्हारा चित्त शान्त है ऐसी गहरी नीन्द वही सोते हैं, जिनका दिल साफ़ होता है।"

पिता सदा की भांति एकसुरे स्वर व किंचित् आडम्बरपूर्ण भाषा में बोल रहे थे, पर आयकीज़ का हृदय बह रहा था उन्हें सारी बात मालूम है!

"अब्बा! आप बिस्तर से उठ क्यों गये?"

तौलिये से गरदन व चेहरा पोंछने और, जैसा कि आयकीज़ को लगा, यह सब जानबूझकर स्वाभाविक फुर्ती से करते हुए उमूरज़ाक़-अता मुस्करा उठे

"मैं बुड्ढा हो चुका हूँ, बेटी! अगर अल्लाह मुझे कुछ और

दिन बख्शाना, तो शायद उनमे से कुछ को मैंने बेकार गँवा दिया होता लेकिन मेरा सफर ज्यादा लम्बा नही है और बाकी बचा रास्ता मैं रेंग-रेंगकर नही, शान से डग भरते हुए तय करना चाहता हूँ। बस हमारे नौजवान वक्त की परवाह नही करते हैं। चलो, चाय पियें। मैंने केतली में पानी उबाल लिया है।"

"उसके बाद लेट जायेंगे ना?"

वृद्ध ने पुत्री की ओर एकटक देखकर सिर हिलाया

"नही, बेटी, यह लेटे रहने का वक्त नही है।"

"मगर आप बीमार है। देख रहे हैं, आपके हाथ काँप रहे है।"

"यह बीमारी की वजह से नही है। मेरे दिल को चैन नही है, बेटी तुम्हारी खातिर डरता हूँ।"

"मेरी खातिर डरने की कोई बात ही नही है।"

किन्तु वृद्ध उसकी बात अनसुनी करता आगे बोलता गया।

"मुझे सब मालूम है, आयकीज। पड़ोसियो ने मुझे कल अखबार दिखाया था, उसे करीम ज़िले से लाया था। मैं सारी रात नही सो पाया। उसने मेरे दिल में आग लगा रखी है।"

"उस लेख से आपको घबराना नही चाहिए, अब्बा। आपके लिए घबराना अच्छा नही होगा।"

बरामदे के पास आ रहे उमूरजाक-अता रुक गये।

"सिर्फ पहाड़ ही हर वक्त शान्त रह सकते हैं। उनके दिल पत्थर के होते हैं, बेटी। जब कि हमारे दिल फूलो की तरह हवा के पहले झोंके से ही हिलने लगते हैं। लोगों ने यू ही तो नही कहा है इनसान पत्थर से सख्त और गुलाब से नाजुक होता है।"

आयकीज पिता की शान्तचित्तता से विस्मित हो रही थी। वह शायद दिल से परेशान हो रहे थे, तड़प रहे थे, पर न अपने दुख को जाहिर होने दे रहे थे, न रोष को। मानो वह अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण शान्तचित्तता आयकीज को प्रदान करना चाह रहे थे। उनकी पूर्ववत् स्नेहपूर्ण, उत्साहवर्धक आँखें मानो कह रही हों "साहस मत छोड़ो, बेटी, भाग्य जो हमारी परीक्षा ले रहा है, उसमें हमे ससम्मान गर्वपूर्वक माथा ऊंचा किये उत्तीर्ण होना है। साहस मत छोड़ो, मुझे तुम पर विश्वास है।"

गयी। किन्तु वह यह नहीं होने दे सकती थी कि पिता उसकी खातिर अपनी शान्ति व स्वास्थ्य का बलिदान कर दे।

"ठहरिये, अब्बा! आप अकेले क्या कर सकते है, फिर भी ऐसा हालत मे?"

"अकेला चश्मा भी तो फायदा पहुँचाता है—क्योंकि अन्त मे वह भी नदी मे मिल जाता है। और मैं, बेटी, अकेला नहीं हूँ। मेरी उपटोली है। आलिमजान भी जाते वक्त मुझे इस बात का ध्यान रखने को कह गया था कि उसका मददगार काम कैसे करता है। मेरे खेत मे बहुत-से आदमी हैं और काम भी बहुत है। कपास खिलने लगी है, आयकीज।"

"आप एक दिन और घर पर रहे, तो इसमे कुछ बिगड़नेवाला नही है। आपको शान्ति की जरूरत है।"

उमुरजाक-अता की भौंहे तन गयी

"मुझे घर पर चैन नहीं आ सकता। जब आदमी की इज्जत पर आच आती है, वह हथियार उठा लेता है। हमारा एक ही हथियार है—हमारी मेहनत, हमारी लगन। चुगलखोर कहते है आयकीज ने कपास के खेतो पर आधी बुलवायी थी। और हम यह साबित करके दिखा देंगे कि लोग आधी से ज्यादा ताकतवर है। चुगलखोर कहते हैं कपास बरबाद हो जायेगी। जब कि हम कपास को पहले ही बचा चुके हैं, और मैं अपने खेत मे ऐसी फसल पैदा करूँगा, जैसी किसी ने अलतीनसाय मे कभी नही देखी होगी! वे कहते है अछूती धरती को खेती लायक बनाने और पुराने खेतो मे कपास की सभाल करने के लिए हमारी ताकत कम पड़ जायेगी। हाँ, बेटी, यह कर पाना हमारे लिए असम्भव होता, अगर अलतीनसाय मे कामचोर और कायर रह रहे होते। लेकिन अलतीनसायवालो को अपने लिए भले और बुरे मे फर्क करना आता है कुदाल दो, आयकीज, मेरा खेत जाने का वक्त हो गया है।"

उन्होंने अन्तिम शब्द इस प्रकार कहे मानो पुत्री को आदेश दे रहे हो "बन्दूक दो, मैं लड़ने जाऊँगा!" अब उनके स्वर मे स्नेह का नही, रोब और दृढनिश्चयता का पुट था। आयकीज उनकी अवज्ञा करने का साहस न कर सकी। वह वृद्ध को घर पर रोक पाने मे असमर्थ

रह पाने के कमदिमाग के लिए अपने को कोसते हुए कुदाल व सफ़ेद नमदे की टोपी ले आयी, उनका रंग उड़ा कमरबंद ठीक करके उन्हें फाटक तक छोड़ गयी और दूर जाते देखती रही वह रास्ते में टेढ़ी-मेढ़ी और हठपूर्ण चाल से चले जा रहे थे। उनके कंधे पर कुदाल हिल रहा था। "जल्दी से ग्राम सोवियत भागती हूँ, बाद में खेत में अब्बा के पास जाऊँगी," आयशीज ने फ़ैसला किया। "मैं अकेली उनका इरादा नहीं बदलवा सकी – दूसरे लोग मदद करेंगे। आलिमजान फिर नहीं है! जब उनकी जरूरत होती है, जैसे जानबूझकर पास नहीं होते "

रास्ते के आखीर में उमूरज़ाक-अता थक गये और उन्होंने अपनी चाल धीमी कर दी। जब वह खेत में पहुँचे, काम ज़ोरों पर था। क्यारियों के सहारे-सहारे आह्लादक घरघर करते तीन पहियोंवाले छोटे सर्वप्रयोजन ट्रैक्टर चल रहे थे उनमें से कुछ कल्टीवेटर खींच रहे थे, कुछ पौधों के इर्द-गिर्द ढूहे बना रहे थे। किसान छकड़ों में खाद ढो रहे थे, ट्रैक्टरों द्वारा बनाई गयी हलरेखाओं में पानी छोड़ रहे थे, कुदालों से मिट्टी ढीली कर रहे थे, कपास के पौधों के इर्द-गिर्द ढूहे बना रहे थे।

कपास खिल रही थी खेत रंगबिरंगा और पाटल-श्वेत हो रहा था, दो दिन पूर्व के मुकाबले उसमें पाटलवर्णी फूल ज़्यादा खिले हुए थे। श्वेत पुष्प केवल पौधों के ऊपरी सिरों पर ही रह गये थे। झड़े हुए फूल कम थे, – यानी अफलित कम होंगे। कपास एक-समान खिली हुई थी, मानो इन खेतों पर आधी आयी ही नहीं हो। "क्या लोग कभी ऐसे मेहनत कर सकते थे," उमूरज़ाक-अता ने सोचा, "अगर उन्हें अपने सच्चे होने का विश्वास न होता! नहीं, लोगों की बात सदा सही होती है।" उमूरज़ाक-अता की उपटोली के किसान उनकी ओर मुड़े। किसानों का अभिवादन करके वृद्ध ने उनकी ओर हाथ हिलाया काम जारी रखिये, मैं आपसे पीछे नहीं रहूँगा वह काम कर रहे लोगों के पास जो उनको सगों जैसे प्रिय थे, गये नहीं। क्योंकि क्या पता वे उन्हें बिस्तर में लेटने के लिए मनाने लग जायें। स ' बीमार है? वैसे बाबा कथा दुखता है, सिर चकराता लेन म मुश्किल होती है यह ज़रूर काम सारे दिन

विस्तर में पड़े रहने के कारण हुआ है। आराम आदमी को सुस्त बना देता है, जब कि कर्म सक्रिय कर देता है। उमूरजाक-अता गृह-युद्ध के वर्षों में लाल सैनिक रहे थे। उन्हें याद है कि कई किलोमीटर के मार्च के बाद थोड़ा-सा सुस्ताने के पश्चात् जमीन से उठना और फिर सफर पर रवाना होना कितना मुश्किल होता था। बिना आराम किये आगे ही आगे, दूरस्थ और निश्चित विजय की ओर अग्रसर होते रहना कहीं बेहतर होता है!

सूरज क्षितिज के ऊपर पहुँच गया था। उमूरजाक-अता अपने खेत की कतारों के बीच एक-समान गति से ऊँचा उठा-उठाकर कुदाल चलाते हुए सूरज की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। मिट्टी हौले से कपास के पौधों के तनों के इर्द-गिर्द चिपटी जा रही थी, पत्तियां किंचित् मरमरा रही थीं, जैसे मन्द झोंकों के चलने से पत्तियों के तले से श्वेत, पाटल पुष्प वृद्ध का उत्साहपूर्वक अभिनन्दन करते हुए उसकी ओर झांक रहे थे। उमूरजाक-अता कभी-कभी बीच में रुककर ढीठ खर-पतवार – गुमाय के इर्द-गिर्द मिट्टी खोदते, जमीन से उसकी लम्बी, सफेद जड़ें चुनते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे।

चलना दूभर होता जा रहा था। कमीज तर हो गयी थी, पर वृद्ध को न जाने क्यों कंपकंपी छूट रही थी पैरों में कमजोरी महसूस हो रही थी और बायें कंधे का दर्द उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। सूरज काफी ऊपर चढ़ चुका था, कड़ाके की, स्तम्भित कर डालनेवाली गर्मी पड़ रही थी। जमीन तप रही थी और कुदाल की चोटों से मिट्टी उड़ रही थी।

कुछ ही समय में वृद्ध की ताकत बिलकुल जवाब दे गयी। वह रुक गया। उसने अनथक ट्रैक्टरों की ओर देखकर दुखी मन से सोचा आखिर हम कब कुदाल की जगह भी मशीन से काम लेंगे? 'लकड़ी के हल से तो काफी अरसे पहले पिण्ड छुड़ा चुके हैं, नौजवान तो जानते भी नहीं कि वह होता क्या है। पर कुदाल मैं तेरा आदी हो चुका हूँ, दोस्त, फिर भी तुझे विदा करके मुझे सचमुच बेहद खुशी होगी। कितनी खुदाई की है इन हाथों ने!"

एकाएक उन्हें अपने – ऐन कान के पास जानी-पहचानी भर्रायी हुई आवाज सुनाई दी

"अस्सलाम-अलैकुम, अता! "

उमरजाक-अता चौंक गये, मुड़कर देखा, गफ़ूर था।

गर्मी के बावजूद वही मिरजई पहने हुआ था। उसकी आंखें कुटिलता और विजय की मुद्रा में सिकुड़ी हुई थीं, नाक तले दो जोंकों की सी छोटी-छोटी मूंछें थीं और मूंछों के नीचे नाग-सी जहरीली मुस्कान, जिसमें विनम्रता का पुट भी था और छिपे हुए दुर्भाव का भी। गफ़ूर ने सीने पर हाथ रखकर दुबारा कहा

'अस्सलाम अलैकुम प्यारे रिश्तेदार!"

"वअलैकुम अस्सलाम " उमरज़ाक-अता ने बड़बड़ाकर जवाब दिया।

"मैंने सुना आपकी क्या तबीयत खराब है?"

"तुम्हारा दिल तो जरूर यही चाह रहा है ना?"

"छि, छि," गफ़ूर ने उलाहनाभरे स्वर में नरमी से कहा, "रिश्तेदार को क्यों नाराज करते हो? आप तो अब बुजुर्ग हो चुके हैं, आपको बेटी के नक्शे-कदमों पर चलना अच्छा नहीं लगता।"

"क्या तुम्हारी टोली में खाने की छुट्टी हो गयी है?" उमरज़ाक-अता ने व्यंग्यपूर्वक जिज्ञासा प्रकट की।

"सारे काम कौन निबटा सकता है! मैं ने आखिर सेहत बिगाड़ ली ज़रा-सा काम करता हूँ कि कमर दुखने लगती है।" उसने कराहते हुए कमर पर हाथ मला, और उमरज़ाक-अता ने अपना हाथ कंधे की ओर बढ़ाया, पर तुरन्त हथेली कुदाल के दस्ते पर टिका दी वह गफ़ूर को यह नहीं दिखाना चाहते थे कि उनकी तबीयत खराब है। गफ़ूर ने फ़ौरन कहा "लेकिन मैं काम कर रहा हूँ। पूरी ताक़त से! पर अभी मैंने देखा मेरे बुज़ुर्ग दोस्त उमरज़ाक-अता कुदाल चला रहे हैं। सोचा, चलो उनकी तबीयत पूछ लूं।" उसने उमरज़ाक-अता के चेहरे पर गौर से नज़र डाली और कृत्रिम सहानुभूति प्रदर्शित करता हुआ ज़बान चटकारने लगा "ओह! आपकी हालत तो बहुत ही खराब लगती है। बेटी ने आपको घर से कैसे निकलने दिया?"

"बेटी मेरी आया नहीं है।"

"हां, हां, आया नहीं है पर बुड्ढे को भी बच्चे की तरह आया की जरूरत होती है। उसे नम्र और आज्ञाकारी बेटी की जरूरत उसका

मयाल रखने के लिए होती है, न कि उसका नेक नाम मिट्टी में मिलाने के लिए।"

"तुम अपना काम करने जाओ, गफूर," उमूरजाक-अता ने धीरे से कहा, "मुझे गुस्सा मत दिलाओ।"

पुत्री के साथ बातचीत के दौरान जिस शान्ति से वह काम लेने में मसरूफ रहे थे, वह अब किसी भी क्षण उन्हें दगा देने को तैयार थी। उनका हाथ कांपता हुआ कुदाल पर जम गया और आंखों के आगे तारे छूटने लगे। गफूर शायद ध्यान नहीं दे रहा था कि वृद्ध को क्या हो रहा है। उसने बगल में से पुराना, मुड़ा-तुड़ा-सा अखबार निकाला जो शायद बहुत से हाथों से गुजर चुका था, और उसे उमूरजाक-अता की ओर बढ़ाया।

"अभी तक पढ़ा या नहीं?"

उमूरजाक-अता निश्चल रहे। गफूर ने अर्थपूर्ण मुद्रा में सिर हिलाकर अखबार को फिर मिरजई में छिपा लिया।

"अहा! यानी पढ़ चुके हैं! देखिये, क्या हो रहा है एक वक्त था, जब आपकी बेटी का अपने सगे मामा को जेल में बंद करवाते हुए जरा भी शर्म नहीं आयी थी, और अब खुद उसकी बेइज्जती हो रही है। अल्लाह इन्साफपसन्द है!"

"बेइज्जती उसकी हो, जिसने इसे लिखा है!" अपने पर काबू न रख पाया वृद्ध चिल्लाया। "वह कहावत याद करो जरा लोग पत्थर फलों से लदे पेड़ पर ही मारते हैं। मेरी बेटी कामचोरों को चैन से नहीं रहने देती, आलसियों और डरपोकों की नाक में दम करती है, इसीलिए लोग उसे बदनाम करते हैं। सच कहूँ, अगर यह नुक्ता-चीनी आलसियों को ही अच्छी लगी है, तो इसका मतलब है इसमें नाम को भी सच्चाई नहीं है!"

"यह आलसी हैं कौन?"

"तुम्हें ज्यादा मालूम होना चाहिए।"

गफूर ने गुस्से में होंठ काटकर एक ठण्डी सांस ली।

"अल्लाह आपको माफ कर देगा, अता। मुझे आप पर गुस्सा नहीं आता है। आप मुझे ठेस पहुँचा रहे हैं, पर मैं नाराज नहीं हो रहा हूँ। मैं आपका भला चाहता हूँ। आपकी छत पर बर्फ जम जाये—

खुद उसे साफ करने आऊगा। आपको एक सलाह देना चाहता हूँ बेटी को काबू मे रखिये, वरना वह अपनी करतूतो से आपको तबाह कर देगी।" उसने फिर दिखावटी सहानुभूति से उमूरजाक-अता पर नजर डालकर सिर हिलाया। "देख लीजिये आप सबकी हालत कितनी खराब हो गयी है! आयकीज और आलिमजान रेशम के भूखे कीडो की तरह सूख रहे हैं। हैं भी इसी लायक, यह उनके सारे गुनाहो की सजा है। पर मुझे आप पर रहम आता है, अता। देखिये, आपका तो चेहरा फक हो गया है!"

उमूरजाक-अता ने कुदाल थोडा ऊपर उठाया, मानो उससे गफूर को मारना चाहते हो और उसकी ओर कदम बढाकर क्षीण होते स्वर मे चिल्लाये

"दूर हो जा यहाँ से, गीदड! हमारे सामूहिक फार्म मे तू कुछ फायदा नही कमा सकेगा। न तू, न तेरा झुण्ड! गीदड आग से डरते हैं। और हमारे दिलो की आग हमारे दिलो की आग पवित्र और तेज है "

गफूर ये शब्द सुनने को वहा था ही नही। अपने दिल की भडास निकालने पर खुश होता वह अपने खेत की ओर जा रहा था। उसके चेहरे पर प्रतिकार व विजय की व्यग्यपूर्ण मुस्कान व्याप्त थी।

गफूर के जाने के बाद उमूरजाक-अता ने फिर काम करने की कोशिश की, लेकिन अचानक उनके सारे शरीर मे भयानक कमजोरी महसूस होने लगी। उन्होंने हाफते हुए दोनो हाथो से कुदाल का सहारा लिया, मुह से सूखी व गरम हवा गहरी सास के साथ खीची और एकाएक धीरे-धीरे जमीन पर बैठते हुए पीठ के बल उन्ही द्वारा सभाली गयी कपास की क्यारियो के बीच गिर पडे। कुदाल भी एक ओर पडे उनके हाथ पर धप्प की आवाज करती हुई गिर पडी। हाथ बाया बगल की ओर बढा और असक्त होकर सीने पर गिर पडा। किसान जब भागे-भागे उमूरजाक-अता के पास पहुचे, वृद्ध की मृत्यु हो चुकी थी। वह बाये हाथ मे कुदाल पकडे लेटे थे। उनकी निश्चल आखे खिलती हुई कपास के खेत के ऊपर जडवत् रह गये-से सूरज को देख रही थी।

बाईस

वह अमर रहे

मारे अलतीनसाय ने उमूरजाक-अता को उनकी अन्तिम यात्रा पर विदाई दी। पडोस के और पर्वतीय गावो के किसान भी आये। वृद्ध कपास-उत्पादक को बहुत लोग जानते थे

तपता, शान्त व निश्चल दिन था। चारो ओर सब कुछ मानो शोकपूर्ण सन्नाटे मे डूबा हुआ था। दूरस्थ पहाडियो की चोटियाँ रहस्यमय उदासीनता से चमक रही थी। क्षितिज पर सफेद बादल हिममण्डित टेकरियो की तरह जमा हो गये थे। वृक्षो की पत्तिया पथरा गयी लग रही थी। यहा तक कि जिस रास्ते से मौन विशाल जनसमूह कब्रिस्तान की ओर बढ रहा था, उस पर भी धूल नही उड रही थी।

कब्रिस्तान तक का रास्ता लम्बा था, पर तावूत को घर से ही कधो पर ले जाया जा रहा था। थक जानेवाले लोगो का स्थान तावूत के पीछे चलनेवाले लोग लेते रहे।

सबसे आगे आयकीज़ व आलिमजान चल रहे थे। आलिमजान समझता था कि यदि वह शहर नही भी जाता, तो भी होनी को नही टाला जा सकता था। फिर भी भीतर ही भीतर उसे कष्टदायक विचार साल रहा था वह आयकीज़ की मुसीबत की घडी मे उसके पास नही था किसी ने यह सच ही कहा है आ बला गले लग। आयकीज पर एक साथ अचानक कितनी मुसीबतें टूट पडी! आधी, समाचारपत्र मे नीचतापूर्ण लेख, पिता की मृत्यु और आलिमजान अपनी पत्नी के पास नही था। काम, परेशानियो, चिन्ताओ ने उसे आयकीज़ से दूर कर दिया था, सम्भ्रम मे डाल दिया था, दूर धकेल दिया था। यहाँ तक कि यूसुफी का लेख पढने के बावजूद वह इस झंझट से निकलकर पत्नी की मदद को नही पहुच सका। उसके निकट वह केवल अब पहुँचा है, जब कुछ बदल पाना या सुधार पाना असम्भव हो चुका है। आलिमजान ने दोषी की-सी सहानुभूति से आयकीज़ की ओर देखा। उसका चेहरा पीला पडा हुआ था, आखे भीतर धस गयी थी और

वह खोयी-खोयी भावशून्य दृष्टि से आगे व ताबूत की ओर देख रही थी। लगता था कि उस समय न कुछ सोच रही थी, न अनुभव कर रही थी और न चेष्टाओं से, न आंखों से कुछ व्यक्त कर पाने की स्थिति में थी। उसके पीले पड़े कपोलों पर केवल आंसू ढुलक रहे थे। आयकीज़ की चाल तनावदार व अस्वाभाविक रूप से सीधी होने के साथ-साथ किंचित् सुकुमार भी थी। आलिमजान ने उसकी कोहनी पर हाथ रखा, पर आयकीज़ बेसुधी में हाथ छुड़ाकर एक ओर हट गयी शायद वह स्वयं भी नहीं समझ रही थी कि वह क्या और क्यों कर रही है

उमूरज़ाक़-अता के अन्तिम संस्कार में भाग लेने के लिए वोल्गा तट-प्रदेश से आलिमजान का मोर्चे का मुंहबोला भाई ग्रिगोरी पेत्रोव तथा उसकी पत्नी वाल्या भी आये थे।

वे आलिमजान तथा आयकीज़ के विवाह के दिन पहली बार अलतीनसाय आये थे। नवविवाहित कई बार वोल्गा तट-प्रदेश में हो आये थे, और ग्रिगोरी व वाल्या हर वर्ष अलतीनसाय आकर अपने उज़बेक मित्रों के मेहमान बनते थे। उज़बेकी अतिथि-सत्कार क्या होता है, यह उन्होंने सर्वप्रथम उमूरज़ाक़-अता से ही जाना जो उनका अपने बच्चों की तरह खयाल रखते थे। ग्रिगोरी तथा वाल्या को नेक, निष्कपट तथा चुटकुलों, कहावतों, काम की सलाहों व बुद्धिमत्तापूर्ण सीख देने के मामले में उदार वृद्ध से दिल से लगाव हो गया था।

आलिमजान का उमूरज़ाक़-अता की मृत्यु का तार मिलते ही वे दिवंगत आत्मा के प्रति अपना अन्तिम कर्तव्य निभाने के लिए बिना देर किये सफ़र पर रवाना हो गये थे। दोनों को ही उसी शाम लौट जाने और आयकीज़ के दुख में उसे सान्त्वना देने के लिए रुक न पाने का खेद हो रहा था। वस्तुत वे समझते थे कि इस समय कोई भी उसका दुख दूर करने का सामर्थ्य नहीं रखता। वाल्या आयकीज़ के प्रति सहानुभूति के कारण रो रही थी

जनाज़े में शामिल हुए लोगों में जुरआयेव व सुलतानोव भी थे। उमूरज़ाक़-अता जिले के अत्यधिक सम्मानित लोगों में से थे और जनाज़े में शामिल होकर सुलतानोव एक प्रकार से अपने जनप्रतिनिधि तथा उसके अधिकार-क्षेत्र में आनेवाले जिले में घटनेवाली मामूली से मामूली घटना के लिए उत्तरदायी व्यक्ति की अपनी विशेष भूमिका

को रेखांकित कर रहा था। वह अपनी उसी "नेतृत्वकारी" उपस्थिति की आवश्यकता तथा महत्त्व के एहसास के साथ अन्त्येष्टि में पहुंचा था, जिसके एहसास के साथ वह, मिसाल के तौर पर, मई-दिवस की सभा के मंच पर भी चढ़ सकता था। वह सदा-कदा ताबूत को कंधा दे रहा था, और उस समय उसकी मुखमुद्रा उस व्यक्ति जैसी एकाग्रचित्तता की हो जाती थी, जो यह जताना चाहता हो कि वह राजकीय महत्त्व के और सबके लिए सुस्पष्ट कार्य में व्यस्त है और उसके साथ-साथ आडम्बरी व आत्मसन्तुष्ट भी सुलतानोव प्राय ऐसा उस समय दिखाई देता था, जब वह अध्यक्ष-मण्डल में अपनी कुरसी पर आसीन होता था।

सुलतानोव के आस-पास रहने की कोशिश कर रहे अलीकुल के चेहरे से सच्चा दुख व्यक्त हो रहा था। वह स्वयं भी अब जवान नहीं रहा था और अपने हमउम्र की मृत्यु को "बिनबुलाये मेहमान" के रूप में देख रहा था, जो देर-सवेर उसका दरवाजा भी खटखटानेवाली थी। बूढ़ों को अपने हमउम्रों को दुनिया छोड़कर जाते देख खास तौर से दुख होता है। उनका शोक कटु व विवेकपूर्ण होता है। इस शोक ने छोटे-से दुबले-पतले अलीकुल को मानो कुछ गम्भीर व पक्का बना दिया। वह सोच में डूबा अपनी छीदी हुई दाढ़ी पर हाथ फेर रहा था। उसकी साधारणतः कुटिलता से अधमिची रहनेवाली आंखों में दर्द झलक रहा था।

इसके विपरीत कादीरोव का ठीमपन कुछ घट गया था। मोटा, भारी-भरकम, ढीला-ढाला कादीरोव बार-बार बड़े रूमाल से अपना मुंडा हुआ सिर पोंछता हुआ चल रहा था। वह उमूरजाक-अता को प्यार करता था, हालांकि वह आखिरी समय में अपने दुराग्रह के कारण उसकी नाक में दम करने लगा था, और इस समय वही महसूस कर रहा था, जो मृत के सभी दोस्त महसूस कर रहे थे।

कादीरोव व अलीकुल के साथ-साथ गफूर भी चला आ रहा था। किसी की नजर पड़ती महसूस करके वह खास तौर से ठण्डी सांस भर सकता और शोकपूर्ण विस्मय के साथ सिर हिलाने लगता "हाय, क्या हो गया? कैसे गया? बेचारे उमूरजाक-अता! काश, तुम देख पाते कि तुम्हारी मौत से मुझे कितना दुख हो रहा है।"

जब कि जुरावायेव केवल यही सोच रहे थे, हमने कैसे अपने को खो दिया! कितने भले बुजुर्ग को खो बैठे!" उन्हें वे दिन स्मरण हो आये जब अल्तीनसाय में सामूहिक फार्म की स्थापना हुई थी और गरीबों में सबसे गरीब उमूरजाक-अता ने पहले-पहल प्रार्थनापत्र दिया था। उसे मुसीबत के वे दिन याद हो आये, जब अल्तीनसाय में सभी की किस्मत हो गयी थी, और इसके बावजूद उमूरजाक-अता किसी तरह अपने खेत में बढ़िया कपास पैदा करने में सफल हो गये थे। युद्ध के साथ हुई बहसें याद आने लगीं। उन्हें कभी-कभी पुरानी धारणाओं, पुराने ढंग से काम करने से इनकार कर पाना मुश्किल हो जाता था, पर नयी बातों को स्वीकार करने पर वह कितने युवा-सुलभ उत्साह से मेहनत करने लगते थे! मूर्ख मृत्यु आखिर तू कब स्वेच्छाचार करना बंद करेगी, हमारे बीच से श्रेष्ठतम और योग्यतम व्यक्तियों को उठाना बंद करेगी? देखिये, कितने भले आदमी को खो बैठा है आज अल्तीनसाय!

कब्रिस्तान गांव व पहाड़ियों के मध्य में, पर्वतीय गांवों से अल्तीनसाय को मिलानेवाले रास्ते के एक ओर स्थित था। वहां सुनसान और उजाड़ था। घटिया पत्थर के और इक्के-दुक्के सफेद संगमरमर के समाधि प्रस्तरोंवाली मिट्टी व पत्थर की दीवारों से घिरी छोटी-छोटी, इधर-उधर, बेतरतीब बिखरी मिट्टी की टेकरियां कहीं-कहीं कब्रों के टूहों से ही मिलती-जुलती नीचीं, सूखी हुई झाड़ियां कब्र खोदिये – तो बेलचा धूप में तप-तपकर सूख गयी, हवाओं से सपाट हुई जमीन से टकराकर झन्न-झन्न बजने लगे।

उमूरजाक-अता को वहीं दफनाया गया। जुरावायेव ने घबराहट से रुंधी जा रही आवाज में श्रद्धांजलि अर्पित की। फिर ताबूत को कब्र में उतार दिया गया। कब्र पर बनी मिट्टी की टेकरी के सहारे-सहारे शहर से भेजी और लायी गयी मालाएं रख दी गयीं और ताजा श्वेत लाल व नीले फूलों के ढेरों से ढक दिया गया। यह सीधा-सादा अनुष्ठान पूरा करके सब कब्रिस्तान से अपने-अपने घर लौट गये। किन्तु उमूरजाक-अता को अन्तिम विदाई देकर भी लोग उन्हें नहीं भूले। वह एक नयी जिन्दगी जी रहे थे, अब वे लोगों के हृदयों में धैर्यवान् गुरु, बुद्धिमान परामर्शदाता, नेक व मस्त मित्र के रूप में जीने लगे थे।

दिन बीत जायेंगे, महीने बीत जायेंगे और पोगोदिन उपयुक्त समय पर शरत्कालीन जोताई करने पर जोर देते हुए उमूरज़ाक-अता की एक मनपसन्द कहावत का उद्धरण देगा वसन्त में सौ बार की गयी जोताई पतझड़ की एक बार की जोताई की भी बराबरी नहीं कर सकती।"

महीने बीत जायेंगे, वर्ष बीत जायेंगे, और वृद्ध कपास-उत्पादक नौजवान को काम सिखाते हुए कहेगा

"अरे तुम कैसे गुड़ाई कर रहे हो? जरा देखो उमूरज़ाक-अता यह काम कैसे करते थे? और यह बात गांठ बांध लो कपास की फसल मनमौजी, नाजुक और सनकी होती है। एक बार भी पानी देना चूके, दूहे नहीं बनाये, गुड़ाई नहीं की मिट्टी को मखमल-सा मुलायम नहीं किया, तो फूल झड़ जायेंगे और कपास का पौधा कपास नहीं देगा। 'कपास के साथ दगा करोगे, तो वह तुम्हें दगा दे देगी,' उमूरज़ाक-अता यही कहा करते थे।"

वर्ष बीत जायेंगे, और हलीम-बाबा कपास के नये खेतों के फेनिल समुद्र पर नजर दौड़ाते हुए आयकीज़ को उमूरज़ाक-अता के साथ हुई अपनी अन्तिम मुलाकात के बारे में बतायेंगे।

"कितने खुश हुए थे वह, बेटी, मेरे बागीचे में अछूती धरती को पहली कपास देखकर!" 'मेरी आयकीज़ ठीक कहती थी!' उन्होंने प्रमुदित स्वर में कहा था। 'अभी तो हमें इस स्तेपी में सफेद कपास की बाढ़ भी देखने को मिलेगी! और हमारे पोते-पोती रेगिस्तान में आगे बढ़ते चले जायेंगे। बुढ़ऊ, बस थोड़ा सबर रखना जरूरी है। सबर रखोगे, तो हरे फलों को हल्वे जैसा मीठा होते भी देख लोगे।' पर, बेटी, खुद वह बड़े उतावले और स्तेपी के उकाब जैसे तेजनज़र थे। उनका दिल जवान था " और फिर धीरे से आगे कहेंगे "और दुहने के कितने सपने देखते रहते थे वह, बेटी!"

उमूरज़ाक-अता जैसे लोग मृत्यु पश्चात् भी चिरजीवी होते हैं

17*

रात गयी, दिन आया

उन सारे दिनों आयकीज़ की आंखों के आगे जैसे कोहरा छाया हुआ था वह हर समय किसी न किसी काम में व्यस्त रहती, पड़ोसिनों के साथ मिलकर तय करती कि दिवगत को क्या पहनाया जाये मेहमानों के लिए पुलाव पकाती परछाईं की तरह उसके पीछे लगी रहनेवाली और विषादमय विचारों से उसका ध्यान हटाने की असफल कोशिश करनेवाली सहेलियों मेंसरी व लोला से बातचीत करती समाधि के लिए स्थान चुनने कब्रिस्तान जाती निकट व्यक्ति की मृत्यु अपने साथ कितने ही कटु व अपरिहार्य काम लेकर आती है! किन्तु यदि आयकीज़ से पूछा जाये कि उस समय वह क्या सोचती रही थी, तो शायद वह उसका कोई जवाब न दे पाती। दुख ने एक प्रकार से उसके विचारों तथा भावनाओं को जकड़ दिया था, और ये कुछ दिन उसके जीवन व स्मृति से लुप्त हो गये थे।

कब्रिस्तान से लौटकर वह खिड़की के पास बिछे गद्दे पर बैठ गयी, किसी सोच में डूबी देर तक बागीचेवाले हौज़ के चारों ओर लगे सेब, पोपलर व बेद के वृक्षों को पौधों एवं फूलों से सजी क्यारियों को अनिमेष देखती रही पोपलर के वृक्ष पिता ने लगाये थे। सेब के वृक्षों की सभाल पिता करते थे। और ये बड़े-बड़े भरे-भरे गुलाब भी पिता ने ही उगाये थे। पिता नहीं रहे, किन्तु वह हर उस वस्तु में मौजूद थे, जिसे आयकीज़ देख रही थी। वह उसे जीते-जागते उसी रूप में दिखाई दे रहे थे, जिस रूप में उसने उन्हें अन्तिम बार देखा था नाली पर झुके बैठे, धीरे-धीरे हाथ-मुंह धोते पिता नहीं रहे लेकिन नाली का पानी है कि निरन्तर कलकल करता बहे जा रहा है मानो अपने स्वामी को लौटकर निर्मल जल पर झुकने के लिए पुकार रहा हो

अहाता लोगों से खचाखच भरा था वहाँ से दबी हुई भनभन आती सुनाई दे रही थी। लोग आ-जा रहे थे। कमरे में दबे कदम

जाने की आहट आयी। किन्तु आयशीज़ किसी बात की ओर ध्यान नहीं दे रही थी, मानो अतिथि, मित्र, सम्बन्धी व पड़ोसी सबने मिलकर उसका एकान्त भंग न करने का निश्चय कर लिया हो।

शाम को आलिमजान आयशीज़ के पास आया।

"तुम सो जाओ, आयशीज़।"

आयशीज़ चौंक उठी और रोती-रोती हैरानभरी नज़रों से पति की ओर देखा।

"क्या?"

"तुम थक गयी हो, आयशीज़, सारी रात जागती रही हो।"

"अच्छा," आयशीज़ ने कहा और कुछ देर बाद बोली, "मैं सोना नहीं चाहती।"

आलिमजान ने उसके पास बैठ उसका आलिंगन कर सावधानी से प्रेमपूर्वक उसे अपनी तरफ़ खींचा।

"अपने को तड़पाओ मत, आयशीज़।"

आयशीज़ ने कंधों से उसके हाथ हटाकर धीरे से विनती की।

"रहने दो। रहने दो, प्रियतम।"

"आराम कर लो, आयशीज़।"

"रहने दो, नहीं तो मैं रो पड़ूँगी।"

आलिमजान उठकर उल्टे कदम दरवाज़े की ओर हट गया। बाहर अँधेरा छाने लगा था। शान्त झुटपुटा धूसर राख की तरह हवा में लटक रहा था। कमरे में अँधेरा था, और दरवाज़े से आलिमजान को केवल शोकाकुल पत्नी की आकृति ही दिखाई दे रही थी। वह वहाँ अकेली, दीवार की ओट में लोगों व उससे, आलिमजान से अलग हुई अपने ही विचारों में खोयी बैठी है, और वह उसकी सहायता करने में अक्षम है, क्योंकि इस समय वह हर बात से विरक्त हो चुकी है, सारी दुनिया में केवल वह अपने ग़म के साथ रह गयी है। उसके प्रति दया के कारण आलिमजान की आँखों में आँसू उमड़ आये। किन्तु वह समझ नहीं पा रहा था कि उसे कैसे सान्त्वना दिलाये। वह बाहर मेहमानों के पास चला गया, जो रिवाज के अनुसार रात को वहीं रुके हुए थे। वे बगीचे में लम्बे-चौड़े चबूतरे पर बैठे, धीरे-धीरे चाय

पीछे हुए दबी-दबी आवाज़ में बातचीत कर रहे थे। उन सबके होंठों पर उमुरज़ाक-अता का ही नाम आ रहा था।

आलिमजान ने पत्नी को आगे परेशान न करने का निश्चय किया। उसे कुछ समय अकेली ही रहने देना चाहिए। वह समर्थ है, वह अपने शोक पर काबू पा लेगी। वह खुद भी देर तक नहीं लेटा, किन्तु थकान ने अपना असर दिखाया और मेहमानों को विदा कर आलिमजान फर्श पर लगाये गए बिस्तर पर लुढ़क गया और मुर्दनभरी गहरी नींद में सो गया।

वह तड़के ही जल्दी से कमरे में गया, जहाँ वह पत्नी को छोड़ गया था, पर आयकीज़ वहाँ नहीं थी। मेज़ पर उमुरज़ाक-अता का गत वर्ष समाजवाद के श्रमिकों की कांग्रेस के समय लिया गया, लकड़ी के चौखटे में जड़ा फोटो रखा था। वृद्ध का खड़े हुए का फोटो लिया गया था। उनके सिर पर पुस्त की नयी टोपी फब रही थी, काले मजबूत कपड़े के, नाप से सीले, श्रम में कौशल के पुरस्कार के रूप में मिला खासा सूट दिखाई पड़ रहा था। हाल ही में खरीदी नयी महसी* पर रबड़ के बिलकुल नये जूते चमचमा रहे थे। ये महसी और रबड़ के जूते आयकीज़ ने पिता को भेंट किये थे। घोंसे की काली पृष्ठ-भूमि में उमुरज़ाक-अता की हिमधवल दाढ़ी विशेषतः स्पष्ट नज़र आ रही थी। उनका मुस्कराता हसमुख चेहरा मानो दमक रहा था, और आखों में बुद्धिमत्ता, जवानी और नेकी झलक रही थी। आयकीज़ ने शायद यह फोटो रात को दीवार से उतारा था, उसे हाथ में थामे रोती रही थी और वापस टांगना भूल गयी थी।

आलिमजान ने फोटो को उसके स्थान पर जमाकर खिड़की से बाहर झांका। आखिर आयकीज़ कहाँ गयी? क्या वह सचमुच काम पर जा चुकी है? उसने बावरचीखाने में जाकर समोवार को छूकर देखा। समोवार ठण्डा था। चली गयी, चाय तक पिये बिना! कल भी उसने सारे दिन न कुछ पिया, न खाया। आलिमजान ने उलाहनाभरी निराशा से सिर हिलाया और ग्राम सोवियत के लिए रवाना हो गया।

आयकीज़ ने सारी रात आखों में काटी। खिड़कियों के बाहर जब

* महसी – मुलायम चमड़ेवाला जूता।

भोर का धुंधला-गुलाबी प्रकाश झिलमिलाने लगा, उसने गद्दे मे उठकर चारों ओर नज़र दौड़ायी, मानो अपने कमरे को नही पहचान पा रही हो, और मेहमानो व आलिमजान की भी नीन्द खराब न करने की कोशिश करती हुई घर से बाहर निकल गयी। वह इस बात के लिए अतिथियो की आभारी थी कि उन्होंने उसे न शाम को परेशान किया, न रात मे। किन्तु इस समय उसे नितान्त अकेली रहने की इच्छा हो रही थी।

और आखो मे काटी बोझिल रात के बाद आयकीज़ अपने प्रिय चश्मे शीरीबुलाक की ओर चल दी।

गाव अभी तक शान्तिपूर्ण तद्रा मे खोया मौन साधे हुए था। गर्मी के मौसम मे भोर के समय गाव मे सदा शान्ति छायी रहती थी, अधिकाश किसान दिन-रात खेत-कैंपो मे रहते थे, और बाकी बचे अभी सोये हुए थे। किन्तु आयकीज को आज की भोरपूर्व की नीरवता विशेष रूप से अर्थपूर्ण तथा असाधारण रूप से गहरी प्रतीत हो रही थी। "निष्प्राण निस्तब्धता " उसने ठण्ड से ठिठुरते हुए सोचा। "मानो चारो ओर मौत का साम्राज्य हो।"

किन्तु चारो ओर जीवन था। आयकीज स्वय भी शनै शनै जीवन का अनुभव करने लगी। उसके कानो मे पत्तियो की मन्द फुसफुसाहट, रास्ते के दोनो ओर खोदी गयी नालियो मे बहते पानी का कलकल सुनाई देने लगे। पहाडियो, घरो व वृक्षो की रूप-रेखाए उत्तरोत्तर स्पष्ट होने लगी।

वह पिछले कुछ वर्षों के दौरान अलतीनसाय मे बनाये गये ईंटो के बढ़िया मकानो, कच्चे घरो के सामने से गुजर रही थी, मिट्टी की दीवारो के ऊपर से अगूर की बेले लटकी नज़र आ रही थी। वह बागो के पास से गुजर रही थी, जो फुसफुसाकर उसे अपनी रहस्यमय परी-कथाए सुना रहे थे वह देख रही थी कि गाव भोर का कैसे स्वागत करता है।

अलतीनसाय मे भोर कितना अनूठा होता है! दिन मे आदमी कडाके की गर्मी से बचकर कही नही जा सकता, शाम को पत्थर, रेत और मिट्टी दिन भर मे सचित किये ताप से भट्ठी की तरह तपाते रहते है, पर भोर मे कोई ऐसी बात नही होती, जो गर्मी की याद

किनारे। पहाड़ों की ओर से आता [illegible] हवा को दुलारने लगा, लेकिन [illegible] के झोंके [illegible] होते रहते हैं, पास व दूरी से ओस [illegible] निरन्तर महसूस होती है। ओर से [illegible] न [illegible] अच्छा लगता है।

आयकीज का चेहरा [illegible] हो उठा।

वह गांव के किनारे किनारे निकलनेवाली और पहाड़ियों से रेगिस्तान की ओर जानेवाली सड़क को काटनेवाली सड़क के निकट पहुंच रही थी। एकाएक [illegible] के पास से गफूर निकला। शायद उस रात उसे भी नींद नहीं आयी थी। भानजी को देखते ही उसने उसकी ओर कदम बढ़ाये। सांवली [illegible] पैरों के निशान मिटाने निकल पड़ी

"सलाम-अलैकुम, भानजी! इतने भोर में तुम कहां जा रही हो?"

आयकीज ने रुककर खीजभरी नजर से उसकी ओर देखा। बड़े बेवक्त आया है यह उसके रास्ते में! वह एकान्त खोज रही थी अपने दोनों सब से बचने की सोच रही थी उसी कारण गफूर से हुई यह अप्रत्याशित भेंट उसे और भी अखरी। यह सच है कि उसे गफूर की उमुरजाक-अता के साथ हुई आखिरी बातचीत के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। उसे अनुमान भी नहीं था कि उनकी बातचीत हुई भी थी, किन्तु इस समय पिता की मृत्यु के पश्चात् गफूर, जिसे वह कभी पसन्द नहीं करती थी, उसके लिए विशेषत अप्रिय हो उठा था। उसके चेहरे पर, जिस पर शोक व सहानुभूति का मुखौटा बिलकुल भी नहीं फबता था, और उसकी असाधारण रूप से मधुर व चापलूसी-भरी स्नेहपूर्ण आवाज में कुछ सतर्क करनेवाली बात झलक रही थी

'अरे, भानजी, तुम क्या मुझसे दुआ-सलाम तक नहीं करना चाहती? क्या उस बातचीत के लिए अभी तक गुस्सा हो रही हो? छि-छि, रिश्तेदारों में क्या-क्या नहीं होता रहता! अरे, कहा-सुनी ही तो हुई थी—चलो, भूल जायें उस बात को। गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा? तुम पर मुसीबत आयी है और तुम पर आयी मुसीबत—मुझ पर आयी मुसीबत है।"

आयकीज गफूर की बातें अन्यमनस्कता से सुन रही थी और उसके चेहरे से अधीरता टपक रही थी। इसे क्या चाहिए? गफूर आम तौर पर रुखाई से पेश आता था और ज्यादा नहीं बोलता था। इस समय

वह आयकीज के आगे ठकुरमुहाती वह रहा था, और इससे यह विचार दृढ होता जा रहा था कि उसने अवश्य उसके साथ कुछ बुरा किया है और अब अपनी गलती छिपाने की कोशिश कर रहा है। कही उस अनिष्टकारी लेख मे इसका गदा हाथ तो नही है?

गफूर अपने उद्गार प्रकट करता रहा

"हम लोगो को भारी नुकसान पहुँचा है, भानजी। चलो, अब हमारे पुराने झगडो को भुला दे। क्योकि आखिर यह हम सबकी बदनसीबी है और अब तुम्हारा मुझसे ज्यादा करीबी रिश्तेदार कोई नही है। भरोसा रखो, अब मैं अपनी आखिरी सास तक तुम्हारा सरपरस्त, तुम्हारा वफादार खिदमतगार रहने को तैयार हूँ

"मैं कोई सात नही हूँ, मुझे खिदमतगारो की जरूरत नही है।

"छि-छि तुम्हे इतना गुस्सा नही करना चाहिए। मैं सच्चे दिल से तुम्हारे पास आया हूँ, और तुम

आयकीज के माथे पर बल पडने लगे, उसने गफूर को घूरकर सोच मे डूबे हुए कहा

"मैं आपके दिल मे झाककर देखना चाहती हूँ, प्यारे मामा देखना चाहती हूँ कि उसमे असल मे क्या है

"मुझे ठेस मत पहुचाओ, भानजी। मेरे दिल मे अमन और रज है। मेरी तो बस एक ही तमन्ना है तुम्हारे बाप की कमी पूरी करना "

केवल पाखण्ड सहन कर पाना आयकीज के सामर्थ्य मे नही था। उसका चेहरा स्याह पड गया, आखो मे चिनगारिया छूटने लगी।

गफूर, यह समझने पर कि उसने अनधिकार चेष्टा की है सहसा सिकुडकर एक ओर ऐसे हट गया, मानो कोई उसे मारने जा रहा हो। उसकी चालाक काली आखे उस चूहे की आखो की तरह नाचने लगी, जो अपने बिल से दूर घिर गया हो अपनी चापलूसी भरी बातो से गफूर अपना कोई स्वार्थ सिद्ध नही करना चाहता था उसके पापी अन्तःकरण ने आयकीज से बातचीत के लिए धकेला था किन्तु उसका अन्तःकरण प्रतिरोधी क्षुद्र आत्मा मे निवास करता था गफूर की इच्छा भानजी के आगे अपने को दूध का धोया साबित करने की उतनी नही थी, जितनी कि उसकी आखो मे धूल झोकने की। उसे

अपनी ढोंग रचने की क्षमता पर काफी गर्व था, पर वह घटिया किस्म का अभिनेता था और उसके अत्यभिनय से उसने आयकीज के हृदय में केवल सन्देह ही जगाया था। उसको अपने से हड़बड़ाकर दूर हटते देख आयकीज व्यंग्यपूर्वक मुस्करा उठी। वह बिना कुछ कहे, अनधिकारीनामधारी "पिता" से मुह मोड़कर धीरे-धीरे सड़क पर आगे चल दी। कुछ ही समय बाद वह गफूर के बारे में भूल गयी। जब कि वह रास्ते के किनारे खड़ा खुली नफरतभरी आंखो से भानजी को जाते देख रहा था। उसकी आंखों मे दिखावटी दुख और शोक का नाम-निशान भी नही रहा था।

शोरीबुलाक पर पहुचकर आयकीज एक बड़े-से शैलखण्ड के किनारे पर बैठ गयी, और गरम माथे पर हाथ फेरा, मानो कुछ याद करने की कोशिश कर रही हो वह यहा किस लिए आयी है? क्या उसके लिए घर मे रुकना असह्य हो उठा था और उसकी इच्छा मन बहलाने की और प्रात कालीन स्वच्छ हवा मे सास लेने की हो रही थी? वह अपने को बहुत थकी हुई महसूस कर रही थी। वह शोक लोगों व उनकी मौन सहानुभूति और गत दिनो के कष्टकारक झझटों के कारण थक गयी थी। पर यहाँ इस चश्मे के किनारे सदा शान्ति रहती है। यह स्वाभाविक, आत्मा को आनन्दित करनेवाली, उज्ज्वल स्मृतिया जागृत करनेवाली जीवन्त शान्ति थी आयकीज को अपनी किशोराव-स्था याद आने लगी उन दिनो भी चश्मे का पानी ऐसे ही अनवरत कलकल करता प्रवाहित करता था, शैलखण्ड के चारो ओर उगे वृक्षों की पत्तिया सरसराती रहती थी, चश्मे के तल मे कंकड़ मर्मर ध्वनि करते रहते थे। लगता था ये ध्वनिया उस अद्भुत अतीत से आज लौट आयी है। किन्तु तभी आयकीज के कानो मे एक और आवाज आयी – मधुर और सुरीली, – मानो हवा के झोंके से पुष्प झड़ रहे हों। दूर पहाड़ियो के सहारे-सहारे ऊंटों का कारवा धीरे-धीरे चला जा रहा था और अन्तिम ऊंट के गले मे लटकती तसमार घंटी उनके धीमे कदमों की ताल मे बज रही थी। ऊंटवान गा रहे थे और उनके गीत मे हल्का दर्द महसूस हो रहा था। घंटी की गूंज व गीत शान्त हो गये प्रात कालीन पवन मे विलीन हो गये, और गाव की ओर से नयी स्पष्ट और भिन्न-भिन्न आवाजें सुनाई देन

लगी,–जागृति की ध्वनियां। किसी के घर का दरवाजा धड़ से बंद हुआ, गाड़ी के पहिये चरमराये, कोई कुत्ता गला फाड़-फाड़कर पागलों की तरह भोंकने लगा, मानो सारी दुनिया को जगा देना चाहता हो एक मुर्गे ने बांग दी, और एक मिनट बाद ही कुछ कम जोश के साथ दूसरे मुर्गे ने उसका प्रत्युत्तर दिया।

गांव जाग रहा था।

यदि उमूरज़ाक़-अता जीवित होते, तो वह सबसे पहले जागते। वह उठकर सो रही बेटी के सिरहाने थोड़ी देर खड़े रहकर, उसकी नींद खराब किये बिना हाथ-मुंह धोने नाली पर चले गये होते। और उसके बाद वे और आलिमजान साथ बैठकर चाय की चुस्कियां लेते हुए बातचीत करते, सदा की तरह गुज़रे दिन के बारे में नहीं बल्कि आनेवाले दिन के बारे में

अब्बा! कितनी यादें तुम्हारे साथ जुड़ी हैं कितनी अवगम्य थी सबके लिए तुम्हारे हृदय की संवेदनशील उदारता!

उमूरज़ाक़-अता को अपने बारे में पसन्द नहीं था। जुराबायेव ने एक बार आयकीज़ को बताया था कि कठिन वर्षों में, जब सामूहिक फार्म अभी जम नहीं पाया था, अपने पैरों पर खड़ा न हो पाया था और इसका लाभ उठाकर शत्रु आग लगाकर, मूल्यवान अनाज को छिपाकर, द्वेषपूर्ण अफवाहें फैलाकर उसे नष्ट करने की कोशिश कर रहे थे, तब उमूरज़ाक़-अता व कादीरोव ने कैसे गरीबों को सगठित करके उन्हें शूर व बुद्धिमान नीचों के गिरोहों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार किया था। शत्रु शायद अपना सर्वनाश निश्चित जानकर हर तरह की नीचतापूर्ण कार्रवाइयां कर रहे थे। उमूरज़ाक़-अता को निर्ममता से बदला लेने की धमकी दी गयी। उमूरज़ाक़-अता को प्रलोभन देकर, धन देकर अपने साथ मिलाने की कोशिश की गयी। किन्तु उमूरज़ाक़-अता दृढ़ता व साहसपूर्वक अपनी जान पर खेलकर दुश्मनों के षड्यंत्रों से अपने सामूहिक फार्म की रक्षा करते रहे और सामूहिक फार्म टिका रहने में सफल हो गया, जब कि दुश्मनों को उनके किये की उचित सज़ा मिली।

उमूरज़ाक़-अता ने अपने बेटों तिमूर व अलीशेर को भी साहसी निर्भीक व दृढ़निश्चयी बनाया। और उन्होंने पिता को निराश नहीं

की पवित्र भावना जुड गयी, जिन्हे अलीतमाय मे सम्मान के साथ स्मरण किया जाता था।

"और अब्बा, तुमने मुझे कैसे तसल्ली दिलायी थी, जब मेरी माँ, हमारे घर की रौनक हमे छोडकर चली गयी थी! तुम खुद को खेत मे अनथक काम मे, लोगो के तुम्हारे प्रति प्यार और लोगो के प्रति अपने प्यार से तसल्ली दिलाते रहे थे! मेहनत से प्यार करो, बेटी, तुमने मुझे सिखाया था मेहनत आदमी को ताकतवर और अक्लमद बनाती है। सच्चाई से प्यार करो, सच्चाई हमे हमारे लक्ष्य के पास पहुचा देती है। अपने लोगो को प्यार करो, हमेशा लोगो के साथ रहो, तुम्हे सदा उनकी चिन्ता रहे और वे तुम्हारा सहारा रहे। तुम मुझसे यही कहा करते थे, अब्बा और खुद भी सदा लोगो के साथ रहते थे। तुम उनकी मदद करते थे, और वे तुम्हारी। तुम इनसाफ-पसद और ईमानदार थे और मेहनत करते रहे थे—सारी जिन्दगी खुशी से निस्वार्थ मेहनत करते रहे थे। इसे कोई कभी भी नही भूल सकेगा। कोई कभी नही भूल सकेगा!"

आयकीज ने सिर उठाया, उसकी नजर नन्हे पोखर के चारो ओर और चश्मे के किनारो पर आजादी से उगे हुए फूलो व घास पर पडी। चश्मे के जितना निकट जाइये, हरियाली उतनी ही ज्यादा, उनके तने भी ज्यादा रसदार व फूलो के गुच्छे उतने ही ज्यादा घने होते जा रहे थे! चश्मे ने फूलो की कितनी पीढियो को पाल-पोसकर बडा किया है! मई मे यहाँ सारी जमीन पर पीले व लाल ट्यूलिपो का कालीन बिछा रहता है और जून मे पानी के निकट कोमल व मखमली बैगनी बनफशे के गुच्छे लगे रहते हैं। फूल बडी तेजी से पानी व धूप को आत्मसात करते है, लोगो को अपने उच्छृखल, अछूते सौन्दर्य से आनन्दित करते है, मुरझा जाते हैं, जब कि छोटा-सा, शक्तिशाली चश्मा जीवन के सृजन के हेतु अपने निस्सीम, निरहकार दुराग्रह से चट्टान को फोडकर निकलता अनवरत कलकल करता रहता है। वह अभी बहुत अरसे तक कलकल करता रहेगा, और जब सूख जायेगा, तो भी लोग हर हालत मे उसे खुशी से याद किया करेंगे, और इस स्थल का उसका पुराना नाम सदा के लिए रह जायेगा मीठे पानी का चश्मा

लिया युद्ध में फ़ासिस्टों से निर्भीकतापूर्वक जूझते हुए रक्तरंजित मुठभेड़ में वीरगति को प्राप्त हुए – उराव जैसे गर्वीले, प्यारे भाई! आयशीज को वह दिन अत्यन्त स्पष्ट स्मरण है, जब उद्घोषक ने आह्लादक व्याकुलता से गद्गद कण्ठ से विजय की घोषणा की थी। सारे ग्रामवासी सब घरों से बाहर निकल आये थे। स्वच्छिन्न, मुखर व उल्लसित प्रवाह अनन्तीनमाय के रास्तों में बह चला था। कुछ त्योहार के दिन की तरह सज-धज चुके थे, कुछ जैसे कपड़ों में थे, वैसे ही निकल आये थे किन्तु सब के चेहरों पर त्योहार की-सी ख़ुशी छायी हुई थी उल्लसित, निष्कपट मुस्काने, उत्साह से चमकती आंखें सबके चार चांद लगा रही थी। अहातों में भेड़ें काटे जा रहे थे, आग पर बड़े-बड़े देग चढ़ाये जा रहे थे पुलाव के लिए चर्बी पिघलायी जा रही थी। हर जगह धूप में चमचमाते समोवार धुआं छोड़ते खदक रहे थे। गांव के एक छोर से दूसरे छोर तक गीत उत्ताल तरंगों में प्रवाहित हो रहे थे। लोग एक दूसरे को बधाइयां दे रहे थे, गले लगा रहे थे, चूम रहे थे। केवल वे लोग, जिनके परिवार युद्ध में लगभग आधे रह गये थे, उज्ज्वल त्योहार पर शोक की कालिमा न फैलाने के लिए अपने दुःख को लोगों से छिपाते घरों में बैठे रहे थे। आयशीज भी घर में बैठी रही थी। वह अपनी मातृभूमि के भाग्य पर प्रसन्न भी हो रही थी, पर उसके आंसू भी रोके न रुक पा रहे थे

विजय-दिवस के दिन पिता पहाड़ों में थे, किन्तु शायद उनके दिल को महसूस हो गया था कि जनता के लिए कितना महान त्योहार आ गया है। वह शाम को आयशीज के लिए अप्रत्याशित रूप से लौट आये। रोती बेटी को देखकर उनकी भौंहे सिकुड़ गयीं, वह कुछ क्षण गम्भीर चिन्तन में डूबे देहलीज पर खड़े रहे, फिर आयशीज के पास आकर सख्त एवं उलाहनाभरी आवाज़ में बोले

"ऐसा नहीं करना चाहिए, बेटी, नहीं। चलो, कपड़े बदलो लोगों से मिलने चलते हैं। ऐसे दिन सबके साथ रहना चाहिए। हम सबको ख़ुशी बांट देंगे, और लोग हमारा दुःख समझ लेंगे लोगों का सब हर्ष का है सुख भी, कामयाबी भी और दुःख भी।"

वह उसका हाथ पकड़कर उसे बाहर ले आये। वे त्योहार के रंग में डूब गये, मन को कुछ राहत मिली, शोक के साथ भाइयों पर गर्व

"लोगों की स्मृति अच्छी और कृतज्ञतापूर्ण है। अब्बा तुम लोगों की स्मृति में सदा अमर रहोगे, और तुम्हारी बेटी कभी तुम्हें नहीं भूलेगी, तुम्हारी योग्य उत्तराधिकारिणी बनने का प्रयास करेगी, तुम्हारी सारी जिन्दगी के बारे में तुम्हारे दोहते को बतायेगी, जो तुम्हें कभी न देख पायेगा..."

आयकीज अपने भावी पुत्र के विचार से अचानक शर्म से लाल हो उठी। उसे स्वयं भी यह स्वीकार करते डर लगता था कि उसकी कोख में उमूरज़ाक-अता के एक अन्य वंशज के जीवन-दीप की मन्द ज्योति उत्पन्न हो चुकी है। पिछले कुछ दिनों से उसके सिर में अक्सर चक्कर आ रहे थे और जी मिचलाना महसूस होने लगा था... इस समय भी गिरने से बचने के लिए आयकीज को पत्थर का सहारा लेना पड़ गया था। किन्तु उसे अचानक महसूस हुई कमज़ोरी से सुस्ती भी नहीं हुई... यह उसका बालक उसे अपनी उपस्थिति का एहसास करा रहा था। "अब्बा, बेचारे अब्बा, तुम अपने चिर-अभीप्सित सपने को साकार होने के दिन तक जिन्दा नहीं रह पाये!"

कैसे सपने देखे थे उमूरज़ाक-अता ने दोहते के! उन्होंने अपने स्नेहपूर्ण व किंचित चुभते मज़ाकों से नवविवाहितों की नाक में कितना दम कर दिया था! आयकीज व आलिमजान के विवाह-सूत्र में बंधने से पहले वह शहर जाकर वहां से ढेर सारे खिलौने ले आये थे—"जिससे कि दूल्हा-दुलहन... हा... हा... अपने पाक फर्ज के बारे में न भूलें।" उन्होंने खिलौने सन्दूक में रख दिये थे, और जब उनका मूड अच्छा होता, आलिमजान को आंख मारकर ठण्डी सांस लेकर कहते:

"ओह, लगता है मुझे सन्दूक बाज़ार ले जाना पड़ेगा। ज़रा देखना, दामाद, यह भारी है क्या?"

नहीं, उनके लाये खिलौने काम आयेंगे, केवल वह स्वयं उन्हें दोहते को भेंट नहीं कर पायेंगे... आयकीज को उमूरज़ाक-अता के अन्तिम शब्द स्मरण हो आये... 'हमारे दिल फूलों की तरह हैं... पहला झोंका आते ही झूमने लगते हैं...' मां, तुम्हारे दिल की लौ भी गुल हो गयी, अब्बा... ठण्डी हवा का झोंका आया और उसने एक और अलाव बुझा दिया। लोगों के दिलों को ठण्डी हवा से कैसे बचाया जा सकता है!

आयकीज को अचानक गफ़ूर के साथ हाल में हुई अपनी पहली मुलाकात और समाचारपत्र में छपे लेख की याद आ गयी, उसे घमण्डी और हर बात के प्रति उदासीन मुलतानोव का पिता के तावून की कथा देने का ढंग भी याद हो आया, हालांकि उसने पहले इस पर ध्यान ही नहीं दिया था। उसे ये बातें याद क्यों हो आयीं, पिता की यादें क्यों इस तरह अप्रत्याशित रूप से और संयोगवश क्यों उन दुखद व अप्रीतिकर से जुड़ गयीं? और क्या यह मात्र संयोग है?

खुद पर काबू रखो, आयकीज! तुम्हारे विचार को सामान्य रूप में परिपक्व व स्पष्ट हो जाने दो! क्योंकि यह सब कैसे हुआ, और जिसका इतना कारुणिक अन्त हुआ, उसका आरम्भ कहाँ से हुआ—समझना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है

पिता को उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन खेत में जाने देने के लिए तुम अपने को क्षमा नहीं कर सकती। प्रिय-जनों को खो बैठनेवाले लोग शोक में अपने कसकते घावों को कुरेदते हुए सदा अपने को किसी न किसी बात के लिए दोषी ठहराते रहते हैं। तुम बार-बार मन में कहती रहती हो "मैंने अब्बा को नहीं बचाया! नहीं बचाया! " लेकिन जरा सोचो, क्या तुम पिता को घर पर, बिस्तर में रोके रख सकती थीं? क्या अपनी सच्चाई सिद्ध कर दिखाने के उत्कट इच्छुक व्यक्ति को रोका जा सकता है? तुम्हारे लिए इस बात का पता लगाना बेहतर होगा आयकीज, कि उमूरज़ाक-अता के लिए उस बात को सही प्रमाणित करना क्यों, किस कारण और किस के कारण मजबूर होना पड़ा था जो उनके, तुम्हारे और अनेक अलतीनसायवासियों के लिए वैसे ही स्पष्ट थी।

अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की योजना थी। इस योजना के विरोधी भी थे। आंधी भी आयी थी। और समाचारपत्र में लेख छपा। और इन सब का एक ही निष्कर्ष निकाला जा सकता था संघर्ष चल रहा था।

पर तुम जानती हो, संघर्ष किसे कहते हैं आयकीज? यह आखिर मात्र विभिन्न विचारों और विभिन्न दृष्टिकोणों का टकराव नहीं होता। इस संघर्ष में लोगों के भाग्य अनिवार्य रूप से उलझ जाते हैं और मोर्चे की रेखा हमारे दिलों से गुजरती है। सेनाएं एक दूसरे से लड़ती

उन्होंने उमूरज़ाक-अता से उनके साथ मिलकर उस टुकडे मे कपास की सभाल करने का प्रस्ताव रखा था। वृद्ध ने कितने हर्ष के साथ यह सुझाव स्वीकार किया था।

"नौजवान घर आते ही," उन्हे एक प्रसिद्ध उजबेकी कहावत याद हो आयी थी, "काम मे जुटे, और बूढा-खाने में। तुम्हारे बारे में मैं नही जानता, प्यारे, पर मैं अपने को बुड्ढा नही मानता मुझे लज़ीज़ से लज़ीज़ पुलाव खाने से ज्यादा खुशी काम करने से हासिल होती है।"

उन्होंने फौरन नाली का पानी क्यारियो मे छोड दिया और देर तक बाग छोडकर नही गये। उनके चेहरे से गर्वपूर्ण प्रसन्नता व गम्भीर चिन्तन की अभिव्यक्ति हो रही थी

उमूरज़ाक-अता फिर कभी इस बाग मे नही आयेगे, उन्हे अछूती धरती की पहली कपास भी नही चुननी पडेगी

"यह कपास किसानो को दिखानी चाहिए," हलीम-बाबा ने सोचा। "उनका चित्त कुछ शान्त हो जायेगा।" उन्होने बेकबूता व करीम की टोलियो मे जाने का निश्चय किया, किन्तु उन्हे सबसे अधिक इच्छा मुरानअली के सामने "अपनी" कपास की बडाई करने की हो रही थी मरहूम उमूरज़ाक-अता के बाद वही सर्वाधिक कुशल कपास-उत्पादक और हलीम-बाबा का निकट मित्र था।

लोला अभी तक नही आयी थी, या तो वह आयकीज़ के पास थी या फिर मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनवालो के बाग मे काम मे जुटी हुई थी, जिसकी सभाल की जिम्मेदारी उसने स्वेच्छा से ऊपर ले रखी थी। वृद्ध ने उसकी प्रतीक्षा न करने का निश्चय किया, कपास का एक सबसे बडा पौधा उखाडकर अपने सफेद चोगे के चौडे पल्ले मे छिपा लिया और पुराने खेतो की ओर चल पडा

उधर ही उस सुबह पोगोदिन जा रहा था। वह अकसर सुद कृषि-टोलियो का चक्कर लगाता था, टोली-नायको से पूछता था कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन उनकी क्या सहायता कर सकता है, उनसे सलाह करता था कि खेतो मे ट्रैक्टर, हूहे बनाने की मशीने व कल्टीवेटर्स से बेहतर ढग से काम करने के लिए कौन-सा समय उपयुक्त रहेगा।

खेत-बैग के रास्ते मे पोगोदिन को मुरानकुल मिल गया। ट्रैक्टर-

था कि जब बाकी सब किसानो के एकत्र होने के बाद टोली-नायक व उपटोली-नायक के लिए खेत मे पहुँचना शर्मनाक होता है। "टोली को मेरा स्वागत नही, मुझे टोली का स्वागत करना चाहिए," वह बेटी से अकसर कहा करता था। वे रात को घर पर नही, अलतीन-साय मे सोये थे, पर मुरातअली अपनी पुरानी आदत के अनुसार पौ फटे ही उठकर तैयार हो चुका था। वे खेत-कैप मे और दिनो से कुछ समय पूर्व ही पहुँच गये थे।

हाल ही मे नवीकृत खेत-कैप एक साथ खिल रही कपास के सागर मे द्वीप के सदृश लग रहा था। लम्बे-चौडे व कुछ रौदी हुई घासवाले मैदान के किनारे के पास स्लेट की हल्की छतवाली एक सादा, पर अपनी सादगी मे सुन्दर दिखनेवाली इमारत खडी थी। उसके आधे हिस्से मे, जो बद था, प्राय माओ द्वारा अपने साथ काम पर लाये बच्चे रहते थे। दूसरा हिस्सा तीन ओर से खुले, लम्बे-चौडे बरान्डे जैसा लगता था। वहाँ हमेशा ताजगी रहती थी और आरामदेह महसूस होता था, मेजो पर समाचारपत्र, पत्रिकाए, पुस्तके रखी रहती थी, एक खम्भे से दूसरे खम्भे तक लाल कपडे पर लिखे चमकीले नारे तने रहते थे। इमारत के पीछे युवा बेद-मजनुओ से आच्छादित हौज था। कुछ दूरी पर प्रातःकालीन सूरज की धूप मे चमचमाता डामर किया हुआ समतल, चौकोर खलिहान था, जहाँ फसल चुनने के समय कपास जमा की जाती थी। इमारत के आगे फूल रगबिरगी बनियो की तरह चमक रहे थे। फुलवारी के पास ही स्टैड था, जिस पर पिनो से ताजा समाचारपत्र लगाये जाते थे। इस समय उस पर धूप मे पीला पडा उत्कीर के लेखवाला समाचारपत्र लगा हुआ था। मेखरी ने उस पर एक सरसरी नज़र डाली थी, उसने लेख अन्त तक पढा नही था, और उन दिनो लेख के बारे मे कोई चर्चा नही हुई थी अलतीनसाय-वासी दूसरी बातो के बारे मे सोचते थे, दूसरी बातो की चर्चा करते थे। मेखरी ने अब अपनी उपटोली के सामूहिक किसानो का इन्तज़ार करते हुए समाचारपत्र के पास आकर लेख को ध्यान से पढा। वह ज्यो-ज्यो आगे पढती रही, पढती रही, त्यो-त्यो उसकी भौहे अधिक सख्ती से एक दूसरे के निकट आती रही। अन्तत उनके चौडे कोने नाक के बासे पर जुडकर भवरा, स्याह धब्बा बन गये।

मुरातअली बेंच पर बैठा कुदाल पर धार लगा रहा था। मेहरी गुस्सा पढ़कर देखती अन्दर से पिता की ओर लपकी और बड़ी मुश्किल से आंसुओं व क्रोध पर काबू करते धीरे से बोली

"अब्बा! आपको शर्म नहीं आती?"

मुरातअली ने रेती बेंच पर रख दी और विस्मय से बेटी को घूरने लगा।

"तुम किस बारे में कह रही हो? खुदा के फ़ज़ल से मेरे लिए शर्म करने की कोई वजह नहीं है।"

वह पिछले कुछ दिनों की घटनाओं से अभी होश में नहीं आ पाया था। उसकी मुखमुद्रा उदास, एकाग्र व गम्भीर थी। उसने अपनी सामान्य झल्लाहट के बिना शान्ति से जवाब दिया। किन्तु मेहरी को यह शान्तचित्तता चुनौती देती-सी लगी।

"कैसे, अब्बा? आपकी आत्मा क्या अभी भी आपको नहीं कचोट रही है? कैसे आप कुछ लोगों को एक बात कहते हैं और दूसरों को दूसरी? आप तो हमेशा ही आयकीज की उसके अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की ठानने के लिए तारीफ़ करते थे! आप तो"

"ठहरो, बेटी! मैं अपने कहे से इनकार ही कहाँ कर रहा हूँ।"

मेहरी ने उंगलियां होंठों पर रख लीं और कुछ डरते हुए पिता की ओर देखा। उसकी आंखों में आंसू चमक रहे थे, ठेस के, दर्द के, हैरानी के आंसू। वह पिता की स्पष्टवादिता, अडिग निश्चयता के लिए प्यार करती थी, पर मालूम पड़ा वह पाखण्ड करने में भी कुशल है। उन्होंने आयकीज पर पत्थर मारा और अब हाथ पीठ के पीछे छिपा रहे हैं। मेहरी लगभग सुबकियां भरती हुई कह उठी

"यानी आप आयकीज को मनाने के लिए, उससे बदला लेने के लिए झूठी निन्दा करने से नहीं हिचके—न जाने किस लिए!"

अन्त में मुरातअली से सहा न गया और उसने खीजकर कुदाल जमीन पर ठकठकाया।

"तुम क्या बकवास कर रही हो! तुम्हें क्या कुत्ते ने काटा है?"

"झूठ और तोहमत कुत्ते के काटने से भी ज्यादा खतरनाक होती है!" मेहरी ने समाचारपत्र की ओर संकेत किया। "आपने उन्कीर को क्या-क्या झूठी बातें कह दीं?"

मुरातअली ने अभी तक [illegible] समाचारपत्र नहीं पढ़ा था। उसने कुछ उत्तेजित और शान्त होकर कहा

मैंने उससे कहा कि मैं नयी बस्ती में कदम भी नहीं रखूंगा। और तुमसे भी कह रहा हूँ, सौ गैंद नया पुराना चोगा भी नये से ज़्यादा सुहाता है

आयर्कीज़ ने आपको घर बदलने के लिए मजबूर नहीं किया'

ठीक है, वह ने मुनह करते हुए स्वीकार किया। उसने मजबूर नहीं किया। और मजबूर कर भी नहीं सकती। यही कहा था मैंने उल्कीर का।

यही कहा था? और यह क्या है? यहाँ साफ़ लिखा है महरी ने पढ़कर सुनाया: "प्रशासन के मद में अंधी हुई उमूरजाकोवा की कार्रवाइयों की अलतीनसाय के श्रेष्ठ कपास उत्पादक आलोचना कर रहे हैं। सुविख्यात टोली-नायकों में से एक मुरातअली को शिकायत है कि उमूरजाकोवा अपने अधिकारों का अतिक्रमण करती है। 'उमूरजाकोवा हमें हमारे पुरखों की ज़मीन से हटा रही है, आँधी से कपास बरबाद होते होते बची' मितभाषी टोली-नायक का यह कथन किसानों के हितों की अनदेखी करनेवाली उमूरजाकोवा की सारी कार्रवाइयों का पूर्णतया अनुचित ठहराने के समान है। "

मुरातअली को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने बेटी के पास आकर खुद लेख पढ़ा। खेत-कैंप में किसान जमा होने लगे थे। करीम सोगादिन बेकबूता हलीम-बाबा और सुवानकुल आदि वहाँ आ चुके थे। मुरातअली ने अखबार से नज़र हटाने पर अपने ग्राम-वासियों की चुभती और विस्फारित निगाहें अपने पर टिकी पायी। महरी ने भी पीछे देखकर सिर झुका लिया और फुसफुसायी

लोगों के आगे शर्म आती है, अब्बा "

मुरातअली किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। आरम्भ में उसे विरोध में कहने के लिए कुछ नहीं सूझा। लेख पढ़नेवालों को टोली-नायक वास्तव में आयर्कीज़ के शत्रुओं का सहभागी और सहविचारक लग सकता था। उल्कीर ने उसके कथन को उद्धृत किया था, और वे शब्द – या लगभग उनसे मिलते-जुलते शब्द वास्तव में उसके द्वारा कहे गये थे। फिर भी कलम-घिस्सू ने उसके बारे में जो कुछ लिखा

था, झूठ था – झूठ से आवेष्टित मन झूठ था। मुरातअली जिसने को समझाना चाहता था कि आखिर में क्या हुआ था, लेकिन उसने सोचा : जब बेटी ही मुझ पर विश्वास नहीं करती, तो दूसरे लोगों से क्या उम्मीद? उसने विश्वास की याचना भरी नज़र एक लोगों पर डाली और भीड़ में करीम को देख न जाने क्यों उसी को सम्बोधित करने का निश्चय किया

तुमने यह सब सुना है, करीम?"

युवक ने मौन स्वीकृति में सिर हिला दिया।

और क्या तुम्हें उसमें मेरे बारे में जो कहा गया है उस पर विश्वास होता है?"

"नहीं मुरातअली-अमाकी" करीम ने दृढ़तापूर्वक कहा। मुझे उन्वीर के एक भी शब्द पर विश्वास नहीं है।"

मुरातअली ने राहत की सांस लेकर आगे कहा

तुम तो जानते ही हो, बूढ़े मुरातअली ने कभी अपनी आवाज नहीं दबाई। मैं चिल्ला सकता हूँ, बहस कर सकता हूँ, पर झूठ बोलना मुझे नहीं आता, करीम। झूठ कुत्ते के काटने से भी ज्यादा खतरनाक होता है। यह मेरी बेटी का कहना है, और उसके शहर में यह बात मैंने ही बिठाई है। तुम्हें याद है, करीम, तुम मुझे काम की सलाह देने आये थे, पर मैंने तुम्हें दूर भगा दिया था? लेकिन फिर भी मैंने वैसा ही किया, जैसा तुमने कहा था, और मुझे यह मानने में शर्म नहीं महसूस होती। मैं सबके सामने दोहराने को तैयार हूँ 'करीम एक अच्छा कपास-उत्पादक है कभी-कभार उसकी सलाह मानने में कोई बुराई नहीं है।"

मुरातअली इस समय पहले जैसा नहीं था, न वह कुछ तय कर रहा था, न वह चिड़चिड़ाकर हठपूर्वक बड़बड़ा रहा था, बल्कि अपनी सफाई दे रहा था उसे अपनी नेकनामी की चिन्ता थी, वह सबको विश्वास दिलाना चाहता था कि उसने अपने नाम पर बट्टा लगाने का कोई काम नहीं किया है।

"तुम सुन रहे हो, करीम? तुम सुन रहे हो, भले लोगो? मैं कसम खाकर कहता हूँ, अपने पुरखों की कसम खाकर कहता हूँ कि उस लमटगे ने मुझ पर झूठी तोहमत लगायी है!"

किन्तु मुरातअली को पूरी बात नहीं कहने दी गयी। भीड में से न जाने कहाँ से गफूर निकल आया और अपने टोली-नायक के सामने खडा होकर तिरस्कारपूर्वक सिर हिलाकर पर्दाफाश करते उत्तेजक स्वर मे बोला

"छि! छि! प्यारे मुरातअली तुम अपना दोष दूसरे के सिर क्यों मढ रहे हो? मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, मै तुम्हारी बहुत इज्जत करता हूँ, पर " उसने किसानो की ओर मुडकर अपना सीना ठोका। "पर सच्चाई मुझे दोस्ती से ज्यादा प्यारी है! मैं सिर पर तलवार लटकी होने पर भी सच ही बोलूँगा! मैंने देखा – और सबने देखा – कि हमारे इज्जतदार टोली-नायक ने इज्जतदार यूसुफी से कैसे बाते की थी "

"वह मेरे पास आया था। यह सच है। लेकिन "

"अहा!" गफूर विजयोल्लास मे चिल्लाया। "आप लोगो ने बाते की! और जब तुमने उसके सामने न जाने क्या-क्या झूठी-सच्ची कही ही है, तो फिर इससे इनकार करने की क्या जरूरत है? तुम अपनी बात के पक्के रहो, हमें बताओ कि तुमने मेरी अभागी भानजी की झूठी बदनामी किस लिए की?"

"तुमने सुना तो था कि हमारे बीच क्या बाते हुई, गफूर," मुरातअली ने किंचित् लाचारी से कहा। "उस बेईमान ने जो बाते मेरे सिर मढी हैं, वे तो मेरे दिमाग मे भी नहीं थी "

गफूर ने व्यग्यपूर्वक खीसे निपोड दी।

"सचमुच किसी ने नहीं सुना कि तुम लोगो मे किस बारे मे बाते हुई। और कोई जान भी नहीं सकता कि तुम्हारे दिमाग मे क्या विचार थे। नेक भी हो सकते है और बुरे भी। सच्ची बात के लिए तुम मुझ पर नाराज मत होओ, पर तुम साबित कैसे करोगे "

किन्तु गफूर अपना दोषारोपणीय भाषण जारी न रख सका। पोगोदिन पहले बोल पडा। वह मुरातअली की ओर दोस्ताना ढग से मुस्कराकर गफूर को उतना नहीं जितना, कि किसानो को सम्बोधित करके कहने लगा

"मुरातअली-असाकी को कुछ साबित करने की जरूरत ही नहीं है। हमे उन पर विश्वास है। पहले मैंने सोचा था कि मुरातअली

अमारी यूसुफ़ी की बात में आ गये हैं, लेकिन अगर वह कहते हैं कि यूसुफ़ी ने उनके शब्दों को तोड़-मरोड़कर पेश किया है, तो इसका मतलब है कि ऐसा ही हुआ है। मुझे पूरा विश्वास है कि किसानों का समर्थन न मिलने पर इस कलम-घिस्सू ने मनगढ़ंत बात को असलियत की तरह पेश करने की कोशिश की है।"

"हाँ हाँ निदेशक!" गफ़ूर चिल्लाया। "ज़रा सभल के! पार्टी प्रेस को बेकार बदनाम मत करो!"

"हम पार्टी प्रेस का आदर करते हैं," पीगोदिन ने आपत्ति की, "वह हमारी आवाज़ है जनता की आवाज़ है। इसीलिए तो हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य उन चुगलखोरों और अवसरवादी कलम-घिस्सुओं का पर्दाफाश करना है, जो सम्पादक-मण्डल में घुस आये हैं और सोवियत पत्रकारिता का नाम बदनाम कर रहे हैं!"

"तुम ऐसा इसलिए कह रहे हो, निदेशक, कि यूसुफ़ी ने किसी पर नुक्ताचीनी की है।"

"यूसुफ़ी ने जिस समस्या के बारे में लिखा है, उसने उसकी तह में जाने की कोशिश ही नहीं की है। लगता है किसी ने उसके कान पहले से भर दिये थे। उसकी उमूरज़ाकोवा के साथ हुई बातचीत में उसका पूर्वाग्रह साफ़ महसूस हो रहा था। मुझसे तो उसने बात तक नहीं करनी चाही। वह औरों की कही दोहराता है, दोस्तो। आपकी साहसपूर्ण पहलक़दमी में आपको सहारा देने के बजाय वह उस रास्ते में रोड़े अटका रहा है, जिससे आप सुखी और समृद्ध जीवन की ओर बढ़ रहे हैं।"

"ठीक कहते हो, इवान बोरिसोविच!" भीड़ में से बेख़्बूग ने आवाज़ दी। "उत्कीर ने तीर आयकीज़ पर छोड़ा था, पर लगा वह हमारे है!"

"अभी कुछ पता नहीं उसने निशाना किसे बनाया था!"

"आयकीज़ हमेशा हमारे साथ मिलकर लोकहित के लिए काम करती रही है!"

"वह हमारा भला चाहती है!"

"उत्कीर ने आँखें मूंद कर लिखा है!"

"हम आयकीज़ पर आँच नहीं आने देंगे!"

"उल्कीर के चश्मे के शीशे काले है, उसे कुछ नजर नही आने देते।"

बेंच पर करीम उछलकर चढ़ गया और शोर मचाते किसानो की आवाज़ को दबाने की कोशिश करता बोलने लगा

"आप लोगो ने यह क्या रट लगा रखी है 'उल्कीर, उल्कीर!' कही इस लेख मे हमारे आदरणीय अध्यक्ष का हाथ तो नही है? वह हमारा पल्ला पकडकर हमें अछूती धरती मे खीच ले जाना चाहता है। जिस आधी की हमे याद तक नही रही, वह उसके बारे मे सबको बढा-चढाकर बताता है देखिये, कितनी खतरनाक आधी है, किसान तो उसके सामने नाचीज़ कीड़े हैं।"

"वह हमे सिर्फ़ आधी का नाम लेकर ही नही डराता है।"

"शायद उसी ने इस उल्कीर की पीठ थपथपाई है!"

"अध्यक्ष खुद डरता है, इसीलिए हमें भी डराना है।"

"हम क्या फरगानावालो और मिरज़ाचूलवालों में कमज़ोर और डरपोक है?"

"ऐ, बेकबूता!" सुवानकुल की गरजती आवाज गूज उठी। "तुम फरगाना मे रह चुके हो, देख चुके हो कि वहाँ कैसा संघर्ष चल रहा है, ज़रा तुम ही कादीरोव के साथ राजनीतिक ढग से बात करो।"

"बेकबूता, ज़रा सुनाओ, तुमने वहाँ क्या देखा।"

"मैं सुना चुका हूँ। वहाँ भी रेगिस्तान पर हमला बोला जा रहा है। और रेगिस्तान में वैसा ही नमक है, जैसा कि फ़ूहड के शोरबे में। पर फरगानावाले इससे नही घबराते। मैं रेगिस्तान में कपास देख चुका हूँ। नये गाव देख चुका हूँ। बाग देख चुका हूँ–उस जगह, जहाँ कुछ अरसे पहले तक सरकडे उगा करते थे, जिसमें जगली सूअर घूमते रहते थे।"

"जगली सूअरो को तो ज़रूर हमारे बहादुर बेकबूता ने डरा दिया होगा।" सुवानकुल ने कहा और सब ठहाके लगाकर हस पडे।

"याद है," करीम फिर बातचीत में हिस्सा लेने लगा "याद है, जुरावायेव ने भूखी स्तेपी को कृषि योग्य बनाने के बारे में हमसे क्या कहा था? मिरज़ाचूल पर धावा बोलने ताशकन्द, काश्कादरिया

को दिमाग से निकाल दीजिये, तो आप कायल हो जायेंगे कि वह खुद परस्पर-विरोधी बातें कहता है! जमीन कम है? तो नयी जमीन को कृषि योग्य बनाइये! लोगों की कमी है? तो फिर उनकी ताकत के साथ मशीनरी का फ़ौलादी बाहुबल जोड़ दीजिये! अगर हम सब पूरा जोर लगायें, दोस्तो, और इसी साल में अछूती धरती को कृषि योग्य बना दें, तो अगले साल मैं आपके खेतों में मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन की सारी मशीनरी पहुँचा दूँगा। तब आप देख लेंगे हमने कपास की खेती के लिए नयी जमीन को तैयार करके कितनी समझदारी और दूरदर्शिता से काम लिया! हम अभूतपूर्व फसलें चुनेंगे। और कुदाल, जिसको अध्यक्ष इतना कसकर पकड़े हुए है, जरूरी न रहने के कारण संग्रहालय को भेंट कर देंगे।"

"उसकी जगह है भी वही!"

"जल्दी से जल्दी करो, निदेशक!"

"फिर अध्यक्ष चाहे तो संग्रहालय में जाकर कुदाल को देखता रहे!"

"काम के बाद उसके कंधे थोड़े ही दुखते हैं"

"और हम दूसरा अध्यक्ष चुन लेंगे, तब कादीरोव को मजा आ जायेगा।"

"ठीक कहा! उसे अध्यक्ष के पद पर रहते बहुत वक्त हो गया।"

पोगोदिन ने किसानों को शान्त करते हुए हाथ हिलाये और मुस्कराकर चेतावनी दी

"जोश में मत आइये, दोस्तो। ऐसे मामले जल्दबाजी में नहीं निबटाये जाते हैं। आप लोग इस बारे में आपस में सलाह कीजिये सोच-विचार कीजिये, जरा दूर की सोचिये"

किन्तु अपनी वरिष्ठता के अधिकार का उपयोग कर अब तक मौन रहे हलीम-बाबा ने पोगोदिन की बात काट दी

"इसमें सोचने की बात ही क्या है, बेटा? किसान एक तरफ देखते हैं, तो अध्यक्ष – दूसरी तरफ। हमने एक बार उसे विदा कर देने की सोची थी, पर हमें कुछ इन्तजार करने के लिए मना लिया गया। तब अध्यक्ष खुद सीना ठोक-ठोककर हर नये काम का पूरा समर्थन करने की कसम खाता था। वह मीटिंग याद है? आज फिर नया काम छिड़ गया है, लेकिन अध्यक्ष अपने कसमे-वादे भूलकर फिर

उसने [illegible] इतने [illegible] है [illegible] की तरह [illegible] है कुछ है कि जिन्हें [illegible] है कि इसने [illegible] को और [illegible] चाहिए, कि उसने कहीं [illegible] को सिर्फ [illegible] की जिन्दा [illegible] चाहिए। [illegible] से अलग [illegible] उसके बिना [illegible] कर लिए [illegible] जैसे वह [illegible]। अकेला [illegible] नहीं कोई सकता और [illegible] उसकी [illegible] कोई नहीं होता। और कि उसमें पर भी कहूँगा [illegible] अपने [illegible] पर [illegible] किसी दूसरे को [illegible] दो और अपने लिए अपने सामर्थ्य का काम हुए थे।

ठीक कहा, हकीम बाबा!"

अकलमंदी की बातों के लिए आपका शुक्रिया!"

किसानों के उत्साह पर, [illegible] से उन लोगों की रक्षा करने की समस्या पर जिन्हें वे गलत मानते थे, पोगोदिन प्रसन्न था। वह सामूहिक फार्म के अगली मालिकों के अपनी शक्ति में आत्मविश्वास पर प्रसन्न था। पोगोदिन को आशा नहीं थी कि वे कार्यारंभ में इतने नाराज हैं। इस बारे में कुराबायेव को सूचित करना चाहिए। और इस समय किसानों को अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की योजना पर गहरा खड़े नालों को ढालने का तरीका समझाना चाहिए। उसने शोर थमने तक इन्तजार किया, फिर शान्त स्वर में सलाह दी

"अपराध का क्या किया जाये, इसका फैसला आप बाद में कर लेंगे। आइये अब जरा ऐसी तरकीब सोच लें जिसमें यह बात" उसने अखबार की ओर संकेत किया, "झूठी बना जाये।"

"हम इसका खण्डन करेंगे।"

"हमारा पार्टी-संगठनकर्ता कुराबायेव के पास जाकर उन्हें बताये कि लोग इस लेख के बारे में क्या सोचते हैं।"

"आलिमजान कहाँ है?"

"वह अपनी टोली में है।"

"चलिये आलिमजान के पास चलते हैं!"

"क्या इसी तरह सभी वहाँ चलें?" पोगोदिन हँस पड़ा। "क्यों न यह काम दो-तीन किसानों को सौंप दें और बाकी लोग काम में जुट जायें? देखिये, सूरज कहाँ पहुँच गया है!"

मुरातअली ने आवाज की ओर देख चिन्ता से भौहे सिकोडी और अपनी टोली के किसानों की ओर कदम बढाये।

"निदेशक पते की बात कह रहे हैं। काम शुरू करने का समय हो गया है।"

"पर आलिमजान के पास कौन जायेगा?"

"बेकबूता।"

"करीम!"

"इवान बोरिसोविच!"

"हलीम-बाबा!"

"मुरातअली-अमाकी!"

"नही, मैं नही जाऊँगा," मुरातअली ने आपत्ति की, "मुझे खेत मे ही काफी काम होगे। बेकबूता को जाने दीजिये। मैं उसके खेत का ध्यान रखूंगा। बोरिस इवानोविच को जाने दीजिये। और हलीम-बाबा को।" उसने वृद्ध बागबान की ओर पलटकर कडी हिदायत दी। "तुम आलिमजान को सारी बात बता देना। उसे और जुराबायेव को मिलकर तयल्लुम उत्कीर को शर्मिन्दा करने की माग करना। और उत्कीर से वह लिखने को कहना क्या कहते है उसे खण्डन।"

हलीम-बाबा शरारती ढग से मुस्कराये और न जाने क्यो उन्होने चोगे के सीने को छुआ।

"वह तो पहले ही हो गया, प्यारो।" उन्होने बगल मे से कपास का पौधा निकालकर उसे झण्डे की तरह सिर के ऊपर उठा लिया। 'यह रहा – खण्डन! यह मेरे बच्चो, अछूती धरती की कपास है।"

पोगोदिन की आखो मे प्रसन्नता व प्रशसा की चमक आ गयी।

"हम इसे आलिमजान को सौप देगे, और वह इसे जुराबायेव को पेश करेगा। यह सबसे अच्छा खण्डन है! और क्या यह, उसने कपास के खेतो की ओर सकेत किया, जहा पौधे घुटनो तक ऊचे हो चुके थे और फूलो के मारे आखे चौंधिया रही थी, क्या ये खेत खण्डन नही हो सकते?"

बेकबूता ने किसानों को आख मारी और हवा मे मुक्का हिलाकर कह उठा

"हमारे किसानो का भगीरथ-प्रयास भी तो इसका खण्डन ही है!"

"मुझे तुम अपने पैमाने से मत नापो, बेकबूता। मैं क्या तुमसे डरा था? तुम खुद ऐसे बहादुरो में से हो, जिनके होंठ गौरैया का नाम लेते ही थरथराने लगते हैं।"

"कितना बहादुर है!" बेकबूता व्यग्यपूर्ण आश्चर्य के साथ कह उठा। "जब कि इसके कधे पर हाथ रखने की देर है कि इसका सारा बदन कापने लगता है।"

पर मुवानकुल भी हाजिरजवाबी में चूकनेवाला नही था।

"मैंने तो सोचा था कि कोई मक्खी बैठ गयी है। उसे उडाना चाहा, देखा तो इस बकवादी बेकबूता को पाया, जिसकी जबान हाथो मे ज्यादा चलती है!"

बेकबूता ने आत्मसन्तोष मे मुह फुला लिया।

"ऐ दोस्त, तुम लोग अछूती धरती मे इसीलिए आराम से सोते हो, क्योकि मैं यहाँ बैल की तरह काम करता हूँ! जब तक मैं जिन्दा हूँ–मुझ पर पूरा भरोसा रख सकते हो, पहाड की तरह।"

"शुक्रिया, बेकबूता। आखिर पहाड का सहारा भी तो सूरमा ही ले सकता है।"

"सूरमा होने से तो तुम बहुत दूर हो, प्यारे दोस्त," बेकबूता ने ट्रैक्टर-चालक को शकालु नजरो में तौलकर एक ठण्डी सास ली। "तुम तो रेंगते चल रहे ऊटो के काफिले के से ज्यादा लगते हो जितना रास्ता तुम महीने भर में तय करते हो, मैं उसे दिन भर मे तय कर लेता हूँ।"

"और मशीनगन की तरह इतने शब्द भी मुह से दागते रहते हो कि दूसरे को उसमे पूरा महीना लग जाये।"

"ठीक कहते हो, दोस्त। मैं इस जिम्मेदारी को भी कामयाबी के साथ पूरा करता हूँ। तुम्हारे जैसे नही तुम्हारे मुह से चार शब्द निकलवाने में तो गर्मी बीतकर पतझड आ जाता है।"

दोनो मित्रों के पास लम्बे वाग्द्वद्व के लिए मसाला कम नही पडता। वे विनोद-भावना के असीम भण्डार के स्वामी थे। वे कटु से कटु और गम्भीर से गम्भीर क्षणो में भी हसी-मजाक करने मे सक्षम थे।

पोगोदिन ने बेकबूता को बुलाया

"टोली-नायक। आलिमजान के पास चलते हैं।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] के बारे में बताया और उसके अनुरोध के बारे में सूचित किया [illegible] पर पहुँचती है [illegible] सामने भी [illegible] और [illegible] के विरुद्ध पार्टी द्वारा अनुशासनात्मक कार्रवाई करने का आदेश करता है।

आलिमजान सोच-विचार में डूब गया। वह होंठ चबाता हुआ गोगोलिद्ज़े के पास खड़ा था नाक के बासे पर जुड़ी उसकी काली भौंहें आंखों के ऊपर काले स्याह छज्जे की तरह लटक गयीं।

इसमें सोचने की बात ही क्या है आलिमजान! फूंक-फूंककर कदम रखनेवाला सोचता रह जाता है, इस मो मरा। अपनी मोटरसाइकिल पर बैठो और फटाफट जिला मुख्यालय पहुंच जाओ।"

"समझते हो इवान वांखिमोविच "

' नहीं कुछ नहीं समझता।

देखिये बात यह है दरअसल मुझे आयशीज की वकालत करनी पड़ेगी ?

"लेख में उसी के बारे में लिखा गया है, और किसान भी उसी की तरफदारी करना चाहते हैं। और पार्टी-संगठनकर्ता होने के नाते तुम्हें उनकी ओर से मांग करनी चाहिए कि यूसुफी ने जो कुछ आयशीज के बारे में गढ़ा है, उसे लोगों ने झूठी शिकायत पाया है।"

आलिमजान हिचकिचाने लगा।

"सो तो है लेकिन किसानों के लिए तो आयशीज ग्राम सोवियत की अध्यक्ष है, जब कि मेरी वह पत्नी है।"

"पत्नी तो, बेटा, दुनिया में सबसे ज्यादा सगी होती है,"

हलीम-बाबा ने कहा। "पत्नी तुम्हारी सबसे नजदीकी दोस्त है। और दोस्त की खातिर तुम्हें हर काम की बाजी लगाने को तैयार रहना चाहिए।"

"फिर वही यूसुफी लिख देगा कि "किजिल युल्दूज" सामूहिक फार्म के पार्टी सचिव ने अपनी पत्नी का तरफदारी की!"

"लिखता रहे!" पोगोदिन भल्ला उठा। "तुम सबको तो खुश कर नही सकते। लोग तुम पर विश्वास करेंगे, न कि उस पर। लेख तो निरी तोहमततराजी है।"

"तुम मुझ पर क्यों चिल्ला रहे हो? सच में वह सरासर तोहमततराजी है। लेकिन यह बात इतनी महत्त्वपूर्ण नही है।"

"यही बात है! और बाकी सारे विचार दिमाग से निकाल दो। आयकोज़ की सफाई देते हुए तुम तरफदार की तरह नही, बल्कि दोस्त और ईमानदार कम्युनिस्ट की तरह पेश आओगे, जो हर तरह की तोहमततराजी से भल्ला उठता है, चाहे वह किसी के बारे में भी क्यों न की गयी हो।"

"मुझ पर तो वैसे ही भाई-भतीजेवाद का आरोप लगाया जा चुका है।"

"आरोप किसने लगाया है? पार्टी ने? साथियों ने? चुगलखोर ने ही लगाया है, और तुम डर गये। इसका मतलब क्या यह हुआ कि अगर कोई मुझ पर झूठा आरोप लगाये, तो तुम भी मुझसे कतराने लगोगे? इसलिए कि पोगोदिन मेरा दोस्त है, कहीं कोई यह न कहने लगे कि मैं मित्र भाव से उसकी तरफदारी कर रहा हूँ। और मित्र भाव तो बहुत पवित्र कार्य है! और अगर तुम्हारा दोस्त दोषी है, तो उसे फटकार लगाना तुम्हारा कर्त्तव्य है। और अगर वह निर्दोष है, तो उसकी खातिर शेर की तरह लड़ो! मैंने ठीक कहा ना हलीम-बाबा?"

"तुम्हारी बात सही है, बेटा। हमारी सारी ज़िन्दगी दोस्ती पर ही टिकी है। एक पुरानी पूरबी नीति-कथा है। एक विद्वान से किसी ने पूछा 'सोने से ज्यादा कीमती चीज क्या है?' 'दोस्ती' विद्वान ने कहा। 'और फौलाद से ज्यादा मजबूत क्या है?' 'दोस्ती' विद्वान ने फिर कहा। 'और तूफान से ज्यादा ताकतवर क्या है?'

और विद्रान वह उठा 'दोस्ती तूफान से ज्यादा ताकतवर होती है।' इस तरह दोस्ती की खातिर नहीं, तो फिर और किसकी खातिर लड़ना चाहिए?"

"एक और बात ध्यान में रखो, आलिमजान," पोगोदिन बोल उठा, "लेख में सिर्फ़ आयकीज़ पर ही चोट नहीं की गयी है। इस मामले को जरा गहराई में जाकर देखो!"

आलिमजान के पास इससे सहमत होने के सिवा और कोई चारा नहीं रहा। वह स्वयं भी समझने लगा था कि उसकी अनिश्चितता का अर्थ भीरुता – उदासीन व्यक्ति की भीरुता लगाया जा सकता है। जब कि वह न तो उदासीन ही था और न ही भीरु।

उसके खेत-कैंप लौटते समय, जहाँ पोगोदिन अपनी मोटरसाइकिल छोड़ गया था, इवान बोरिसोविच ने आलिमजान की कोहनी छूकर कहा

"हम इन के पीछे-पीछे चलते हैं, मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"क्या फिर भाड़ लगाओगे?" आलिमजान हंस पड़ा। "मैं सारा मामला समझ गया, इवान बोरिसोविच, सारा!"

"सारा मामला समझ गये, आलिमजान? तुम मुझे माफ़ करना कि मैं तुम्हारे घरेलू मामलों में दखलदाज़ी कर रहा हूँ। लेकिन मुझे लगता है – तुम अपनी पत्नी की भावनाओं को ठेस पहुँचा रहे हो "

"यह कैसे?"

"अपनी लापरवाही से। मुझे लोला ने बताया आयकीज़ जब तुम्हें काफी अरसे तक नहीं देख पाती है, तो खोई-खोई घूमती रहती है। और कभी-कभी तो वह तुम्हें पूरा दिन नहीं देख पाती है। इस समय वह कहाँ है?"

"वह रात-भर नहीं सोयी, खिड़की के पास बैठी रही सुबह मैं उसके कमरे में गया, वह वहाँ थी ही नहीं और खाम सोवियत में भी नहीं थी "

"वाह, भई, वाह! तुम खुद तो जरूर जैसे घोड़े बेचकर सो रहे थे ना?"

"मैं तो बड़ा ही बड़ी मुश्किल से रह पा रहा था। तुम खुद ही समझते हो! ऐसा दिन था "

"मैं होता, तो मो ही नही पाता," पोगोदिन ने अन्यमनस्कता मे और कुछ-कुछ सपनो मे खोये-खोये कहा, "और लोला मे लम्बे अरसे तक मिले बिना भी नही रह पाता। और अगर उससे मिलना तय कर लेता, तो कही रुकता भी नही। शादी कर ले, फिर मैं तुम्हे यह दिखा दूँगा कि पति अपनी पत्नी के साथ कैसे पेश आता है "

"और काम ?"

"और काम करना भी आसान हो जायेगा!"

"मै देखता हूँ, इवान बोरिसोविच, तुम्हे लोला से बहुत ही गहरा प्यार है। मेरी बहन की किस्मत अच्छी है।"

"पर तुम क्या आयकीज को अब प्यार नही करते ?"

"तुम भी क्या, इवान बोरिसोविच!" आलिमजान का चेहरा किंचित् लाल हो उठा और उसने विश्वासपूर्वक पोगोदिन के हाथ मे हाथ डालकर स्वीकार किया "अभी तक प्यार मे डूबा हूँ! किशोर की तरह "

"केवल अपनी भावनाएँ प्रकट करते शर्माते हो? अपनी पुरुष सुलभ प्रतिष्ठा कम हो जाने से डरते हो?"

"नही, नही " आलिमजान ने हथेली से जोर मे गुद्दी पर मला। "काम बहुत रहते है! उनमे व्यस्त हो जाने पर और कुछ याद नही आता।"

"ऐसा है यानी तुम्हारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन मे तालमेल नही है। और तुम जब इन सिद्धान्तो मे सामजस्य स्थापित करने का आह्वान अपने भाषणो मे करते हो, तो जरूर बुलबुल की तरह कूजते होंगे? अर्थपूर्ण और सुव्यवस्थित भाषण देने मे तो तुम पटु हो।"

"ठहरो, इवान बोरिसोविच! माना तुम लोला से ठीक दो बजे मिलने का वादा करते हो। पर तुम्हे कुछ काम हो जाता है। फिर क्या तुम सब छोड़कर अपनी मगेतर के पास भाग जाओगे?"

"नही। मैं जल्दी से जल्दी काम निबटाकर भागूगा नही, बल्कि उड़कर जाऊँगा! आखिर, आलिमजान, आयकीज़ के सिर पर काम तुमसे कम नही है। लेकिन न जाने फिर भी क्यो उसके पास तुम्हारे

रह पाते थे। उनकी चेष्टाएं उदार, कठोर व अभिव्यंजक होती थीं, दहकती काली आंखें मुख को ओजपूर्ण भाव प्रदान करती थीं, तो कभी सहृदयता से दीप्तिमान हो उठती थीं, तो फिर कठोरता, गम्भीरता या विचारशीलता व्यक्त करने लगती थीं।

"तुम जरा देखो तो, यूसुफी हवाला किसका देता है," जुरावायेव ने आगे कहा। "यह मुल्ला-सुलैमान कौन है? दावतों का वह दीवाना तो नहीं, जो मुसीबत की घड़ी में अपनी टोली को छोड़कर बरसी मनाने चला गया था?"

"वही है। सामूहिक किसान अरसे से उसे टोली-नायक के ओहदे से हटाने की मांग कर रहे हैं, पर कादीरोव इस बारे में सुनना तक नहीं चाहता।"

"यह तो ज़ाहिर ही है सामूहिक किसानों के लिए वह निठल्ला है, पर कादीरोव के लिए शायद दोस्त है। और दोस्त उसके इतने ज्यादा तो हैं नहीं, उन्हें बचाना जरूरी है, उन्हें खुश रखना जरूरी है। पर नज़ाकतख़ा क्या है? दफ़्तरवालों ने शिकायत की है कि वह किसी काम की स्टेनो नहीं है। उसे काम पर लगाने की सिफारिश किसने की थी?"

आयकीज लाल हो उठी।

"मैंने खुद ही कादीरोव से उसकी सिफारिश की थी।"

"यह लो! खूब सूझी तुम्हें सिफारिश करने की!"

"वह मेरे कमरे में फूट-फूटकर रो पड़ी थी..."

"तो क्या उसने तुम्हारे दिल में रहम जगा दिया? छि, आयकीज! सिफारिश का आधार आखिर आदमी के आंसू नहीं, उसकी योग्यता होनी चाहिए। तुम उससे पहले क्या नज़ाकतख़ा को अच्छी तरह जानती थी?"

"मेरे खयाल से वह बुरी लड़की नहीं है। हंसमुख, सहृदय और मिलनसार है। मेरी समझ में नहीं आता कि उसके सम्पादक के नाम पत्र लिखने के लिए किस बात ने प्रेरित किया?

"किस बात ने या किस आदमी ने? तुमने यह पता लगाने की कोशिश की? तुम्हारी इस 'समझ में न आनेवाली' बात से मुझे सन्तोष नहीं होता, आयकीज! नज़ाकतख़ा शायद उर्वरता समिति

"बेशक! मुझे तो विश्वास है कि यूसुफी भी किसी की कठपुतली है।"

"तो फिर लेख किसने लिखा है?"

यानी यूसुफी की कलम के पीछे किसका हाथ है? तुम्हारे ख्याल में इस लेख से फायदा किसको हो सकता है? अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने का हमारा 'झमेला' किसे पसन्द नहीं है? सुलतानोव को, कादीरोव को और उनके जीहुजूरियों को। लेख उन्होंने ही लिखवाया है, इसमें मुझे रत्ती भर भी शक नहीं है!"

'सुलतानोव आपके पास आज आये थे?'

'आया था। और उसने लेख के कुछ प्रसंगों पर ज़ोर देने की कोशिश भी की थी। उसका विचार है कि तुम अपने पद के अधिकार-क्षेत्र का उल्लंघन करती हो। उसका कहना है कि ग्राम सोवियत न तो मन्त्रालय है, न जिला समिति, और न ही सामूहिक फार्म का कार्यालय, ग्राम सोवियत के सदस्यों की अपनी जिम्मेदारियां हैं, अपना 'विशिष्ट' कार्य-भार है, और आर्थिक व उत्पादन सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करना उनका काम नहीं है। उसने ऐसे ही कहा था 'उमूर-ज़ाकोवा दूसरों के मामले में टांग अड़ा रही है, यूसुफी का शुक्रिया कि उसने समय पर उसे रोक दिया'।'

"ऐसा है! यानी मुझे सिर्फ शिकायतों और प्रार्थनापत्रों की ही छानबीन करनी चाहिए और गांवों की जन-सुविधाओं की ही चिन्ता करनी चाहिए?"

'तुम्हें? यही तो बात है कि सिर्फ तुम्हें ही नहीं। तुम्हारे अधिकारों व उत्तरदायित्वों को कृत्रिम ढंग से सीमित रखने का प्रयास करते हुए सुलतानोव सबसे पहले अपने लाभ की ही सोचता है। वह तो जिला कार्यकारिणी समिति के कुछ कार्यों व उत्तरदायित्वों को भी कम करना चाहता है। अधिक सम्मान, कम उत्तरदायित्व – यही है उसका आदर्श! लेकिन जनता श्रेष्ठ लोगों को ग्राम सोवियतों व जिला सोवियतों के लिए निर्वाचित करके उनके प्रति सम्मान ही नहीं उन पर विश्वास भी प्रकट करती है, उन्हें अपना सेवक बना लेती है। और जनता की सेवा का अर्थ है – सभी बातों में रुचि लेना, सारी जिम्मेदारियां उठाना, जिससे कि लोग बेहतर जिन्दगी जियें!

गनेवाली दलीलों की आड लेकर खुद को भी धोखा दे रहे हैं। हर
ार्य के आरम्भ में उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखा
रहे हैं। इन वस्तुगत कठिनाइयों से दूसरों को भी डरा रहे हैं और
ख़ुद को भी। लेकिन अगर सारी बातों को सीधी-सादी तौर पर देखा
जाये, उनमें सर्वनिष्ठ ढूंढा जाये, तो दो मूल विरोधात्मक दृष्टिकोण
इस प्रकार निश्चित किये जा सकते हैं जनता के लिए जीना – और
अपने लिए जीना।"

'लेकिन कादीरोव ने तो सामूहिक फार्म के लिए बहुत कुछ किया
है। वह इस समय भी उसे अग्रणी बनाने के लिए कोशिश कर रहा है।'

"एक तो तुम कादीरोव की पुरानी सेवाओं की बेकार दुहाई
दे रही हो। तुम उसे सामूहिक फार्म के संस्थापकों में से एक और
जनता की खुशकिस्मती के लिए संघर्ष करनेवाला आत्मत्यागी व निःस्वार्थ
सेनानी मानती हो। मैं भी कादीरोव को काफी अर्से से जानता हूँ।
वह एक कुशल सचालक था। था! लेकिन अब वह बदल गया है।
वह घमण्डी हो गया है। वह ख़ुद को जनता का सेवक नहीं, बहुत
बड़ा उपकारक मानता है। वह अब अपनी कोशिशों की कीमत चुकाने
की माग करता है यश, सम्मान, विशेषाधिकार। जिसे कहना चाहिए
जनता से अलग हो गया है, सामूहिक किसानों की राय से ज़्यादा
अपनी राय को महत्त्व देता है। उसके पास पहुँचना असम्भव हो गया
है वह सामूहिक फार्म का 'मालिक' है! और उसे मालिक बने रहना
अच्छा लगता है! वह अपने लिए, जनहित के लिए नहीं, अपनी
महत्त्वाकांक्षा और सत्ता पाने की लालसा के लिए, जिसके लिए उसे
ओछे लोग, चापलूस, जीहुज़ूरिये या उस पर अपनी लाभदायक दोस्ती
की कृपा करनेवाले मुनतानोव सरीखे 'उच्च संरक्षक' उकसाते हैं,
जीने लगा है।" जुरावायेव मौन हो गये लगता था जैसे वह कादीरोव
के चरित्र-चित्रण के लिए उपयुक्त शब्द खोज रहे हैं। "हा, वह काम
करता है हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठा रहता है, तुम यह ठीक कहती
हो। पर अपनी ख़ातिर जीने का अर्थ आलस के वशीभूत हो जाना
नहीं है। पिछले कुछ सालों से वह आधी ताकत से काम कर रहा
है। उसके लक्ष्य सीमित हैं। उपकारक कृपा इस तरह करना चाहते
है, जिससे ख़ुद उनका बोझ ज़्यादा न बढ़े, मानो कहते हैं इसे ही

बहुत समझा। कादीरोव के लिए मुख्य है – औपचारिक ढंग से योजना को पूरा करना, मन को भी चैन रहता है और आलोचना से भी सुरक्षा रहती है। वह योजना की अतिसिद्धि भी कर सकता है, किसानों के बीच मान पाने, जिले व प्रांत के अधिकारियों से प्रशंसा पाने के लिए! पर अपने लिए योजना वह न्यूनतम मांगता है और उसकी अतिसिद्धि कुछ ही प्रतिशत अधिक करता है। उसे इससे ज्यादा की ज़रूरत नहीं है। ज़रूरत इसकी सामूहिक फार्म को नहीं, बल्कि उसे, कादीरोव को ही नहीं है।

मुझे एक बार किसी ने एक एथलीट, हैवीवेट खिलाड़ी के बारे में बताया," जिला समिति का सचिव मुस्कराया। "बहुत ही तेज चालबाज़ था! वह हर बार नया रिकार्ड कायम करता था और अपने ही कायम किए रिकार्ड को तोड़ देता था। वह अपनी जय-जयकार समाचारपत्रों में छपे फोटोग्राफों व नकद पुरस्कारों से बहुत खुश रहता था। उसमें एक बार में ही पुराने रिकार्ड से दस किलोग्राम अधिक उठा लेने की पर्याप्त शक्ति थी, पर वह प्रति वर्ष एक-एक किलोग्राम ही अधिक उठाता था। अपनी शक्ति वह सावधानीपूर्वक, मितव्ययिता से, अपने हित का ध्यान रखते हुए खर्च करता था। इस तरह से उसे अधिक शान्ति भी मिलती थी और लाभ भी। कादीरोव मुझे उसी वेटलिफ्टर की याद दिलाता है। लगता तो है कि उसकी प्रशंसा करने के लिए आधार काफ़ी है, उसके सामूहिक फार्म ने कल परसों के मुकाबले ज्यादा कपास दी, तो आज कल से ज्यादा। अपने अध्यक्ष के बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व में सामूहिक फार्म आगे बढ़ता जा रहा है। अध्यक्ष ज़िन्दाबाद! लेकिन सामूहिक फार्म के लिए ये कैसे क़दम हुए? बेधड़क लम्बे डग नहीं, बल्कि सावधानी से रखे जा रहे नपे-तुले क़दम।

आयकीज ने स्वीकृति में सिर हिलाया। जुरावायेव ने यह देख लिया और दृढ़ विश्वास के साथ आगे बोले :

'कादीरोव ने, पहले इससे बुरा हाल था' के बहाने से नये जीवन के लिए संघर्ष से अपने को अलग कर लिया है। जब कि किसानों का सवाल है कि वे आज भी वैसे नहीं जी रहे हैं, जैसे वे जी सकते थे! वे पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहते, उनकी दृष्टि, दिल और विचार भविष्य की ओर उन्मुख हैं! हां, कुछ साल पहले अन्तर्निमाय

में कपास बिलकुल भी नहीं होती थी। हां, जीवन इतना समृद्ध नहीं था, जितना कि अब है। और यह बहुत ही अच्छी बात है कि सामूहिक फार्म की सम्पदा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है! लेकिन थोड़ा-थोड़ा करके, धीरे-धीरे, हालांकि अपनी छिपी क्षमता का उपयोग करके उसमें पहले से तीन-चार प्रतिशत अधिक नहीं, बल्कि तीन-चार गुना ज्यादा फसल समेटने का सामर्थ्य है! अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने के साथ-साथ मशीनरी का व्यापक उपयोग और श्रम की युक्तियुक्त व्यवस्था – यह सब मिलाकर हमारे लिए आगे एक लंबी छलांग लगाना सम्भव कर देता, उस भविष्य को कुछ निकट ला देता, जिसे हम 'दूर' भविष्य का नाम देते हैं, पर जो हमेशा भविष्य नहीं रहेगा! पर कादीरोव लोगों को पड़ाव डालने के लिए मना रहा है। खुद ही फैसला करो, वह किसके बारे में ज्यादा सोचता है जनता के बारे में या अपने बारे में?"

"लेकिन कहीं वह जोखिम उठाने से तो नहीं डरता है? लगता है उसे सफलता में उतना विश्वास नहीं है, जितना कि हमें।

"वह जोखिम उठाने से नहीं डरता, उसे डर है कि असफल होने पर उसे झिड़की दी जायेगी, या फिर उसे अध्यक्ष पद से और अध्यक्ष के सारे विशेषाधिकारों से वंचित कर दिया जायेगा। वह गौण अनुमानों के कारण सावधानी बरतता है। अगर वह कार्य से होनेवाले लाभ के बारे में सोचता, तो जोखिम उठाने को भी तैयार हो जाता! तुम्हें ही लो – तुम क्या डरती हो कि हमारा 'झमेला', जैसा कादीरोव उसे नाम देता है, असफल होने पर खुद तुम्हारे लिए मुसीबत खड़ी हो जायेगी?"

"जरूरत पड़े, तो मैं खुद हर तरह की मुसीबतें झेलने को तैयार हूँ। लेकिन मुझे केवल सफलता का विश्वास है। क्योंकि अलतीनसाय की जमीन को कृषि योग्य बनाकर हम पार्टी और सरकार के आह्वान का उत्तर दे रहे हैं। ताशकन्द में हमारा समर्थन करेंगे, जरूर करेंगे!

"मुझे भी इसका विश्वास है। पक्का विश्वास है हालांकि मैं यह मानता हूँ कि कभी-कभी हमारे लिए हालात बहुत मुश्किल हो सकते हैं। हमारे चारों ओर जिन्दगी उजले और झिलमिलाते प्रवाह की तरह उफन रही है, पर कभी-कभी निर्मल तरंग पर भी गदला

जुरावायेव के इन शब्दों से और उनकी मित्रतापूर्ण स्पष्टवादिता से उसे लोगों व घटनाओं को दूसरी ही नजर से देखने में सहायता मिली। उसके विचार स्पष्ट व उद्देश्यपूर्ण हो गये। अब वह अलतीनमाय पहुचने, अपने अधूरे रहे कार्यों में जुट जाने, खेतों में चलने, अछूती धरती में और नये गाव में हो आने के लिए अधीर हो उठी थी। लेकिन उसका सिर फिर घूमने लगा था, वैसे ही जैसे सुबह, जब वह चश्मे के पास बैठी थी

आयकीज बरामदे में निकली और उसे आलिमजान नजर आ गया। वह अभी अभी मोटरसाइकिल से उछलकर उतरा था और पत्नी को देखते ही हर्ष व आश्चर्य से चिल्ला उठा

"आयकीज!"

आयकीज पत्थर की सीढ़ियों से धीरे-धीरे उतरकर उसके पास गयी।

'तुम यहां कैसे आये, आलिमजान?"

'कितना ढूढा मैंने तुम्हें, आयकीज! हम सब वहा तुम्हारे बारे में परेशान हो रहे थे। तुम जुरावायेव के यहां से आ रही हो? और मैं उनके पास जा रहा हूँ। मालूम है, आज हमारे किसानों ने यूसुफी के लेख पर सामूहिक रूप से विचार किया और मुझे जुरावायेव के पास भेजा है। कहते है हम हमारी आयकीज का बाल भी बाका नहीं होने देंगे।

आलिमजान उत्तेजित स्वर में अटक-अटककर और उसके लिए अस्वाभाविक जोश के साथ बोल रहा था, साथ ही कसूरवार की तरह और प्यार से देख रहा था

"तुम जुरावायेव के पास आज मत जाओ।"

'जरूर जाऊँगा! मुझे जिला समिति द्वारा कदम उठाने और यूसुफोवों की अक्ल दुरुस्त करवाने का काम सौंपा गया है!"

'आलिमजान, मेरे सच्चे दोस्त" आयकीज ने धीरे से, कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा। "प्रिय तुम मत परेशान होओ, जुरावायेव खुद, जो जरूरी है, कर लेंगे। और मैं और मुझे" वह अचानक लड़खड़ा गयी और गिरने से बचने के लिए उसने आलिमजान का कधा पकड़ लिया।

२० ४५

पैदा कर सकता है। क्योंकि कुछ लोगों के मन में पीछे ज़माने की यादें अ
तक नहीं उतर पायी है। इस उनके लिए भी और उनके विरुद्ध
काफी शक्ति खर्च करके, यहां तक कि हानि भी उठाकर लड़ना पड़
गा। लेकिन हमारे पास ज़बर्दस्त, एक ही वार में टुकड़े कर डा
लने वाला हथियार है – सत्य की ताकत, अपनी जनता की चेत
हमारा बुद्धिमान, जाना-माना और दूरदर्शी सेनापति है – पार्टी। है
अनेक पीढ़ियों का अंग है – जनता का। वह तो जानती ही है कि कौ
उसका दोस्त है, कौन दुश्मन, उसके लिए क्या अच्छा है और क्या
बुरा। मैं हाल ही में 'किरोव कुलखोज' के सामूहिक किसानों से
बात की थी और तुम भी तो मौजूद थी उस बातचीत में। जानती
हो, मुझे भूमिविस्तारवादियों की मन स्थिति, उनका उत्साह सुन-
कर बहुत अच्छा लगा। उनके विचार, जो हो रहा है उसका मूल्यांकन
कितना सही है! बातचीत में आदमी अपने लिए बहुत, बहुत ही
अनमोल लाभदायक निष्कर्ष निकाल सकता है।

अब्बा मुझे सारी ज़िन्दगी सीख देते रहे थे, हमेशा लोगों के
साथ रहो। अब्बा... अब मैं उनके बिना क्या करूं?"

"तुम बस रोओ मत, आयकीज़। तुम्हें रोना नहीं चाहिए,"
जुरावायेव ने बच्चे की तरह उसके सिर पर हाथ फेरा। "हमेशा अब्बा
के बारे में सोचती रहो, अब्बा को हमेशा याद रखो। लेकिन दिल
छोटा मत करो। अपने अब्बा जैसी बनो, आयकीज़!"

"मुझे... मुझे किसी तरह विश्वास ही नहीं होता कि वह नहीं
रहे... घर लौटने तक से डरती हूं।"

"तुम अकेली नहीं हो, आयकीज़। दोस्त तुम्हारे साथ हैं।"

आयकीज़ जुरावायेव के पास से उनके सरल व हार्दिक शब्दों
से उत्साहित होकर लौटी। उसे लग रहा था जैसे उसके सामने उसका
बड़ा भाई हो। "याद रखो, आयकीज़," उसने कहा था, "पार्टी
ने जनता का महान कार्य – कपास की खेती की भूमि के विस्तार-
के लिए आह्वान किया है। और हर कार्य संघर्ष की सहायता से ही
सफल होता है। यूसुफी का गंदा लेख केवल इस शाश्वत सत्य की
पुष्टि करता है "अपने आखिरी दिन गिन रही पुरानी पीढ़ी प्रगतिशील
विचारों के कार्यान्वयन को रोकने की पुरज़ोर कोशिश करती है।

जुरावायेव के इन शब्दों से और उनकी मित्रतापूर्ण स्पष्टवादिता से उसे लोगों व घटनाओं को दूसरी ही नजर से देखने में सहायता मिली। उसके विचार स्पष्ट व उद्देश्यपूर्ण हो गये। अब वह अलतीनमाय पहुंचने, अपने अधूरे रहे कार्यों में जुट जाने, खेतों में चलने, अछूती धरती में और नये गांव में हो आने के लिए अधीर हो उठी थी। लेकिन उसका सिर फिर घूमने लगा था, वैसे ही जैसे सुबह, जब वह चश्मे के पास बैठी थी

आयकीज़ बरामदे में निकली और उसे आलिमजान नजर आ गया। वह अभी अभी मोटरसाइकिल से उछलकर उतरा था और पत्नी को देखते ही हर्ष व आश्चर्य से चिल्ला उठा

"आयकीज़!"

आयकीज़ पत्थर की सीढ़ियों से धीरे-धीरे उतरकर उसके पास गयी।

"तुम यहाँ कैसे आये, आलिमजान?"

"कितना ढूंढ़ा मैंने तुम्हें, आयकीज़! हम सब वहां तुम्हारे बारे में परेशान हो रहे थे। तुम जुरावायेव के यहाँ से आ रही हो? और मैं उनके पास जा रहा हूँ। मालूम है, आज हमारे किसानों ने यूसुफी के लेख पर सामूहिक रूप में विचार किया और मुझे जुरावायेव के पास भेजा है। कहते हैं हम हमारी आयकीज़ का बाल भी बांका नहीं होने देंगे।

आलिमजान उत्तेजित स्वर में अटक-अटककर और उसके लिए अस्वाभाविक जोश के साथ बोल रहा था, साथ ही कसूरवार की तरह और प्यार से देख रहा था

"तुम जुरावायेव के पास आज मत जाओ।"

"ज़रूर जाऊँगा! मुझे ज़िला समिति द्वारा कदम उठाने और चुगलखोरों की अक्ल दुरुस्त करवाने का काम सौंपा गया है!"

"आलिमजान, मेरे सच्चे दोस्त" आयकीज़ ने धीरे से, कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा। "प्रिय तुम मत परेशान होओ, जुरावायेव खुद, जो ज़रूरी है, कर लेंगे। और मैं और मुझे" वह अचानक लड़खड़ा गयी और गिरने से बचने के लिए उसने आलिमजान का कंधा पकड़ लिया।

२०

तुम्हें क्या हुआ आयकीज़?"

"कुछ नहीं अभी ठीक हो जाऊँगी। मैं थक गयी हूँ और फिर उसने एक गहरी सांस लेकर विश्वासपूर्ण ध्वनि में गद्गद उसके कान में वह बात कही जिसे सुनाने के लिए वह पिछले कई दिनों से लालायित थी।

आलिमजान के चेहरे पर हास्यास्पद व आह्लादक मुस्कान छा गयी।

आयकीज़! सच्ची?

धीरे आलिमजान इसके बारे में और कुछ मत कहो

तो चलते हैं आयकीज़। मैं सिर्फ लपककर एक मिनट के लिए जुरावायेव से मिल आता हूँ। बस यही कहूँगा कि कल आऊँगा क्योंकि लोगों के काम के बारे में ऐसे सुखद क्षण में भी नहीं भूलना चाहिए। तुम इन्तज़ार करोगी, प्रिये एक मिनट के लिए?"

तुम हमेशा ही ऐसे रहे हो, आलिमजान मेरे सबसे प्यारे आयकीज़ मुस्करा पड़ी। जाओ, मुझे भी यहाँ काम है। सुलतानोव ने मिलने आने को कहा था।"

हरगिज़ नहीं! देखो तुम कितने पीली पड़ गयी हो। तुम्हें आराम करना चाहिए, लेटे रहना चाहिए। तुम्हें गोदी में उठाकर अलतीनसाय ले चलूँ?"

आयकीज़ धीरे से मुस्करा दी।

"नहीं, मोटरसाइकिल पर चलेंगे जाओ, मैं तुम्हारा इन्तज़ार करती हूँ "

आलिमजान शीघ्र ही बरामदे में भागता लौट आया।

"बैठो मोटरसाइकिल पर और मुझे खूब कसकर पकड़े रहो। जुरावायेव इतने अच्छे आदमी है, इतने "

और अपनी बात पूरे किये बिना ही कि जिला समिति के सचिव कितने अच्छे आदमी हैं, आलिमजान ने पत्नी को सावधानी से पिछली सीट पर बिठा दिया खुद आगे बैठा और मोटरसाइकिल को सरपट अपने अलतीनसाय ले उड़ा।

"पर बायचीवार का क्या होगा?" वे जब मुख्य मार्ग पर पहुँच रहे थे, आयकीज़ अचानक कह उठी।

"चलो लौटकर उसे गाव में किसी के यहां छोड देते हैं," आलिमजान ने सुझाव दिया, "मुझे कल तो यहां आना ही है, उसे ले जाऊंगा

इस बार मोटरसाइकिल को अपनी तेज़, तूफानी चाल बदलनी पड गयी आलिमजान के चिन्ताशील हाथों के इशारों पर वह धीरे-धीरे, गड्ढों से सावधानीपूर्वक बचकर निकलती आगे बढ रही थी लगता था जैसे वह सडक पर तैरती जा रही है

छब्बीस

कादीरोव ने हथियार डाले

कादीरोव जिला केंद्र से झुंझलाया और खिन्न हुआ लौटा। वह घायल भालू की तरह अहाते के बीचोबीच नाली के पास बन निकुंज में जा छिपा और वहां से उसने पत्नी को खाना व वोदका लाने के लिए आवाज दी। यह आश्रय-स्थल, जहां कादीरोव को आराम करना और दावतें देना पसन्द था, सच पूछिए तो निकुंज नहीं कहा जा सकता था वहां चबूतरे के दो ओर से जमीन में ऊँची बल्लियां गाडी हुई थीं, उन पर फट्टे रखे हुए थे, और लकडी के इस ढांचे पर चबूतरे के ऊपर दो तरफ से खुला शामियाना बनाती अंगूर की बेलें लिपटी हुई थी।

कादीरोव सुलतानोव की होड कहां कर पाता! उसका अहाता भी उसके अहाते से छोटा था, घर भी मामूली-सा और अहाते में बनी कोठरियां भी घटिया और साधारण थीं। यह सच है कि युद्ध के बाद अध्यक्ष ने अपने ग्राम्य आवास का पुनर्निर्माण किया था पुराना घर तोडकर उसके स्थान पर पक्की ईंटों व स्लेट की छतवाला चार कमरों का मकान बनाया। उसने कोठरियों की मरम्मत की कच्ची दीवार कुछ ऊँची कर ली और निकुंज बना लिया। अभी तक अलतीनसाय में कादीरोव के घर और अहाते से बेहतर घर व अहाता किसी का

20*

के किसान पौधों की संभाल कर रहे थे, उन्होंने काफी पहले साइलो-गर्त खोद लिये थे, जब कि कादीरोव के कान पर अभी जू तक नहीं रेंगी थी। जुराबायेव ने आज उसे खूब खरी-खरी सुनाई थी। उन्होंने कादीरोव को उपदेश नहीं दिये थे, केवल प्रश्न पूछे थे, पर प्रश्नों में असन्तोष और सख्त झिड़की का पुट था। अछूती धरती में देर में बोयी जानेवाली फसलें किस हालत में है? उनकी संभाल कौन कर रहा है? चारा सुरक्षित रखने के लिए साइलो-गर्त तैयार हैं या नहीं?

कादीरोव जवाब में कुछ अस्पष्ट बुदबुदाया था और केवल अब *अकेला रहने पर उसकी पुरानी युयुत्सु आत्मनिर्भरता वापस लौट* आयी थी।

"क्या जरूरत पड़ी है आपको इस सबकी, कामरेड जुराबायेव जैसे मेरे जिम्मे उसके अलावा और काम है ही नहीं! जो है सो है मैं इन खेतों में नहीं झांकता। और मुझे वहां करना क्या है? सरकार हमसे कपास चाहती है, और मैं कपास के लिए ही मरता-खपता हूँ। उमूरजाकोवा को अच्छा लगता है, तो वह अछूती धरती पर दिन-रात रहा करे। मेरे लिए तो यह अछूती धरती आज की किरकिरी बनी हुई है! मैं नहीं चाहता, कामरेड सचिव जिला समिति कि *अखबारों में मुझ पर उमूरजाकोवा की तरह कीचड़ उछाली जाये* नहीं चाहता! आप हमेशा मई दिवसवालों की मिसाल देते रहते हैं वे मुझ पर हुक्म नहीं चला सकते, मैं अभी तक किसी से कुछ सीखने नहीं गया हूँ। मैं खुद ही दूसरों को सिखा सकता हूँ। आपको मेरा-फार्म-प्रबंधक पसंद नहीं है? कुछ लोगों के लिए वह बुरा हो सकता है, पर मुझे उससे कोई शिकायत नहीं है। खुदा करे ऐसा मेहनती सहायक सभी को मिल जाये! यह ठीक है कि उसने साइलो-गर्तों का ध्यान नहीं रखा। उसे उनकी कुछ भी जानकारी नहीं है। फिर हमें साइलो-गर्तों की जरूरत ही क्या पड़ी है? रोजी-पहलवान ने सामूहिक फार्म की गायों को गुब्बारा खाने की आदत डाल दी है कुछ नहीं होता मजे में खाती है कोई शिकायत नहीं करती। सभी को ऐसा ही करना चाहिए जो है, उसी पर सन्तोष करना। और आप मुझे एक साथ तीन गाड़ियों में जोत देना चाहते है! हर मीटिंग में मीन-मेख निकालते रहते है कादीरोव ऐसा है कादीरोव वैसा

और अचानक उसका मुह उतर गया और वह चिल्लाया "निठल्ले! कामचोर! फिक्र फसल की करनी चाहिए और ये बकवास कर रहे है!

"सबसे ज्यादा हल्ला बेक्बूता और करीम ने मचाया, गफूर ने ठकुरसुहाती कहते बताया और बड़ी मुगी के साथ धमकियो व गालियो की अगली बौछार सुनकर बोला "इस मजमे में पोगोदिन अध्यक्ष की तरह जमा हुआ था।"

"पोगोदिन को भी मजा चखाऊगा! खूब भाड पडेगी उसे प्रातीय समिति मे – फिर मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन मे नही टिक पायेगा!

"और अगर नही पडी तो?" गफूर ने द्वेषपूर्वक पूछा।

कादीरोव के कधे भुक गये, उसने खिन्नता से कहा

"तो फिर हमे पडेगी फिर हमारी खैर नही! इस बार मुझ पर जरा भी रहम नही किया जायेगा। जरा डालना वोद्का! अदालत! अदालत, तुम कहा गायब हो गयी? जल्दी से और खाना लाओ!

अदालत ने उन्हे नान, खीरे, टमाटर और हरे प्याज की सलाद क्वरदक* तथा खोया परोस दिये।

"खाओ, गफूर," कादीरोव ने उदासी से कहा। खाना बिलकुल वोद्का के माफिक है और वोद्का – मूड के माफिक

वे कुछ समय तक चुप बैठे पीते रहे। पूरा नशा चढ जाने पर कादीरोव अपना रोना रोने लगा

"देख लो, गफूर, इसे ही कहते है शुक्रगुजारी। मुझे निकाल फेकना चाहते है क्यो? उमूरजाकोवा के सूब भूठे किस्से सुन लिये अब कादीरोव उनके काम का नही रहा!"

"हमारे लोग है ही ऐसे, अध्यक्ष!" गफूर ने एक ठण्डी सास ली। "जो उन्हे ज्यादा सब्ज बाग दिखाता है, उसी के पीछे हो लेते है

"सच है। सच है, गफूर! उनके दिमाग खराब कर दिये उसने! क्या मैं उन्हें सब्ज बाग नही दिखला सकता था? दिखला सकता था पर मेरी आत्मा गवाही नही देती! मै स्वप्नदृष्टा नही व्यावहारिक हूँ। व्यावहारिक! मैं हर बात को सजीदगी से परखता हूँ!" उसे हिचकी आयी। "और वे मुझे मुझे – घूरे पर डाल देना चाहते है!

---

* क्वरदक – तेल मे भुना हुआ गोश्त।

ओ दिन होगा जब कहोगे अध्यक्ष! होश, मुरादें मत हैं वे तुम्हें अकेला नहीं छोड़ते।

न हो न सहूर! है भी तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होने दूंगा। हा हा! गांधीवादवादा तुम्हें कहीं अच्छा नहीं सुनता पर मेरा तो यह होश है। और धनीराम भी होश है! और सहूर तुम भी! आओ मुंह तर लगा लूं सहूर!

अहाते में अंधेरा छा चुका था। मुंडेरों के ऊपर लटका बिजली का बल्ब जला दिया गया। इसका प्रकाश गम मक्खियों कर पूरे ला रहे अंगूरों व गुच्छों पर अठखेलियाँ करने लगा। सिर के ऊपर पत्तियाँ मन्द-मन्द सरसरा रही थीं। चन्द्रमा मन्द-मन्द चमकता बढ़ रहा था मानो ग्रह-नक्षत्रों को डांट रहा हो। पर निकुंज में मदमस्त आवाजें देर तक गूंजती रहीं उनमें से एक में कभी पुरजोर गुस्सा तो कभी गूढ़ पर रहम भलक रहा था जब कि दूसरी में-चापलूसी और दुर्भावना।

देर रात गये काशीगोत्र लड़खड़ाता हुआ मेहमान को फाटक तक छोड़ आया और घर में गये बिना घिसटता हुआ नाली के किनारे बिछी खाट के पास पहुंचा। वह बिना कपड़े उतारे उसपर ढेर हो गया, पर नशे की थकान के बावजूद सो नहीं पाया। उसकी धुंधली चेतना में विचार रह-रहकर कौंध रहे थे। एक विचार दूसरे विचारों से ज्यादा बार कौंध रहा था और ज्यादा सता रहा था।

किसानों ने तुमसे मुंह क्यों फेर लिया, काशीगोत्र? क्या वे मिठाई पर टूट पड़नेवाली मक्खियों की तरह थोथे वायदों के मुरीद हैं? कहीं उनकी नज़रें तुमसे तेज, चिन्तन तुमसे गहन और इस बात में विश्वास कि जो सोचा है, वह जरूर होगा तुमसे ज्यादा तो नहीं है? ऐ, अध्यक्ष, होश में आओ, उन लोगों से अलग मत होओ, जिन्होंने तुम्हारे साथ मिलकर सामूहिक फार्म की स्थापना की थी!

पर अब पीछे हटने का मौका निकल चुका है! उसने किसानों के सामने पश्चात्ताप किया, तो उससे कहा जायेगा "सारा काम हो जाने पर तुम कैसे आ टपके? अछूती धरती की जोताई हमने की, कपास हम ने पैदा की, तुम हमारे काम में बस टांग ही अड़ाते रहे, और अब उसी हलवे में अपना हिस्सा बटाने भागे आये हो,

न खुद ही फैसले नहीं दे रहे थे। कुछ भी हो, पर उन्हें अध्यक्ष
कुरसी पर से हटा दिया जायेगा। देर कर दी, अध्यक्ष! बहुत
कर दी!"

सुबह जब कादीरोव की नीन्द खुली, तो वह मलेरिया के बाद
ा थका-हारा और कमज़ोर था। उसका सिर फटा जा रहा था,
ो उसे शिकंजे में कसा जकड़ा जा रहा हो। न कुछ सोचने की
छा हो रही थी, न कुछ करने की। वह कराहता हुआ खाट से
ा और उसने नाली के पानी से मुँह धोकर, कमर सीधी कई बार
और आवाज़ दी

"अदालत! अदालत!"

पत्नी आखिर दरवाज़े में दिखाई दी। कादीरोव पागलों की तरह
ी घूरने लगा। वह मामूली-सा पुराना कुर्ता, बदरंग काली जॉकेट
ने हुई थी और उसके सिर पर सफेद रूमाल लिपटा हुआ था।
सके कंधे पर कुदाल रखा था।

"यह क्या मज़ाक लगा रखा है! खुमार उतारने को ज़रा थोड़ी
द्का लाओ।"

अदालत चुपचाप चली गयी और शीघ्र ही हाथ में वोदका का
लास लिये बाहर निकल आयी। कादीरोव ने उसे एक घूंट में पी
ला, होंठ पोंछे और कुदाल की ओर इशारा कर अनिष्टकारी
र में पूछा

"तुम कहाँ चली?"

"खेत "

"खे ऽऽ त?" कादीरोव ने ठहाका लगाया। "ओहो, इतनी
मानदार हो गयी! लेकिन पति से इजाज़त मांगी?"

"घर बैठे रहने शर्म आती है " अदालत ने नज़रें भुकाकर
वाब दिया। "सब काम करते हैं, और मैं "

"तुम्हारी जगह घर में है! कुदाल जहां से उठाया वहीं रख दो!"

अदालत ने सिर उठाया।

"अगर आप मुझे नहीं जाने देंगे मैं ग्राम-सोवियत में जाऊंगी!"

कादीरोव की मुट्ठियां बंध गयीं, चेहरा तमतमा उठा, माथे पर
मोटे-मोटे बल पड़ गये।

"जानता हूँ, कौन तुम्हें गलत रास्ते पर ले जा रहा है! वही उमूर-जाकोवा! ठहरो जरा!" उसने पत्नी की नाक के आगे मुक्का हिलाया। "तुम्हें ग्राम सोवियत और सेन का भी रास्ता भुलवा दूंगा!"

अदालत हड़बड़ाकर पीछे हटी और कांपती आवाज़ में चिल्लायी

"आप आप मुझे धमकी मत दीजिये! आप सामूहिक फार्म के अध्यक्ष हैं! आपको शर्म आनी चाहिए!"

कादीरोव ने निढाल होकर धम्म से खाट पर बैठ माथा पकड़ लिया क्या जमाना आ गया – अपनी बीवी ही बगावत कर बैठी!

"वोदका लाओ!" उसने आदेश दिया।

"नजाकतखा पिलाती रहे आपको वोदका, मेरा खेत जाने का वक्त हो चुका है!"

अदालत झटके से मुड़ी और पलटकर देखने से डरती सीधे खेत में खुलनेवाले पिछले फाटक की ओर चल दी। कादीरोव ने उसे नहीं रोका। इन दो दिनों में जो कुछ हुआ, उससे वह पूर्णतया किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था।

अदालत तेज़ी से चली जा रही थी, उसके कंधे पर रखा कुदाल हिल रहा था। वह पति से डरती थी। उसके आदेशात्मक स्वर में हमेशा उपेक्षा और इस बात का पूरा विश्वास झलकता था कि उसका हर शब्द अदालत के लिए कानून है। जीवन अपमानजनक और कष्टकर हो गया था! विवाह से पूर्व अदालत हसमुख, काम-काज में फुर्तीली और अवकाश के क्षणों में खुशमिजाज युवती थी, पर कादीरोव के घर में पहुंचकर वह बिन पानी के फूल की तरह मुरझा गयी थी। वह मन-ही-मन पहले ही की तरह सन्तोषजनक और ऊपर से समाप्त नजर आनेवाली, किन्तु उबाऊ जिन्दगी का विरोध करती रही थी, जिससे किसी को कोई लाभ नहीं हो रहा था। तिस पर नजाकतखा और आ गयी अदालत ने पति को, जो जवान और चुलबुली स्त्रियों से अक्सर मिलता रहता था, शर्मिन्दा करने की कई बार कोशिश की थी, किन्तु वह टाल जाता था "अफ़वाहें हैं, बेगम!" यह अफ़वाहें कैसे हो सकती थी, जब एक बार पति ने सुलतानोव, अलीहुन और नजाकतखा को अपने घर बुलाकर अदालत की आंखों के सामने उस बेशर्म को लुभाता रहा और वह इठलाती रही, खिलखिलाकर हँसती

रही नहीं, अदालत का जीवन सुखी नहीं था। उसे लोगों से दूर-दूर रहना पड़ता था। सार्वजनिक कार्यों और सामूहिक श्रम से जबर्दस्ती का अलगाव अदालत को सबसे ज्यादा सालता था। कल फाटक के पास उसकी मुलाकात वृद्ध हलीम-बाबा से हुई थी। वह उनके पास ही में रहते थे, पर उसे उनके घर गये हुए अरसा हो चुका था और वृद्ध ने उसे इसी का उलाहना देते हुए अपना मेहमान बनने की दिली दावत दी थी।

"अन्दर आओ, पड़ोसिन! तुम्हारी अछूती धरती के खरबूजों से खातिरदारी करूंगा!"

"कभी आऊंगी," अदालत ने टालमटूल की। हलीम-बाबा ने सिर हिलाया।

"लोगों से कतराना अच्छी बात नहीं है, अदालत। लोगों के बिना वैसा ही लगता है, जैसे सूरज के बिना। तुम अभी जवान हो पर देखो, कैसी हो गयी हो। आखिर क्यों? क्योंकि हर वक्त अकेली रहती हो।"

"ऊब जाती हूँ, दुखी रहती हूँ हलीम-बाबा!" अदालत ने अप्रत्याशित रूप से स्वीकार किया।

"ऊब बेकार बैठे रहने से होती है।"

"सारी गृहस्थी मेरे जिम्मे है"

"तुम सिर्फ अपने मियां के लिए पचती रहती हो जरा अपने सामूहिक फार्म के लिए पचो – तुम्हारी ऊब गायब हो जायेगी। मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ, पर घर नहीं बैठता। मेहनत करके अपने को जवान महसूस करता हूँ, पड़ोसिन! तुम भी कुदाल उठाओ और खेत में लोगों के पास जाओ!"

हलीम-बाबा के शब्द अदालत के दिल में घर कर गये। शाम को जब गफूर उनके यहां आया, तो अदालत सोचने लगी पहले उनका घर मेहमानों से कैसे भरा रहता था, सामूहिक किसान बेतकल्लुफी से अपने अध्यक्ष के यहां आते रहते थे, जब कि अब इज्जतदार लोगों में से केवल सुलतानोव और अलीकुल ही आते हैं? उसे अब खातिरदारी या तो भूखे भेड़िये गफूर की करनी पड़ती है या मोटे गेंडे-पहलवान की, जब कि दूसरे किसानों से उसकी मुलाकात केवल

रास्ते से जल्दी से जल्दी उनके पास से गुजर जाने की कोशिश करते वक्त ही होती है। नहीं, बहुत जी भी वह इस तरह सिर नीचा किये!

इस प्रकार शान्त व दब्बू अदालत, जो पति के डाँटने पर केवल रोती रहती थी और घर के काम-काज में खुद को तसल्ली दिलाती रहती थी, अचानक कादीरोव के साथ गुस्ताखी कर बैठी और अपने सारे विवाहित जीवन में पहली बार अपने मन की कर बैठी। आयकीज का इसमें बिलकुल भी हाथ नहीं था। किन्तु कादीरोव अकेला रह जाने पर गुस्से में, जो कुछ हुआ उसके बारे में सोचता हुआ, सारी बातों के लिए उस चपल और सारे सामूहिक फार्म में हलचल मचा डालनेवाली आयकीज को ही दोषी ठहराता रहा। वह किसी तरह ठोकर खा जाये, इसके लिए वह कैसी भी कीमत चुकाने को तैयार था। तथापि वह महसूस कर रहा था कि मुसीबत आयकीज पर नहीं, उसी पर आनेवाली है। युसुफी का लेख – किसानों की कल की मीटिंग और अदालत के आज के विद्रोह की तुलना में कुछ भी नहीं था। प्रांतीय समिति में किसानों की आवाज ध्यानपूर्वक सुनी जायेगी, उमूरजाकोवा का समर्थन किया जायेगा – और चलिये, जवाब दीजिये, आदरणीय अध्यक्ष!

कादीरोव घर में गया और वोदका ढूँढकर फिर कल शाम की तरह निकुंज में पहुंच गया।

उसने उस दिन से बीमारी का बहाना बनाकर काम पर जाना बंद कर दिया। उसे ग्राम सोवियत की बैठक में बुलाया गया, जहाँ अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की गति पर विचार-विमर्श किया जा रहा था, पर वह नहीं गया। पत्नी के साथ कादीरोव बात नहीं करता, सुबह से नशा करने लगता। अलीकुल ने उसे पूर्ववत् गर्व से रहने, काम करते रहने की सलाह दी। उसने कहा भेड़ियों के बीच वैसे ही घूमते रहो, जैसे कुछ हुआ ही न हो, बस खुद उनके मुँह में मत घुसो। अलीकुल को उसने जवाब दिया

"बहुत तसल्ली दिला दी तुम लोगों ने मुझे! तसल्ली दिलानेवाली ही चीज है। यह!" और उसने नाखून से बोतल को ठकठका

सत्ताईस

शिकार

कुछ दिन बाद एक शाम को कादीरोव को सुलतानोव ने टेली-फोन किया। उसकी आवाज़ प्रफुल्ल और निश्चिन्त थी।

"बडे बेवक्त बीमार पड गये, अध्यक्ष! चलो चलो मेरा माथा मत खपाओ, मुझे मालूम है, तुम्हे कौन-सा रोग लगा है! बडी जल्दी हिम्मत खो बैठे, प्यारे। मैं कल सुबह तुम्हारे यहाँ आ धमकूगा। नही नही, किसी काम से नही। आदमी कोई काम के भरोसे थोडे ही जीता है। बन्दूके उठाकर स्तेपी मे पहुच जायेगे! हिरनो के क्या हाल है वहा, अभी मारे के मारे तो नही मारे गये न? मेरे हिस्से के बचे है? तब तो बहुत ही अच्छी बात है। ज़रा शिकार करेगे, प्यारे अध्यक्ष। इससे मूड बहुत जल्दी सुधर जाता है। सुबह मेरा इन्तज़ार करना।

कादीरोव ज़िला कार्यकारिणी समिति के सचिव के साथ शिकार पर पहली बार नही जा रहा था। वे तीतरो का शिकार करने और मछलियां पकडने जाते रहे थे। सुलतानोव से बात करने के बाद उसने रोज़ि-पहलवान को बुलवाया और उसे आगामी शिकार की तैयारी करने के लिए स्तेपी मे शूर-कुल – नमकीन पानी की झील पर भेज दिया।

सुलतानोव सामूहिक फार्मो मे जुरावायेव से कम आया करता था, और वह और अन्य लोग भी उसके हर दौरे को एक महत्वपूर्ण घटना मानते थे

यदि जुरावायेव अलतीनसाय आते किसान उन्हे तभी देख पाते, जब वह उनके बीच पहुच जाते। वह प्राय अचानक आते, मोटरगाडी से वही उतरते, जहा कोई चीज उनका ध्यान आकृष्ट करती, खेत देखते, सामूहिक किसानो से बातचीत करते। यदि उन्हे कादीरोव से, आलिमजान या आयकीज़ से मिलना होता, वह ग्राम सोवियत और सामूहिक फार्म के कार्यालय जाने की जल्दी नही करते, पर हमेशा ऐसा ही होता कि वह उन सबसे जरूर मिल लेते, जिनसे मिलना

चाहते खेत में या कस्बे में, अपनी धरती पर या मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में। अनजाने लोगों को ये मुलाकातें आकस्मिक नजर आतीं, लगता जैसे वह सामूहिक फार्म में बिना किसी निश्चित लक्ष्य के आते हैं। लेकिन उनका हमेशा कोई न कोई लक्ष्य होता था, और ये सारी "आकस्मिक" बातचीतें और मुलाकातें जुरवायेव को उनके पूर्वनिश्चित कार्य पूरा करने में सहायक सिद्ध होती थीं।

कभी-कभी ऐसा भी होता कि कादीरोव या आनिसजान उनके आने की खबर पाकर खुद उनसे मिलने निकल पड़ते, तब वह नाराज होकर भौंहें सिकोड़े अनुरोध करते

"आप लोग अपना काम करिये, मुझे मार्गदर्शक नहीं चाहिए।"

उन्हें सबसे अधिक भय इसका लगता कि सामूहिक फार्म के संचालक जिसे कहना चाहिए, उन्हें केवल अपना "सकारात्मक पक्ष" ही दिखाना शुरू कर देंगे या फिर खुद हठी सत्याग्रही की भूमिका निभाते हुए उन्हें साधारण किसानों के जीवन की जानकारी पाने से रोकने लगेंगे।

जुरवायेव की तुलना में सुल्तानोव सामूहिक फार्म के अपने दौरों का आयोजन शानदार ढंग से नहीं, तो कम-से-कम बड़े ठोस ढंग से करता था। वह अपने आगमन की सूचना काफी पहले दे दिया करता था। सामूहिक फार्म में पहुंचकर वह केवल वही काम करता या उन्हीं बातों पर ध्यान देता, जो कि उसके उस दौरे के ठोस लक्ष्य में शामिल होते थे। यदि ग्राम सोवियत के काम की जांच करनी होती, तो वह केवल ग्राम सोवियत में ही जाता। उसे कादीरोव से मिलना होता, तो "मामूली" मामलों पर शक्ति खर्च किये बिना, "व्यर्थ" की बातों से कतराता, जो कभी-कभी खुद ही ध्यान आकर्षित कर लेतीं, और केवल कादीरोव से ही मिलता। किसी निश्चित परिस्थिति में ही सामूहिक फार्मों में आते रहने के कारण वह सामूहिक फार्म के जीवन के बारे में कभी पूरी जानकारी नहीं पा सका।

इस बार उसके कार्यक्रम में केवल शिकार और कादीरोव के साथ बातचीत ही शामिल थे। रास्ते में खेत की तरफ जा रहे किसानों के मिलने पर उसे मोटर रोकने और उनके साथ कम-से-कम कुछ बातचीत करने का खयाल भी नहीं आया। जिला कार्यकारिणी समिति

की गाडी बिना कहीं रुके, धूल उडाती सीधी सामूहिक फार्म के अध्यक्ष के घर के सामने रुकी। कादीरोव को गाय बिठाकर सुलतानोव ने ड्राइवर को रिजिनकूम की तरफ चलने को कहा।

उस सडक से थोडी-सी दूरी पर नयी बस्ती स्थित थी। सुलतानोव ने बडी बेफिक्री से दिलचस्पी दिखाई

"नयी बस्ती तैयार हो गयी ? "

"सुना है, उमूरज़ाकोवा लोगों को नये घरों में बसाने की जल्दी कर रही है।"

सुलतानोव हंस पडा।

"जल्दी तब करनी चाहिए, जब हिरन तुमसे दूर भाग रहा हो! उमूरज़ाकोवा अपनी गरदन फंसा लेगी!"

कादीरोव चुप रहा। सारे रास्ते अपना मुह न खोलनेवाले ड्राइवर के पास बैठे सुलतानोव ने मुड़कर देखा। उसके दात उत्साहवर्धक मुस्कान के साथ मोतियों की लडी जैसे चमक उठे।

"मैं देखता हूँ, तुम बिलकुल ढीले पड गये हो! सिर ऊचा रखो प्यारे! अभी तक हमने मात नहीं खायी है। क्या बहुत से लोग पुनर्वास के लिए तैयार है?"

"हमारे जमाने में बेवकूफों की कोई कमी है?"

"क्या नाम है उसका शायद मुरातअली, उसका क्या खयाल है? यूसुफी ने उसके बारे में अपने लेख में लिखा था।"

"मुरातअली की बात पत्थर की लकीर है।"

"शाबाश, मुरातअली! उसे क्या कुत्ते ने काटा है, जो स्तेपी में रहने लपके? विश्वास रखो, प्यारे, जो जोश में आकर जा बसेंगे, वे हर हालत में बाद में अपने-अपने पुराने गावों को लौट जायेंगे। मैं हमारे लोगों को जानता हूँ, उनकी जिन्दगी के पुराने ढर्रे को बदलना इतना आसान नहीं है। और अगर मुरातअली जैसों ने अपना घर नहीं छोडा, अगर एक भी किसान नयी बस्ती से भागा, तो हमारे हाथ में तुरुप का जोरदार पत्ता आ जायेगा!"

मोटर हचकोले खाती, धूल उडाती स्तेपी के रास्ते पर भागी जा रही थी। ठोस हुई मिट्टी कहीं-कहीं तडकी हुई थी, कहीं-कहीं सिकुडी हुई थी। रास्ते के दोनों ओर अनजुती अछूती धरती की स्याह

आगन्तुक घास पर बिछे बड़े-से लाल कालीन की तरफ चल दिये। कालीन के बीचोंबीच सफेद दस्तरख्वान चमक रहा था और उसके दोनों ओर मेहमानों की बाट जोह रही फूलदार दरियाँ और गुदगुदे तकिये लुभाते हुए लगे हुए थे। कुछ दूरी पर अलाव में, जिस पर रखे देग में सूप पक रहा था, धुआं चक्कर खाता ऊपर उठ रहा था।

सुलतानोव ने हाथ-मुंह धोये। रोज़ी-पहलवान ने सुराही से उसके हाथों पर पानी डाला।

"बहुत बढ़िया जगह चुनी है तुमने!" सुलतानोव ने उसकी तारीफ की। "और मौसम भी बुरा नहीं रहा है, हा-हा! "

वहां वास्तव में बहुत ही अच्छा लग रहा था पास ही सरकंडों के छीदे झुरमुटों में धूप में झील झिलमिलाती नज़र आ रही थी। आंखें चौंधिया दे रही झिलमिलाहट के कारण झील के रंग को पहचान पाना मुश्किल था। और चारों ओर, जहां भी नज़र डालिये – रेत ही रेत और सूखी घास नज़र आती थी। रेत के सागर के बीच जहां-तहां ऊंट के कूबड़-से रेत के लहरदार टीले उठे हुए थे, सक्साऊल की झाड़ियां थीं, बहुत कम हरे, लगभग पूर्णतया पत्रहीन तुरंग – केवल जलावन के काम आनेवाले वृक्ष चमक रहे थे, कटीले यताक* उगे हुए थे। और यह सब धूप के सुनहले नावा से ढका हुआ था।

मरुस्थल का भूदृश्य हालांकि एकरस होता है, पर अपने उजाड़ व निर्जन विस्तार के कारण आकर्षक भी लगता है। मरुस्थल का अर्थ है – निस्सीम विस्तार और सूरज।

शिकार पर जाने से पहले सुलतानोव व कादीरोव ने छककर नाश्ता किया। रोज़ी-पहलवान ने भाप में पकाये हुए भेड़ के मांस, चरबीदार सीक-कबाबों और हासिप-शोरबा – भेड़ की पतली-पतली आंतों में गोश्त व चावल भरकर बनायी सूप से उनकी खातिरदारी की।

"हो गया," सुलतानोव ने पेट पर हाथ फेरते हुए सन्तोष प्रकट किया। "पेट भरते ही, सारी फ़िक्रें काफ़ूर हो गयीं! बहुत अच्छा!" वह रोज़ी-पहलवान की ओर मुड़ा। "दोपहर के खाने में हमारे पास हिरन का गोश्त होने की उम्मीद है ना!"

---

* यताक – एक प्रकार की झाड़ी। –

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

'आराम भी कर लेंगे। मेरी बन्दूक कहाँ है? होशियार, हिरनो!'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गाड़ी तेज़ से भुण्ड का फ़ासला काफ़ी तेज़ी से उनकी तरफ़ बढ़ गयी थी। हिरन अचानक दायीं ओर मुड़ गये। वे अपनी लम्बी-लम्बी टांगों पर इसी तरह भागते अक्सर दिशा बदलते हवा से बातें कर रहे थे। गाड़ी भी हचकोले खाती टेढ़ी-मेढ़ी भाग रही थी वह मोड़ों पर पिछड़ रही थी और शिकारी भी इधर से उधर भटक रहे थे। आखिर वे गोली की मार से भुण्ड के पास पहुंच गये, रोज़ी-पहलवान उत्तेजित स्वर से चिल्लाया

'गोली चलाइये! कामरेड सुलतानोव! गोली चलाइये! वे वहाँ हैं!'

"होशियार, हिरनो!" सुलतानोव ने फिर युयुत्सु स्वर में चिल्लाकर दुनाली की नाल बाहर निकाल लगातार दो गोलियाँ दागीं, दुबारा निशाना साधा, फिर गोली चलायी, पर हिरनों ने ऐसे भागना जारी [illegible], मानो कुछ हुआ ही न हो। अब वे ज़रा शान्ति से भाग रहे मानो जानते हों कि शिकारी की आँखें उसे धोखा दे रही हैं,

और बन्दूक गोले बाग रही है, जैसे उसे जूडी चढ़ आयी हो। हिरन शीघ्र गायब हो गये, लगा जैसे वे रेगिस्तान की तपती हवा मे विलीन हो गये। कोई दो घटा रेगिस्तान में भटकने के बाद शिकारियो को एक हिरनी बच्चे के साथ नजर आयी। फिर गोलिया चली, पर हिरन पीछा करनेवालो को चिढाते हुए-से गाडी के सामने से छलागे लगाकर सूखी नदी की शाखा के गहरे साये में गायब हो गये।

थके-हारे और झल्लाये हुए मुलतानोव ने ड्राइवर को रुकने का हुक्म दिया, गाडी से उतरा और अपने सहयात्रियो पर गुस्से भरी नजर डाल, मानो निशाना चूक जाने के लिए दोषी वे हो चुपकी साधे घास पर लेट गया, टोपी चेहरे पर खीच ली और रेगिस्तान को जोरदार खर्राटो से गुजाता तत्क्षण सो गया।

कादीरोव और रोजी-पहलवान स्वय भी दुखी थे कि वे अपने सम्मानित अतिथि को खुश नही कर पाये। उन्होने सलाह करके फैसला किया कि कादीरोव निद्रामग्न मुलतानोव के पास रहेगा, और अधिक अनुभवी शिकारी होने के नाते रोजी-पहलवान उन सब की 'गलती' सुधारने जायेगा।

"बिना शिकार के मत लौटना" कादीरोव ने खिन्न स्वर मे धमकी दी। "सिर उडा दूगा!"

मेहनती रोजी-पहलवान ने अपने अध्यक्ष को निराश नही किया। कोई आधा घटा बाद ही वह गाडी मे तीन बडे हिरनो की लोथे घसीटकर निकाल रहा था। उनकी धूसर-पीली खालो में अभी तक सिहरन हो रही थी, मारे गये हिरनो मे से एक की आख अधखुली थी उसमे कष्टप्रद भय जड हो गया था

हर्षित कादीरोव ने मुलतानोव को जगा दिया। वह आखे मलकर विस्मय से शानदार शिकार को घूरने लगा।

सबसे बडे हिरन की ओर इशारा करते हुए खुशामदी भरे स्वर मे कहा

"मुबारक हो, कामरेड मुलतानोव। इस हिरन को आपने मारा है, मैं तो सिर्फ इसे उठाकर लाया हूँ। और बाकी को मैंने मारा है।"

मुलतानोव की आत्मा उसे कचोटने लगी।

"तुम्हे जरूर गलतफहमी हुई है। मेरी गोलिया तो एक तरह

पर या कभी-कभी बिना आवाज़ दिये ही हाज़िर होनेवाली नजाकतमा भरा करती थी। सुबह अध्यक्ष को कड़क हरी चाय भी वही पिलाती थी। उसे कादीरोव की टहल बजाना कागज़ातों में माथा खपाने से कहीं ज़्यादा पसन्द था। वह जब उसके कमरे में घुसती, उसके चेहरे पर सदा कृतज्ञतापूर्ण व आशाएं जगानेवाली मुस्कान खेलती रहती थी। यह सच है कि यदि कादीरोव भोंडे ढंग से प्यार जताते हुए उसके गले में हाथ डालता या बेहूदे ढंग से उसके सिर पर हाथ फेरता उसे पीछे हट जाने, उसके पसीने से तर भारी हाथ को झटक देने की इच्छा होने लगती, पर वह पीछे नहीं हटती, बल्कि उसे बढ़ावा भी देती। केवल इसीलिए नहीं कि उसका पिता उसे कादीरोव के साथ विनम्र और आज्ञाकारी रहने की सलाह देता रहता था। वह स्वयं भी बिना किसी प्रशंसक के नहीं रह सकती थी और कादीरोव उसके स्थानीय उपासकों में सबसे योग्य लगता था आखिर सामूहिक फ़ार्म का मालिक था, उसका प्रत्यक्ष अधिकारी था, और अधिकारियों का प्यार और उनकी प्रशंसा पाना विशेषतः प्रिय और सुखद लगता है। नज़ाकतखा कादीरोव को हर प्रकार से खुश रखने का प्रयास करती उसके बिलकुल भी पिता-सुलभ न लगनेवाले प्यार का सहर्ष प्रत्युत्तर देती थी, बड़ी चतुराई से उसके मूड के अनुरूप अपने को ढाल लेती थी। जब वह उदास होता, कुशल व बेधड़क बातों से उसका मन बहलाती। जब वह खिन्न हुआ किसी बात का रोना रोता, उदास व सहानुभूतिपूर्ण होने का ढोंग रचती, यह दिखावा करती कि वह बस रोने ही वाली है। जब वह उसे अपने विचारों से अवगत कराता हैरानी से ठण्डी सासें लेती। फिर भी कादीरोव के उसका ध्यान रखने में उसे केवल निस्स्वार्थ सन्तोष ही नहीं प्राप्त होता था। उसके मिजाज का लाभ उठाकर वह अपने लिए हर तरह की रिआयतें और लाभ प्राप्त कर लेती। गाव की खबरों व घटनाओं को – वे प्रायः अफवाहें और मनगढ़न्त ही होती थीं – वह ऐसे ही रंग में पेश करती, जिससे उसे और अलीकुल को फायदा हो।

शिकार के अगले दिन कादीरोव आखिर दोपहर के करीब कार्यालय में पधारा। नज़ाकतखा ने खुशी की चिल्लाहट के साथ उसका स्वागत किया

आप ठीक हो गये, मुबारक हो!" और चहक-चहककर बड़े करती निराश हुई शिकायत करने लगी "आपके बिना यहां कितनी वीरानी होती थी!"

कादीरोव ने किसी कारण कमर पर हाथ रखकर मुह बनाया, जैसे उसे पीड़ा हो रही हो, और उलाहना देता बोला

"तुम पर बिलकुल भरोसा नहीं रहा, सुन्दरी। बीमार से मिलने आने का वक्त ही नहीं निकाल सकी!"

"शर्म आती थी" नजाकतखा ने धीरे से कहा और शर्माते हुए आगे बोली "डर लगता था आपकी बीवी से डर लगता था।"

"उससे क्या डरना! वह भेड़िया तो है नहीं, जो खा जायेगी। अम्मा के साथ आयी होती उसने तो मुझे नहीं बुलाया।"

"आप सख्त बीमार थे, अध्यक्ष?" नजाकतखा ने सहानुभूतिपूर्वक पूछा।

"दुश्मन को भी नसीब न हो ऐसी बीमारी!" कादीरोव ने कहा और स्टेनो को एक बार फिर यह विश्वास दिलाने के लिए कि उसका रोग अभी गया नहीं है, फिर कमर पकड़ ली। वह कराहता हुआ मेज के पीछे अपने स्थान पर गया।

कुछ ही मिनट बाद नजाकतखा खाली सुराही उठाकर ले गयी और उसे भरकर ले आयी। कादीरोव ने गिलास उसके आगे रख दिया। नजाकतखा ने उसमें पानी भर दिया, जिसे उसने फौरन पी डाला। वह एक गिलास पानी दो घूंटों में पी डालता था।

"आप चाय पियेंगे, अध्यक्ष?"

"चाय? ले आओ चाय! तुम अगर सागर भी देती—तो मैं इस वक्त सागर भी पी डालता!"

"आपको जरूर बुखार होगा" नजाकतखा ने उसके साथ हमदर्दी दिखाई। "आपको बिस्तर से उठना ही नहीं चाहिए था।"

"नहीं, बाला, बीमार पड़ने की बिलकुल फुरसत नहीं है! कादीरोव के बिना तो सामूहिक फार्म बरबाद हुआ जा रहा है!"

कादीरोव बोलता जा रहा था, पर नजाकतखा के चेहरे से नजरें नहीं हटा रहा था। आड़ू जैसे कोमल मखमली कपोलों पर गुलाबी लाली छायी हुई थी, लम्बी बरौनियां झुकी हुई थीं, उनकी छाया

मे काली भौंह मी आखें चमक रही थी। और होठ, चमकीले नम होठ निमंत्रण दे रहे थे

अपने को जी भरके निहारने देने के बाद नज़ाकतखा चली गयी और शीघ्र ही जीदा के फूल सुन्दर प्याली मे चाय और तश्तरी मे मिठाई लिये आ गयी। उसके हाथो से प्याली लेते हुए कादीरोव ने युवती की पुष्ट उगलियो को छू ही लिया। नज़ाकतखा ने सादगी से नज़रे भुका ली और जैसा कि वह हमेशा विनम्र सकोच दिखाने की इच्छा होने पर करती थी, निचला होठ काट लिया।

"शुक्रिया, बेटी," कादीरोव ने उसे धन्यवाद दिया। देखती हो, अध्यक्ष लोगो को पहचानने मे गलती नही करता। मैने जब तुम्हे अपने यहा काम पर रखा, मुझे मालूम था कि तुमसे बेहतर स्टेनो मुझे ढूँढे नही मिलेगी। तुम्हारे अब्बा को तुम्हारी जैसी बेटी होने की खुशी होनी चाहिए।"

"मेरे अब्बा भी आपके उतने ही वफादार है जितनी कि मैं

"जानता हूँ! तुम्हारे अब्बा मेरे सबसे अच्छे दोस्त है। उर्वरता समिति के अध्यक्ष के पद के लिए उनके नाम की सिफारिश करते समय मुझे विश्वास था कि वह मेरे लिए ठोस सहारा होगे। और ऐसा ही हुआ!"

कादीरोव ने दीवार के पास रखे सोफे पर बैठकर नज़ाकतखा का हाथ पकडकर पास बिठा लिया।

"बताओ, मेरी गैरहाज़िरी मे यहा तुम लोग कैसे रहे। तुम्हे किसी ने कुछ बुरा तो नही कहा?"

नज़ाकतखा ने एहतियातन रूमाल निकाल लिया उसके चेहरे पर विनम्रता मिश्रित दुख का भाव झलकने लगा।

"आपके बीमार पडते ही, अध्यक्ष सब के सब बुरी तरह मेरे पीछे पड गये यह ठीक नही है, वह ठीक नही है। जीना मुश्किल हो गया। क्योकि आपके सिवा अभागी लडकी का बचाव और कोई नही कर सकता।"

"बताओ, किसने तुम्हे बुरा कहा?"

"आपके बिना मैं वीराने मे तिनके की तरह हूँ," नज़ाकतखा ने अपना रोना जारी रखा। "कल मेंसरी और करीम मेरे कमरे मे

वैसे ही उँगलियाँ उठाते हैं! शर्म ही नहीं आती, सारी दुनिया के सामने अपने करीम के गले लगी रहती है। मैंने अपनी आँखों से देखा, वैसे प्यार जता रहे थे एक दूसरे से "

"अपनी आँखों से देखा?" कादीरोव में मानो जान पड़ गयी। "अच्छा, बताओ, बताओ।"

और नजाकतखा ने किस्सा सुना दिया

गत सन्ध्या को अलतीनमाय के खुले सिनेमा में नयी फिल्म दिखाई जा रही थी। सिनेमा क्लब के पास स्थित था और चारों ओर से सफेदी की हुई कच्ची दीवारों से घिरा हुआ था। फिर भी वे दीवारें मनमौजी छोकरों को मुफ्त में फिल्म देखने से नहीं रोक पाती थीं वे पेड़ों पर चढ़कर आराम से डालों पर बैठ जाते और परदे से नजरें ही नहीं हटाते।

अलतीनमायवासी सिनेमा देखने अपने-अपने पूरे परिवार के साथ सज-धजकर, हँसीखुशी से जाते थे, मानो किसी के घर मेहमान बनकर जा रहे हों। वृद्ध पोते-पोतियों के साथ जाते, पति पत्नियों के साथ, युवतियाँ – मित्रों व सखियों के साथ। केवल नजाकतखा उस शाम अकेली थी। अलतीनमाय में उसे सभी जानते थे, उसके हँसमुख स्वभाव के लिए उसे प्यार भी करते थे, लेकिन वह एक प्रकार से सबसे अलग रहती थी। जब पिता व्यस्त होता, उसे सिनेमा अकेले ही जाना पड़ता। वह लम्बे-चौड़े, झाड़-बुहारकर साफ किये चौक में से गुजर रही थी, अभिवादन का प्रत्युत्तर दे रही थी, परिचितों से हँसी-मजाक कर रही थी, उसके होठों पर अभ्यासजनित मुस्कान खेल रही थी, पर दिल ऊब रहा था। सिनेमा के ऐन प्रवेश-द्वार के सामने उसे मेंखरी और करीम मिल गये।

वे अपनी निश्चिन्त बातचीत में इतने मग्न हो गये कि उन्होंने उसे देखा ही नहीं। सभी अलतीनमायवासियों की तरह वे भी बढ़िया कपड़े पहने थे करीम क्रीम के रंग का हल्का सूट, सफेद रेशमी कमीज और ठाठदार टाई पहने था, मेंखरी फैशनेबल पम्प जूते, सफेद रेशमी कुरता और नाना प्रकार के फूलों की क्यारियों जैसी रंगबिरंगी बेलबूटेदार टोपी पहने थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था, आँखें सितारों की तरह चमक रही थीं। नजाकतखा मुड़कर उनके पास से निकल अपनी

सीट की ओर बढ़ गयी। पर वह शो के दौरान भी प्रेमी-युगल प
नजर रखे रही। वे पिछली कतार में बैठ गये। नजाकतखा, यह न
न समझ पाते हुए कि वह उनके प्रसन्न चेहरे देखकर क्यों परेश
हो रही है बार-बार मुड़कर उनकी ओर देखती रही। उधर दो
करीम और मेखरी एक दूसरे से पूरी तरह सटे बैठे थे। परदे पर जो
कुछ हो रहा था उसमें खोया करीम मेखरी का बेंच पर रखा हाथ
दबा रहा था। वे शायद एक दूसरे के बारे में बेखबर थे, पर परदे
को एक ही नजर से देख रहे थे उनकी अनुभूतियां एक-सी थीं, एक
ही बात के बारे में सोच रहे थे नजाकतखा के दिल में सहुचित
डाह जाग उठी। काश वह भी अपने प्रियतम के साथ उनके हाथों
की तपिश महसूस करती उसकी सांसें सुनती बैठ पाती काश,
वह भी करीम जैसा जवान सुन्दर होता, उसे उसी तरह प्यार करता
जैसे करीम मेखरी को प्यार करता है!

नजाकतखा पूरी फिल्म देखे बिना ही चली गयी और इन सदर
वह कादीरोव को सारा किस्सा सुनाते हुए उस में ऐसी सनसनी बातें
जोड़ रही थी, जो केवल उसकी डाह की ही उपज हो सकती थीं।
कादीरोव निन्दात्मक ढंग से घुटा हुआ सिर हिलाता रहा, आहें भरता
रहा जबान चटखारता रहा और यह सोचता रहा कि उसे इन तथ्यों
का उपयोग कैसे करना चाहिये।

आपने ऐसी स्टेनो कैसे रख रखी थी!' नजाकतखा ने उलाहना
देते और हैरानी दिखाते हुए कहा। 'इस में कोई शक नहीं है कि
मेखरी सुन्दर है

कादीरोव की भौंहें सिकुड़ गयीं।

अस्तीनसाय में तो मैं बस एक ही सुन्दरी को जानता हूं।"

ओह आप भी क्या, अध्यक्ष!" नजाकतखा ने आपत्ति की।
'मैं कोई सुन्दर हूं! वह मेखरी है – फूल जैसी।"

जहरीला फूल है।

नजाकतखा खुश होकर मुस्करा पड़ी। अब वह मेखरी और करीम
की ... करती हुई केवल आग में घी डाल रही थी।

... भी हालांकि रसिया है पर आकर्षक है।"

... कादीरोव बौखला उठा। 'वाह! सारे ...

सामने बेशर्म लड़की से इश्क लड़ाये! यह तो छिछोरेपन से भी बदतर है। कैसी मिसाल रख रहे है वे नौजवानो के सामने!"

यह मानते हुए कि बातचीत का रुख कामकाजी हो गया है, कादीरोव उठकर अपनी मेज के पास आ गया।

"मैं अलतीनसाय के इन लैला-मजनू की हरकतों के बारे में अरसे से जानता हूँ!" वह धम्म से कुरसी पर बैठ गया। "तुम्हारे सुनाये सच्चे किस्से से इसी बात की पुष्टि होती है कि वे बिलकुल बेशर्म हो गये है। वे सारे गाँव की नाक कटवा सकते है! वह बूढ़ा गला-फाड़ा मचानेवाला मुरातअली क्या करता रहता है? उसे तो गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने में बड़ा मजा आता है " उसने खिन्नता से मोटी-मोटी उँगलियों से मेज पर खटखटाया और बात पूरी की " जब इसकी जरूरत नहीं होती।"

वह रहा मुरातअली!" नज़ाकतखा खिड़की की ओर इशारा करते कह उठी। "वह सड़क पर जा रहा है!'

"शैतान का नाम लिया और सिर पर आ सवार हुआ!" कादीरोव बड़बड़ाया। "सुनो तुम उसे जरा मेरे पास बुला लाओ। और उसके जाने तक अपने कमरे में रहो। मुझे उससे बातें करनी है।'

नज़ाकतखा बाहर चली गयी। शीघ्र ही कादीरोव की मेज के सामने मुरातअली की कृशकाय आकृति प्रकट हो गयी। टोली-नायक खेत से लौट रहा था। उसका पुराना चोगा, कमरबन्द और बूट—सब धूल से मटमैले हो गये थे।

कादीरोव जबरदस्ती विनम्रता से मुस्कराया, बड़े मेहमाननवाज़ी अन्दाज़ से मुरातअली को तशरीफ रखने को कहा और उससे शिकायत की कि वह उसकी बीमारी के दौरान एक बार भी उसके यहाँ नहीं झाँका।

मुरातअली अपनी सफाई देने लगा

तुम खुद ही जानते हो, अध्यक्ष इस वक्त काम जोरों पर है, एक मिनट की भी फुरसत नहीं मिलती।"

कादीरोव ने मुरातअली से पूछा कि क्या वह कहीं दूर जा रहा है। बूढ़े ने बताया

"दुकान जा रहा हूँ, सुना है, बूट आये है। मैंने सोचा खरीद लूँ, पुराने तो तंग है "

"अरे, तुम क्या अंधे हो गये हो?" कादीरोव भड़क उठा। "सारा गाँव हमारे लैला-मजनू पर हँसता है! सबके मुँह से बस यही सुनते हैं मेगरी करीम के गले मिली रहती है करीम परछाई की तरह मेगरी के पीछे लगा रहता है! हर जगह साथ रहते हैं क्लब में, सिनेमा में, नाच में।"

लड़कों और लड़कियों को सिनेमा की मनाही नहीं है मुराद-अली अड़ा रहा, हालांकि वह खुद बेटी और करीम पर अपना गुस्सा उतारने को तैयार था। "अब वह जमाना नहीं रहा।

'यानी इश्क लड़ाने की भी इजाजत है?' कादीरोव ने त्योरी सिकोड़ी। "नहीं, प्यारे, दुनिया से मुँह नहीं मोड़ा जाता। मेगरी और करीम मर्यादा का उल्लंघन कर रहे हैं। क्या तुम सोचते हो कि वे फिल्म देखने सिनेमा जाते हैं? बस वहाँ अंधेरे में एक दूसरे का आलिंगन कर सकते हैं!"

'किसने देखा?'

'सारे गाँव की जबान पर यही बात है! और तुम जानते ही हो, बिना आग के धुआँ नहीं उठता। जब मेगरी तुम्हारे घर में नाती लेकर आयेगी, तब देखेंगे तुम कैसे रोते हो।'

मुरादअली उठा और उसने अपने काँपते हाथ मेज पर टिका दिये।

"मेरी बेटी के बारे में अफवाहें मत फैलाओ, अध्यक्ष! मेगरी अपने बाप का नाम बदनाम नहीं करायेगी। और करीम "

"करीम!" कादीरोव कुर्सी पर पीछे खिसका और उसका थुलथुल बदन ठहाके से हिल उठा। "अरे, यह दुधमुँहा तो कोई भी पाप करने में नहीं हिचके। वह तो मुझे भी हूँ वह तो तुम्हें सारे चौराहों पर गालियाँ देता फिरता है। मैंने सुना है, तुम उसकी हाँ में हाँ मिलाने लगे हो, पर वह तुम्हें नहीं बख्शता! वही तो मेगरी को पुश्तैनी घर छोड़कर नये गाँव में बसने के लिए फुसला रहा है! वही करीम तो सारे गाँव में गाता-फिरता है कि मेगरी का बाप जाहिल है पिछड़ा हुआ है और पुरखों की हड्डियों पर वैसे ही जान देता है, जैसे कंजूस सोने पर। तुम उनकी तरफदारी करते हो, पर वे तुम्हारा बेवकूफ बुड्ढे का मजाक उड़ाते हैं।"

'खुदा तुम्हें सजा देगा, अध्यक्ष, अगर तुम झूठ बोल रहे हो!'

"बूट खरीदने की फुरसत नहीं मिली," मुरातअली ने ग्यार्ड से कहा।

"आप आपने अभी खाना नहीं खाया?'

"खाने की फुरसत नहीं है! कहीं चलते हैं, मुझे तुमसे काम है।"

मेखरी ने घबराहट और हैरानी से कंधे उचकाये और पिता के पीछे चल दी। वह उसे किसानो से दूर हौज के चारों ओर लगे वेद-मजनुओं के पास ले गया।

मुरातअली रुककर झटके से बेटी की ओर मुड़ा। मेखरी ने उसकी गुस्से से लाल हुई आँखें और फड़कते सफेद होंठ देखे और समझ गयी -- अब तूफानी बातचीत होगी। किन्तु वह, गुस्से के मारे आपे से बाहर हुए जा रहे मुरातअली की बात शान्ति से सुनने के बजाय, अभी तक यह न समझ पाते हुए कि पिता उस पर किस लिए नाराज है, दो टूक जवाब देने के लिए तैयार हो गयी। मेखरी भी वृद्ध मुरातअली से कम जिद्दी नहीं थी!

बेटी को दहकती आँखों से घूरते हुए मुरातअली ने सनसनाती फुसफुसाहट में पूछा

"कब तक चलता रहेगा यह, बेशर्म?"

"आप किस के बारे में कह रहे हैं, अब्बा?"

"बनो मत! मैंने कितनी बार तुम्हें कहा करीम के साथ मत घूमो-फिरो, इसका नतीजा अच्छा नहीं निकलेगा! लेकिन चिकने घड़े पर कहीं पानी ठहरता है। तुम अपने मन की ही करने की कोशिश करती रहती हो! मिल गया ना नतीजा इसका और मुझे भी बुढ़ापे में!"

"समझाइये, अब्बा, बात क्या है?"

"बनो मत, तुम्हें मालूम है, मैं किस बारे में कह रहा हूँ! तुम दोनो सारे गाँव में जगहँसाई करवा रहे हो। तुम्हारे ऊपर कीचड़ उछाला जा रहा है! अब कभी उसके दाग नहीं धो सकोगे! पता है, गाँव में तुम लोगों का क्या नाम पड़ा हुआ है? लैला-मजनू!"

"पर आपको लैला-मजनू में कौन सी बात पसन्द नहीं आयी, अब्बा?"

बेटी की शान्तचित्तता से, जिसमें व्यंग्य भी था और ह
भी, मुरातअली और ज्यादा भड़क उठा।

"मुझे तुम्हारा चोरी-छिपे इश्क लड़ाना पसन्द नहीं! मैं
चाहता कि तुम बुढ़ापे में मेरी मिट्टी खराब करवाओ!"

मेमरी पिता के सामने उतरा मुंह लिए दृढ़निश्चय से खड़ी
उसकी सुगठित सुकुमार आकृति में कसकर ताने हुए तार
तनाव महसूस हो रहा था। नाक के बांसे पर हठीला रोयेंदार
धब्बा चमक रहा था। मेमरी पिता को प्यार करती थी, आज्ञाक
पुत्री थी, पर खुद उसने ही उसे मिथ्या निन्दा, अन्याय और भू
घृणा करना सिखाया था। उसके लिए पिता के बेतुके, अन्याय
उलाहने और अधिक सह पाना असम्भव हो गया था।

"अब्बा!" मेमरी ने खनकती आवाज़ में कहा। "मैंने तो
आप से नहीं छिपाया कि मेरी करीम के साथ दोस्ती है।"

"दोस्ती है!" मुरातअली बेरहमी से व्यंग्यपूर्वक मुस्कराय
"तुम इसे दोस्ती का नाम देने की जुरअत करती हो! पुराने ज़मा
में, मुझे याद है इसे कुछ और ही नाम से पुकारते थे"

मेमरी ने गर्व से सिर झटका और पिता की आंखों में घूर

"ठीक है, अब्बा! यही सही। मैं और करीम एक दूसरे
प्यार करते हैं। मैं उसे प्यार करती हूं, इस प्यार की खातिर ऊंचे
ऊंचे पहाड़ ढहाने और उफनती नदियां पार करने को तैयार हूं। लैला
मजनूं भी एक दूसरे को हम से कम प्यार करते थे!"

मुरातअली ऐसी स्वीकारोक्ति से दंग रह गया, उसकी भौं
कानों पर उसने शीघ्र ही अपनी घबराहट पर काबू पा लिया और
बेटी पर किसी अशोभनीय हरकत का आरोप सा लगाता व्यंग्यपूर्वक
कह उठा

आजकल के नौजवान हैं ही ऐसे! इन्हें अपना प्यार सारी दुनिया
को दिखाए बग़ैर ही नहीं सरता! तुम्हारी जबान पर ऐसी बात आती
कैसे?

हमारे लिए शर्मिन्दा होने का कोई कारण नहीं है, अब्बा।
हमारा प्यार पवित्र है [illegible] छिपाने की [illegible]। करीम मुझसे
शादी करेगा

"नही होगी यह शादी!" मुरातअली चीखा। "तुम्हारा करीम बकवादी है। बदनमीज और ढीठ छोकरा है। मैं खुद तुम्हारे लिए दूल्हा ढूँढ लूँगा।"

"पर शादी मैं सिर्फ करीम से ही करूँगी।"

"और मैं कहता हूँ वही होगा जो मैं चाहूँगा! तुम जवान और बेवकूफ हो, तुम्हे लोगो की पहचान नही है!"

मेखरी को अब कोई डर नही रहा था। अब वह हावी हो उठी और दिल मे घर कर रही निराशा को महसूस कर चिल्लाई

"आप! अब्बा, आप! आपके कैसे-कैसे दोस्त हैं! कही आप मेरी शादी गफूर से नही करवा देंगे?"

"मैं चाहूँगा तो गफूर से ही शादी करोगी। उसमे तुम्हे क्या पसन्द नही है?"

"गफूर कालाबाजारी करता है। वह काम से जी चुराता है, दिन भर बाजारो में मँडराता रहता है।"

"बडो की बुराई करना तुम्हारा काम नही है।"

"गफूर और रोजी-पहलवान एक बाजार में गाये सस्ते मे खरीदकर दूसरे में तिगुने दामो पर बेचते है," मेखरी चुप नही रही। "गफूर की कपास की सभाल करने की फुरसत ही नही होती। और आप उसको छूट देते हैं। आप टोली-नायक हैं, पर आप देखकर भी आँखे मूँद लेते हैं।"

"बाप से ऐसे बात करती हो, ढीठ कही की! चुप करो, वरना "

"नही, आप मुझपर हाथ नहीं उठायेंगे, अब्बा। आप गुस्से मे अँधे हो रहे है, पर आप मुझपर हाथ नही उठायेंगे। आपने जिन्दगी मे मुझे कभी हाथ नही लगाया। और मैं कहूँगी! गफूर को हमारी टोली से निकाल देना चाहिए! उसने आपके साथ भी गद्दारी की है, अब्बा। अकेला वही रट लगाये हुए है जैसे आपने ही आयकीज को बदनाम किया है!"

"मैं तो इसके लिए उसकी इज्जत करता हूँ। उसका दिल साफ है, वह जो सोचता है, उसे मुँह पर कहने मे नही हिचकिचाता।"

मेखरी ने पिता को घूरकर देखा, उसके कँधे झुक गये, आँखो में आँसू डबडबा आये — निर्बल सहानुभूति के आँसू! बेटी के साथ

हुई बहस ने मुरातअली को भी थका दिया, किन्तु वह जब दोबारा बोला, उसकी आवाज फौलादी तलवार जैसी सख्त और रूखी थी।
"तो मेरा आखिरी फैसला यह है, सेमरी। चुन लो, या मुझे, या करीम को।"
सेमरी ने दुख से सिर हिलाया।
"कहते हैं प्यार आग की तरह होता है। लेकिन आग को बुझा जा सकता है, जब कि प्यार को–नहीं। मैं बिना करीम के नहीं रह सकती।"
"तो फिर उसी के पास चली जाओ।"
"मैं आप के बिना नहीं जा सकती, अब्बा "
"मैं तो देखता हूँ, करीम तुम्हें बाप से ज्यादा प्यारा है! तुम भूल गयी, एहसानफरामोश, कि बेवकूफ बुड्ढे मुरातअली ने तुम्हारे लिए कितना किया है! जाओ अपने करीम के पास!"
"अब्बा!"
"जाओ! तुमने जरूर अपने लिए नये गांव में घर भी चुन रखा होगा, क्यों?"
"हम उसमें साथ रहेंगे, अब्बा!"
"बूढ़ा मुरातअली उस घर की देहलीज पर कभी पांव नहीं रखेगा। वहाँ अकेली रहना! और कतारताल में तुम्हारी सूरत भी नजर नहीं आनी चाहिए!"
"अब्बा!"
"और रोओ मत। तुम्हारा अब बाप नहीं रहा," मुरातअली ने धृष्ट स्वर में कहा। "और मेरी मेरी आज से कोई बेटी नहीं रही!"
वह दृढ़ता व विश्वासपूर्वक डग भरके चलने की कोशिश करता हुआ खेत के अपने टुकड़े की ओर रवाना हो गया। उसने सेमरी के रोते हुए पुकारने पर भी मुड़कर देखा नहीं
उन्होंने पूरे दिन एक दूसरे से एक शब्द भी नहीं कहा, मुरातअली रात को खेत-कैंप में रुक गया, सेमरी आयशीज के यहाँ चली गयी।
किसी जमाने में, जब वे स्कूल में पढ़ती थी, सेमरी को आयशीज की परछाई कहकर पुकारा जाता था। सेमरी अपनी बड़ी सहेली से

कुछ नहीं छिपाती थी। वह अपने सारे सुख और दुख, मामूली से मामूली भी, आयकीज़ को बताने जाती थी, और वह उसके साथ सुखी बाँटती थी, स्नेहपूर्ण शब्दों से सहेली के दुख व आशंकाएं दूर कर देती थी।

मेख़री ने उसे पिता के साथ हुई अपनी कहा-सुनी के बारे में बताया, आयकीज़ सोच में पड़ गयी। इन दिनों में वह अधिक गम्भीर और सयत हो गयी थी, उसकी भौंहों के बीच गहरा बल – हाल ही की गमी की निशानी – पड़ा रहता था। आयकीज़ जब सोच में पड़ती, माथे का बल और अधिक सुस्पष्ट हो उठता था।

"तुम जरूरत से ज्यादा तो जोश में नहीं आ गयी थीं, बहन?" उसने सहेली को जाँचते हुए उसकी आँखों में झाँककर पूछा। "आखिर वह तुम्हारे अब्बा हैं। और अब्बा "

उपर्युक्त शब्द न सूझने पर आयकीज़ ने अनजाने में नाक के बाँसे पर हाथ फेरा, मानो वह असामान्य बल को दूर करना चाहती हो, और मेख़री सुबकी भरकर धीरे से बोली

"मैं मैं उनसे माफी माँगने को तैयार हूँ। समझ में नहीं आता मैंने क्यों लेकिन तुम तो अब्बा को जानती हो। वह मुझसे बात तक नहीं करना चाहते!"

"तुम भी शैतान-सी ज़िद्दी हो!" आयकीज़ मुस्करा उठी। "अरे बाप के आगे झुकने में तुम्हारा क्या जाता था?"

"यानी करीम से कभी न मिलूँ?"

"यह लो! अब तुम तो तिनके को पहाड़ करने लगी! ऐसी कोई समस्या है ही नहीं जिसका हल न निकल सके, मेख़री। मैं तुम्हारे अब्बा को जानती हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कुछ वक्त गुजर जाये, फिर वह ठण्डे पड़ जायेंगे और सारी बात समझ जायेंगे। और इसमें हम उनकी मदद करेंगे। तुम अब्बा के साथ भी रहोगी और करीम के साथ भी।"

"सच, आयकीज़-आपा?"

"बेशक!" आयकीज़ हँस पड़ी। "सब ठीक हो जायेगा, देख लेना! और सच कहती हूँ, अगर तुम्हारी शादी करीम के साथ होती है तो मैं तुम दोनों के लिए खुश हूँगी। करीम बहुत अच्छा जवान

तर्कसगत और सटीक था। "अछूती धरतीवाली" योजना की रक्षा के लिए साधारण किसान उठ खड़े हुए।

प्रातीय समिति का प्रथम सचिव, जो इन सब बातो के बारे मे जानता था, अब्दुल्लायेव को हठपूर्वक जल्दी करने को कहने लगा।

एक बार उसने उसे अपने कमरे मे बुलाया और बैठने को कहे बिना सख्त शब्दो मे, जैसा कि अब्दुल्लायेव को लगा, झल्लाकर कहा

"अलतीनसायवासियो के सुझाव को प्रातीय समिति के ब्यूरो के समक्ष विचार के लिए काफी पहले रख दिया जाना चाहिए था। देर किस कारण से हुई?"

अब्दुल्लायेव ने कंधे उचका दिये।

"हर चीज की बारीकी से जाच करनी चाहिए। इस सुझाव के प्रवर्तक एक प्रकार से अपनी सारी ठोस दलीले दे चुके है। पर जिला कार्यकारिणी समिति के सचिव कामरेड सुलतानोव के अनुमान भी उनसे कम ठोस नही है"

"कैसे अनुमान है ये?"

"उनका यह सोचना पूर्णतया न्यायसगत है कि हमने अभी तक मौजूदा जमीन का पूरा लाभ नही उठाया है। सबसे पहले तो पौधो की सघनता बढाते हुए कपास की उर्वरता मे वृद्धि करनी चाहिए।

"ठीक है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण घटक है पर एकमात्र नही! कपास के उत्पादन मे तीव्र वृद्धि हम केवल इसी स्थिति मे कर सकते है, यदि उसके साथ-साथ जोत का क्षेत्रफल भी बढाये। यदि क्षेत्रफल मे वृद्धि अछूती धरती को कृषि योग्य बनाकर की जाये।

"लेकिन यह मत केवल सुलतानोव का ही नही है!

"आप दूसरो के मतो को आधार मत बनाइये बल्कि जीते-जागते अनुभव और व्यावहारिक ज्ञान को बनाइये। यह ज्यादा विश्वसनीय तरीका होगा।"

अब्दुल्लायेव हिचकिचाकर बोला

"इसीलिए तो मैं सब स्पष्ट कर लेना चाहता हूँ। अछूती धरती को कृषि योग्य बनाना—जोखिम का काम है। कामरेड सुलतानोव जोर देकर कहते है कि "अछूती धरतीवाली" योजना के प्रवर्तको ने स्थानीय परिस्थितियो की विशिष्टताओं का ध्यान नही रखा है।

ही उच्चतर विभागों में अपील कर सकते हैं। उस स्थिति में अपनी कार्रवाइयों की न्यायसम्मतता प्रमाणित करने के लिए अब्दुल्लायेव को "अछूती धरतीवाली" योजना के विरुद्ध उन आपत्तियों में जो इस समय बढ़ कर रहा था, अधिक ब्यौरेवार व ठोस आपत्तियों की जरूरत पड़ सकती है। लिख पर यह समाचारपत्र

अब्दुल्लायेव मेज पर बैठ गया और अखबार उठाकर चिन्ता-जनक लेख ध्यानपूर्वक दुबारा पढ़ डाला।

लेख का खुद अब्दुल्लायेव से कोई वास्ता नहीं था। उसमें एक बहुत बड़े सरकारी फार्म के पार्टी संगठन के सचिव की निदेशक के साथ मिलकर साधारण श्रमिकों के अभिनव परिवर्तन की पहलकदमी की उपेक्षा करने के लिए आलोचना की गयी थी खूब कटु आलोचना की गयी थी। अब्दुल्लायेव उस सचिव को जानता था और उसे आज तक अभेद्य मानता था। और यह लीजिये – उस तक की खबर ले ली गयी! इसका मतलब यह हुआ कि पार्टी द्वारा कटु आलोचना से अब कोई सुरक्षित नहीं रह गया! अब्दुल्लायेव के लिए कठिन और चिन्ताजनक समय आ गया। "यह बात सच ही निकली उसने दुखी होते हुए सोचा, "कुछ पता नहीं ऊँट किस करवट बैठे।

भिन्न-भिन्न लोग उनकी अपनी कार्रवाइयों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध रखनेवाली समाचारपत्रों में छपी आलोचनाओं को भिन्न-भिन्न रूप में लेते हैं। कुछ लापरवाही से खीसें निपोड़ते हैं "यह मेरे बारे में नहीं लिखा गया है, मेरी तो जिम्मेदारियाँ ही दूसरी हैं और ओहदा भी ऊँचा है।" कुछ, जो जरा समझदार होते हैं, लेख या हास्य-स्तंभ में किये गये आक्षेपों को स्वयं पर किये गये आक्षेप समझते हैं, पर मानते हैं कि हास्य-स्तंभ से केवल उन्हीं लोगों को डरना चाहिए जिनके नाम उस में लिये गये हैं, जब कि व्यक्तिगत रूप से उन पर आया खतरा टल गया है एक-सी मुसीबत एक ही आदमी पर दो बार नहीं आती, एक मुर्गी नौ जगह हलाल नहीं होती। कुछ लोग, या तो कुछ तेजनजर होने के कारण या डरपोक होने के कारण, ऐसी सामग्री में अपने लिए पक्का खतरा देखते हैं। "आज समाचार पत्र में मेरे परिचित को निशाना बनाया गया है, पर कौन जाने, कल मुझे ही भाड़ पड़ जाये। आजकल आलोचना से बच पाना टेढ़ी खीर है "

अब्दुल्लायेव भी यही सोचता था। वह अक्तीतमायवासियों का समर्थन करने का निर्णय नहीं कर पा रहा था। पर उसे इससे ज्यादा डर इस बात का था कि समाचारपत्र में सरकारी फार्म के जिस "कै धरी" की, लेख में उसे यही नाम दिया गया था, कटु आलोचना की गयी है, उसी की जैसी कार्रवाइयों के लिए निकट भविष्य में अब्दुल्लायेव को भी झाड़ पड़ सकती है, और उसे अक्तीतमायवासियों की योजना को स्वीकार न करने के लिए नहीं, बल्कि समय पर उसकी पुष्टि न करने के लिए जवाब देना पड़ेगा।

अब्दुल्लायेव फटकार से, केवल फटकार से डरता था। किन्तु "अछूती धरतीवाली" योजना के प्रति शुभचिन्तक का रुख अपनाते हुए, मन-ही-मन में उसे पुष्टि के लिए प्रांतीय समिति के ब्यूरो के सामने रखने की तैयारी करते हुए, भय के कारण अपनी सामान्य सतर्कता खोते हुए वह अपनी भावी गतिविधियों व अपने साधारण सिद्धांतों में सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करने लगा। क्योंकि समाचारपत्र में छपा लेख हालांकि पूर्णतया न सही, पर था तो "ऊपर" से मिला निर्देश, – "ऊपर" से पार्टी के नेतृत्व में "नीचे" में की गयी पहलकदमी का समर्थन करने की मांग की जा रही थी। इस माँग को पूरा करना जरूरी था।

अब्दुल्लायेव को केवल एक ही बात परेशान कर रही थी। अछूती धरती को कृषि योग्य बनाये जाने के सबसे कट्टर विरोधी सुलतानोव का क्या किया जाये? क्योंकि अब्दुल्लायेव ने जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष को अपने समर्थन का आश्वासन दिया था, और यदि वह वह खँधा ही हटा ले, जिसके सहारे सुलतानोव खड़ा है, तो यह गद्दारी होगी। किन्तु सबसे बुरी बात तो तब होगी, जब सहारा खो बैठे और भाग्य भरोसे छोड़ दिये जाने पर सुलतानोव अपने दोस्त और संरक्षक को भी अपने साथ ले डूबेगा। दूसरी तरफ से सुलतानोव को बचाना जो पहले ही बात काफी आगे बढ़ा चुका है, जोखिम से भरा होगा। 'ठीक है,' अब्दुल्लायेव ने खुद को तसल्ली दिलायी, "बाद में कोई तरकीब ढूंढ लेंगे। बदकिस्मत दोस्त को किसी तरह बचा लूंगा।"

और कृपालु मुद्रा के साथ व्यंग्यपूर्वक मुस्करा पड़ा।

बाँध उसे देखने मे बाधा डाल रहा था। पिछले कुछ महीनों में भी[illegible] छिछली हो गयी थी। उसका पानी कपास के खेत पी गये थे। [illegible] प्रतिदिन झील में पानी कम होते देखनेवाले स्मिर्नोव को वे खेत [illegible] प्रतीत होते थे। लगता था वे अपने गरम व प्यासे होठों को पानी [illegible] लगाये हुए हैं, जैसे पशुओं का झुण्ड किसी पोखर पर, पिये जा रहा है, पिये जा रहा है, पर प्यास किसी तरह बुझ ही नहीं रही है। अपने कार्य में सदा असन्तुष्ट रहनेवाला स्मिर्नोव झील में जल के वार्षिक भण्डार में वृद्धि करने की, और उसका वितरण इस प्रकार करने की कि एक अमूल्य बूँद भी बेकार न जाये, कोई तरकीब निकालने की सोच रहा था।

"काम आपका ठीक-ठाक चल रहा है, इवान तिविरिच," आयकीज़ ने जलागार पर नज़र दौड़ाकर प्रशंसापूर्ण स्वर में कहा।

इंजीनियर मुस्करा उठा, उसकी ठोड़ी पर [illegible] उछला।

"कहाँ ठीक-ठाक से चल रहा है! अवधि कम रह गयी है, आयकीज़।"

"आप तो काम अवधि के अन्दर ही कर रहे हैं, इवान तिविरिच।"

"मैं इस अवधि की बात नहीं कह रहा हूँ, जो योजना में है। हमने अपने लिए दूसरी ही अवधि निश्चित की थी। इसी लिए तो कम पड़ रही है।"

आयकीज़ हँस पड़ी।

"अवधि को लेकर तो मैं भी परेशान हूँ। आखिर इवान तिविरिच, नयी नहर में पानी की [illegible] कब शुरू [illegible] होगा?"

"जल्दी ही, आयकीज़, जल्दी ही! जब तक आप लोग [illegible] का काम शुरू कर दें, कुछ दिनों में हम पानी सप्लाई करने लगेंगे। [illegible] दिन तक शुरू कर [illegible]?"

"एक दिन भी नहीं! हमने वादा किया है कि [illegible] में रहेगा और हम अपना वादा पूरा करना चाहेंगे। [illegible]

[illegible] इवान तिविरिच।"

"दिलचस्प है," स्मिर्नोव ने [illegible] बात की। [illegible]

खुद ही के मारे चैन नहीं है, तिस पर तुम भी ज़ोर दे रही हो। अच्छा, आयकीज़, ज़ोर देंगे।"

उनकी बातचीत जुराबायेव के अप्रत्याशित आगमन से भंग हो गयी। ज़िला समिति का सचिव गत सन्ध्या को ताशकन्द से लौटा था, जहाँ उसे अब्दुल्लायेव के साथ बुलाया गया था। उसकी हर्षोत्फुल्ल और शरारती आँखें मुस्करा रही थीं। उसने आयकीज़ व स्मिर्नोव का अभिवादन किया और रहस्यपूर्ण ढंग से कहा

"दोस्तो, मैं आप लोगों के पास ऐसा तोहफ़ा लेकर आया हूँ जिसे आपने शायद सपने में भी नहीं देखा होगा!"

"सताइये मत!" आयकीज़ ने कहा। "बताइये!"

जुराबायेव लपककर खिड़की के पास पहुँचा, खिड़की की ओर पीठ की और दोनों हाथ आगे फैलाकर, मानो मित्रों का आलिंगन करना चाहता हो, विजयोल्लास से वह उठा

"विजय की बधाई, प्यारे कामरेडो! भारी जीत की बधाई! ताशकन्द में हमारी योजना पर विचार किया गया, उन्होंने उसका केवल अनुमोदन ही नहीं किया, बल्कि काफ़ी दूरगामी निष्कर्ष भी निकाले। उन्होंने कहा 'आपकी योजना तो ऐसी ही योजनाओं का अभी श्रीगणेशमात्र है!' और यह भी कहा 'जनतन्त्र महान घटनाओं की देहलीज़ पर खड़ा है, आपकी पहलकदमी – महान नदी की शाखा है!' समझे, कामरेडो? कहने का मतलब है कि अछूती धरती को कपास की खेती के लिए और ज़्यादा बड़े पैमाने पर कृषि योग्य बनाने का सुझाव दिया गया है। हमें भारी सहायता का वादा किया गया है। मैं उड़ता हुआ-सा लौटा हूँ, आप लोगों को जल्दी से-जल्दी खुशख़बरी देना चाहता था।"

"इस से बेहतर तोहफ़े की कोई सोच भी नहीं सकता," स्मिर्नोव ने सहमति व्यक्त की। "लेकिन हमें इसके सिवा और किसी चीज़ की आशा भी नहीं थी "

"क्या? क्या आशा नहीं थी?" आयकीज़ ने उसे टोक दिया। "हमारी खुशी इससे कहीं कम हो सकती है! मुझे तो लग रहा है जैसे मेरे भी पंख निकल आये हैं।"

"ठीक कहती हो, उमूरज़ाकोवा," जुराबायेव ने उसका समर्थन

रिया। "लेकिन यह भी याद रखिये हमें अभी कठिन पर
है। गुलनार्रोव और कादीरोव हमें कठिनाइयों की दुहाई दे
रहे थे, और एक मामले में उनका कहना सही निकला ह
का रास्ता फूलों की सेज नहीं है, उसमें कोई नहीं गुजरा
याद आया, मैं अरसे से आपके खेतों में नहीं गया हूँ—वहाँ क
चल रहा है?"

"फसल बहुत अच्छी होने की आशा है," आयकीज़ ने

"और कादीरोव कैसा है? क्या अभी भी झगड़ता रह

"कादीरोव?" आयकीज़ एक मिनट के लिए सोच
गयी। "कादीरोव कुछ शान्त हो गया है, उससे अभी न कोई
हो रहा न ही कोई फायदा"

"यानी नुकसान ही हो रहा है!"

जुरावायेव कुरसी के किनारे पर बैठकर गाल पर हथेली
दुखी स्वर में बोले

"कादीरोव के मामले में हम चूक गये! हा हा चूक
किसी ने ठीक ही कहा है जियो और सीखो। मैं इसमें बस यह ज
चाहूँगा लोगों से सीखो! क्योंकि मैं देख ही चुका हूँ कि कादी
कितना बदल गया है। मैं जानता था कि सामूहिक फार्म के स
पैदा हुई नई समस्याओं का समाधान उसके बस का नहीं है। पर
भी उसका लाड करता रहा, उदारता दिखाता रहा है उस पर
करता रहा हूँ, इन्तज़ार करता रहा कि वह अपनी गलतियाँ
मानेगा। आम किसान अध्यक्ष की मुझसे कम इज्ज़त नहीं करते
पर उसके अहंकार को बढ़ावा नहीं देना चाहते। उन्होंने बिना हिच
के दो टूक सवाल उठाया है हमें ऐसा अध्यक्ष नहीं चाहिए और
खतम। और उनकी बात ठीक है। कादीरोव के स्थान पर बहुत पह
ही किसी दूरदर्शी और आर्थिक मामलों में कुशल व आधुनिक
को रख लेना चाहिए था!

देखिये, संयोग भी कैसा रहा ठीक उसी समय कार्यालय के
से मिर्जायेव के पास अपने सामूहिक फार्म की अगली बार सिंचाई के
लिए कुछ अधिक पानी देने की प्रार्थना करने आ रहा कादीरोव
... इर्गाशेव के कक्ष का दरवाज़ा खुला था। कादीरोव ने जुरावायेव

के अन्तिम शब्द सुन लिये। सुनते ही दबे पाव चलने की कोशिश करता हुआ वह उल्टे कदम दरवाज़े की ओर हटने लगा। वह चौकन्ना होकर आगल-बगल झाकता बाहर लपका और धप-धप करता भागा हुआ अपने घोड़े के पास पहुँचा। उसका पैर काफी देर तक रकाब मे नही पड पाया। अन्त मे कादीरोव कदमबाज़ पर सवार होने मे सफल हो गया और सरपट ज़िला केंद्र की ओर भाग चला।

जब प्रांतीय समिति के सचिव ने, उस "पर्वत" ने जिससे समर्थन मिलने की सुलतानोव को आशा थी, निर्णायक क्षण मे अलतीनसाय मे मरुभूमि को कृषि योग्य बनाने की योजना का विरोध करने के स्थान पर अचानक खुद को उसका पक्षधर घोषित कर दिया, तो कादीरोव समझ गया कि अब वह सामूहिक फार्म के अध्यक्ष के पद पर टिका नही रह सकेगा। वह समझ तो गया, पर उस पर विश्वास नहीं करना चाहता था। वह सामूहिक फार्म के सारे कार्य सभाले रहा था, दौड-धूप करता रहा था, आदेश देता रहा था, टोली-नायको को जल्दी करने को कहता रहा था, पर अपनी ये ज़िम्मेदारिया निरुत्साह से, अनिच्छापूर्वक और बिना खुशी महसूस किये निभाता रहा था। उसके सारे विचार, आशाए, आकाक्षाए उसके मस्तिष्क को निरन्तर कुरेद रहे, दिन-प्रतिदिन के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने से रोक रहे एक ही विचार मे समा गये थे क्या पता, माफ ही कर दे, क्षमादान दे दे, कुछ न कहे! आखिर वह अनुभवी है जिले मे भी और प्रात मे भी उसकी अतीत की सेवाओ को ध्यान मे रखा जाना चाहिए। उसे बस अध्यक्ष बना रहने दिया जाये, फिर वह दिखा देगा कि कादीरोव कितना योग्य है! वह बिलकुल गऊ हो जायेगा, पर उससे जो भी कहा जायेगा, करेगा! वह केवल इस सुसरी अछूती धरती मे ही नही – सारे रेगिस्तान मे कपास बो देगा! बस उसे हटाये नही

कादीरोव को चमत्कार की आशा थी, पर कोई चमत्कार नही हुआ। स्मिर्नोव के कक्ष मे सयोगवश सुनाई दे गयी बातचीन ने उसे पूर्णतया होश मे ला दिया। 'खतम हो गया तुम्हारा खेल, अध्यक्ष ' उसने घोर निराशा के साथ मन मे कहा। "भूतपूर्व अध्यक्ष! "

कादीरोव को घेर रहे घुप अधेरे मे केवल एक दिया टिमटिमा

फिर भी आप उन्हें मेरे बारे में खबर कर दीजिये। मुझको उनसे जरूर मिलना चाहिए।"

स्वेता कुछ उचककर दरवाजे में ओझल हो गयी। एक मिनट बाद वापस निकलकर वह उलाहना देती हुई बोली

"मैंने आपसे कहा तो था न! कामरेड सुलतानोव को बहुत काम है पर उनके यहां मीटिंग हो रही है। अगर चाहें, तो तब तक बाग में बैठ सकते हैं लेकिन वह शायद ही जल्दी खाली हो सकें।"

"ठीक है" कादीरोव ने सब समझते हुए कहा। वह कुछ क्षण खड़ा रहकर एकदम मुड़ा और गुस्से में भड़ाक से दरवाजा बंद करके चला गया। सारी बात पूरी तरह साफ थी। सुलतानोव के यहां कोई मीटिंग नहीं हो रही थी–कादीरोव को तो उसकी ये चालबाजियां मालूम ही थीं! वह कादीरोव से मिलना ही नहीं चाहता था। उसे अब अपने दोस्त की कोई जरूरत नहीं रही थी हां, कामरेड सुलतानोव बहुत दूरदर्शी हैं!

कादीरोव जब अलतीनसाय लौटा, सूरज क्षितिज की ओर उन्मुख हो रहा था। सामूहिक फार्म के कार्यालय के आस-पास कोई नहीं था। कादीरोव सबसे खुश होकर अपने कक्ष की ओर चल दिया। रास्ते में उसने उस कमरे में झांककर देखा, जहां साधारणतया उसकी स्टेनो बैठती थी। नजाकतखा अभी गयी नहीं थी, पर अकेली नहीं थी वह अपने पिता से बात कर रही थी।

"अर्नीकुल! जब बात खतम कर लो, तो मेरे कमरे में आना," कादीरोव ने चलते-चलते कहा।

मेज पर बैठकर उसने पानी की सुराही की ओर हाथ बढ़ाया, पर सोचकर तत्क्षण वापस खींच लिया सुराही खाली थी। नजाकतखा पिछले कई दिनों से अध्यक्ष की न जाने से खातिरदारी कर रही थी, न ही मिठाइयों से, उसे सुराही में ताजा पानी भरने तक में आलस आता था। वह कादीरोव से कतराने लगी थी। कौन जाने, एक समय सैयारे और करीम के पवित्र व आत्मविस्मृत प्रेम से ईर्ष्या करनेवाली नजाकतखा के मन में भी शायद अपने प्रति और उन लोगों के प्रति, जिन पर वह बिना प्रेम के बड़ी निश्चिन्तता से अपनी कृपादृष्टि रखा करती थी, घृणा की भावना जाग उठी थी। किन्तु कादीरोव कुछ

और ही सोच रहा था : 'तुम भाग गयी हो, सुन्दरी, कि मैं अब अध्यक्ष नहीं रहूँगा।' वह खिन्न हुआ सोच रहा था : "इसीलिए तुम्हारा व्यवहार बदल गया है। जिन्दगी में ऐसा ही होता है। असली मक्खन और मलाई खाने ही दोस्तों को भी खो बैठना है। बस तुम्हारे घर की ही मुझसे मुह मोड़ने की कसर रह गयी है।' पर नहीं, वह मुसीबत की घड़ी में मेरा साथ नहीं छोड़ेगा। हम एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं!"

अलीकुल ने कक्ष में आकर अध्यक्ष को सिर नवाया और उसके सामने विनम्र मुखमुद्रा के साथ सोफे पर बैठ गया।

"सुना?" कादीरोव ने उसे सम्बोधित किया। 'हमारी हालत खराब है। उपजाऊपन आखिर अपनी हानि करके ही रहा!' इस बार नहीं चूक गये। बुरी तरह चूक गये।'

"चूके तो तुम हो, अध्यक्ष, तुम!" अलीकुल ने शान्तिपूर्वक आपत्ति की। "तुमसे विनती करता हूँ, अपना दोष दूसरों के सिर मत मढ़ो।"

"क्या, क्या?" कादीरोव की भौंहें सिकुड़ गयीं। 'तुम क्या बक रहे हो?'

'तुम्हारे साथ बहुत बुरा होगा, अध्यक्ष। बहुत बुरा!' अलीकुल ने दुःख से आँखें मींच लीं। "क्या ज़रूरत पड़ी थी तुम्हें मुसीबत को बुलावा देने की और दूसरों को भी गुमराह करने की?'

"क्या!" कादीरोव ने मेज पर मुक्का मारा। "मैं तो जानता हूँ कि मेरा क्या होनेवाला है। पर तुम भी अब उर्वरता समिति के अध्यक्ष नहीं रह सकोगे। इसीलिए आओ कुछ तरकीब सोचें।"

"मुझे क्या सोचना है, अध्यक्ष? मुझे यह ओहदा आसानी से नहीं मिला है। बिलकुल नहीं! लोगों की इज़्ज़त पाने के लिए मुझे कितने बरस खून-पसीना एक करना पड़ा! मुझे उर्वरता समिति का अध्यक्ष किसानों ने चुना है। यह अच्छा पद है, अध्यक्ष। मुझे क्या ज़रूरत पड़ी है उससे इनकार करने की?"

कादीरोव अभी तक उसकी बातों का अर्थ न समझ पाकर जड़वत् अलीकुल को घूरने लगा। अलीकुल सोफे पर सीधे-सादे ढंग से बैठा [illegible] उंगलियां छोटी चुन्नी दाढ़ी में फेरता रहा। उसकी अधमिं[illegible] में लोमड़ी जैसी कुटिल मुस्कान छिपी हुई थी।

उस व्यग्यपूर्ण मुस्कान को देखकर कादीरोव भल्लाया

"तुम क्या गऊ होने का ढोग रच रहे हो? आओ, साफ-साफ बात करे, मर्दो की तरह। तुम्हे मालूम है, हमे किस बात का खतरा है?"

"खतरा तुम्हे है, अध्यक्ष," अलीकुल ने फिर अपना राग अलापा, "तुम्हे है, मुझे नही"

"तुम्हारी याददाश्त क्या कमजोर हो गयी है? आखिर हम दोनो ही तो अछूती धरती के खिलाफ थे! अखबार को वह ससुरा पत्र भी हमने ही मिलकर गढा था! हम दोनों ने ही गलती की, और हम दोनो को ही जनता के सामने इसका जवाब देना है।"

"नही, अध्यक्ष, जवाब तुम अकेले ही देना। मैं तो ऐसे कामो से दूर रहता हूँ।"

अलीकुल व्यग्यपूर्ण कुटिल मुस्कान के साथ सिर से पैर तक उस पर नजर डालता अपनी दाढी मे उगलिया फेरता रहा

"तुम क्या, प्यारे दोस्त," कादीरोव ने धमकी भरे स्वर मे कहा, "अब पीठ दिखाना चाहते हो? क्या यह चाहते हो कि सबकी तरफ से मैं ही जवाब दूँ? ऐसा नही होगा, प्यारे। मैं खुद पर रहम नही करूँगा, लेकिन तुम सब की भी खैर नही।"

"लेकिन तुम पर विश्वास कौन करेगा, अध्यक्ष?" अलीकुल ने पूछा, उसकी आवाज मे मिठास थी, पर साथ ही वह अशुभसूचक भी थी। "किसानो की नजरो मे तुम खोखा बना हो। तुम पर किसी को विश्वास नही रहा! जब कि मेरी सामूहिक किसान इज्जत करते है"

"उन्हे अभी तुम्हारी काली करतूतो का पता नही चलेगा, अध्यक्ष। क्या तुम उन्हे उनके बारे मे बताओगे!"

"मैं अपने किसानो का दुश्मन नही हूँ। मैं उन्हे सारी सच्चाई बता दूँगा, अपने बारे मे भी, सुलतानोव के बारे मे और तुम्हारे बारे मे भी, बूढी लोमडी!"

"और मैं कहूँगा कि यह झूठी शिकायत है। कहूँगा अध्यक्ष ने खुद गदे काम किये है और अब सारा दोष दूसरो के सिर मढ रहा है। क्योकि यह बेतुकी बात है मीटिगो मे तुम ही सबसे ज्यादा

गालियां देते थे, जब कि मैं चुप रहता था, तुम्हारा नाम युद्धों के मेरा से लिया गया है जब कि मेरा नहीं "

और दावत में कही गयी तुम्हारी बातें? आखिर आयजोव के खिलाफ तुम्हीं तो मुझे भड़काते थे! या भूल गये इस बात को?"

"और किसने सुनी थीं मेरी बातें? गेओर्गी-पहलवान ने? शुर ने?" अलीकुल ने अपनी सूखी मुट्ठी कसी। "क्या परवाह है मुझे उनकी! मुझे मालूम है, बाजारों में वे क्या-क्या करते हैं? बढ़िया गायों के बदले में सूखी गायें ले आते हैं, सामूहिक फार्म की गायों की नस्ल बिगाड़ते हैं, और पैसे अपनी जेब में रख लेते हैं या अध्यक्ष को रिश्वत देने पर खर्च करते हैं। और अध्यक्ष उनसे तोहफे लेता रहा है। अध्यक्ष की आत्मा भी निष्कलंक नहीं है। बुरा होगा, बहुत बुरा होगा, अगर किसानों को इन बातों का पता चल गया!"

अलीकुल के शब्द कादीरोव को गोली की तरह बेध गये। वह बूढ़े को जिन्दा चबा जानेवाली नजरों से घूरने लगा और हांफता हुआ बोला

"मैं तुझसे नहीं डरता, बुड्ढे गीदड़!"

"डरते हो, अध्यक्ष," अलीकुल ने किंचित् खेद के साथ कहा, "डरते हो। और तुम डरोगे क्यों नहीं? तुम खुद ही सोचो तुम सामूहिक किसानों और जिला समिति के सामने अपने कुछ पापों को स्वीकार करोगे – लेकिन सारे पापों को नहीं, सारे पापों को नहीं, अध्यक्ष! कहोगे कि तुम्हारी आंखों पर परदा पड़ गया था, इसीलिए तुम अहदी धरतीवाले मामले को ठीक से नहीं समझ पाये। तुम्हें गालियां दी जायेंगी, तुम्हारी बदली करके टोली-नायक बना दिया जायेगा, और इस पर सारी बात खतम हो जायेगी। लेकिन दूसरों को डुबोने लगोगे तो वे भी चुप नहीं रहेंगे, और फिर तुम पार्टी-कार्ड को अपने कानों की तरह कभी नहीं देख पाओगे। यकीन रखो, अध्यक्ष, उस हालत में तुम्हें बाकी सारी बातें बहुत ही अच्छी लगेंगी! और मेरा क्या होना है? कहते हैं जो रंगे हाथों नहीं पकड़ा जाये, उसे चोर नहीं ठहराया जाता। यह सच है कि गलती मुझसे भी हुई, किसानों ने मुझे तुम्हारे साथ खाते-पीते देखा है। लेकिन देखा भी है, तो भी मुझे वे बुरा नहीं कहते! मैं तो मामूली आदमी हूं, कादीरोव को जिसकी

मनाही है–अलीकुल को वह माफ है। मैं कहूँगा तुम्ही ने, अध्यक्ष, मुझे अपनी चौकडी मे फसाया है। मैं कहूँगा तुम मेरी बेटी की नाक मे दम किये हुए थे। मुझे तो ऐसी-ऐसी बाते मालूम हैं, जिन्हे किसी भी मीटिंग मे स्वीकार करने की हिम्मत तुम्हे नही होगी।"

कादीरोव अलीकुल की बाते सुनता हुआ बड़ी मुश्किल से अपने पर काबू रख पा रहा था। उसके दिल मे लाचारी का गुस्सा उमडा पड रहा था। वह गुस्से के मारे भूत हुआ बूढ़े की तरफ बढा और उसका गरेबान पकडकर भर्रायी आवाज मे किसी तरह बोला

"बुड्ढे गीदड! साप! तुझे भी किये की सजा भुगतनी पडेगी!

"छोड दो, होश मे आओ, अध्यक्ष!" अलीकुल कादीरोव की पकड मे छूट खिडकी की तरफ लपका और उसे मुक्का मारकर जोर से चिल्लाया

"बचाओ! बचाओ!"

कादीरोव ने अलीकुल के कँधे पकडकर खिडकी से खीच लिया और उसके मुँह पर हाथ रख दिया

"चुप रह, शैतान! चुप रह!"

अलीकुल अपने दोस्त की मजबूत पकड से छूट गया और सन्तुष्ट होकर मुस्कराया

"देखा, अध्यक्ष! मेरा शुक्रिया अदा करो कि रास्ते मे कोई नही था।" वह तनकर खडा हो गया और उसकी आँखो मे क्रूर व निर्मम भाव झलका। "तुम मुझसे जोरआजमाई मे कमजोर पडते हो, अध्यक्ष। मैं तो हमेशा बेदाग बच निकलता हूँ, पर तुम खुद को तबाह कर लोगे! हमारे तुम्हारे रास्ते अलग-अलग है प्यारे।"

अलीकुल चलता बना, और कादीरोव अकेला रह गया।

वह सोफे पर झुका हुआ, अपने बडे, भारी हाथो को जो कभी कुदाल और बन्दूक भी सभाल चुके थे, घुटनो मे भीचे बैठा रहा। खिडकी के बाहर अँधेरा तेजी से छा रहा था, कक्ष मे भी अँधेरा छा रहा था

अपने किये की सजा भुगतने की घडी भी आ गयी कादीरोव, इस घडी के आने से पहले तुम्हारे जीवन मे दूसरा ही समय आया था, जब तुम सामूहिक फार्म की सफलताओ को अपनी सफलताओ

कि वे ऐसा लोकहित के लिए कर रहे हैं? देख रहे थे! पर घोर ईर्ष्या ने तुम्हारी आँखों पर परदा डाल दिया। तुम अपनी पुरानी सेवाओं की एवज में शांति और शाश्वत सम्मान चाहते थे। तुम्हारे मन में एक बार भी शंका नहीं उत्पन्न हुई "ऐसा क्यों है – अगर मेरी बात सही है, तो फिर मुझे गाँव के श्रेष्ठ लोगों के बजाय ऐसे ही लोग क्यों घेरे रहते हैं, जिनके दिमाग में केवल दावतें उड़ाने और ऐश करने की बातें ही भरी रहती हैं?"

महत्वाकांक्षा के बाद में तुमने सच्चाई को न देखने के इरादे से आँखें मीच लीं।

अब तुम अपने दोस्तों की असलियत जान गये हो। उन्होंने तुम्हें धोखा दिया, तुम फँस गये, पर उनसे बदला तक नहीं ले सकते, उनका भण्डा नहीं फोड़ सकते। तुम्हारे हाथ बँधे हुए हैं, कादीरोव! और कुछ हो भी नहीं सकता था! क्योंकि अलीकुल ने सच कहा वह हर हालत में बेदाग बच निकल सकता है। पर जरा तुम सामूहिक किसानों और पार्टी को पूरी हकीकत बताकर देखो – तुम्हें जरूर ही पार्टी-कार्ड से हाथ धोना पड़ जाएगा।

नहीं, तुम अभी पूरी बात नहीं समझे हो, अध्यक्ष! इस समय भी तुम अपनी ही चिन्ता में लगे हो, अपनी जान बचाने की सोच रहे हो! पार्टी-कार्ड सुरक्षित रखने की खातिर तुम पार्टी के प्रति कर्त्तव्य और अपने सम्मान की बलि देने को तैयार हो, इसी की खातिर तुमने अलीकुल के साथ मौन समझौता कर लिया है! यानी तुम्हारे लिए सर्वोपरि पार्टी की सेवा करना नहीं बल्कि केवल पार्टी में बने रहना है? लेकिन इस तरह सच्चे कम्युनिस्ट नहीं बनते है, कादीरोव!

नहीं, तुम अभी पूरी बात नहीं समझते हो

तुम अभी तक यही सोच रहे हो कि उमूरज़ाकोवा और उसके मित्र अपनी योजनाओं पर ज़ोर अपना भविष्य सुधारने के इरादों से दे रहे हैं। तुम अभी तक यही मानते हो कि उन्होंने तुम्हारे विरुद्ध "षड्यन्त्र" रचा था। तुमने जब अलीकुल से कटुता से कहा 'उमूरज़ाकोवा अपनी ठानी करके रही!' – तो तुम यही तो कहना चाहते थे कि वह ऐसा व्यक्तिगत लाभ के लिए कर रही थी। इसीलिए खुश हो रही है!

तुम उनके औचित्य को किसी तरह देख ही नहीं पा रहे हो, अन्ताश। तुम उनके इस औचित्य के शीशे में साफ मर्म जनता की चिन्ता और जनता में विश्वास — को नहीं देख पा रहे हो। अब उनका सपना सच होते देखकर तुम पछताओगे कि तुमने गलती की, मौका हाथ से निकल जाने दिया, कि समय पर उनका समर्थन नहीं किया, उनका साथ नहीं दिया। लेकिन जरा याद करो, तुम्हें ऐसा करने से क्या रोक रहा था? तुम जोखिम भरे काम को हाथ में लेकर अपने सम्मानित पद से हाथ धोने से डरते थे और तुम डरते थे इसलिए कि तुम्हें सफलता में विश्वास नहीं था, अपने किसानों पर, उनकी सामूहिक बुद्धिमत्ता और उनकी शक्ति पर विश्वास नहीं था। नहीं, तुम्हारा अँधापन अभी दूर नहीं हुआ है, कादीरोव!

और अगर तुमने साहस नहीं बटोरा, अपने व्यक्तित्व की तुच्छ चिन्ताओं को नहीं छोड़ा, सच्चाई से आँखें चार नहीं कीं, हर मामले को पूरी तरह समझने की कोशिश नहीं की — तो तुम बिलकुल अकेले रह जाओगे।

और यह जीवन में सबसे भयानक बात होती है — अकेला रह जाना

इकतीस

चिर-अभीप्सित दिन

अलतीनसायवासियों ने सामूहिक फार्म की आम सभा में आतिमजान को "किज़िल युल्दूज़" सामूहिक फार्म का अध्यक्ष चुन लिया। कादीरोव को अछूती धरतीवाली नयी टोलियों में एक उप-टोली सौंप दी गयी। 'मैं यह मान सकता हूँ कि मैं सस्ते में छूट गया," भूतपूर्व अध्यक्ष ने कटुता से सोचा, 'इससे बुरा भी हो सकता था। क्या हुआ,

"   इसी लायक   उल्लू!" पूर्ण व शुद्ध हृदय से स्वीकारोक्ति

' साहस न होने पर कादीरोव अछूती धरती में ईमान-

दारी से मेहनत करके अपने दोष का प्रायश्चित्त करने का इरादा रखता था और साथ ही सबको यह भी दिखा देना चाहता था कि उसमें अभी जूझने के लिए काफी दम है। उसके पुराने दोस्त उसका साथ छोड़ गये, लेकिन उसे इससे खुशी ही हुई उनसे अलग होने पर अब वह खुद को उनका साझी महसूस नहीं करता था।

अगस्त के अन्त में नयी बस्तियों की नालियों में पानी बहना शुरू हो गया था। सारे जिले में सामूहिक पुनर्वास आरम्भ हो गया, जो ज़िला समिति व ग्राम सोवियतों के अनुमानों के अनुसार फसल उठाने से पहले पूरा हो जाना था। वीरान स्तेपी में वजूद में आये गांवों में अलतीनसाय, यक्कातूत, आक्कूम और कोकतारा ग्राम सोवियतों के सामूहिक किसान बसने लगे। स्तेपी में जान आ गयी। उन स्थानों पर चहल-पहल शुरू हो गयी, जहां चरवाहों के इक्के-दुक्के कच्चे घर दिखाई देते थे और जिनकी वजह से वह और भी ज्यादा वीरान निस्सीम और निष्ठुर लगती थी।

लेकिन जुरावायेव ने सच कहा था – "किज़िल युल्दूज़" के प्रवर्त्तकों द्वारा आरम्भ किया गया कार्य अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने के व्यापक आन्दोलन और उनको कपास के उर्वर खेतों में परिवर्तित करने का शुभारम्भ सिद्ध हुआ।

"किज़िल युल्दूज़" के आस-पास स्थित कई सामूहिक फार्म उनके हिस्से में पड़नेवाली अछूती धरती की जोताई पूरी कर चुके थे। यक्कातूतवालों ने ट्रैक्टर-चालकों से सलाह करके दो सौ हेक्टेयर अतिरिक्त अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने का निर्णय ले लिया था। अछूती धरती अब अछूती नहीं रही थी। अलतीनसायवासियों की उस योजना में वैसी योजनाओं का सिलसिला शुरू हो गया।

क्तारताल से लगभग सभी परिवार – परिवार कुल मिलाकर बीस से कम नहीं थे – पुराने घर छोड़कर जा रहे थे। नये प्रवासी नयी बस्ती में आकर बड़ी बारीकी से उन्हें सौंपे गये घरों की जाँच करते रहे, अहातों व व्यक्तिगत जोतों को ठीक-ठाक करते रहे फलदार वृक्ष लगाते रहे और जाड़े के लिए ईंधन जुटाते रहे। बस्ती बढ़िया थी, वह क्तारतालवासियों को फौरन पसन्द आ गयी और वे जल्दी-जल्दी उस में बसने के लिये आने लगे।

प्रान्त में पुनर्वास की सुबह भी आ गयी।

भोर से पहले ही कलारगाल में ट्रकों की कतार आ पहुँची और उसके एकमात्र रास्ते से लम्बे, उत्सव के दिन का-सा रास्ता बनाती खड़ी हो गयी। ट्रकों को दोनों ओर से लाल कपड़ों की पट्टियों से सजाया हुआ था, मालखानों पर पोस्टर चमचमा रहे थे, रेडियेटरों पर लाल झण्डियाँ फहरा रही थीं। हर ट्रक की एक ओर या वायर-कोस्ट पर बड़े-बड़े अक्षरों में उस परिवार के मुखिया का नाम लिखा था, जिसके लिए वह भेजा गया था।

गाँव में आनन्दमय चहल-पहल हो रही थी। उसके केन्द्र में, रास्ते में ही अलाव जला दिया गया था, जो दूर से चौरों विशाल व भरे-भरे गुलाब-सा दिखाई दे रहा था। जब तक कलारगालवासी बड़े उत्साह के साथ ट्रकों में कालीन, मेजें, रजाइयाँ, पलंग और कपड़ों व नाना प्रकार की घर-गृहस्थी की चीज़ों से भरे अपरिहार्य भारी-भरकम सन्दूक लादते रहे, अलाव के पास निरन्तर स्फूर्तिदायक संगीत जारी रहा। डफलियाँ ताल के साथ बजती रहीं, करनायों का कटु स्वर गूँजता रहा, दुतारों व तम्बूरों के तार झंकृत होते रहे, मुरनाय और बाँसुरी आरोह-अवरोह के साथ बजती रहीं। वादक अपने काम में लगे रहे, और किसान लोभ संवरण न कर पाकर एक के बाद एक नाचने निकलने लगे। इस उत्सव में केवल कलारगालवासी ही भाग नहीं ले रहे थे वहाँ अलतीनसाय से भी मेहमान नाचने, रंगरलियाँ मनाने, मित्रों, सबंधियों तथा अपने मेहनतकश साथियों को खुशी बढ़ाने आये हुए थे।

वहाँ बेकबूला, सुवानकुल और करीम भी मौजूद थे। बहुत से दूसरे अलतीनसायवासी भी जमा हो गये थे। जब करीम ने नाचना शुरू किया, सारे सामूहिक किसान, मेहमान व मेजबान अलाव के इर्द-गिर्द खड़े हो गये। वे नर्तकों का हौसला बढ़ाते हुए एक साथ तालियाँ बजा रहे थे, और करीम कमानी की तरह तना ज़मीन के ऊपर तैर रहा था, बड़ी तेज़ी से कौंधों को उचका रहा था, तीव्र गति से पैर बदलता हुआ लट्टू की तरह घूम रहा था। सलीना और फुर्तीला वह ज्वाला-सा चपल और ज्वाला-सा ही भारहीन लग रहा था।

के इर्द-गिर्द वहाँ घना खर-पतवार उग आया था, कुछ कतारों के बीच में सूखी और ढग से नहीं जोती गयी मिट्टी पर झडे हुए फूल और कलियाँ पडी थी। सबसे भयावह बात हो गयी थी पर्याप्त मात्रा में पानी न मिलने और ढग से सभाल न होने के कारण कपास के फूल झडने लगे थे। एक-दो दिन यही हालत रहने पर – सारे फूल झड जायेंगे। पौधों के निचले भागों मे निकली अखरोट सरीखी डोडियाँ रह जायेगी, लेकिन नयी नही निकलेगी।

बूढे मुरातअली की भलाई का गफूर ने यह बदला चुकाया। गफूर ने कपास और टोली की प्रतिष्ठा के बारे मे सोचा तक नहीं, न ही यह देखा कि किसान कैसे काम कर रहे है, और उनमे से जो हमेशा अपनी सुस्ती के लिए मशहूर थे, उन्होने तो उन दिनों कुदाल को हाथ भी नही लगाया। क्योंकि कपास खुद सबसे अधिक स्पष्ट शब्दों में टोली-नायक को बता रही थी कि किस ने कैसे मेहनत की है

मुरातअली का गला रुँध गया। वह हताशा से खेत को देखता रहा, जहाँ प्यार से दूहे बनाये गये कपास के पौधों के साथ उपेक्षित और प्यास से तडपते पौधे भी मौजूद थे, उसके मन मे खुद पर और गफूर पर गुस्सा उबलने लगा। धोखेबाज़, कामचोर और पियक्कड – गफूर है ही ऐसा! वह खुद भी कपास का दम घोटनेवाले खर-पतवार जैसा है, उस अमरबेल जैसा है, जो कपास के पौधे के चारों और लिपटी रहती है! वह प्यार से पौधे का आलिंगन कर और मैत्रीपूर्ण विश्वस्तता से उससे चिमटकर कपास का दम घोटती है! अमरबेल की जड़ें नही होतीं, वह अपनी कुटिल मित्रता के बदले में पौधों का रस चूसकर अपना पेट भरती है। पौधा सूखता जाता है, मर जाता है, पर अमरबेल विजयोल्लास के साथ सूरज की ओर बढती चली जाती है। तुम भी, गफूर, ऐसे ही दूसरों की मुसीबत का फायदा उठाते हो! बूढे मुरातअली ने तुम्हें टोली सौंपी, तुम पर दोस्त की तरह विश्वास किया, पर तुम आज़ादी महसूस करते ही सब छोडकर बाज़ार भाग लिये। ज़रूर सब ऐसे ही हुआ होगा! मेसरी तुम्हे यो ही तो बाज़ारिया नही कहती है। अच्छी कीमत मिलने पर तुम अपनी आत्मा, दोस्ती और दूसरों के विश्वास को भी बेचने को तैयार रहते हो! तुम्हे अमरबेल की तरह आज़ादी तभी महसूस होती है, जब दूसरों का बुरा हो रहा

मुरातअली ने आखे उठाकर उसकी ओर देखा, उसकी आखो मे उस समय पीडा और थकान झलक रही थी, और एक ठण्डी सास ली

"मालूम था, बेटी। सारा कसूर मेरा ही है।"

"आप दिल छोटा मत कीजिये, मुरातअली-अमाकी!" आयकीज़ ने स्नेहपूर्वक कहा। "कपास को अभी बचाया जा सकता है।"

"तुम बहुत भली हो, आयकीज। लेकिन मुझे डर है कि उसे बचा पाना मुश्किल होगा।"

"लेकिन हम कोशिश करेंगे। कोई तरकीब सोचेंगे!"

"अब देर हो चुकी है, बेटी!" मुरातअली ने निराशा से हाथ हिलाया। "कपास को सभालने के लिए टोली को कम-से-कम एक हफ्ते का वक्त चाहिए। और हमारे पास दूसरे काम भी कम नही है। एक हफ्ते मे मुरझाये पौधो के मारे फूल और कलिया झड जायेगे।"

आयकीज़ सोच मे पड गयी और उसका चेहरा फिर उत्साहवर्धक मुस्कान से खिल उठा।

"जब तक सास, तब तक आस, टोली-नायक। आप देख लेना, सब ठीक हो जायेगा। आप घर जाकर आराम कीजिये। क्या अस्पताल से आप काफी पहले निकल आये थे?"

"दोपहर मे छुट्टी मिली।"

"यह लीजिये! आप अपनी सेहत का खयाल ही नही रखते हैं।"

"यहा सेहत की फिक्र का मौका ही कहा है, बेटी? तुम जाओ, मैं थोडी देर काम करूँगा।"

"अधेरा हो चला है, मुरातअली-अमाकी। अब कैसा काम, रात हो चली है! आइये, मैं आपको अलतीनसाय तक छोड आती हू, और वहा से वायचीवार पर सवार होकर अपने घर कनारगाल चले जाइये। आप अलतीनसाय मे तो रात नही गुजारना चाहते है ना?

"नही, मैं घर जाऊँगा कनारगाल की याद सता रही है।"

वे जब सडक पर पहुँचे, तो आयकीज़ ने पूछा

"आपने अभी तक घर बदलने का कोई फैसला नही किया, मुरातअली-अमाकी? आपके यहा के सारे लोग गृहप्रवेश कर चुके है। और बहुत सन्तुष्ट है।"

अकेलेपन मे तो पहाड तक बारिश और हवा की मार से ढह जाता है। आप बूढ़ लोगो से थोडा दूर होकर बदजबान चुगलखोर के जाल मे फस गये है। पेड तक को भी अकेले बडी मुश्किल होती है " आयकीज कुछ याद कर चुप हो गयी और थोडी देर के सोच के बाद दुखी स्वर मे बोली "आपको शायद मालूम नही, मुरातअली-अमाकी आपका खूबानी का पेड सूख गया है।"

मुरातअली को आयकीज पर विश्वास नही हुआ, पर उसके शब्दों ने उसे जल्दी करने के लिए मजबूर कर दिया। उसने साभार उससे बायचीबार को ले लिया और शीघ्र ही कतारताल पहुँच गया। घोडे को फाटक से बाधकर वृद्ध खूबानी की ओर लपका। धरती के ऊपर शाम का धुधलका गहराने लगा था। किन्तु अधकार ने यह देखने मे बाधा नही डाली कि खूबानी का पेड सूख चुका है। पत्तिया बिना झडे टहनियों पर मुरझा गयी थी उसने दुखी मन से प्यार से निचली डाल पर हाथ फेरा। पत्तिया उसके हाथ तले से झड गयी। छाल सख्त और खुरदरी लगी। आयकीज ने सच कहा था।

बीमारी के बाद थका हुआ और गत दिन की घटनाओ से परिक्लान्त हुआ वृद्ध घिसटता हुआ बिस्तर तक पहुँचा। वह बिना बत्ती जलाये और कपडे उतारे लेट गया, पर उसे नीन्द अच्छी नही आयी, वह करवटे बदलता रहा। उसे सारी रात दुस्वप्न आते रहे।

सुबह उसके लिए अपने साथ दुख भी लायी और सान्त्वना भी। जब कमरे मे छनकर धुधला प्रकाश आया, मुरातअली उठा और उसने देखा कि घर मे कुछ भी नही छुआ गया है। हर वस्तु अपने स्थान पर थी बेटी के पलग पर सलीके से बिस्तर बिछा था मानो सकरी कही गयी ही न हो। यानी वह उस पर बेकार ही गुस्सा होता रहा था। वह अभी तक आयकीज के यहा ही रह रही है न कि नये गाव मे। उसने अभी पिता के पास लौटने का इरादा नही छोडा है।

अहाते मे निकलकर मुरातअली अपने दिल के टुकडे–पेड की दशा देखकर बस रो ही नही पडा। उसे शायद वसन्त मे ही पाला मार गया था, लेकिन मुरातअली ने इस पर ध्यान नही दिया था। वृक्ष मे अन्तिम बार पत्तिया व फूल निकलने देने का सामर्थ्य रह गया था, पर जुलाई मे वह मुरझाने लगा और सूख गया। मुरातअली

ने उसमें जितना ही पानी दिया, जितनी ही उसकी सभाल की पर उसका अन्त निश्चित था। किन्तु पिछले कुछ दिनो मे वृद्ध कतारदार विरले ही आता था और अपने वृक्ष की बहुत कम सभाल करता था।

नीचे, सामूहिक फार्म के बाग मे खूबानी के पेड अप्रभावित रहे थे, उनकी एक भी पत्ती नही गिरी थी और उन पर फल भी आ रहे थे। वे बहुत थे, एक दूसरे की सहायता करते रहे थे। मैत्रीपूर्ण और शक्तिशाली होने के कारण पाला उनके लिए भयावह नही रहा था। जब कि उसका वृक्ष अकेला और अरक्षित, नगी टहनिया लिये कोयले जैसा काला हुआ और सूखी कुचित हुई पत्तियो के साथ खडा रहा था आयकोज ने सच ही कहा था पेड तक को अकेले मे मुश्किल होती है।

मुरातअली डूबा हुआ दिल लिये काम पर निकला। लेकिन जब वह अपने खेत मे पहुँचा, वह तुरन्त नही समझ पाया कि वहाँ क्या हो रहा है। और समझने पर उसे अपनी आखो पर विश्वास नही हुआ।

खेत मे केवल उसी की टोली नही, बल्कि बेकबूला और करीम की टोलिया भी मौजूद थी। मुरातअली ने एक खेत मे इतने लोगो को मेहनत करते कभी नही देखा था। किसान खर-पतवार उखाड रहे थे, मिट्टी की गोडाई कर रहे थे और कतारो के बीच मजे मे कलकल करता पानी बह रहा था। दूर, नहर के निकट ' बहुप्रयोजन ट्रैक्टर जोर-शोर से गोडाई मे जुटे हुए थे। ट्रैक्टर केवल पोगोदिन ही भिजवा सकता था, – यानी वह भी दूसरो की मुसीबत मे अलग नही खडा रहा। ये ही हैं उसके सच्चे दोस्त, जो मुसीबत की घडी म बिना सोच-विचार किये उसकी मदद को दौड पडे हैं। मुरातअली आश्चर्य चकित रह गया, उसकी समझ मे नही आ रहा था कि वह कौन सा काम करे। वह उखाडे हुए खर-पतवार अखबार म समेटकर उन्हे सडक के पास फेक आया। लौटकर उसने कपास के पौधे के इर्द गिर्द दूहे बनाना चाहा, पर कुदाल उसके हाथो से छूटकर गिर गया। वृद्ध ने कमर सीधी करके घबराकर चारो ओर देखा। लोगो ने उसे देख लिया था, किसान सहृदय और किंचित् शरारतभरी मुस्कान के साथ उसकी ओर देख रहे थे। मुरातअली से कुछ दूरी पर आयशीम निराई कर रही थी – उस सुबह उसने भी कुदाल चलायी थी, और मुरातअली

पौधों के पास से निकलकर अपनी उद्धारक के पास गया। उसे कोई सन्देह नहीं रहा था खेत में वही लोगों को लेकर आयी थी, क्योंकि उसने उससे कोई "तरकीब" सोचने का वादा किया था। वृद्ध के कपोलों पर आंसू ढुलक रहे थे। उसने आयकीज़ को कसकर गले लगा लिया और उसे कहने को कुछ नहीं सूझ पाया।

"आप रो क्यों रहे हैं, मुरातअली-अमाकी?" आयकीज़ ने कहा और अचानक उसने स्वयं भी अपनी आंखों को नम होता महसूस किया। "अब सब ठीक तो हो चुका है।"

"तुम्हारा शुक्रिया, बेटी," मुरातअली ने कहा। "मैं अपनी आखिरी सांस तक इसे नहीं भूलूंगा"

"शुक्रिया किस बात का? यह तो सब करीम और केक्बूता ने किया है। मैंने आप पर आयी मुसीबत के बारे में आलिमजान को बताया था, पर मालूम हुआ कि उसने हर काम का इन्तज़ाम पहले ही कर लिया था। उन्होंने कल ही टोली-नायकों से सलाह की थी, केक्बूता और करीम ने उनसे अपने यहां काम निबटाने के बाद आपके खेत में भी काम करने का वादा किया था। आप खुद ही देख रहे हैं, मुरातअली-अमाकी, उन्होंने अपना वादा निभाया है! केक्बूता ने आलिमजान से यही कहा था 'पड़ोसी पर मुसीबत आयी,– यानी मुझ पर मुसीबत आयी'।"

"तुम्हारे बापों को तुम पर ज़रूर गर्व होता!" मुरातअली ने गद्गद कंठ से कहा। "खुदा करे तुम्हारे भी तुम और आलिमजान जैसे समझदार और नेक बच्चे हों!"

आयकीज़ का चेहरा किंचित् लाल हो उठा और उसने अपनी घबराहट छिपाने के लिए सलाह दी

आपको अपनी बेटी के पास जाना चाहिए, मुरातअली-अमाकी। वह वहां है, देख रहे हैं? और करीम भी वहीं है। उन पर गुस्सा मत कीजिये। वे दोनों जवान हैं और उनके विचार गरम कदमवालों के से हैं रास्ते की परवाह किये बिना सरपट भागते हैं।"

"मेरे दिल में उनके लिए बिलकुल भी गुस्सा नहीं है। जवानी तो फूल की कली जैसी होती है कली खिलने के लिए होती है, जवानी खुशकिस्मती और प्यार के लिए।"

वृद्ध पानी के ऊपर झुका ही था कि अचानक उसे कुछ दूरी से घोड़े की हल्की टापें सुनाई दे गयीं। मुरातअली ने मुड़कर देखा। अंधेरा था, पर धुंधलका छटने लगा था और वृद्ध टोली-नायक की पैनी नज़र उषा-पूर्व के आकाश की पृष्ठ-भूमि में कठिनाई से दृष्टिगोचर होनेवाली घुड़सवार की आकृति पर पड़ गयी। घुड़सवार नहर के किनारे-किनारे स्तेपी की ओर जानेवाली पगडण्डी पर सरपट दौड़ा चला जा रहा था। वह घोड़े को पूरी रफ़्तार से दौड़ा रहा था। यह इतने तड़के कहाँ जाने की जल्दी में है?

'ऐ! कौन है?' मुरातअली ने पुकारा और उसकी आवाज़ चारों ओर छाये सन्नाटे में ज़ोर से गूंज उठी।

आवाज़ सुनकर घुड़सवार ने झटके से घोड़ा मोड़ लिया और नहर से दूर जाने लगा। मुरातअली इससे सतर्क हो उठा और बिना समय गंवाये किनारे से नीचे उतर आया। पास ही में उनकी टोली का एक घोड़ा चर रहा था। वृद्ध ने उसका छदना खोल दिया और रस्सी उठाकर पलक झपकते ही वह सन्देहास्पद अपरिचित के पीछे सरपट घोड़ा दौड़ा रहा था। वह घोड़ा काफ़ी अरसे से गाड़ी में जोता जा रहा था, पर उसकी पुरानी चुस्ती अभी गयी नहीं थी, वह सहज़ता से भाग रहा था पर अजनबी का घोड़ा शायद अड़ रहा था, इसलिए उसके और मुरातअली के बीच का फ़ासला उत्तरोत्तर कम होता जा रहा था। आगे जा रहे घुड़सवार ने अचानक फिर घोड़ा मोड़ दिया वह घोड़े को खेत से अछूती धरती की ओर दौड़ाने लगा। मुरातअली उसका रास्ता काटकर उसके काफ़ी नज़दीक पहुँच गया, जिससे कि घुड़सवार को ठीक से देख सके। उसे बहुत आश्चर्य हुआ और रोष आया, जब उसने पहचान लिया कि भगोड़ा गफ़ूर है और घोड़ा, जिस पर वह सवार था, बायचीबार है।

तो यह बात है! इस नीच ने शायद अंधेरी रात की आड़ में सामूहिक फ़ार्म से, आयकोज़ के यहाँ से उसका प्यारा तेज़ घोड़ा उड़ाने और साथ ही भानजी का बुरा करने की ठानी है। आसार ऐसे लग रहे थे कि वह जल्दी से जल्दी लोगों की आखों से ओझल होने की कोशिश करता किज़िलकूम की ओर जा रहा है।

"ठहर! ठहर, शैतान!" मुरातअली फिर चिल्लाया।

गफ़ूर ने बिना घोड़ा रोके मुड़कर देखा और बूट के मोज़े में से छुरा निकालकर वृद्ध को धमकाया।

रात की धुंध तेज़ी से छट रही थी, मुरातअली के लिए भगोड़े की हर चेष्टा पर नज़र रखना आसान हो गया। गफ़ूर बड़ी बेरहमी से बायचीबार के पहलुओं में अपने नर्म बूट मार रहा था, और घोड़ा ज़ोर से हिनहिनाकर रोष प्रकट करता कमान से छूटे तीर की तरह हवा से बातें कर रहा था। लेकिन मुरातअली का घोड़ा भी बायचीबार से पीछे नहीं रह रहा था। वह कनौतिया दबोचे भागा आ रहा था और वृद्ध चलते-चलते रस्सी से बनायी कमंद से उसे केवल यदा-कदा ही मार रहा था।

फिर भी उसे कमंद का इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। गफ़ूर का रास्ता पुरानी ज़मीन से अछूती धरती को आनेवाली नाली ने रोक दिया था। गफ़ूर ने घोड़े को टिटकारते हुए उसकी गरदन पर मुक्का मारा, बायचीबार ने पिछली टांगों पर खड़े होकर सवार को गिरा दिया और नाली फांद गया। दूसरे किनारे पर पहुँचकर वह जड़वत् खड़ा हो गया, कान हिलाता, मानो ध्यानपूर्वक कुछ सुन रहा हो और अयाल झड़कारकर निढाल हुआ धीरे-धीरे गांव की ओर जाने लगा

गफ़ूर ने खड़े होकर धूल भरी आंखें मलकर देखा, तो घोड़े से कूदकर उतरे मुरातअली को अपने पास पाया। अपराधी भागने ही वाला था कि वृद्ध ने उसकी आस्तीन कस कर पकड़ ली।

"तूने यह क्या किया, नीच? "

गफ़ूर जैसे तभी वृद्ध को पहचाना और धृष्टतापूर्ण घनिष्ठता दिखाते हुए चिल्लाया

"अहा, तुम हो, टोली-नायक? खुदा का शुक्रिया! मैं तो सोचने लगा था कि कोई डकैत मेरा पीछा कर रहा है।"

"तू खुद डकैत है! चोर था और चोर ही रह गया। मैं तेरी पापी आत्मा को अच्छी तरह जानता हूँ। ग्राम सोवियत चल, लफंगे, वहाँ तुझे तेरे किये की सज़ा मिल जायेगी! "

गफ़ूर ने टोली-नायक की पकड़ से छूटने के लिए उसे झटका

, पर मुरातअली की पकड़ शिकंजे जैसी थी। गफ़ूर के चेहरे

मे ढीठ मुस्कान काफूर हो गयी और उसकी आंखें चोर की तरह चलने लगी। वह चापलूसी करता, मिन्नत करता उसे मनाने लगा

"चिल्लाओ मत, दोस्त! चिल्लाने की क्या जरूरत है? हम तुम तो पुराने दोस्त हैं "

"तुम्हारे जैसा दोस्त दुश्मन से भी ज्यादा खतरनाक होता है।"

"अरे, अरे, ऐसा क्यों कहते हो? तुम्हारे दुश्मन तो अलती-नमाय में हैं। तुम्हारे दुश्मन तो वे है, जिन्होंने तुम्हें तुम्हारे घर और बेटी से महरूम करने की ठान ली है। मैं तो हमेशा तुम्हारा भला चाहता रहा हूँ "

"तुम्हारी भलाई से ही हमारी कपास सूखी है।"

"कपास तो तुम्हारी नहीं, सामूहिक फार्म की है। और तुम्हारा तो मैं हमेशा दोस्त रहा हूँ। अकेला मैं ही समझता था कि क्नारताल तुम्हें कितना प्यारा है। जरा याद करो, जब लोग तुम्हारे घर बदलवाने के लिए तुम्हारे पीछे पड़े हुए थे, तो किसने तुम्हारी तरफदारी की थी, किसने तुम्हें नेक सलाह दी थी।"

"सलाहों के लिए शुक्रिया, गफूर," टोली-नायक ने व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा, "शुक्रिया! उनसे मुझे फायदा हुआ। तुम अगर किसी काम के खिलाफ हो, तो, – इसका मतलब है, वह काम अच्छा है, करने लायक है अब मैंने घर बदलने का फैसला कर लिया है।"

"अरे, अरे! क्या तुम भी उनके इशारों पर नाचने लगे?"

"तो क्या तुम सोच रहे थे कि मैं हमेशा तुम्हारे जैसों की बात मानता रहूँगा? अधा लकड़ी एक ही बार खोता है! मेरी आंखें खुल गयी हैं, अब मैं अच्छे और बुरे में फर्क कर सकता हूँ।"

"तुम मुझे कितने सालों से जानते हो, मुरातअली

"मैं जानता हूँ कि तुम चोर हो, खोलचेवाले और बटमार हो!"

"ठहर जरा " गफूर फुसफुसाया। "ठहर "

गफूर ने यह बातचीत केवल कुछ समय मिलने और मुरातअली का ध्यान बटाने के लिए ही छेड़ी थी। उपयुक्त अवसर मिलते ही उसने वृद्ध को टंगड़ी मारकर छाती में धक्का दे दिया, और मुरातअली

कार रहे थे   मुरातअली ने उसे खा जानेवाली निगाहों से देखकर थूका और मुह फेरकर एक ठण्डी सास ली।
"यह इनसान नही है   खर-पतवार है, अमरबेल है। इसे उखाडकर जला देना चाहिए, जिससे इसका नामों-निशान तक मिट जाये   "

तैतिस

संघर्ष जारी रहा

दिन बीतते गये, सप्ताह बीतते गये, शरद-ऋतु – फसल उठाने का मौसम, उस व्याकुलता का मौसम आ गया, जो सारे जनतत्र मे व्याप्त हो जाती है। उजबेकिस्तान मे रहनेवाला कोई भी व्यक्ति कैसा भी काम क्यो न करता हो, किसी भी जगह काम क्यो न करता हो, इन दिनो वह यही सोचता रहता है कि सामूहिक फार्मो ने कितनी कपास चुनी है, सरकार को जो तीस लाख टन कपास देने का वायदा किया गया है, क्या उसमे अभी काफी कम पड रही है। इन दिनो सब लोग समाचारपत्रो मे छपनेवाले ताजा बुलेटिनो पर नजर रखे हुए हैं। उनमे बताया जाता है कि हर प्रात मे कपास की चुनाई कैसी चल रही है। वैज्ञानिक तथा लेखक रेडियो के पास बैठकर ध्यानपूर्वक समाचार सुनते हैं, मजदूर कारखानो मे अवकाश के समय मे समाचारपत्र-पट्टो के पास भीड लगाकर जोरदार बहस मे उलझे रहते है कि इस वर्ष कौन-सा प्रात प्रथम स्थान पर रहेगा। विद्यार्थी लेक्चर सुनने के लिए जाते हुए लाउडस्पीकरो के पास रुककर सच्ची उत्साहपूर्ण रुचि के साथ कपास की चुनाई के बारे मे बातचीत करने लगते हैं। बाहर से आये लोग भी इस व्याकुलता से अप्रभावित नही रहते है और समाचारपत्र खरीदते समय उनकी नजरे भी उसी सूचना को ढूढती रहती हैं।
इन दिनो बातचीत का मुख्य विषय, चिन्ताओं व खुशियो का मुख्य कारण, मुख्य समस्या, मुख्य शौक-कपास ही होती है।
शरद-ऋतु! सुखद, आनन्दनीय और परिश्रम का समय!

"मेरा मूड हमेशा जैसा है।"

"सच, इवान बोरिसोविच? लेकिन मुझे लगता है कि मेरी बातो के बाद तुम्हारा दिल जरा जोर से धडकने लगा है।"

"मेरा इजन हमेशा एक-सा चलता है," पोगोदिन ने किंचित् बेढब मजाक किया, लेकिन आयकीज से छिपाने की इच्छा उसे नही हो रही थी और उसने साफ-साफ कहा "बस अभी उसमे कुछ गडबड हुई है। न जाने किसने ईजाद की है इन जुदाइयो की!"

"दुखी मत होओ, इवान बोरिसोविच, मिलन भी उतना ही सुखद होगा! इसका मुझे अनुभव है।"

पोगोदिन अपने ट्रैक्टर-चालको के पास चला गया। जुराबायेव और आयकीज कपास के खेतो की ओर चले गये।

"मैने सुना है, आयकीज, कि तुम्हारे नाम की सिफारिश जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष पद के लिए की जा रही है," जुराबायेव ने कहा। "मै समय से पहले इस बारे मे नही बताना चाहता था, पर रहा न जा सका।"

"मेरे नाम की ही क्यो?" आयकीज घबडाकर कह उठी। "मै नही निभा पाऊगी, कामरेड जुराबायेव। "मुझे बहुत कम अनुभव है।"

"निभा लोगी! इसमे सवेदनशील दिल की ज्यादा जरूरत है, न कि अनुभव की। ऐसे दिल की जरूरत है, जो लोगो की आवश्यकताओ को भाप सके! और अनुभव तो काम करते हुए हो जायेगा। पहले काम, फिर अनुभव – जिन्दगी मे यही तो होता है ना, न कि इसका विपरीत?"

वे टेकरी पर चढ गये, जहा से कादीरोव कभी अपने इलाके का पर्यवेक्षण किया करता था।

दायी ओर जुती हुई अछूती स्तेपी जमे हुए काले लावा की तरह फैली हुई थी।, वह दूर-दूर तक चली गयी थी। वही उसके दूरस्थ छोर पर ट्रैक्टर एक के बाद एक नये हेक्टेयर जोतते हुए कर्मनिष्ठ चीटियों की तरह रेग रहे थे। इन गरमियो के दौरान स्थापित स्तेपी की बस्तियां अभी तक प्रखर और धधकते शरत्कालीन सूरज की किरणो मे उत्सव के लिए सजी-धजी-सी लग रही थी।

कपास के गोदामो मे मैत्रीपूर्ण व बुद्धिमत्तापूर्ण श्रम से उत्पन्न कपास के पहाड़ निरन्तर ऊँचे होते जा रहे थे।

आयकीज़ को टेकरी से वे प्रत्येक पाच-छ सौ टन के कपास के कोक्ताऊ जितने ऊँचे और उसकी हिमाच्छादित शिखरो जैसी सफेद भीमकाय टाले दिखाई दे रही थी।

आयकीज़ मंत्रमुग्ध-सी खड़ी रही। गरम हवा के झोके उसके छीट के साधारण कुरते की सलवटो, चोटियो को ढक नही रहे हल्के रूमाल और फूल की पखडियो को, जिसे उसने सफेद जाकेट पर लगा लिया था, हिला रहे थे।

उसकी उमग भरी तंद्रा को आलिमजान ने भग किया। उसने जुराबा-येव के पास आकर उससे हाथ मिलाया और किंचित् उलाहना भरी चिन्ता व स्नेहमिश्रित दृष्टि पत्नी पर डाली उसे लगा कि आयकीज़ अपना ख़याल नही रखती है, आराम कम करती है अपने को हद से ज्यादा थका लेती है

"क्या हाल है, अध्यक्ष?" जुराबायेव ने पूछा। 'क्या खुशख़बरी सुनाओगे?"

"चुनने का काम पूरा होने जा रहा है, कामरेड जुराबायेव। अपनी प्रतिज्ञाएँ हम पूरी कर लेगे।"

"शाबाश! इसका मतलब है कि सुलतानोव और उसके दोस्त बेकार ही हल्ला मचा रहे थे आधी छोड सारी को धाये, आधी रहे न सारी पाये। लेकिन लोग उनसे कही चतुर और साहसी सिद्ध हुए हैं!"

"हम इससे बेहतर फसल उगा सकते थे " आयकीज़ ने कहा।

"सच, कामरेड जुराबायेव!" आलिमजान ने समर्थन किया। "अगर हमारे काम मे रोड़े न अटकाये जाते, तो हम इससे ज्यादा कपास पैदा कर सकते थे। मुल्ला-सुलैमान के खेत में बहुत सारी कपास बरबाद हो गयी, मुरातअली के खेत मे भी कुछ फूल झड गये। हमे न तो आंधी ने परेशान किया, न श्रम शक्ति की कमी ने, न और किसी मुश्किल ने, परेशान किया उन लोगो ने, जो इन परेशानियो की दुहाई देकर हमे डरा रहे थे।"

मनगढ़त मुश्किले पैदा करके परेशान कर रहे थे!" जुराबायेव

ने भी बोलना शुरू कर दिया। "पहले तो हममें बहस चलते रहे सैद्धान्तिक आधार पर बहस करते रहे, और फिर जान-बूझकर रोड़े अटकाने लगे। इसका भी आधार नहीं है। अगर गफ्फूर और कट्टरवादी किसी नये काम का विरोध करता है, तो उसके लिए सदस्यों की सहायता लेना जरूरी हो जाता है। आखिर वह हमारी वास्तविकता के नियमों का मुकाबला और कर ही कैसे सकता है? जो नये जीवन के लिए संघर्ष करता है, वह सार्वजनिक हित का ख्याल रखता है। जिसे नया काम पसन्द नहीं होता, जिसे उसमें अपनी शान्ति के लिए खतरा नजर आता है, वह केवल अपनी और किसी न किसी तरह अपने विशेषाधिकारों को सुरक्षित रखने की ही सोचता रहता है। जब शान्त जीवन का ऐसा प्रेमी किसी दुस्साहसपूर्ण योजना के विरुद्ध संघर्ष छेड़ता है, तो वह नहीं सोचता—कहीं वह लोगों के अपने सुखसमृद्धि के लिए संघर्ष में बाधा तो नहीं डाल रहा है? वह साधनों के बारे में चिन्ता नहीं करता, जनता पर आयी विपत्ति तक का लाभ उठाने को तैयार रहता है, उसमें उसे फायदा होता है। अगर आधी सारी कपास चौपट कर देती, तो हमारी योजना के विरोधी खुशी से उछलने लगते 'अहा, देख लिया ना नतीजा। तुम हो ही इसी लायक।' आदमी एक क्षण के लिए भी जनता के और उसके हितों को भूलने पर, हमारे कार्य के लक्ष्य को भूलने पर, यह भूलने पर कि हम किसके लिए, किसकी खातिर जीते हैं, काम करते हैं, संघर्ष करते हैं, गिर कर कहाँ पहुँच जाता है! क्या कहा, मुरात-अली के यहाँ भी कपास बरबाद हो गयी?"

"उनके यहाँ नुकसान मामूली हुआ है," आयजीज ने कहा, "लेकिन यह सारा किस्सा कुछ अजीब-सा लगता है आपको याद है, आपने मुझसे अलीकुल के बारे में पूछा था?"

"कुछ याद नहीं आ रहा है लेकिन उसका इसमें क्या वास्ता?"

"मुरातअली ने अपने कल्पित शत्रुओं के विरोध करने के बावजूद गफूर को टोली-नायक बना दिया था। मुरातअली के कहे अनुसार अलीकुल ने इस नियुक्ति का समर्थन किया था। लेकिन इस बारे में जब मैंने खुद अलीकुल से पूछा, तो उसने इससे साफ इनकार कर दिया।"

"सचमुच, बड़ी अजीब बात है। इस बारे में तो तुम्हारा क्या ख़याल है?"

"मुझे मुरातअली पर विश्वास है। उसका मिजाज जरा टेढ़ा है, पर वह आदमी ईमानदार है। वह अलीशुन पर लाठन नहीं लगा सकता था।"

"मानो अलीशुन चालबाजी कर रहा है?"

"कह नहीं सकती कुछ दिनों से मैं उस पर नजर रखे हुए हूँ।"

"देखो, कहीं जरूरत से ज्यादा विश्वासप्रवण होने के कारण जरूरत से ज्यादा सन्देह न करने लगो। हो सकता है वह गफूर के मामले में धोखा खा गया हो और अपनी गलती मानने का साहस नहीं कर पा रहा हो। बेशक इससे वह किसी तरह दोषमुक्त नहीं हो जाता क्योंकि इस गलती से ही सामूहिक फार्म को काफी हानि उठानी पड़ी है। हर गलती, हर लापरवाही के परिणामस्वरूप काफी आर्थिक हानि होती है। अगर सामूहिक फार्म के स्वामी अच्छे नहीं है तो सामूहिक किसान को अपनी मेहनत का पूरा फल नहीं मिलता सरकार को नुकसान उठाना पड़ता है। कोई बेवकूफ अधिकारी कामचोर को या बदमाश को काम सौंपता है, तो भी भुगतना जनता और सरकार को ही पड़ता है। केवल योजना पूरी करने की चिन्ता करते हुए अगर किसी कारखाने का निदेशक किसी विवेकपूर्ण सुझाव को खटाई में डाल देता है, तो इस तरह वह सरकार को होनेवाली अतिरिक्त आय को गवा देता है। अगर कोई बातूनी अपने बेसिरपैर का भाषण देकर लोगों का ध्यान बटा देता है, तो इसका मतलब है वह उनका समय बरबाद करता है, वास्तविक सुख-सुविधाओं की वस्तुओं के उत्पादन में बाधा डालता है। गवाये गये अवसर, जिस पर इन अवसरों का समय पर लाभ नहीं उठाया जाये तो–यह भी अपव्यय है। अगर तुम आज कुछ लाभदायक काम कर सकते थे, पर तुमने नहीं किया,–इसका मतलब है कि सामूहिक किसान अपने लिए मोटरसाइकिल कल नहीं, बल्कि देर से खरीद पायेगा, कामगार का वेतन नहीं बढ़ेगा। हम कहते हैं यह आदमी ढग से काम नहीं करता लेकिन इस तरह यह खुद, शायद अनचाहे ही, पर वास्तव में, जनता को लूटता है।

ने भी सोचना शुरू कर दिया। "पहले तो हमसे बहस करते रहे सैद्धान्तिक आधार पर बहस करते रहे, और फिर जान-बूझकर रोड़े अटकाने लगे। इसका भी अपना तर्क है। अगर कट्टर और रूढ़िवादी किसी नये काम का विरोध करता है, तो उसके लिए षड्यंत्रों की सहायता लेना जरूरी हो जाता है। आखिर वह हमारी वास्तविकता के नियमों का मुकाबला और कर ही कैसे सकता है? जो नये जीवन के लिए संघर्ष करता है, वह सार्वजनिक हित का ध्यान रखता है! जिसे नया काम पसंद नहीं होता, जिसे उसमें अपनी शान्ति के लिए खतरा नजर आता है, वह केवल अपनी और किसी न किसी तरह अपने विशेषाधिकारों को सुरक्षित रखने की ही सोचता रहता है। जब शान्त जीवन का ऐसा प्रेमी किसी दुःसाहसपूर्ण योजना के विरुद्ध संघर्ष छेड़ता है, तो वह नहीं सोचता—कहीं वह लोगों के अपने मुनाकिस्मती के लिए संघर्ष में बाधा तो नहीं डाल रहा है? वह साधनों के बारे में चिन्ता नहीं करता, जनता पर आयी विपत्ति तक का लाभ उठाने को तैयार रहता है, उससे उसे फ़ायदा होता है। अगर आधी सारी कपास चौपट कर देती, तो हमारी योजना के विरोधी खुशी से उछलने लगते 'अहा, देख लिया ना नतीजा। तुम हो ही इसी लायक।' आदमी एक क्षण के लिए भी जनता के और उसके हितों को भूलने पर, हमारे कार्य के लक्ष्य को भूलने पर, यह भूलने पर कि हम किसके लिए, किसकी खातिर जीते हैं, काम करते हैं, संघर्ष करते है, गिर कर कहाँ पहुँच जाता है! क्या कहा, मुरात-अली के यहाँ भी कपास बरबाद हो गयी?"

"उनके यहाँ नुकसान मामूली हुआ है," आयकीज़ ने कहा, "लेकिन यह सारा क़िस्सा कुछ अजीब-सा लगता है आपको याद है आपने मुझसे अलीकुल के बारे में पूछा था?"

"कुछ याद नहीं आ रहा है लेकिन उसका इससे क्या वास्ता?"

"मुरातअली ने अपने कल्पित शत्रुओं के विरोध करने के बावजूद गफ़ूर को टोली-नायक बना दिया था। मुरातअली के कहे अनुसार अलीकुल ने इस नियुक्ति का समर्थन किया था। लेकिन इस बारे मे जब मैंने खुद अलीकुल से पूछा, तो उसने इससे साफ इनकार कर दिया।"

"सचमुच, बड़ी अजीब बात है। इस बारे में तो तुम्हारा क्या खयाल है?"

"मुझे मुरातअली पर विश्वास है। उसका मिजाज जरा टेढ़ा है, पर वह आदमी ईमानदार है। वह आलीतुन पर लांछन नहीं लगा सकता था।"

"यानी अलीतुन चालबाजी कर रहा है?"

"कह नहीं सकती कुछ दिनों से मैं उस पर नजर रखे हुए हूँ।"

"देखो, कहीं जरूरत से ज्यादा विश्वासप्रवण होने के कारण जरूरत से ज्यादा सन्देह न करने लगो। हो सकता है वह गफूर के सामने में धोखा खा गया हो और अपनी गलती मानने का साहस नहीं कर पा रहा हो। बेशक इससे वह किसी तरह दोषमुक्त नहीं हो जाता क्योंकि इस गलती से ही सामूहिक फार्म को काफी हानि उठानी पड़ी है। हर गलती, हर लापरवाही के परिणामस्वरूप काफी आर्थिक हानि होती है। अगर सामूहिक फार्म के स्वामी अच्छे नहीं हैं, तो सामूहिक किसान को अपनी मेहनत का पूरा फल नहीं मिलता, सरकार को नुकसान उठाना पड़ता है। कोई बेवकूफ अधिकारी कामचोर को या बदमाश को काम सौंपता है, तो भी भुगतना जनता और सरकार को ही पड़ता है। केवल योजना पूरी करने की चिन्ता करते हुए अगर किसी कारखाने का निदेशक किसी विवेकपूर्ण सुझाव को खटाई में डाल देता है, तो इस तरह वह सरकार को होनेवाली अतिरिक्त आय को गवा देता है। अगर कोई बातूनी अपने बेसिरपैर का भाषण देकर लोगों का ध्यान बटा देता है, तो इसका मतलब है, वह उनका समय बरबाद करता है, वास्तविक सुख-सुविधाओं की वस्तुओं के उत्पादन में बाधा डालता है। गवाये गये अवसर, जिस पर इन अवसरों का समय पर लाभ नहीं उठाया जाये तो – यह भी अपव्यय है। अगर तुम आज कुछ लाभदायक काम कर सकते थे, पर तुमने नहीं किया, – इसका मतलब है कि सामूहिक किसान अपने लिए मोटरसाइकिल कल नहीं, बल्कि देर से खरीद पायेगा, कामगार का वेतन नहीं बढ़ेगा। हम कहते हैं यह आदमी ढंग से काम नहीं करता लेकिन इस तरह वह खुद, शायद अनचाहे ही, पर वास्तव में, जनता को लूटता है।

काम, अभी इस बारे में सोच रहे   बैठे, लगता है, मैं खुद भी तुम्हारा बहुमूल्य समय बरबाद कर रहा हूँ। तुम इस वक्त कहाँ जा रहे हो, आलिमजान?"

"कपास चुननेवाली मशीनों के काम की जाँच करना चाहता हूँ। सामूहिक किसान अभी उनके आदी नहीं हो पाये हैं। उन्हें मशीनों की श्रेष्ठता का कायल करना चाहिए। दिल दुखता है, जब किसानों को झुककर कपास चुनते देखता हूँ।"

"तुम्हारी बात समझता हूँ, आलिमजान। मुझे तो आजकल सपने में भी मशीनें दिखाई देती हैं। तुम्हें कोई जरूरी काम तो नहीं है, आयकोज? चलकर नया गाँव न देख लें?"

"अपने गाँव की तारीफ करने की खातिर तो यह सारी दुनिया छोड़कर जाने को तैयार रहती है," आलिमजान हँस पड़ा। "मैं शाम को खेत-कैंप में जाऊँगा, आयकोज। वहाँ आ जाना। अपने साथ कामरेड जुराबायेव को भी लेती आना, साथ खाना खायेंगे।"

जुराबायेव और आयकोज नयी बस्ती के लिए रवाना हो गये।

जिला समिति का सचिव चौड़ी, सीधी और दोनों किनारों पर पेड़ लगे रास्ते से जा रहा था। वह कुतूहलवश नये, मजबूत आरामदेह, पत्थर की नींव और उजली स्लेट की छतोंवाले घरों पर नजर डालता जा रहा था। दीवारों पर सफेदी की हुई थी, हर घर के पास बिजली का खंभा था – बस्ती का विद्युतीकरण हो चुका था।

"किसी के घर में झाँक लें?"

"सब काम पर हैं, कामरेड जुराबायेव।"

"लेकिन यह बाग में कौन खटर-पटर कर रहा है?"

"मुरातअली हैं। वह देर तक अड़े रहे थे, लेकिन अब खाली वक्त मिलते ही घर लौट आते हैं, क्योंकि घर अब नजदीक है। इसे सुधारने में लगे रहते हैं। उनके पास चलते हैं।"

मुरातअली अकेला नहीं था। उसने आज हलीम-बाबा को अपने यहाँ बुलाया था। दरमियाने कद, सकरे कंधोंवाला बागवान नये बूट और खुला सफेद चोगा पहने हुए था और मुरातअली द्वारा एक दिन पहले खोदे गये गड्ढों में पौधे रोप रहा था, जब कि गृहस्वामी नाली झुका कुछ धो रहा था।

"कभी थकान न हो!" जुराबायेव ने कहा।

"कभी थकान न हो!" आयकीज ने कहा।

वृद्धो ने चोगो के पल्लो से हाथ पोछे और आगन्तुको के पास आकर उनसे बाअदब दुआ-सलाम की।

"नयी जगह में कैसी कट रही है, मुरातअली-अमाकी?" आयकीज ने पूछा।

"शुक्रिया, बेटी। देखो, अब मेरे यहा खूबानी के कितने पेड हो गये है। यहा की मिट्टी अच्छी है, पानी बहुत है। 'तुम्हारा खूबानी का पेड सौ बरस फले-फूले,' मेरे अब्बा मुझसे कहते थे। और मैं खुद भी, बेटी, सौ बरस जीना चाहता हूँ कम्युनिज्म देखना चाहता हूँ!"

"जरूर देख लेंगे, मुरातअली-अमाकी!"

"देख लूगा," मुरातअली ने सहमति व्यक्त की। "अगर यही रफ्तार रही, तो इसी साल मे देख लूगा! अफसोस, तुम्हारे अब्बा खुशी के ये दिन देखने तक न जी सके "

आयकीज़ की आखे धुधला गयी। जुराबायेव ने मुरातअली से पूछा।

"आप वहा क्या धो रहे थे, टोली-नायक?"

"बाप रे बाप, यह तो सन्दाल है!" आयकीज आश्चर्य कह उठी। "इसे आप नये घर मे किस लिए उठा लाये, मुरातअली-अमाकी? आपके यहा अगीठी तो है।"

नाली के किनारे पर वास्तव मे धूल भरा, कालिख लगा और शायद बरसो स्वामी की सेवा करनेवाला सन्दाल रखा था। मुरातअली ने हठपूर्वक कहा

"मुझे सीख देने के लिए तुम अभी छोटी हो, बेटी। अगीठी अगीठी ही होती है, लेकिन बूढे बिना सन्दाल के बिलकुल नही रह सकते।"

आयकीज़ को हसी भी आयी और दुख भी हुआ

अभी कुछ समय पूर्व उसकी आखो के आगे निस्सीम स्तेपी फैली हुई थी। जब वह निस्सीम विस्तार को देख रही थी, उसे लग रहा था जैसे वह भविष्य में झाक रही हो। मुरातअली ने ठीक कहा उन्होने

इस वर्ग भोरम्य और कम्युनिज्म की ओर एक [illegible] और ...
उठाया है! पर इसी मुगलमनी ने अपने आनेवाले कल में अपने साथ पुराने जमाने की निशानी – गन्दार को लेकर पदार्पण करने का निश्चय किया है!

अच्छी धरती कृषि योग्य बनाई जा चुकी है, किन्तु संघर्ष समाप्त नहीं हुआ है, आयरीज! तुम्हें और तुम्हारे मित्रों को अभी तुम्हारे कुछ गांववालों के आत्मघाती मंसों को दुबारा जोतना और उनकी निराई करना बाकी है। तुम्हें आगे बहुत से कठिन कार्य करने हैं! लेकिन क्या तुम्हें कठिनाइयों से डरना चाहिए, आयरीज? तुम्हारे साथ तुम्हारे हजारों लाखों विश्वसनीय सहयोगी हैं। तुम यह जानती हो इसी कारण इतनी स्फूर्तिमान हो और सफलता के बारे में इतनी आश्वस्त हो। तुम्हें आनेवाले दिनों और दूर भविष्य में नयी योजनाएं व उपलब्धियां, संघर्ष व विजय दृष्टिगोचर हो रहे हैं

कभी थकान न हो, प्रिय मित्रो!

१९५३-१९५८

लेखक और उनके उपन्यास के बारे में

शराफ रशीदोव – उज्बेकी लेखक, लब्ध-प्रतिष्ठ सोवियत पार्टी कार्यकर्ता तथा राजनेता हैं।

सन् १६१७ की अक्तूबर क्रान्ति के समवयस्क लेखक का जन्म एक निर्धन किसान परिवार मे हुआ था और वह बचपन से ही मेहनत करने के आदी हो गये थे।

साहित्य एवं लोक-कला मे भावी लेखक की रुचि बाल्य-काल मे ही जाग उठी थी। तत्पश्चात् उन्होंने समरकन्द विश्वविद्यालय के भाषा-शास्त्र सकाय में अध्ययन किया, स्कूल मे शिक्षक रहे, प्रान्तीय समाचारपत्र में कार्य किया और काव्य-सृजन के प्रथम प्रयास किये महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के आरम्भ में शराफ रशीदोव स्वेच्छा से मोर्चे पर गये। गम्भीर रूप से घायल होने के बाद वह फिर पत्रकारिता के क्षेत्र मे कार्य करने लगे, काव्य-रचना करने लगे।

शराफ रशीदोव के जीवन-पथ के यही भूमि-चिन्ह हैं, जिनसे उन्हे मानव-भाग्य का ज्ञान, अपने समकालीनो के विचारो एवं आकाक्षाओं की गहरी समझ प्राप्त हुई।

शराफ रशीदोव ने अपनी साहित्य-सर्जना कवि की हैसियत से आरम्भ की। सन् १६४५ के विजयमान वर्ष मे उनका फासिस्टवाद के प्रति घृणा, मातृभूमि से उत्कट प्रेम और अपने हमकदम सैनिक मित्रों के शौर्य के प्रति प्रशंसा के भाव से ओत-प्रोत प्रथम कविता संग्रह "मेरा रोष" प्रकाशित हुआ।

समय लेखक को जीवन की गहराई में जाकर विश्लेषण करने के लिए बाध्य कर रहा था। शराफ रशीदोव अपनी सृजनात्मक जीवनी की मुख्य विधा गद्य मे अधिकाधिक लिखने लगे।

शराफ रशीदोव की प्रमुख साहित्यिक कृतियों – उनके उपन्यासों

विभिन्न [illegible] पुराने [illegible] [illegible] [illegible] 'दुनिया [illegible]' का [illegible] [illegible] [illegible] पर वर्णन किया है। यहाँ प्रत्येक जातियों के प्रतिनिधियों की एकता के सूत्र में बंधा [illegible] सुदृढ़ कार्य कर रहा होता है। [illegible] उज़्बेकों [illegible] सोवियत संघ की अनेक जातियों के प्रतिनिधियों की एकजुटता का वर्णन करते हुए संसार को [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] अपनी धरती का कृषि योग्य बनाने और व पानी प्राप्त करने के लिए सभी विशाल [illegible] व [illegible] के निर्माण [illegible] में मिलती है। एक पुरानी उज़्बेकी कहावत है विजय की शक्ति उसके पंखों में होती है आदमी की – दोस्ती में। [illegible] के विभिन्न जातियों के [illegible] का जीवन एक सा है नक्शा व समस्याएँ एक हैं – वे सहयोगी हमवतन और एक विशाल मैत्रीपूर्ण परिवार के सदस्य हैं।

लेखक की साहित्यिक रचनाओं व लेखों का मुख्य विषय विभिन्न जातियों की मैत्री मानवता की सुख समृद्धि शान्ति व उन्नति के लिए संघर्ष है।

सोवियत उज़्बेकिस्तान की राजधानी पर आयी भयानक प्राकृतिक विपदा – भूकम्प के बारे में शराफ रशीदोव ने लिखा है ताशकन्द में कठिन परीक्षा के दिनों में हमने भली-भांति जान लिया कि बंधुत्व और परस्पर सहयोग ही हमारी शक्ति के अपार स्रोत हैं। ताशकन्द में हमें विभिन्न जातियों की मैत्री का एक जीवन्त व सुन्दर उदाहरण देखने को मिला।

शराफ रशीदोव के लेखन कार्य का राजनीतिक एवं सरकारी गतिविधियों के साथ सफल सामंजस्य रहता है। वह शान्ति एवं विभिन्न जातियों के बीच मैत्री के सक्रिय सेनानी हैं और अनेक बार एशिया व अफ्रीका के देशों के लेखकों के सम्मेलनों में भाग ले चुके हैं।

"अपनी रचनाओं में, सोवियत लेखक व० कोभेवनिकोव बल देकर कहते हैं, शराफ रशीदोव उत्साही व दृढ़निश्चयी अन्तर्राष्ट्रीयतावादी, जातियों की मैत्री के सेनानी की हैसियत से अपने विचार व्यक्त करते हैं, जो उनकी कृतियों को विशिष्ट तीव्र व आधुनिक गूंज प्रदान करते हैं। उनका सन् १९६७ में प्रकाशित तथा सोवियत जनों व जातियों की एकता व समृद्धि, महान अक्तूबर क्रान्ति से उत्पन्न हुए उनके अटूट संघ तथा उनकी अर्थ-व्यवस्था व संस्कृति के लिए लाभप्रद परस्पर सम्बन्धों को समर्पित लेख संग्रह "मैत्री पताका आदि से अन्त तक अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना से ओत-प्रोत है।

सम्भवतः पाठकों के मध्य सर्वाधिक लोकप्रियता शराफ रशीदोव विभिन्न भाषाओं में अनूदित और हमारे देश की सीमाएँ लाँघ

चुके उपन्यासों को प्राप्त हुई है। उनके उपन्यासों "विजेता" "तूफ़ान झुका सकता नहीं" और "प्रचण्ड लहर" में हमें आधुनिक उज़्बेकिस्तान की विस्तृत झाँकी देखने को मिलती है। इन पुस्तकों में लेखक के चिन्तन की राष्ट्रीय उदात्तता, अपने देश का कायापलट कर रहे सामूहिक श्रम के सामर्थ्य में विश्वास और एक ही मकसद से अनुप्राणित होने के साथ-साथ अपनी वैयक्तिकता में अद्वितीय व विलक्षण सोवियत मेहनतकशों के मानस की पैनी समझ का सुस्पष्ट सामंजस्य मिलता है।

शराफ़ रशीदोव के उपन्यासों में व्यंग्य भी प्रचुर मात्रा में रहता है। लेखक ने कई तथाकथित "नेताओं" के सामन्तवादी-शानशाही तौर-तरीकों, ढकोसलेबाज़ी, ज़िम्मेदारी से कतराने की आदत, पदलोलुपता, रूढ़िवादिता और षड्यंत्रों आदि की भर्त्सना की है।

शराफ़ रशीदोव के उपन्यासों का घटना-स्थल वास्तविक होता है। "प्रचण्ड लहर" में सारी घटनाएँ फ़रहाद पनबिजलीघर (पुस्तक में गनावा पनबिजलीघर) में घटती हैं, "विजेता" व "तूफ़ान झुका सकता नहीं" में – "मिर्ज़ाचूल" यानी भूखी स्तेपी में। लेकिन यथार्थतः लेखक द्वारा वर्णित घटनाओं को समस्त उज़्बेकिस्तान, उसमें हो रही प्रगति व प्रक्रियाओं के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए जो कि सारे जनतंत्र के लिए लाक्षणिक हैं। इसीलिए "प्रचण्ड लहर" के युवा नायक में गाँव से निर्माण-स्थल पर एक महान सार्वजनिक कार्य में भाग लेने और मोर्चे पर संघर्षरत पिता की पिछवाड़े में सहायता करने के उद्देश्य से आये युवक में उज़्बेकिस्तान के श्रमिक वर्ग के प्रतीकात्मक प्रतिनिधि को देखना एवं "विजेता" व "तूफ़ान झुका सकता नहीं" उपन्यासों के नायकों में उज़्बेकिस्तान की अछूती धरती को कृषि योग्य बनानेवाले विशाल दल के हरावल को देखना पूर्णतः तर्कसंगत है।

"तूफ़ान झुका सकता नहीं" में भारतीय पाठकों के लिए उपन्यास "विजेता" के सुपरिचित पात्र – आयकीज़, आनिमजान, जुराबायेव आदि हैं। चरित्रों का टकराव, विचारों व दृष्टिकोणों के संघर्ष जिनका "विजेता" में गहराई से विकास किया गया है, जिनकी केवल रूप-रेखा प्रस्तुत की गयी है, वे "तूफ़ान झुका सकता नहीं" में अधिक नाटकीय और तनावपूर्ण हो उठे हैं, उन्हें अर्थगत पूर्णता, साहित्यिक सम्पन्नता तथा वास्तविक महाकाव्य-सुलभ विशिष्टताएँ प्राप्त हो गयी हैं।

आयकीज़ के चरित्र में, जो शौर्यपूर्ण कार्यों के लिए मातृभूमि की सहायता करने के लिए लालायित रहती है, हर घर को सुखी व सम्पन्न देखना चाहती है, जन-नायक के उत्कृष्ट गुणों का समावेश है।

पाठकों से

'रादुगा' प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन संबंधी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये 'रादुगा' प्रकाशन, ३० , नवाई स्ट्रीट, ताशकन्द – १२९, उज़बेक जनतंत्र, सोवियत संघ।